आखिरी मकसद
सुरेन्द्र मोहन पाठक
सुधीर 8

आखिरी मकसद

(सुधीर कोहली – 8)

सुरेन्द्र मोहन पाठक

First Edition: 1990

Chapter 1

मेरी आंख खुली ।

सबसे पहले मेरी निगाह सामने दीवार पर लगी रेडियम डायल वाली घड़ी पर पड़ी ।

डेढ़ बजा था ।

यानि कि अभी मुझे बिस्तर के हवाले हुए मुश्किल से दो घंटे हुए थे ।

मेरी दोनों आंखें अपनी कटोरियों में गोल-गोल घूमीं । यूं बिना कोई हरकत किए, बिना गर्दन हिलाए मैंने अपने बैडरूम में चारों नरफ निगाह दौड़ाई । अंधेरे में मुझे कोई दिखाई तो न दिया लेकिन मुझे यकीन था कि कोई कमरे में कोई था और किसी की वहां मौजूदगी की वजह से ही मेरी आंख खुली थी ।

रात के डेढ़ बजे बंद फ्लैट में मेरे बेडरूम मे कोई था ।

अपने आठ गुणा आठ फुट के असाधारण आकार के पलंग पर मैं कुछ क्षण स्तब्ध पड़ा रहा, फिर मैंने करवट बदली और साइड टेबल पर रखे टेबल लैम्प की तरफ हाथ बढ़ाया ।

मेरा हाथ टेबल लैंप के स्विच तक पहुंचने से पहले ही कमरे में रोशनी हो गई । अंधेरा कमरा एकाएक ट्यूब लाइट की दूधिया रोशनी से जगमगा उठा ।

तब मुझे स्विच बोर्ड के करीब खड़ा एक पहलवान जैसा आदमी दिखाई दिया जो अपलक मुझे देख रहा था और पान से बैंगनी हुए मसूढे और दांत निकालकर हंस रहा था - खामखाह हंस रहा था । उसने अपनी पीठ दीवार के साथ सटाई हुई थी और अपने हाथ में वह एक सूरत से ही निहायत खतरनाक लगने वाली रिवॉल्वर थामे था । रिवॉल्वर वह मेरी तरफ ताने हुए नहीं था लेकिन मैं जानता था कि पलक झपकते ही वो रिवॉल्वर न सिर्फ मेरी तरफ तन सकती थी बल्कि उसमें से निकली गोली मेरे जिस्म में कहीं भी झरोखा बना सकती थी ।

तभी कोई खांसा ।

तत्काल मेरी निगाह आवाज की दिशा में घूमी ।

सूरत में पहलवान जैसा ही खतरनाक लेकिन अपेक्षाकृत नौजवान एक दादा पलंग के पहलू में पिछली दीवार से टेक लगाए खडा था ।

"जाग गए ।" - पहलवान सहज स्वर में बोला ।

"तुम्हें क्या दिखाई देता है ?" - मैं भुनभुनाया ।

"जल्दी जाग गए । बिना जगाए ही जाग गए । कान बड़े पतले हैं या अभी सोए ही नहीं थे ?"

"कौन हो तुम ! क्या चाहते हो ? भीतर कैसे घुसे?"

"अल्लाह ! इतने सारे सवाल एक साथ !"

"'जवाब दो ।"

"तू तो कोतवाल की तरह जवाब तलबी कर रहा है ?"

"उस्ताद जी" - पीछे पलंग के पहलू में खड़ा नौजवान दादा बोला - "मांरू साले को !"

"नहीं, नहीं ।" - पहलवान बोला - "मारेगा तो ये मर जायेगा ।"

"एकाध पराठा सेंक देता हूं ।"

"न खामखाह खफा हो जाएगा । हमने इसे राजी-राजी रखना है ।"

नौजवान के चेहरे पर बड़े मायूसी के भाव आये । 'पराठा सेंकने को' कुछ ज्यादा ही व्यग्र मालूम होता था वो ।

मैंने वापस पहलवान की तरफ निगाह उठाई ।

"राजी-राजी क्यों रखना है मुझे ?" - मैंने पूछा ।

"एकदम वाजिब सवाल पूछा ।"

"क्यों रखना है ?"

"भय्ये राजी रहेगा तो सब कुछ राजी राजी करेगा न ! राजी नहीं रहेगा तो अङी करेगा, पंगा करेगा, लफड़ा करेगा । आधी रात को लफड़ा कौन मागता है ?"

"मैं मांगता हूं । सालो, एक तो जबरन मेरे घर में घुस आये हो और ऊपर से..."

"उस्ताद जी" - नौजवान आशापूर्ण स्वर में बोला - "एकाध इसके थोबड़े पर ही जमा दूं ? कम-से-कम इसकी कतरनी तो बंद हो जाएगी ।"

"कतरनी का क्या है, लमड़े ।" पहलवान दार्शनिकतापूर्ण स्वर में बोला, "चलने दे ।"

"मैं अभी पुलिस को फोन करता हूं" मैं बोला, "और तुम दोनों को गिरफ्तार कराता हूं ।"

"लो !" नौजवान बोला, "सुन लो ।"

"अगर" मैं बोला, तुम दोनों अपनी खैरियत चाहते हो तो..."

"'यानी कि" पहलवान ने मेरी वात काटी और बिना उत्तेजित पूर्ववत् सहज स्वर में बोला "अभी जहन्नुम रसीद होना चाहता है कुछ देर बाद भी नहीं ।"

फिर उसका रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा हुआ और उसने बड़े निर्विकार भाव से रिवॉल्वर का कुत्ता खींचा ।

कुत्ता खींचा जाने की मामूली-सी आवाज गोली चलने से भी तीखी आवाज की तरह मेरे कानों में गूंजी ।

मेरे कस-बल निकल गये ।

मेरे मिजाज में आई वो तब्दीली पहलवान से छुपी न रही । "शाबाश ।" वो बोला ।

"क्या चाहते हो ?" मैं धीरे से बोला ।

"देखा !" पहलवान अपने नौजवान साथी से बोला, "खामखाह गले पड़ रहा था तू इसके, सब कुछ राजी-राजी तो कर रहा है । बेचारा खुद ही पूछ रहा है कि हम क्या चाहते हैं ?"

नौजवान कुछ न बोला ।

अब क्या हुआ, दही जम गई तेरे मुह में ! अबे, बता इसे हम क्या चाहते हैं ?"

"बिस्तर से निकल ।" नौजवान ने मुझे आदेश दिया - "कपड़े बदल । हमारे साथ चलने के लिए तैयार हो ।"

"कहां चलने के लिए तैयार होऊं ?" मैं सशंक स्वर में वोला ।

"उस्ताद जी, देख लो, ये फिर फालतू सवाल कर रहा है ।"

साफ जाहिर हो रहा था कि वह नौजवान मवाली मेरे से उलझने के लिए तड़प रहा था ।

"कहां फालतू सवाल कर रहा है !" पहलवान ने उसे मीठी झिड़की दी - "इतना वाजिब सवाल तो पूछ रहा है। आखिर इतना जानने का हक तो इसे पहुंचता ही है कि इसने कहां चलने के लिए तैयार होना है।"

"लेकिन..."

"मैं बताता हूं इसे।" पहलवान फिर मेरे से सम्बोधित हुआ- "भैय्ये, तू सीधे-सीधे कपड़े पहन ले। तूने किसी पार्टी या किसी जश्न के लिए तैयार नहीं होना इसलिए सज-धज की जरूरत नहीं। समझा !"

मैंने जवाब नहीं दिया।

"तुझे हमने किसी के पास पहुंचाना है। जीता-जागता। सही-सलामत। बिना टूट-फूट के। सालम। तू हमारा साथ दे, भैय्ये। ज्यादा पसरेगा या हामिद को हड़कायेगा तो फिर तेरी सलामती और टूट-फूट की कोई गारंटी नहीं होगी।जो कि मैं नहीं चाहता।"

"क्यों नहीं चाहते ?"

"क्योंकि ठेके की एक अहम शर्त माल को ग्राहक के पास सही-सलामत पहुंचाना भी है।"

"मैं माल हूं ?"

"हो। पचास हजार रूपये का। तुझे कुछ हो गया तो हमारा तो रोकड़ा निकल गया न अंटी से !"

"मैं पचास हजार रुपए का माल हूं ?"

"नकद ! चौकस ! सी.ओ.डी.।"

"सी.ओ.डी. (कैश ऑन डिलीवरी)! ओहो ! तो पहलवान जी अंग्रेजी भी जानते हैं !"

"मैं नहीं जानता। वो आदमी जानता है जिसने तेरी डिलीवरी लेनी है। वो बार-बार सी.ओ.डी.-सी.ओ.डी. बोलता था, सो मैंने बोल दिया।"

"हूं तो बात का हिन्दोस्तानी में तजुर्मा ये हुआ कि पचास हजार रुपये की कीमत की एवज में मुझे अगवा करके किसी तक सही-सलामत पहुंचाने के लिए किसी ने तुम्हारी खिदमत हासिल की है।"

"वाह ! मरहबा ! तजुर्मा हिन्दोस्तानी में हो तो बात कितनी जल्दी और कितनी आसानी से समझ में आती है।"

"है कौन वो आदमी ?"

"है कोई ग्राहक।"

"वो ग्राहक मेरा करेगा क्या ?"

"करेगा तो वही जो हामिद करना चाहता है लेकिन वक्त आने पर करेगा।"

"मुझे जहन्नुम रसीद !"

"हां।"

"यानी कि मेरी मौत महज वक्त की बात है।"

"हां। लेकिन वक्त का वक्फा मुख़्तसर करने की कोशिश न कर, भैय्ये। तू बाज न आया और यहीं मर गया तो हमारे तो पचास हजार रुपए तो गए न महंगाई के जमाने में ! इसलिए नेकबख्त बनकर हमारे काम आ और तैयार होकर हमारे साथ चल। अल्लाह तुझे इसका अज्र देगा। चल खड़ा हो। शाबाश !"

मैं बिस्तर से निकला और बैडरूम से सम्बद्ध बाथरूम के दरवाजे की ओर बढ़ा।

"कहां जा रहा है ? " पहलवान तीखे स्वर में बोला ।

"बाथरूम ।" मैं बोला, "नहाने ।"

"पागल हुआ है ये कोई वक्त है नहाने का ! सीधे-सीधे कपड़े बदल और चल ।"

"कम से कम मुंह तो धो लूं ।"

"अरे, शेरों के मुंह किसने धोए हैं ! "

"ये अंग्रेज की औलाद" नौजवान हामिद भुनभुनाया, "समझ रहा है कि जहां इसे ले जाया जा रहा है, वहां मेमें इसका मुंह चाटने वाली हैं ।"

"हामिद !" पहलवान ने मीठी झिड़की दी, "चुप रह । नहीं तो पिट जाएगा ।"

हामिद ने यूं होंठ भींचे जैसे संदूक का ढक्कन वन्द किया हो ।

"अरे, खड़ा है अभी तक !" पहलवान हैरानी जताता हुआ मेरे से संबोधित हुआ, "बदल नहीं चुका अभी तक कपड़े ! तैयार नहीं हुआ अभी !"

मेरी राय में आदमी की जैसी जात औकात हो, वैसा ही उसका मिजाज होना चाहिए । पहलवान की शहद में लिपटी जुबान मुझे बहुत विचलित कर रही थी । वो गब्बर सिंह की तरह गरज बरस रहा होता तो आपके खादिम ने उससे कम खौफ खाया होता लेकिन वहां तो शहद मुझे घातक विष का गिलास मालूम हो रहा था इसलिए अपिका खादिम मन ही मन कहीं ज्यादा भयभीत था ।

मुझे पूरी उम्मीद है कि अपने खादिम को आप भूले नहीं होंगे लेकिन अगर इत्तफाकन ऐसा हो गया हो तो मैं आपका अपना परिचय फिर से दिए देता हूं । बंदे को सुधीर कोहली कहते हैं । बंदा प्राइवेट डिटेक्टिव के उस दुर्लभ धन्धे से ताल्लुक रखता है जो हिन्दुस्तान में अभी ढंग से जाना-पहचाना नहीं जाता । तम्बाकू जो आलू के पौधे की तरह प्राइवट डिटेक्टिव की कलम को भी आप विलायत की देन समझिए । बस, यूं जानिए कि प्राइवेट डिटेक्टिव की फसल हिंदुस्तान में अभी शुरू ही हुई है । आप जानते ही हैं कि एकाध पौधा बाहर से आ जाता है तो नई फसल चल निकलती है । हिंदुस्तान में और प्राइवेट डिटेक्टिव अभी उग रहे हैं, अभी बढ़ रहे हैं उनकी कलम अभी कटनी बाकी है एकाध अधपका काट लिया गया था तो वह फेल हो गया था । फल फूलकर मुकम्मल पेड़ अभी खाकसार ही बना है । कहने का मतलब यह है कि इसे आप कुदरत का करिश्मा कहें या युअर्स टूली का, पूछ है आपके खादिम की दिल्ली शहर में - सिर्फ मेरी व्यवसायिक सेवाओं के तलबगार मेरे क्लायंट्स में ही नहीं, शहर के वैसे दादा लोगों में भी जैसों के दो प्रतिनिधि उस घड़ी मेरे सामने खड़े थे और जो मुझे ये चायस दे रहे थे कि मैं अभी मरना चाहता था या ठहर के ।

उन दोनों दादाओं की निगाहों के सामने मैंने कुर्त्ता-पाजामा उतारकर जींस जैकेट वाली पोशाक धारण की । कपड़ों की अलमारी में ही बने एक दराज में मेरी 38 केलीबर को लाइसेंसशुदा स्मिथ एंड वैसन रिवॉल्वर पड़ी थी लेकिन उन दोनों की घाघ निगाहों के सामने उस तक हाथ पहुंचाने का मौका मुझे न मिला ।

अन्त में मैंने डनहिल का एक सिगरेट सुलगाया और बोला - "अब क्या हुक्म है ?"

"हुक्म नहीं" पहलवान बोला, "दरखास्त है, भैय्ये ।"

"वही बोलो ।"

"नीचे सड़क पर तुम्हारे फ्लैट वाली इस इमारत के ऐन सामने हमारी कार खड़ी है तुमने हमारे साथ चल कर उस पर सवार हो जाना है और फिर कार यह जा वह जा । बस इतनी सी बात है ।"

"बस ?"

"हां सिवाय इसके कि अगर यहां से कार तक के रास्ते में तूने कोई शोर मचाया या कोई होशियोरी दिखाने की

कोशिश की तो गोली भेजे में । गोली अन्दर दम बाहर ।"

"खलीफा, मेरा दम बाहर हो गया तो तुम्हारी फीस की दुक्की तो पिट गई !"

"वो तो है ।" वो बड़ी शराफत से बोला, "लेकिन क्या किया जाए, भैय्ये ! धन्धे में नफा-नुकसान तो लगा ही रहता है ।"

"नुकसान काहे को, उस्ताद जी !" हामिद भड़का "ये करके तो दिखाए कोई हरकत मैं न इसकी..."

"रिवॉल्वर के दम पर अकड़ रहा है, साले !" मैं नफरत भरे स्वर में बोला, "इसे एक ओर रख दे और फिर अपने उस्ताद को रेफरी बनाकर यहीं मेरे से दो-दो हाथ करले, न तेरी हड्डी-पसली एक करके रख दूं तो मुझे अपने बाप की औलाद नहीं, किसी चिड़ीमार की औलाद कह देना ।"

"उस्ताद जी !" हामिद दांत किटकिटाता हुआ कहर भरे स्वर में बोला, "अब पानी सिर से ऊंचा हो गया है ..."

"तो डूब मर साले !" मैं बोला ।

"ठहर जा हरामी के पिल्ले..."

हामिद मुझ पर झपटा लेकिन तभी पहलवान बीच में आ गया ।

"लमड़े !" पहलवान सख्ती से वोला, "होश में आ । काबू में रख अपने आपको । तेरी ये हरकत तुझे पच्चीस हजार की पड़ेगी ।"

"अब मुझे परवाह नहीं । अल्लाह कसम, मैं इसे ..."

"मुझे परवाह है समझा !"

"समझा ।" हामिद मरे स्वर में वोला ।

"ये कोई" मैं बोला, "चरस-वरस तो नहीं लगाता !"

"क्या मतलब ?"

"चरसी या स्मैकिए ही यू एकाएक भड़कते हैं । जरूर ये ...."

पहलवान के भारी हाथ का झन्नाटेदार थप्पड़ मेरे गाल से टकराया ।

"ये अकलमंद के लिए इशारा था ।" वह बोला, तब पहली बार उसके स्वर में क्रूरता का पुट आया था, "अब साबित करके दिखा कि तू अकलमंद है ।"

"वो तो मैं हूं ।" मैं कठिन स्वर में बोला ।

"फिर तो तुझे अब तक याद होगा कि नीचे सड़क पर इमारत के सामने क्या है ?"

"तुम्हारी कार है ।"

"तुमने हमारे साथ नीथे चलकर क्या करना है ?"

"कार में बैठ जाना है ।"

"और ये सब कुछ कैसे होना है ?"

"चुपचाप ।"

"शाबाश !"

फिर उसके इशारे पर मैंने फ्लैट की बत्तियां बुझाई और उसके मुख्य द्वार को ताला लगाया । फिर मुझे दायें-बायें से ब्रैकेट करके वे मुझे नीचे सड़क पर लाए जहां एक काली एम्बैसडर खड़ी थी । हामिद कार का अगला दरवाजा खोलकर ड्राइविंग सीट पर बैठ गया और मुझे कार के भीतर अपने आगे धकेलता हुआ पहलवान पीछे सवार हो गया । कार तत्काल वहां से दौड़ चली ।

"हमने मोतीबाग जाना है ।" पहलवान बोला, "आजकल सडकों पर पुलिस की गश्त बहुत है । रात को बहुत पूछताछ होती है । हमारी गाड़ी को भी रोका जा सकता है । तब पुलिस की सूरत देखकर तुझे होशियारी आ सकती है । भैय्ये मेरी यही नेक राय है तुझे कि पुलिस के सामने कोई लफड़ा करने की कोशिश न करना । कोई बेजा हरकत की तो जो पहली जान जाएगी, वो तेरी होगी ।"

"और" मैं बोला "तुम्हारा क्या होगा ?"

"हमारा भी बुरा ही होगा लकिन जो बुरा हमारा होगा, उसको देखने के लिए तू जिन्दा नहीं होगा । हमारी ओर पुलिस की निगाह भी उठने से पहते तू जन्नत के दरवाजे पर दस्तक दे रहा होगा । समझा ?"

"समझा"

"तो फिर क्या इरादा है तेरा ?"

"इरादा नेक है ।"

"नेक ही रखना, भैय्ये । इल्तजा है ।"

"अच्छा ! धमकी नहीं ?"

"नहीं ।"

"हैरानी है । आजकल तो दादा लोग भी बड़े अदब और शऊर वाले हो गए हैं ।"

वह हंसा ।

"ठीक है न फिर ?" वह बोला, "खामोश रहेगा न ?"

"हां !"

"शाबाश !"

मोतीबाग तक हमें दो जगह पुलिस द्वारा संचालित रोड ब्लोक के बैरियर मिले लेकिन दोनों ही जगह पुलसियों ने कार की तरफ टार्च ही चमकाई, कहीं किसी ने कार को रुकने का इशारा न किया । ऐसा हो जाता तो कार की छोटी-मोटी तलाशी भी होती और तब मुमकिन था कि इस पंजाबी पुत्तर के खून में बहती 93-ऑक्टेन भड़क उठती और मैं हथियारबंद पुलिस की मौजूदगी में हा-हल्ला मचाकर अपनी जान बचाने की जुर्रत कर बैठता लेकिन लगता था राजधानी में रात को सक्रिय हो उठने वाले वैसे बेशुमार रोड ब्लाक्स सिर्फ नेक शहरियों को हलकान करने के लिए थे, गुंडे बदमाशों को जरूर अभयदान प्राप्त था ।

उस घड़ी मेरी समझ में आया कि सालों से चल रहे पुलिस के ऐसे बंदोबस्त के बावजूद आज तक कोई उग्रवादी किसी रोड ब्लोक पर क्यों नहीं पकड़ा गया था ।

एक बात ऐसी थी जिसका कोई फायदा आपका ये खादिम महसूस कर रहा था कि उसे पहुंचना चाहिए था ।

मैं पहलवान को जानता था ।

अलबत्ता पहलवान नहीं जानता था कि मैं उसे जानता था । पहलवान का नाम तो हबीबुल्लाह खान था लेकिन

दिल्ली के अंडरवर्ल्ड में वो हबीब बकरा के नाम से बेहतर जाना जाता था। पहले कभी वह जामा मस्जिद के इलाके में बकरे के गोश्त की दुकान किया करता था। तब वो हबीबुल्लाह खान बकरेवाला के नाम से जाना जाता था। कल्लाल से दादा बना था तो नाम सिकुड़कर हबीब बकरा हो गया था। पहले मार-पीट और दंगा-फसाद के जुर्म में कई बार जेल की हवा खा चुका था लेकिन जबसे वो दिल्ली के डॉन के नाम से जाने जाने वाले लेखराज मदान की छत्रछाया में गया था, तबसे कम से कम हवालात के दर्शन उसने नहीं किए थे।

लेखराज मदान खुद कभी एक निहायत मामूली आदमी था, जो पांच रुपए रोजाना की दिहाड़ी के बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन वर्कर की हकीर औकात से उठकर बिल्डिंग कांट्रेक्टर और प्रोपर्टी डीलर बना था लेकिन इस हकीकत से दिल्ली शहर में हर कोई वाकिफ था कि उसका असली धंधा शराब की स्मगलिंग और प्रोस्टीच्युशन था। अपने स्याह सफेद धंधों से उसने बेशुमार दौलत पीटी थी, लेकिन पिछले दिनों वो खामख्वाह ही सरकारी कोप का भाजन बन गया था जिसकी वजह से उसका सितारा एकाएक गर्दिश में आ गया था। इनकम टैक्स डिपार्टमंट की, पुलिस के एन्टी करप्शन स्क्वाड की और दिल्ली की म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन की उस पर कुछ ऐसी सामूहिक नजरेइनायत हुई थी कि उसके जरायमपेशा निजाम की बुनियादें हिल गई थीं। उसी संदर्भ में उसका नाम अखबार वालों ने खूब उछाला था और तभी मैंने हबीब बकरे की बाबत जाना था जो कि गैर कानूनी तामीर के एक केस के सिलसिले में लेखराज मदान के साथ गिरफ्तार हुआ था और साथ जमानत पर छूटा था।

अखबारों से ही मैंने जाना था कि लेखराज मदान का उससे उम्र में कोई बीस-बाइस साल छोटा एक भाई था जो वैसे तो मदान के हर स्याह धधे में शरीक था लेकिन प्रत्यक्षत राजेंद्रा प्लेस में एक नाइट क्लब चलाता था।उस छोटे भाई का नाम मैंने अखबारों में अक्सर पढ़ा था लेकिन भूल गया था और उसकी तस्वीर कभी किसी खबर के साथ छपी नहीं थी। बड़े खलीफा के दर्शन का इत्तफाक तो एक-दो बार यूअर्स-टूली को हो चुका था, लेकिन छोटे खलीफा की सूरत मैंने कभी नहीं देखी थी।

कार एकाएक मोतीबाग की एक सुनसान अंधेरी इमारत के सामने पहुंचकर रुकी।

हामिद ने कार से उतरकर उस अंधेरी इमारत का फाटक खोला और फिर भीतर दाखिल होकर फाटक के एन सामने मौजूद गैरेज का दरवाजा खोला!

और एक मिनट बाद कार गैरेज में थी और गैरेज का दरवाजा और बाहरी फाटक दोनों बंद हो चुके थे।

हम तीनों कार से बाहर निकले। हामिद ने एक विजली का स्विच ऑन किया तो वहां छत में लगा एक बीमार सा धुंधलाया सा, बल्ब जल उठा। उसकी रोशनी में मुझे गैरेज की पिछली दीवार में बना एक बंद दरवाजा दिखाई दिया। हामिद ने वो दरवाजा खोला और फिर हम तीनों ने उसके भीतर कदम रखा। बाहर से ही प्रतिबिंबित होती निहायत नाकाफी रोशनी में मैंने स्वयं को एक बैडरूम की तरह सजे कमरे में पाया। बैडरूम की एक दीवार में दो बड़ी-बड़ी खिड़कियां थीं जो बाहर सड़क की ओर खुलती थीं। हामिद ने पहले गैरेज की ओर का दरवाजा बन्द किया और फिर उस दरवाजे पर और दोनों खिड़कियों पर बड़े यत्न से मोटे-मोटे पर्दे खींचे। तब कहीं जाकर उसने वहां की ट्यूब जलाई तो कमरे में जगमग हुई।

हबीब बकरा एक कुर्सी में ढेर हो गया। अपनी रिवॉल्वर निकालकर उसने अपनी गोद में रख ली और फिर जेब से एक तंबाकू की पुड़िया निकाली। पुड़िया में से कुछ तंबाकू उसने अपने मुंह में ट्रांसफर किया और फिर चेहरे पर एक अजीब-सी तृप्ति के भाव लिए गाय की तरह जुगाली-सी करने लगा।

फिर उसने हामिद को कोई गुप्त इशारा किया जिसके जवाब में हामिद ने वहीं से एक नायलॉन की डोरी बरामद की और उसकी सहायता से मेरे हाथ-पांव बांध दिये। अन्त में उसने मुझे पलंग पर धकेल दिया।

"भैय्ये" हबीब बकरा मीठे स्वर में बोला, "बस थोड़ी देर की ही तकलीफ समझना।"

"बड़ा ख्याल है तुम्हें मेरा!" मैं व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला।

"तू तो खफा हो रहा है।"

"बिल्कुल भी नहीं। मैं तो खुशी से फूला नहीं समा रहा। दिल कथकली नाचने को कर रहा है। झूम-झूमकर गाने की ख्वाइश हो रही है।"

"दूसरा काम न करना । वरना तेरा मुंह भी बन्द करना पड़ेगा ।"

मैं खामोश रहा ।

बकरा कुछ क्षण मशीनी अंदाज से जबड़ा चलाता रहा । फिर उसने हामिद को टेलीफोन करीब लाने का इशारा किया । हामिद ने फोन को मेज पर से उठाकर उसके करीब एक स्टूल पर रख दिया ।

"चाय बना ला ।" हबीब बकरा बोला ।

हामिद सहमति में सिर हिलाता हुआ वहां से बाहर निकल गया ।

हबीब बकरे ने एक नंबर मिलाया और फिर दूसरी ओर से जवाब मिलने की प्रतीक्षा करूने लगा । वो इयरपीस को पूरा तरह से अपने कान के साथ जोडे हुए नहीं था । इसलिए जब दूसरी ओर से कोई बोला तो कमरे के स्तब्ध वातावरण में उसकी आवाज मुझे साफ सुनाई दी ।

"हां । कौन है भई !"

लेखराज मदान की आवाज मैंने साफ पहचानी ।

"मालिक" बकरा चिकने-चुपड़े स्वर नें बोला "काम हो गया ।"

"पकड़ लाए ?"

"हां ।"

"कोई चूं-चपड़ तो नहीं की उसने ?"

"की । काफी उछला-कूदा भी । लेकिन मैं क्या उसकी चलने देने वाला था !"

"बढ़िया । अब कहां है वो ?"

"मोतीबाग ।"

"चौकस पकड़ के रखा है न?"

"बिल्कुल ।"

"भाग तो नहीं जाएगा ?"

"सवाल ही नहीं पैदा होता ।"

"बढ़िया । आगे मुझे मालूम ही है क्या करना है ?"

"हां । रात यहीं रखेंगे उसे । कल सुबह ग्यारह बजे मैं उसे छोटे मालिक के दौलतखाने पर ले आऊंगा ।"

"खुद लाना ।"

"खुद ही लाऊंगा मालिक ।"

"और उससे अच्छे तरीके से पेश आना । ये दादागिरी दिखाने वाना मामला नहीं है । कोई ताव-वाव मत खा जाना । जोश में उससे कोई हाथापाई या मारपीट न कर बैठना समझ गया ?"

"समझ गया, मालिक ।"

"तेरे ऊपर मे नर्म और भीतर से गर्म मिज़ाज से वो वाकिफ नहीं होगा लेकिन मैं वाकिफ हूं ।"

"आप ख्याल ही न करो, मालिक, मैं ...."

"अपने मिजाज का कोई नमूना पहले ही पेश कर नहीं चुका है ?"

"अरे नहीं, मालिक कुछ नहीं हुआ बस सिर्फ ..."

"क्या बस सिर्फ ?"

"एक छोटा सा झापड़ रसीद किया था ।"

"गलत किया नहीं करना था ।"

"बाज ही नहीं आ रहा था ।"

"फिर भी नहीं करना था । अब निशान है झापड़ का उसके थोबड़े पर ?"

"हबीब बकरे ने गौर से मेरी सूरत देखी और फिर फोन में बोला, "नहीं ।"

"बढ़िया, आइन्दा ध्यान रखना । डिलीवरी तक उसके चेहरे पर कहीं भी मार पीट का, चोट-वोट का कोई मामूली सा भी निशान नहीं होना चाहिए । समझ गया ?"

"हां ।"

"क्या समझ गया ?"

"निशान नहीं । खरोंच नहीं । कट नहीं । रगड़ नहीं । रोगदा नहीं ।"

"बढ़िया ।"

"और बोलो, मालिक ?"

"अपने शागिर्द का क्या सोचा ?"

"उसका काम हो जाएगा ।"

"कब ?"

"आज ही रात को रोशनी होने से पहले ।"

"कोताही न हो ।"

"आप निश्चित रहिए, मालिक । कहीं कोताही नहीं होगी ।"

"बढिया ।"

फिर शायद लाइन कट गई क्योंकि तभी हबीब बकरे ने रिसीवर वापस क्रेडल पर रख दिया और स्टूल को परे सरका दिया ।

मैं बेआवाज पलंग पर पड़ा रहा ।

हालात बड़ा डरावना रुख दिखा रहे थे । अब मुझे यकीन होने लगा था कि मेरा अगवा कोई मामूली घटना नहीं थी, वो बहुत खतरनाक रुख अखतियार करने वाला था । सिलसिला इतना गंभीर था कि अगवा का कोई गवाह नहीं छोड़ा जाने वाला था । दिन चढ़ने से पहले हामिद का कत्ल हो जाने वाला था और अगले रोज ग्यारह बजे मुझे लेखराज मदान के छोटे भाई के यहां डिलीवर कर दिया जाने वाला था ।

मोटे पहलवान की अक्ल भी मोटी थी-बकरे ही जैसी जो वो खुद अपने सिर पर मंडराती मौत की शिनाख्त नहीं कर पा रहा था। वो मूर्ख था जो इतना भी नहीं समझता था कि अपने शागिर्द जितना ही वो भी अगवा का गवाह था। गवाह न छोड़ने के लिए अगर हामिद को खलास किया जाना जरूरी था तो खुद उस्ताद का भी उसी अंजाम तक पहुंचना लाजमी था।

अब मैं और भी खौफजदा हो उठा।

एकाएक ऐसी क्या खूबी पैदा हो गई थी मेरे में जो एक अगवा जरूरी हो गया था और इसके लिए लेखराज मदान को दो कत्लों का सामान करना भी गवारा था।

मेरा कोई अनजाना लेकिन हौलनाक अंजाम मुझे बुरी तरह डराने लगा। अपनी मौत मुझे मुंह बाए अपने सामने खड़ी दिखाई देने लगी। तब मैंने यह फैसला किया कि अगर बाद में भी मरना ही था तो क्यों न मैं अभी उसी घड़ी रिहा होने की कोशिश करता हुआ मरूं।

क्या पता आपके खादिम की ऐसी कोई कोशिश कामयाब ही हो जाए।

तभी एक ट्रे उठाए हामिद वापस लौटा। ट्रे को मेज पर रखकर वह अपने उस्ताद के लिए चाय बनाने लगा। प्रत्यक्षत: मेरी कोई ऐसी खातिरदारी वो जरूरी नहीं समझ रहा था।

"पहलवान" मैं हिम्मत करके बोला, "तुम्हारा बाप फोन पर जैसा कड़क बोल रहा था, वो है भी ऐसा ही कड़क तो तुम्हारी खैर नहीं।"

"क्या बकता है।" हबीव बकरा असमंजसपूर्ण स्वर में वोला।

"वो बोला कि नहीं कि मेरे ऊपर चोट-वोट का कोई मामूली सा भी निशान नहीं होना चाहिए ?"

"कान" वो मुझे घूरता हुआ बोला "वाकई बहुत पतले हैं तेरे।"

"बोला कि नहीं ?"

"तो क्या हुआ, तेरे गाल पर मेरी उंगलियों की हल्की-सी उछाल है, वो दिन चढे तक हट जाएगी।"

"और सारी रात हाथ-पांव बंधे रहने की वजह से मेरी कलाइयों और टखनों का जो बुरा हाल होगा, उसके बारे में क्या सोचा ?"

वो सकपकाया।

"मेरे हाथ-पांव तो अभी से सुन्न हाते जा रहे हैं। और थोड़ी देर में सूजन उठनी शुरू हो जाएगी। कल जब मेरे बंधन खोलोगे तो देख लेना मैं हॉस्पिटल केस बना होऊंगा। हाथ-पांव ठीक होने में हफ्तों न लगें तो कहना।"

उसका निचला जबड़ा लटक गया।

"और अभी तुम किसको क्या तसल्ली देकर हटे हो ! निशान नहीं, खरोंच नहीं। कट नहीं। रगड़ नहीं। वगैरह वगैरह।"

वह बहुत विचलित दिखाई देने लगा।

"और अभी तो मैं बंधन खुल जाने की उम्मीद में अपने हाथ-पांव उमेठूंगा। जिसका नतीजा ये होगा कि नायलॉन की ये डोरी चमड़ी को काटती हुई हड्डियों तक जा पहुंचेगी। फिर क्या जवाब दोगे अपने बाप को ?"

"तमीज से बोल।"

"बॉस को। खुश !"

हबीब बकरे ने उत्तर न दिया। वो सोच में पड़ गया। तभी हामिद ने करीब आकर चाय का कप उसकी ओर बढ़ाया।

"इसके हाथ-पांव खोल दे।" कप थामता हुआ हबीब बकरा एकाएक बोला – "और इसे भी चाय दे।"

"हाथं-पांव खोल दूं।" हामिद ने दोहराया।

"नींद हराम करेगा ये हमारी और कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। हमारे जागते हुए बंद कमरे से कहां भाग जाएगा ये ! खोल दे।"

बड़े अनिच्छापूर्ण ढंग से हामिद ने आदेश का पालन किया। आजाद होते ही मैं अपनी कलाइयां और टखने मसलने लगा। फिर मैंने एक सिगरेट सुलगा लिया और हामिद की दी चाय की चुस्कियां लगाने लगा।

"फोन की उधर की आवाज" हबीब बकरा सशंक स्वर में वोला, "कैसे सुनाई दे गई तुझे ?"

"दे गई किसी तरह।" मैं लापरवाही से वोला, "हो जाता है कभी-कभी ऐसा।"

"तूने सब सुना ?"

"हां।"

"जानता है मैं किससे बात कर रहा था?"

"अपने बाप ...आई मीन बॉस से।"'

"और वो कौन हुआ ?"

"वो मुझे क्या मालूम !"

उसके चेहरे पर राहत के भाव आए।

"मेरे को टॉयलेट जाना है।"

"क्या ?" वो हड़बड़ाया।

मैने अपनी कनकी उंगली ऊंची करके उसे दिखाई।

हबीब बकरे ने हामिद की तरफ देखा।

हामिद चाय बना रहा था।

हबीब बकरे ने गोद में रखी अपनी रिवॉल्वर उठाकर अपने हाथ में ले ली और उठ खड़ा हुआ।"

"'चल।" वह बैडरूम के पिछवाड़े के दरवाजे की ओर इशारा करता हुआ वोला।

मैं उठकर दरवाजे पर पहुंचा। मैंने उसे खोला तो पाया कि आगे एक लम्बा गलियारा था।

पहलवान मुझे अपने से आगे चलाता हुआ गलियारे के सिरे तक लाया जहां कि टायलेट था।

"चल।" हबीब बकरा बोला "निपट"

मैंने टायलेट के दरवाजे को धकेला।

"अंधेरा है" मैं बोला।

"नखरे मत कर।" हबीब बकरा यूं बोला जैसे मास्टर किसी बच्चे को समझा रहा हो, "भीतर दीवार के साथ स्विच है।"

मैं भीतर दाखिल हुआ। मैंने अपने पीछे दरवाजा बन्द करने का उपक्रम किया।

"खबरदार!" हबीब बकरा एकाएक सांप की तरह फुंफकारा।

मैं निराश हो उठा। मेरा इरादा भीतर से दरवाजा बंद करके गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगने का था।

"यार, ये तो बड़ी ज्यादती है।", मैं बोला, "यूं तो..."

"बक-बक नहीं।" वो सख्ती से बोला, "बिजली का स्विच ऑन कर। दरवाजे से परे हट।"

मैंने दीवार टटोलकर स्विच तलाश किया और उसे ऑन किया। टॉयलेट में रोशनी फैल गई। जगह मेरी अपेक्षा से बड़ी निकली।

वो भी भीतर दाखिल हुआ। उसने दरवाजा भिड़काया और उससे पीठ लगाकर खड़ा हो गया। रिवॉल्वर उसने मजबूती से थामकर अपने सामने की हुई थी और वो अपलक मुझे देख रहा था।

"यार" मैंने कहना चाहा, "ये कोई बात हुई जो ..."

"बहस करेगा" वो मेरी बात काटता दृढ स्वर में बोला, "तो जो करना है वो पतलून में ही करेगा।"

मैंने आह भरी और फिर उसकी ओर पीठ फेरकर कमोड के सामने जा खड़ा हुआ। टॉयलेट के इस्तेमाल की जरूरत के बहाने को साकार करने के लिए मैंने अपने गुर्दों के साथ बलात्कार किया, फिर पतलून की जिप खींची और वॉशबेसिन के सामने जा खड़ा हुआ।

मैंने नल चालू किया और साबुन उठाकर उससे हाथ मलने लगा।

वाशबेसिन के ऊपर लगे शीशे में से मुझे हबीब बकरे का प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था। वो मेरे पीछे मेरे से मुश्किल से चार फुट परे खड़ा था। चेहरे पर आत्मविश्वास के भाव लिए वो बड़ी बेबाकी से मेरी तरफ देख रहा था।

एकाएक साबुन की टिकिया मैंने अपने हाथ से फिसल जाने दी।

उसकी निगाह स्वयंमेव ही फर्श पर परे जा गिरे साबुन की ओर उठ गई।

मैं तनिक घूमा, एक कदम आगे बढ़ा और मैंने झुककर साबुन उठाया। फिर मैंने उठकर सीधा होना शुरू किया लेकिन सीधा होने से पहले ही मैंने सिर झुकाकर अपना सिर सांड की तरह उसके पेट से टकरा दिया। उसके मुंह से गैस निकलते गुबारे जैसी आवाज निकली और वह दोहरा हो गया। साथ ही उसने फायर किया लेकिन गोली कहीं दीवार से जा टकराई। मैंने झुके-झुके ही ताबड़ तोड़ तीन-चार घूंसे उसके पेट में रसीद किए और फिर उसके दोबारा फायर कर पाने से पहले ही उसके हाथ से उसकी रिवॉल्वर नोंच ली।

वो फर्श पर ढेर हो गया।

तभी गलियारे में से दौड़ते कदमों की आवाज गूंजी। जरूर हामिद ने गोली चलने की आवाज सुन ली थी और अब वो उधर ही लपका चला आ रहा था। मैंने अपने जूते की एक भरपूर ठोकर हबीब बकरे की कनपटी पर जमाई और फिर उसके ऊपर से कूदकर दरवाजे पर पहुंचा।

तभी बाहर से दरवाजे को धक्का दिया गया।

दरवाजा भड़ाक से खुला और मुझे चौखट पर हामिद की झलक दिखाई दी।

एक क्षण भी नष्ट किए विना मैंने रिवॉल्वर का रुख उसकी ओर किया और घोड़ा खींचना शुरू कर दिया।

सारी रिवॉल्वर मैंने दरवाजे की दिशा में खाली कर दी । तब मैंने देखा कि हामिद गलियारे में दरवाजे के सामने धराशाई हुआ पड़ा था । डरते-डरते मैं उसके करीब पहुंचा । मैंने पांव की ठोकर से उसके चेहरे को, उसकी छाती को, उसकी पसलियों को टहोका । उसके शरीर में कोई हरकत नहीं हुई । मेरी चलाई गोलियों में से पता नहीं कितनी उसे लगी थीं लेकिन निश्चय ही वो मर चुका था ।

मैंने खाली रिवॉल्वर परे फेंक दी और झुककर उसकी उंगलियों में से उसकी रिवॉल्वर निकाल ली ।

मैं फिर हबीब बकरे की ओर आकर्षित हुआ ।

वो बाथरूम के फर्श पर बेहोश पड़ा था और प्रत्यक्षत: उसके जल्दी होश में आ जाने के कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे थे । लेकिएन उसका जल्दी होश में आना जरूरी था । मैंने उससे कई सवाल पूछने थे और फिर एक लाश के साथ वहां बने रहने का भी मेरा कोई इरादा नहीं था ।

मैंने उसके मुंह पर पानी के छींटे मारने शुरू किए ।

कुछ क्षण वाद उसने कराहकर आंख खोली ।

"उठके खड़ा हो जा, पहलवान ।" मैं कर्कश स्वर में बोला ।

उसने दो-तीन बार आंखें मिचमिचाइं और हड़बड़ाकर उठ बैठा ।

चेतावानी के तौर पर मैंने रिवॉल्वर उसकी तरफ तान दी । उसके नेत्र फैले । उसने जोर से थूक निगली ।

"उठ !"

वो बड़ी मेहनत से उठके खड़ा हुआ ।

"फुसफुसा पहलवान निकला ।" मैं व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला, "दो करारे हाथों में ही बोल गया । भीतर से खोखला मालूम होता है ।"

निगाहों में कहर भरकर उसने मेरी तरफ देखा लेकिन मैं अब क्या डरता ! अब तो निगाहों से ज्यादा कहर बरपाने वाला आइटम युअर्स ट्रूली के हाथ में थी ।

तभी उसकी निगाह गलियारे के फर्श पर गड़ी । उसके पहले से फैले नेत्र और फैल गए ।

"मर गया ?" वह आतंकित भाव से वोला ।

"नहीं ।" मैं बोला, "सांस रोके पड़ा है । फेफड़ों को आराम दे रहा है । सांस लिए बिना जिन्दा रहने की मश्क कर रहा है ।"

"भैय्ये ! तेरी खैर नहीं ।"

"अभी तो अपनी खैर मना मोटे भैंसे ।"

"मैं तुझे बहुत बुरी मौत मारूंगा ।"

"क्या करेगा ! मुझे बकरे की तरह जिबह करेगा और खाल उधेड़कर उल्टा टांग देगा ! भूला तो नहीं होगा अभी अपना पुराना धन्धा !"

"पुराना धन्धा !"

"कल्लाल का ! हबीबुल्लाह खान बकरेवाला । उर्फ फुसफुस पहलवान ।"

वो चौंका ।

"तू... तू मुझे जानता है ?"

"तुझे क्या, मैं तेरे बाप को भी जानता हूं।"

"मेरा बाप !"

"लेखराज मदान। तेरे से निपट लूं, फिर उसकी भी खबर लेता हूं जाकर।"

अब वो साफ-साफ फिक्रमंद दिखाई देने लगा।

"बाहर निकल।" मैंने आदेश दिया।

उसने हामिद की लाश को लांघकर बाहर गलियारे नें कदम रखा।

"हामिद को" मैं बोला "खुद मारता तो लाश कहां ठिकाने लगाता ?"

"क... क्या?"

"वही जो मैं बोला। मरना तो इसने था ही। अब तेरा काम मेरे हाथों हो गया है। अब बोल लाश कहां ठिकाने लगाता ?"

"यहीं।"

"क्या मतलब ?"

"ये मकान खाली है। हमारा इससे कोई वास्ता नहीं। हमने नकली चाबियों से इसके ताले खोलकर इसे जबरन कबजाया है। इसी काम के लिए।"

"ओह !" मैं एक क्षण खामोश रहा और फिर बोला, "भीतर चल।"

हम दोनों वापस बैडरूम में लौटे। वहां मैंने उसे पलंग पर धकेला और उसी नायलॉन की उसी डोरी से उसकी मुश्कें कस दीं जिससे कि उसने मेरी वह गत बनवाई थी। फिर मैं कुर्सी घसीटकर उसके सामने बैठ गया।

"शुरू हो जा।" मैंने आदेश दिया।

"क... क्या शुरू हो जाऊं?" वो कठिन स्वर में बोला।

"क्या कहानी है ?"

"क..क्या कहानी है?"

"ये बढ़िया है। जो मैं कहूं उसी को तू तोते की तरह रट दे। यूं ही रात बीत जाएगी, फिर दिन में कोई नया खेल खेलेंगे। ठीक है !"

वो खामोश रहा।

"साले मैं अगवा की कहानी पूछ रहा हूं। क्यों किया मेरा अगवा। क्यों जरूरी है मेरा मदान के छोटे भाई के घर ग्यारह वजे पहुंचाया जाना? ये कहानी बोल। समझा ?"

"मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"क्या !" मैं आंखें निकालकर वोला।

"भैय्ये मैं सच कह रहा हूं। पचास हजार की फीस के बदले में मुझे एक काम सौंपा गया था जो कि मैं कर रहा था।"

"मुझे अगवा करके आगे डिलीवर करने का काम ?"

"हां ।"

"इतने से काम की फीस पचास हजार रुपए ?"

"ज्यादा नहीं है । इस फीस में एक कत्ल भी शामिल था ।"

"हामिद का ?"

"हां ।"

"तू अपने शागिर्द का कत्ल करता!"

"वो मेरा कुछ नहीं । वो महज भाड़े का टट्टू था जो इस उम्मीद में उछल-उछलकर मेरा साथ दे रहा था कि फीस में उसकी पचास फीसदी की शिरकत थी ।"

"जबकि ऐसी फीस उसे देने का तेरा कोई इरादा नहीं था ।"

"मुर्दे" उसके चेहरे पर एक क्रूर मुस्कराहट आई, "कहीं फीस वसूल करते हैं !"

"मदान ने भी ऐन यही सोचा होगा पचास हजार रुपए की फीस मुकर्रर करते हुए ।"

"क्या ?"

"यही मुर्दे कहीं फीस वसूल करते हैं !"

वो चौंका । उसके चेहरे पर अविश्वास के भाव आए ।

"मदान साहब" फिर वह धीरे-से बोला, "मेरे साथ यूं पेश नहीं आ सकते ।"

"क्यों? तू आसमान से उतरा है ? तू उसका सगेवाला है ?"

"मैंने उनकी बहुत खिदमत की है ।"

"फीस लेकर । फोकट में भी की हो तो बोल ।"

वो खामोश रहा । उसके चेहरे पर चिंता के भाव गहराने लगे ।

"अब अगवा की कहानी बोल ।"

"मुझे कुछ नहीं मालूम ।"

"अपने अंजाम से बेखबर तो होगा नहीं तू !"

"तू मेरा भी खून करेगा ?"

"खून खराबा मेरा काम नहीं ।"

"ये तब कह रहा है जबकि अभी पांच मिनट पहले एक खून करके हटा है ।"

"बक मत । मैंने सेल्फ डिफेंस में गोली चलाई थी ।"

"वो क्या होता है ?"

"आत्मरक्षा। अपनी जान बचाने के लिए गोली चलाई थी मैंने हामिद पर। विल्कुल अनपढ़ है ?"

"खून नहीं करेगा तो क्या करेगा मेरा ?"

"मैं तुझे पुलिस के हवाले करूगा।"

"क्यों ? मैंने क्या किया है ! खून-खच्चर तो तूने फैलाया है।"

"साले ! मेरा अगवा नहीं किया ? जानता नहीं आई पी सी में कितनी सजा है अगवा की ?"

"हें.. हें .. हें। तू कोई औरत है ! तुझे कोई जबर-जिना का खतरा था ! तेरी कोई इज्जत लुट रही थी !"

"साले, मसखरी करता है !"

"मौजूदा हालात में पुलिस को यकीन दिला लेगा कि तेरा अगवा हुआ है।"

"क्या हुआ है हालात को ?"

"तुझे नहीं पता ? भीतर एक लाश पड़ी है जिसे लाश तूने बनाया है। मैं बंधा हुआ हूं। तू आजाद है। फिर भी तेरा अगवा हुआ है। हा हा हा।"

मेरा खून खौल उठा। रिवॉल्वर की नाल की एक भरपूर दस्तक मैंने उसके नाक पर दी। वो पीड़ा से बिलबिला उठा। वैसे ही मैंने उसके कत्थई दांत खटखटाए, उसकी खोपड़ी ठकठकाई।

"अल्लाह !" वो कराहता हुआ बोला, "अल्लाह !"

"मार के आगे भूत भागते हैं।" मैं क्रूर स्वर में बोला, "पलस्तर उधेड़ दूंगा मार-मार के।"

"भैय्ये तू नाहक मेरे पर जुल्म ढा रहा है। अल्लाह कसम, मुझे कुछ नहीं मालूम। मैंने लेना क्या था मालूम करके ! एक काम मिला। मैंने कर दिया। उसकी गहराई में जाने की मुझे क्या जरूरत है ?"

"हां। अब सुर में बोला है।"

वो खामोश रहा।

"सिगरेट पिएगा ?"

"फंकी लगाऊंगा।"

मैंने उसकी जेब से तंबाकू की पुड़िया बरामद की और उसमें से कुछ तंबाकू उसके खुले मुंह में टपकाया। खुद मैंने एक सिगरेट सुलगा लिया।

"तो वाकई तुझे नहीं मालूम" मैं बोला "कि मेरे अगवा की क्या जरूरत आन पड़ी थी ?"

"नहीं मालूम।" वो पुरजोर ढंग से इनकार में सिर हिलाता हुआ वोला, "कसम उठवा लो।"

"हाल कैसा है आजकल तेरे बाप का ? कारोबार कैसा चल रहा है ?"

"हाल खराब है। कारोबार मंदा है।"

"अच्छा ! ऐसा क्यों ?"

"कई पंगों में फंसा हुआ है, मदान साहब ! मुख्तलिफ किस्म के दबाव हैं उस पर जिन्हें वो झेल नहीं पा रहा।"

"इतने बड़े दादा की बाबत ये बात कह रहा है ?"

वो खामोश रहा ।

"जवाब दे !"

उसने तंबाकू में रची-बसी थूक की एक पिचकारी परे दीवार की ओर फेंकी और फिर धीरे-से बोला, "मदान के वारे में क्या जानता है ?"

"खास कुछ नहीं ।"

"तभी तो । खास कुछ जानता होता तो मुझे मालूम होता कि वो बड़ा दादा नहीं खुशकिस्मत दादा है ! उसकी ताकत, मेहनत या सूझ ने नहीं, उसकी तकदीर ने उसे कुछ खास बुलंदियों तक पहुंचाया था और अब उसकी तकदीर ही उसको दगा दे रही है । और तकदीर पर भैय्ये कहां जोर चलता है किसी का वो सिर्फ दिल्ली का दादा है, उन बड़े दादाओं के सामने उसकी क्या औकात है जो सारे हिन्दोस्तान पर बल्कि सारे एशिया पर छाए हुए हैं ।"

"ऐसे बड़े गैंगस्टर भी उसकी आंख में डंडा किए हैं ?"

"पूरा पूरा ।"

"क्यों ?"

"उनकी माकूल खिदमत नहीं की । उनसे बाहर जा के अपना वजूद बनाने की कोशिश की । वो खफा हो गए । नतीजतन दो नम्बर के तमाम धंधों से मदान को अपना हाथ खींचना पड़ा । न खींचता तो बड़े दादाओं के हाथों कुत्ते की मौत मरता ।"

"और ?"

"और ऊपर से सरकार से पीछे पड़ गई । टैक्स वाले पीछे पड़ गए । कुछ गलत किस्म की लीडरान की शह पर कई सरकारी महकमात में ऐसे पंगे फंसा बैठा कि दिल्ली के लाट साहब तक खफा हो गए उससे और ऐसे ऐसे हुक्म फरमा बैठे कि आइन्दा दिनों में मदान साहब को रोटी के लाले पड़ जाएं तो बड़ी बात नहीं ।"

"कमाल है ।"

उसने थूक की एक और पिचकारी छोड़ी ।

"और ?" मैं मंत्रमुग्ध सा बोला ।

"और कोढ़ में खाज जैसा काम ये किया" वो धीरे से बोला, "कि बुढौती में ऐसी कड़क नौजवान छोकरी से शादी कर ली जो हीरे-जवाहरात जड़ी पौशाकें पहनती है, सोने का निवाला खाती है ।"

"कितनी उम्र होगी मदान की ?"

"पचपन के पेटे में तो शर्तिया है ।"

"और छोकरी ? "

"वो है कोई तेईस चौबीस साल की ।"

"बहुत खूबसूरत है ?"

"ताजमहल देखा है ?"

"हां ।"

"कैसा है ?"

"ओह ! इतनी खूबसूरत है ?"

"इससे ज्यादा । इतनी ज्यादा खूबसूरत है कि देखकर ही यकीन आता है ।"

"मैं देखूंगा ।"

"बस देख ही पाएगा । और उसे भी अपनी खुशकिस्मती समझना ।"

"पहलवान ! इस पंजाबी पुत्र की" मैंने अपनी छाती ठोकी, "खुशकिस्मती का जुगराफिया बड़ा टेढ़ा है । खासतौर से खूबसूरत औरतों के मामले में ! आखों में ऐसा मिकनातीसी सुरमा लगाता हूं कि एक बार कोई आंखों में झांक ले तो कच्चे धागे से बंधी पीछे खिंची चली आए । बल्कि कच्चे धागे की भी जरूरत नहीं ।"

वो खामोश रहा । प्रत्यक्षत: मेरी वैसी किसी खूबी से उसे कोई इत्तफाक नहीं था ।

"शादी क्यों की ?" मैंने नया सवाल किया, "खूबसूरत औरत को हासिल करने के लिए मदान जैसे अण्डरवर्ल्ड डान कहीं शादी के बंधन में बंधते हैं !"

"नहीं बंधते । मदान साहब की भी ऐसी कोई मर्जी नहीं थी । लेकिन और किसी तरीके से वो छोकरी पुट्ठे पर हाथ ही नहीं रखने देती थी मदान साहब को । उसको हासिल करने की वाहिद शर्त शादी थी मदान साहब के सामने ।"

"अपना जलाल दिखाया होता ।"

"दिखाया था । काम न आया । मदान साहब उसकी पीठ पीछे गरजता था कि उठवा दूंगा, बोटी-बोटी काटकर चील कौवों को खिला दूंगा, ये कर दूंगा, वो कर दूंगा, लेकिन जब छोकरी के सामने पड़ता था तो भीगी बिल्ली की तरह मिमियाने लगता था । जादू कर दिया था अल्लामारी ने मदान साहब पर । सात फेरों के लपेटे में लेकर ही मानी कमबख्त मदान साहब को ।"

"थी कौन ? करती क्या थी ?"

"चिट्ठियां ठकठकाती थी पुनीत खेतान के दफ्तर में ।"

"टाइपिस्ट थी ?"

"यही होगी अंग्रेजी में ।"

"और ये पुनीत खेतान कौन साहब हुए ?"

"खेतान साहब मदान साहब का कोई नावें-पत्ते का सलाहकार है और कोरट कचहरी की भी कोई सलाह मदान साहब को चाहिए होती है तो मदान साहब उसी के पास जाता है ।"

"फाइनांशल एंड लीगल एडवाइजर !"

"वही होगा अंग्रेजी में ।"

"इतनी खूबसूरत लड़की उसकी मुलाजमत में थी तो उसने नहीं हाथ रखा उस पर ?"

"कोशिश तो जरूर की होगी । खीर का कटोरा सामने पाकर कोई उसमें चम्मच मारने की कोशिश से बाज आता है !"

"यानी कि कोशिश करने वाले कई थे लेकिन वो खीर खाई मदान साहब ने ही ।"

"यही समझ ले ।" वह एक क्षण ठिठका और फिर बोला, "वैसे मुझे तो अफसोस ही हुआ था !"

"क्यों ?"

"अरे, इतना वड़ा दादा, इतना बड़ा साहब, गिरा तो एक चिट्ठियां ठकठकाने वाली छोकरी की जूतियों में जाकर ! और छोकरी भी कम्बख्त ऐसी खर्चीली कि देख लेना मदान साहब को नंगा करके छोड़ेगी । लाखों रुपये से कम कीमत की चीज की ख्वाहिश ही नहीं करती पट्ठी । और वो भी मदान साहब की ऐसी हालत के दिनों में जबकि न धंधा साथ दे रहा है न तकदीर !"

"विनाशकाले विपरीत बुद्धि ।"

"क्या ?"

"कुछ नहीं । तो पट्ठा बुझती चिलम में फूंके मार-मार के नौजवानी के मजे लूट रहा है । हजम हो या ना हो, खीर खा रहा है ।"

"हां । फिलहाल तो बैठा है सांप की तरह कुंडली मारकर हुस्नो-शबाब की दौलत पर ।"

"वाह, खलीफा ! बहुत उम्दा जुमला कसा । और अभी कहते हो कि अनपढ़ हूं ।"

वो दांत निकालकर एक भद्दी-सी हंसी हसा ।

"यूं तो" मैं बोला, "तेरा उम्रदराज बॉस कभी हुस्न के सैलाब में बह जाएगा, जोबन के पहलू में दम तोड़ देगा ।"

"कोई बड़ी बात नहीं ।"

"पहले तो वो देवनगर में कहीं रहता था । अब भी वहीं रहता है ?"

"नहीं । अब तो वो एक होटल में रहता है ।"

"कौन से होटल में ?"

"जो बाराखम्भा रोड पर नया बना है । उसकी सबसे ऊपरली मंजिल तमाम की तमाम मदान साहब के कब्जे में है ।"

"और कौन रहता है वहां ?"

"कोई नहीं ।"

"भाई भी नहीं ?"

"वो तो अलग कोठी में रहता है ।"

"कहां ।"

"मेटकाफ रोड । कोठी नंबर दस ।"

"जहां कि तू मुझे दिन के ग्यारह बजे पहुंचाने वाला था ?"

"हां ।"

"छोटे भाई का नाम क्या है ?"

"शशिकांत ।"

"शादीशुदा है ?' "

"नहीं ।"

"वहां मेटकाफ रोड पर अकेला रहता है ?"

"हां ।"

"भाई के पास क्यों नहीं रहता ?"

"वजह नहीं मालूम ।"

"अब साथ नहीं रहता या पहले भी साथ नहीं रहता था ?"

"जहां तक मुझे मालूम है, पहले भी साथ नहीं रहता था ।"

"मेरे अगवा का हुक्म तुझे लेखराज मदान से मिला लेकिन मुझे अगवा करके तूने मुझे उसके छोटे भाई की कोठी पर पहुंचाना है । ऐसा क्यों ? उसी के पास क्यों नहीं जिसने कि अगवा का हुक्म दिया ?"

"पता नहीं ।"

"सुर बदल रहा है, पहलवान । एकाध दांत हलक में उतर गया नहीं देखना चाहता तो पहले वाले सुर का ही रियाज रख ।"

"अल्लाह कसम, नहीं पता ।"

"मैं मालूम करूंगा ।"

"तू उससे मिलने जाएगा ?"

"ये भी कोई पूछने की बात है ! मैं तो मरा जा रहा हूं ये जानने के लिए कि क्यों वो मेरे अगवा का तलबगार है।"

"वो बताएगा ?"

"राजी से तो नहीं बताएगा ।"

"तू तो यूं कह रहा है जैसे तू मदान साहब के साथ कोई जोर-जबरदस्ती कर सकता है ।"

"ठीक पहचाना ।"

उसके चेहरे पर विश्वास के भाव न आए ।

"जिन्दा लौट के नहीं आएगा ।" वो बोला ।

"यकीनन आऊंगा । साथ में इस बात की भी मुकम्मल जानकारी लेकर आऊंगा कि जिसको तू ताजमहल का दर्जा दे रहा है, वो ताजमहल जैसी अजीमोश्शान है भी या नहीं ।"

"भैय्ये, अगर तेरे ऐसे ही इरादे हैं तो तू मदान साहब की गोली से नहीं मरेगा, तू और तरीके से मरेगा ?"

"और तरीके से कैसे ?"

"तू मदान साहब की हुस्नपरी पर निगाह डालेगा और गश खा जाएगा । फिर पछाड़ खाकर उसके कदमों में गिरेगा और इस फानी दुनिया से रुखसत फरमा जाएगा ।"

"देखेंगे ।" मैं लापरवाही से बोला और उठ खड़ा हुआ ।

"मेरा क्या होगा ?" एकाएक वो व्याकुल भाव से बोला ।

"कुछ नहीं होगा । थोड़ा वक्त तुझे यहां यूं ही गुजारना पड़ेगा । मैं तेरे बॉस को तेरी खबर करूंगा, फिर आगे वो ही फैसला करेगा कि तेरा क्या होगा ।"

"वो मुझे जान से मार डालेगा ।"

"काहे को ! तूने क्या किया है ?"

"मैं काम को अंजाम जो न दे सका । मैं तेरे को उस तक पहुंचा जो न सका ।"

"तो क्या हुआ ? मैं खुद ही पहुंच रहा हूं । समझ ले तेरी खातिर मैं उसके हुजूर में खुद पेश हुआ ।"

"लेकिन..."

"तुझे इस बात पर शक है कि मैं तेरे बॉस के पास जा रहा हूं ।"

"वो बात तो नहीं है लेकिन..."

"क्या लेकिन ? तू क्या चाहता है कि मैं तेरे को आजाद कर दूं और ये रिवॉल्वर तुझे थमा दूं ताकि अपने ओरिजिनल प्रोग्राम के मुताबिक तू मुझे बकरी की तरह हांक के अपने बाप के खूटे से बांध आए और पचास हजार रुपए की फीस वसूल कर ले । यही चाहता है न ?"

"चाहता तो मैं यही हूं ।" वो बड़ी संजीदगी से बोला, लेकिन भैय्ये, ऐसा हो तो नहीं सकता न !"

"सोच कोई तरकीब ।"

वो खामोश रहा।

"तंबाकू थूक।" मैंने आदेश दिया।

वो असमंजसपूर्ण ढंग से मेरी ओर देखने लगा।

मैंने जेब से रूमाल निकालकर उसका एक गोला सा बनाया और बोला, "मुंह खोल।"

तब मेरा इरादा उसकी समझ में आया।

"मेरा दम घुट जाएगा।" उसने आर्तनाद किया।

"नहीं घुटेगा।"

"मैं मर जाऊंगा।"

"नहीं मरेगा।"

"भैय्ये, रहम कर, मैं..."

"खलीफा, दिन चढे तक तेरी हालत कितनी भी बद क्यों न हो जाए, उस हालत में तू फिर भी नहीं पहुंचेगा जिसमें बाहर गलियारे में पड़ा तेरा जोड़ीदार पहुंचा हुआ है।"

मैंने रूमाल जबरन उसके मुंह में ठूंस दिया।

फिर मैंने उसकी जेबें टटोली।

एक जेब से एक लंबा, रामपुरी, कमानीदार चाकू बरामद हआ। चाकू देखकर मुझे अपनी अक्ल पर बहुत अफसोस हुआ। तलाशी का वो काम मुझे तब करना चाहिए था जबकि वो टॉयलेट के फर्श बेहोश पड़ा था। वो खतरनाक चाकू उसके हक में बाजी पलट सकता था लेकिन गनीमत थी कि ऐसा हुआ नहीं था।

यानी कि इस पंजाबी पुत्तर की फेमस लक ने अभी उसका साथ देना बंद नहीं किया था।

उसकी एक और जेब से चौंतीस सौ रूपये के नोट बरामद हुए।

"पहलवान।" मैं बोला ये उस झापड़ की एवज में कब्जा रहा हूं जो तूने मुझे मारा था।"

उसकी आँखें अपनी कटोरियों में बड़ी बेचैनी से घूमी।

गैरेज में खड़ी कार की चाबियां मैंने गलियारे में जाकर हामिद की जेब से बरामद कीं। इतनी रात गए मुझे आसानी से कोई सवारी मिलने वाली जो नहीं थी।

आखिर में मैंने हर उस स्थान को रगड़-रगड़ कर पोंछा जहां से मेरी उंगलियों के निशान बरामद होने की सम्भावना हो सकती थी।

Chapter 2

वातावरण में भोर का उजाला फैल रहा था जबकि मैंने अपने अपहरणकर्ताओं से झपटी एम्बेसडर बाराखम्बा रोड के उस होटल की लॉबी में ले जाकर रोकी, बकौल हबीब बकरा, जिसके पेंथाउस अपार्टमेंट में लेखराज मदान नाम का सुपर गैंगस्टर रहता था ।

भीतर पहुंचने पर मुझे मालूम हुआ कि तेरहवीं मंजिल पर स्थित उसके पेंथाउस तक एक लिफ्ट सीधी जाती थी जो कि उस वक्त मजबूती से बंद थी ।

"ये लिफ्ट" पूछने पर रिसेप्शन पर मौजूद क्लर्क ने मुझे बताया, "मदान साहब अपने अपार्टमेंट से एक बटन दबाते हैं तो खुलती है ।"

"ऐसा कब होता है ?" मैंने पूछा ।

"नौ बजे से पहले तो कभी नही होता ।"

"ऐसा क्यों ?"

"मदान साहब देर से सो के उठते हैं । वो नौ बजे से पहले डिस्टर्ब किया जाना पसन्द नहीं करते ।"

"रास्ता यही एक है ऊपर पहुंचने का ?"

"जी हां ।"

"लेकिन मेरी तो उनसे मुलाकात बहुत जरूरी है । बहुत ही जरूरी है । हकीकत ये है कि वो ही पसंद नहीं करेंगे कि मैं देर से उन्हें रिपोर्ट करूं ।"

"ऐसा है तो आप" उसने काउंटर पर पड़ा एक फोन मेरी तरफ सरका दिया, "उन्हें फोन कर लीजिए ।"

"गुड ।" मैंने रिसीवर उठाकर हाथ में लिया, "नम्बर बोलो ।"

"वो तो" क्लर्क मुस्कराया, "आपको मालूम होना चाहिए ।"

मैंने हौले से रिसीवर वापस क्रेडल पर रख दिया ।

यानी कि राष्टपति भवन में दाखिला आसान था दादा लोगों की डेन में दाखिला मुश्किल था ।

नौ बजे लौटने के अलावा कोई चारा नहीं था ।

नौ बजने में अभी तीन घंटे बाकी थे ।

मैं मोतीबाग जाकर हबीब बकरे से वहां का नम्बर उगलवा सकता था, आखिर उसने फोन पर मदान से बात की थी, लेकिन एक तो उसमें भी ढेर वक्त लगता और दूसरे मुझे फिर ऐसे घर में कदम डालने पड़ते जहां कि गोलियों से बिंधी एक लाश मौजूद थी ।

वक्तगुजारी के लिए मैंने अपने दोस्त मलकानी के पास जाने का फैसला किया जो कि करीब ही पहाड़गंज में एक साधारण सा होटल चलाता था ।

नौ बजे तक मैं वापस होटल की लॉबी में पहुंचा तो तब मुझे सीधे पेंथाउस जाने वाली लिफ्ट लॉबी में खड़ी मिली जिसमें सवार होने से मुझे किसी ने न रोका ।

सुपरफास्ट लिफ्ट पलक झपकते तेरहवीं मजिल पर पहुंच गई ।

मैं लिफ्ट से निकला तो वहां सामने मुझे एक ही दरवाजा दिखाई दिया जिसकी चौखट में कॉलबैल का पुश लगा

हुआ था । मैंने पुश को दबाया और प्रतीक्षा करने लगा ।

कुछ क्षण बाद दरवाजे में एक झरोखा सा खुला और मुझे उसमें से दो हिरणी जैसी काली कजरारी मदभरी आंखें दिखाई दीं ।

"यस" साथ ही एक खनकता हुआ स्त्री स्वर सुनाई दिया ।

"मदान साहब से मिलना है ।" मैं बोला ।

"क्यों मिलना है ?"

"उनके लिए एक संदेशा है ।"

"किसका ?"

"हबीब बकरे का ।"

"किसने मिलना है ?"

"बंदे को सुधीर कोहली कहते हैं ।"

"वेट करो ।"

झरोखा बंद हो गया ।

मैं प्रतीक्षा करने लगा ।

दो मिनट बाद दरवाजा खुला ।

दरवाजे पर रेशमी गाउन में लिपटी हुई रेशम जैसी ही अनिद्य सुंदरी प्रकट हुई । उस पर एक निगाह पड़ते ही आपके खादिम की हालत बद हो गई और और फिर बद से बदतर हो गई । अगर वही औरत लेखराज मदान की बीवी थी तो हबीब बकरे ने गलत नहीं कहा था कि मैं उस पर एक निगाह डालूंगा और गश खा जाऊंगा, फिर पछाड़ खाकर उसके कदमों में गिरूंगा और इस फानी दुनिया से रुखसत फरमा जाऊंगा ।

मेरी पसंद की हर चीज उसमें थी, न सिर्फ थी, ढेरो में थी ।

लंबा कद । छरहरा बदन । तनी हुई सुडौल भूरपूर छातियां जो अंगिया के सहारे की कतई मोहताज नहीं थीं और अगर खाकसार की निगाहबीनी गलत नहीं थी तो अपने रेशमी गाउन के नीचे अंगिया वो पहने भी नहीं हुई थी । गोरे चिट्टे हाथ-पांव । खूबसूरत नयन-नक्श । पतली कमर । भारी नितंब । सरू सा लंबा कद । सुराहीदार गर्दन । रेशम से मुलायम सुनहरी रंगत लिये भूरे बाल। हुस्न की दौलत से मालामाल होने के अभिमान से दमकता चेहरा । कोई खराबी थी तो वो ये कि वो इतने शानदार जिस्म को लिबास से ढके हुए थी ।

उस घड़ी मैं फैसला नहीं कर पा रहा था कि उस मुजस्सम हुस्न की शान में मेरे मुंह से आह निकलनी चाहिये थी या वाह !

या शायद कराह !

"हो गया ?" वो अपने सुडौल मोतियों जैसे दांत चमकाती हुई उसी खनकती आवाज में बोली जो कुछ क्षण पहले मैंने बंद दरवाजे के पार से सुनी थी ।"

"क्या ?" मैं हड़बड़ाकर बोला ।

"ब्रेकफास्ट ।"

"जी !"

"आंखों ही आंखों में हज्म तो कर रहे हो मुझे ।"

"ओह ! खाकसार आपकी पैनी निगाह की दाद देता है और कबूल करता है कि ये गुनहगार आंखें उसी काम को अंजाम दे रही थीं जिसका कि आपने जिक्र किया ।"

"ब्रेकफास्ट का !" वो अपने दांतों से अपना निचला होंठ चुभलाती हुई तनिक कुटिल स्वर में बोली ।

"जी हां ।"

"पेट भर गया ?"

"पेट तो भर गया लेकिन नीयत नहीं भरी । अब बंदा ब्रेकफास्ट के फौरन बाद, हाथ के हाथ लंच और डिनर का भी तमन्नाई है ।"

"इतना खाना इकट्ठा खाओगे तो बदहजमी हो जाएगी ।"

"तो क्या होगा ?"

"मर जाओगे ।"

"तो क्या बुरा होगा ! खाली पेट मरने से तो ऐसी मौत बेहतर ही होगी ।"

"खुशबू का लुत्फ उठाओ और जायके के ख्वाब लो ।" वो अपना एक नाजुक हाथ चौखट से हटाकर अपने कूल्हे के खम पर टिकाती हुई बोली, "तुम्हारी किस्मत में बस इतना ही लिखा है ।"

"हू नोज, मैडम ! मर्द की किस्मत को तो देवता नहीं जान पाते ।"

वो हंसी और फिर बोली, "नाम क्या बताया था तुमने अपना ?"

"सुधीर कोहली" मैं तनिक सिर नवाकर बोला, "दि ओनली वन ।"

"कोई टॉप के हरामी मालूम होते हो ।"

"दोनों बातें दुरुस्त । हरामी भी हूं और टॉप का भी । आम, मामूली हरामियों से तो यह शहर भरा पड़ा है । टॉप का हरामी एक ही है राजधानी में और आसपास चालीस कोस तक । सुधीर कोहली । दि ओनली वन ।"

"बातें बढिया करते हो ।"

"और भी कई काम बढ़िया करता हूं । कभी आजमाकर देखिए ।"

"देखेंगे" एकाएक वह चौखट पर से हटी, "कम इन एंड सिट डाउन । साहब आते हैं ।"

"थैंक्यू ।" मैंने भीतर कदम रखा तो उसने मेरे पीछे अपार्टमेंट के इकलौते प्रवेशद्वार को मजबूती से बंद कर दिया । बड़े ऐश्वर्यशाली ढंग से सुसज्जित ड्राइंगरूम की ओर मेरे लिए हाथ लहराती हुई वो पिछवाड़े का एक दरवाजा खोलकर मेरी निगाहों से ओझल हो गई ।

मैंने बैठने का उपक्रम न किया मैंने डनहिल का एक सिगरेट सुलगा लिया और मन ही मन उसके नंगे जिस्म की कल्पना करते हुए मदान की प्रतीक्षा करने लगा ।

मैं नया सिगरेट सुलगा रहा था जबकि मदान ने वहां कदम रखा ।

मदान एक लाल भभूका चेहरे वाला विशालकाय व्यक्ति था । उसके तीन-चौथाई बाल सफेद थे, कनपटी पर लंबी सफेद कलमें थीं लेकिन दाढ़ी-मूंछ सफाचट थीं । उसकी आंखों के लाल डोरे, आंखो के नीचे थैलियों की तरह

लटकती खाल और खमीरे की तरह फूला हुआ अति विशाल पेट उसके दारू-कुकड़ी का भारी रसिया होने की चुगली कर रहा था। वो एक तम्बू जैसा महरून कलर का ड्रेसिंग गाउन पहने था।

उस घड़ी में उस पहाड़ जैसे जिस्म के नीचे उस नाजुक बदन हसीना की कल्पना - बदमजा कल्पना किये बिना न रह सका जो अभी-अभी वहां बिजली की तरह चमक के गई थी।

मैंने कभी एक मेंढक की कहानी पढ़ी थी जो शहजादी द्वारा चूमे जाने पर खूबसूरत नौजवान बन गया था। मदान उस घड़ी मुझे एक ऐसे विशालकाय मेंढक जैसा लगा जिस पर शहजादी के चुंबन का भी कोई असर नहीं हुआ था।

वो मेरे से बगलगीर होकर मिला।

मुझे बहुत हैरानी हुई।

मुझे इस खौफ ने फौरन अलग हो जाने के लिए प्रेरित किया कि कहीं मैं उसकी बगल में ही न समा जाऊं।

"कोल्ली !" वो फटे बांस जैसी आवाज में बोला, "तेरा इस घड़ी यहां मेरे सामने मौजूद होना ही साबित करता है कि मेरे पहलवान और उसके शागिर्द की सीटी वज्ज गई।"

"दुरुस्त।" मैं सरल स्वर में बोला।

"कैसा है अपना हबीब बकरा ?"

"जिन्दा है।"

"शागिर्द ?"

"मर गया।"

"कहां ?"

"मोतीबाग वाली इमारत में।"

"पहलवान भी वहीं है ?"

"नहीं।"

"वो कहां है ?"

"मेरे कब्जे में।"

मैंने सिगरेट का लंबा कश लगाया।

"यानी कि बताना नहीं चात्ता।"

"जाहिर है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वो अगवा का अपराधी है। अगवा एक संगीन जुर्म है। उस संगीन जुर्म की गंभीरता को कम करने के लिए और हो सके तो सजा से बचने के लिए उसे बताना होगा कि ऐसा उसने किसके कहने पर किया था।"

"वो मेरा नाम लेगा ?"

"यकीनन लेगा। नहीं लेगा तो मैं उसकी ऐसी दुक्की पीपीटंगा कि उसकी आत्मा त्राहि-त्राहि कर उठेगी। सारी

पहलवानी भूल जाएगा ।"

"कोल्ली ! तू मुझे फंसायेगा ?"

"जिसकी करतूत होगी, वो ही भुगतेगा ।"

"कोल्ली ! तू मेरा पंजाबी भ्रा..."

"अच्छा ।"

"मेरा पंजाबी भ्रा हो के तू मेरे साथ ऐसा.."

"कुत्ते का कुत्ता बैरी ।"

"तभी इतना भौंक रहा है !"

"अभी तो काटूंगा भी ।"

"तू मुझे काटेगा !"

"जब चलकर यहां आया हूं तो कुछ तो करूंगा ही ।"

"वहम है तेरा, कोल्ली पुत्तर ।"

"क्या ?"

"कि तू यहां आ के कुछ कर लेगा । गलती की तूने यहां आ के ।"

"अच्छा !"

"हां आ तो गया । अब जाएगा कैसे ?"

"'वैसे ही जैसे आ गया हूं ।क्या मुश्किल है ?"

उसके चेहरे पर उलझन के भाव आए । उसने घूरकर मुझे देखा ।

"मदान दादा, मैंने एक पूर्वनिर्धारित वक्त पर कहीं वापस पहुंचना है । जीता-जागता । सही-सलामत न पहुंचा तो मेरे साथी तुम्हारे पहलवान को सीधे पुलिस कमिश्नर के पास ले के जाएंगे जहां वो गा गाकर बता रहा होगा कि कैसे उसने तुम्हारे हुक्म पर मेरा अगवा किया था । पुलिस बहुत खुश होगी तुम्हारी गर्दन नापने का मौका पाकर ।"

"यार, तू तो खफा हो रहा है ।"

"नहीं मैं तो खुशी से पागल हुआ जा रहा हूं । मेरी नन्हीं सी जान इतने बड़े दादा के किसी काम आए, इससे ज्यादा खुशी की बात और मेरे लिए क्या हो सकती है !"

"विल्कुल ।"

मैंने हकबका कर उसकी तरफ देखा ।

"क्या बिल्कुल ?" मैं बोला ।

"तेरी जान मेरे कम्म आए । इसीलिए तो पहलवान को तेरे पास भेजा था ।"

"क्या किस्सा है, मदान दादा ? "

"किस्सा जानना चात्ता है ?"

"तड़प रहा हूं जानने के लिए तभी तो सुबह-सवेरे यहां आया हूं ।"

"सिगरेट कौनसी पीता है ?"

मैंने उसे डनहिल का पैकेट दिखाया ।

"एक मुझे दे ।"

मैंने उसे सिगरेट दिया और लाइटर से उसे सुलगाया ।

उसने बड़े तजुर्बेकार अंदाज से सिगरेट का लंबा कश लगाया और नथुनी से धुंए की दोनाली छोड़ी ।

"बैठ ।" वो बोला ।

"ऐसे ही ठीक है ।" मैं शुष्क स्वर में बोला ।

"ओए, बै जा मा सदके । क्यों इतना खफा हो रहा है ?" उसने बांह पकडकर जबरन मुझे एक सोफे पर बिठाया और स्वयं भी मेरे सामने बैठ गया ।

"थुक दे गुस्सा ।" वह बोला ।

"क्या कहने । तुम मेरी जान के पीछे पड़े हो और मैं एतराज भी न करूं ।"

"ओए कोल्ली पुत्तर । ओए मा सदके, मेरी तेरे से कोई जाती अदावत थोड़े ही है ।"

"जाती अदावत नहीं है" मैंने व्यंगपूर्ण स्वर में दोहराया, "फिर भी मेरी जान के पीछे पड़े हो क्योंकि गाहे-बगाहे अपने किसी पंजाबी भाई की जान न लो तो तुम्हारी जान में जान नहीं आती ।"

"यारा, तू तो फिर खफा हो रहा है ।"

मैंने भुनभुनाते हुए सिगरेट का लंबा कश लगाया ।

"देख ।" उसने मुझे समझाया, "सुन । ईद पर बकरा काटते हैं कि कि नहीं ? काटते हैं न ? क्यों काटते हैं ? कुर्बान करना होता है उसे । ऐसा करने वाले की बकरे से कोई जाती अदावत होती है ? बोल होती है ?"

"मैं कुर्बानी का बकरा नहीं ।"

"नहीं है । मुझे मालूम है । तू तो मेरा पंजाबी भ्रा है । अब फिर मत कह देना कुत्ते का कुत्ता बैरी ।" वो हा हा करके हंसा, "वीर मेरे मैंने तो एक मिसाल दी थी ।"

"मिसाल छोड़ो । मिसालें सुबह-सवेरे मेरी समझ में नहीं आतीं । असली बात कर ।"

"वो भी करते हैं । चा पिएगा ?" फिर मेरे हां या न करने से पहले ही उसने उच्च स्वर में आवाज लगाई, "मधु ।"

वही परीचेहरा हसीना वहां प्रकट हुई ।

"ये मेरी बीवी है । मधु ।"

मैंने सिर नवाकर शहद से कहीं मीठी मधु का अभिवादन किया ।

वो बड़े मशीनीअंदाज से मुस्कराई ।

"ये अपना कोल्ली है ।" वो मधु से बोला, "सुधीर कोल्ली । जसूस है । प्राइवट किस्म का बहुत बड़ी-बड़ी

जसुसियां कर चुका है । सारी दिल्ली में मशहूर है । अपना पंजाबी भ्रा है । चा पिला इसे ।"

मधु सहमति में सिर हिलाती हुई वहां से चली गई ।

"कैसी है ?" मदान ने सगर्व पूछा ।

"शानदार ।" मेरे मुंह से अपने आप निकल गया, "तौबाशिकन ।"

"मेरा माल है । सालम । कोल्ली" उसके स्वर में चेतावनी का पुट आ गया, "नीयत मैली नहीं करनी ।"

"सवाल ही नहीं पैदा होता । मुझे क्या दिखाई नहीं देता कि हूर की रखवाली के लिए कितना बड़ा लंगूर बैठा है ।"

"क्या !"

"कुछ नहीं ।" मैं एक क्षण ठिठका और बोला, "वैसे एक बात मैं फिर भी कहना चाहता हूं ।"

"क्या ?"

"मेरी राय में खूबसूरत औरत का दर्जा ताजमहल जैसा होता है । उसकी खूबसूरती का आनन्द लेने का हक हर किसी को होना चाहिए । पति नाम का कोई सांप उसका मालिक बनकर उसकी छाती पर जमकर बैठ जाए, यह मुनासिब बात नहीं ।"

"पागल हुआ है ?" उसने तत्काल एतराज किया, "बेवकूफ बनाता है ! गुमराह करता है । अरे, मेरा माल, मेरा माल है । मेरे माल पर कोई दूसरा कैसे काबिज हो सकता है ?"

"सोशलिज्म में मेरा-मेरा नहीं किया जाता ।"

"बातें जितनी मर्जी बना ले । आखिर पढ़ा-लिखा है लेकिन याद रखना । नीयत मैली नहीं करनी ।"

"बिल्कुल नहीं करनी ।"

कहना आसान था । हकीकतन इतनी शानदार औरत को देखकर जिसकी नीयत मैली न ही वो या हिजड़ा होगा या नपुंसक ।

अप्सरा चाय की ट्रे के साथ वहां पहुंची और हमारे सामने बैठकर चाय बनाने लगी । जितनी देर वो वहां रुकी, उतनी देर मैं अपलक उसे देखता रहा और मदान अपलक मुझे देखता रहा ।

तभी तो कहते हैं कि खूबसूरत औरत के पति की एक जोड़ी आंखें पीठ पीछे भी होनी चाहिए ।

उसने चाय हम दोनों को सर्व की और फिर ट्रे में रखी एक डिबिया उठाकर अपने पति को सौंपी ।

"क्या है ?" मदान बोला ।

"देखो ।" वो बोली ।

उसने डिबिया को खोला । भीतर मेरी भी निगाह पड़ी । भीतर हीरों से जड़े दो टोप्स जगमगा रहे थे । सात-सात हीरे । एक मिडल में और छः उसके गिर्द दायरे की शक्ल में । लेकिन एक में से एक हीरे की जगह खाली थी । जहां हीरा होना चाहिए था वहां खाली छेद दिखाई दे रहा था ।

"एक हीरा निकल के गिर गया है ।" वो बड़े अधिकारपूर्ण स्वर में बोली, "लगवा के दो ।"

"कैसे गिर गया ?" मदान बोला ।

"क्या पता कैसे गिर गया !" वो झुंझलाई, "ढीला पड़ गया होगा ।"

"ढूंढ ले । यहीं कहीं होगा ।"

"ढूंढ लिया । नहीं है । नया लगवा के दो ।"

"आज ही ?"

"अभी । मैंने पहनने हैं । आज नहीं लगता तो नए टोप्स ला के दो ।"

"ठीक है, ठीक है । आज ही लग जाएगा हीरा लेकिन दोनों क्यों दे रही है ? वो ही दे जिसमें हीरा लगना है ।"

"सारे चेक करने हैं । कोई और भी लूज हो सकता है ।"

"अच्छा !"

वो उठकर चला गई ।

"चा पी, कोल्ली ।" मदान फिर मेरी तरफ आकर्षित हुआ ।

मैंने चाय की एक चुस्की ली और बोला, "तुम्हारा भाई मेरा इंतजार कर रहा होगा ।"

"क्या ?" वह सकपकाया ।

"ग्यारह बजे । अपनी कोठी पर । मैटकाफ रोड । दस नम्बर । भूल गए !"

"ओह ! तो सब कुछ बक दिया हमारे पहलवान ने ।"

"सिवाए इसके कि असल किस्सा क्या है । असल किस्सा, मदान दादा, जिसको सुनने के लिए मेरे कान तरस रहे हैं ।"

"यार, तू मुझे दादा क्यों कहता है मैं तेरे से इतना बड़ा थोड़े ही हूं ! कुछ कहना ही है कोई चाचा, ताया, मामा कह ले ।"

"मैंने तुम्हें दादा अपने से तुम्हारी कोई रिश्तेदारी जोड़ने के लिए नहीं कहा, बल्कि तुम्हारा दर्जा, तुम्हारा समाजी रुतबा बयान करने लिए कहा ।"

"एक बात माननी पड़ेगी, कोल्ली । एक नम्बर का हरामी है तू ।"

"शक्रिया ।" मैं तनिक सिर नवाकर बोला, "अब मेरी तारीफ के साथ-साथ अगर असली किस्से का भी जिक्र हो जाए तो..."

"मैं कपडे बदल के आता हूं ।" एकाएक वह उठ खड़ा हुआ, "वो जिक्र मेटकाफ रोड के रास्ते में करेंगे ।"

"मेरा वहां क्या काम ?"

"है काम । चलेगा तो पता चल जाएगा ।"

फिर मेरे और कुछ कह पाने से पहले ही वो वहां से उठकर चल दिया ।

मैंने एक नया सिगरेट सुलगा लिया और सिगरेट और चाय चुसकते हुए उसके लौटने की प्रतीक्षा करने लगा ।

***

मैं मदान के साथ उसकी मर्सिडीज में सवार था जिसे कि वो खुद ड्राइव कर रहा था । मर्सिडीज पुरानी थी लेकिन थी तो मर्सिडीज ही । हाथी बूढा भी हो तो कुत्ते बिल्लियों से कमजोर नहीं हो जाता ।

उस वक्त वो सूट रहने हुए था और आकार में और भी पसरा हुआ लग रहा था । सच पूछिए तो ऐसा विशालकाय आदमी किसी मर्सिडीज जैसी कार में ही समा सकता था ।

अपने घर से निकलते ही पहले वो कनाट प्लेस मेहरासंस की दुकान पर गया था जोकि उस वक्त अभी खुल ही रही थी और जहां उसने बीवी के टॉप्स जमा कराये थे ।

उस वक्त कार सिकंदरा रोड पर दौड़ी जा रही थी ।

तिलक ब्रिज के नीचे से से गुजरकर कार आई टी ओ के चौराहे पर पहुंची । वहां से वह दाएं घूमी और पुलिस हैडक्वार्टर के जेरेसाया आगे बढ़ी ।

"कोल्ली" एकाएक वह बड़ी संजीदगी से बोला, "अजीब निजाम है इस मुल्क का । यहां अंडरवर्ल्ड के बॉस लोगों से भिड़ना आसान है, यहां कायदे कानून की मुहाफिज पुलिस से निपटना तो भौत ही आसान है लेकिन सरकारो बाउ से निपटना बड़ा मुश्किल है । ये इनकम टैक्स और कमेटी के महकमें के बाउ लोग हैं जिन्होंने आजकल मेरी बजाई हुई है । कमेटी वालों ने लाखों रुपयों की मेरे से रिश्वत खाई, फिर भी मेरी आठमंजिला इमारत गिरवा दी, हाईकोर्ट के स्टे तक की परवाह नहीं की । स्टे दिखाया तो उसे देखने की जगह मुझे पकड़कर हवालात में बंद कर दिया और तभी छोड़ा जबकि आठ मंजिला इमारत मलबे का ढेर बन गई । एक करोड़ रूपये का नुकसान हो गया । पूरा-पूरा हफ्ता चुकाते रहने के बावजूद एक महीने में चार बार बाडर पर शराब पकड़ी गई । कैब्रे हाउस पर ताले लग गए । इनकम टैक्स वाले अलग आंख में डंडा किये हैं और इतना ज्यादा जुर्माना करने पर आमादा हैं कि सब कुछ बेचकर भी शायद ही चुकता कर पाऊंगा । कुछ महीनों में ही ये सब कुछ हो गया । माईयेवां रब्ब ही रूठ गया एकाएक लेखराज मदान का ।"

"तभी तो कहते हैं कि मुसीबत आती है तो अकेले नहीं आती है ।"

"लक्ख रुपए की बात कही,कोल्ली । इकट्ठी आई तमाम मुसीबतें । पता नहीं किस कलमुहें की नजर लग गई लेखराज मदान को । सब चौपट हो गया । आज ये हालत है कोल्ली कि होटल वाला फ्लैट तक गिरवी पड़ा है और किसी भी रोज ये मर्सरी भी बेचने की नौबत आ सकती है । अभी गनीमत है कि मधु को इन बातों की भनक नहीं ।"

"उसको भनक लगने से क्या फर्क पड़ता है ?"

"पूरा-पूरा फर्क पड़ता है वीर मेरे । तू क्या समझता है, मैं खूबसूरत बहुत हूं या नौजवान बहुत हूं जो उसने मेरे से शादी करना मंजूर किया ?"

"यानी कि दौलत की दीवानी है ?"

"हर औरत होती है ।"

"फिर तुम्हारी शादी थोड़े ही हुई ! वो तो एक समझौता हुआ, करार हुआ जो तुमने एक नौजवान लड़की से किया । वो कपड़े उतारकर तुम्हारे साथ लेटेगी और तुम्हारे दो क्विंटल के जिस्म के नीचे पिसेगी, और तुम उसे दौलत से मालामाल करोगे, सोने-चांदी से निहाल करोगे ।"

उसने अनमने मन से हुंकार भरी ।

"अब जबकि तुम्हें लग रहा है कि करार के अपने हिस्से की शर्त पूरी करने की सलाहियात तुम्हारे हाथों से निकली जा रही तो ये सोच के तुम्हारा कलेजा कांप रहा है कि कहीं इतनी हसीन औरत भी तुम्हारे हाथों से न निकल जाए ।"

वो अप्रसन्न दिखाई देने लगा । प्रत्यक्षत: मेरा बात को यूं दो टूक कहना उसे रास नहीं आया था ।

"बहरहाल" मैं बोला, "हालात का खुलासा ये है कि रूपए-पैसे के मामले में तुम्हारी दुक्की पूरी तरह से पिटने

वाली है ।"

"पिट चुकी है ।"

"लेकिन अपनी मौजूदा दुश्वारियों का कोई हल है तुम्हारे जेहन में ।"

"एकदम ठीक पहचाना ।"

"कहां है हल ?"

"मेरी बगल में बैठा है ।"

"यानी कि मैं ?"

"यानी कि तू ।"

"मैं कुछ समझा नहीं ।"

"कोई बड़ी बात नहीं । अभी कुछ समझाया ही कहां है मैंने ?"

"उम्मीद रखूं कि इसी हफ्ते में समझा लोगे ?"

"मैं अभी समझाता हूं । मैं बात को दूसरी ओर का सिर पकड़कर समझाता हूं ।"

"मैं सुन रहा हूं ।"

"शशिकांत का बीमा है । जीवन बीमा ।"

"जरूर होगा । सबका होता है ।"

"पचास लाख का ।"

"ये सबका नहीं होता ।" मैं नेत्र फैलाकर बोला, "रकम फ्यूज उड़ा देने वाली है ।"

"मेरे हक में ।"

"ठहरो, ठहरो । जरा मुझे बात को तरीके से समझने दो । तुम ये कह रहे हो कि तुम्हारे छोटे भाई की पचास लाख रुपए की लाइफ-इंश्योरेंस पॉलिसी है जिसके नामिनी तुम हो ।"

"हां ।"

"यानी कि अगर तुम्हारा भाई शशिकांत मर जाए तो तुम्हें पचास लाख रुपए का क्लेम बीमा कंपनी से मिलेगा ।"

"किसी हादसे का शिकार होकर मरे तो एक करोड़ ।"

"तुम" मैं सख्त हैरानी से उसे घूरता हुआ बोला, "अपने भाई की मौत चाहते हो ?"

"हरगिज भी नहीं ।"

"फिर क्या बात बनी ?"

"बनी ।"

"कहीं तुम ये तो नहीं कहना चाहते कि तुमने ऐसी तरकीब सोच निकाली है जिससे तुम्हारा भाई तो नहीं मरेगा

लेकिन बीमे की रकम फिर भी तुम्हें मिल जाती ।"

"काबिल आदमी है तू कोल्ली । आखिर समझ गया ।"

"मैं काफी देर से एक बात कहना चाहता था । मेरा नाम कोल्ली नहीं । कोहली है !"

"वही तो मैंने कहा । कोल्ली ।"

"ये कोल्ली वाला है पंजाबी में मेरा नाम कोहली है । कोहली । को.. ह.. ली । जैसे हल से हली और शुरू में को ।"

"की फर्क पैंदा ए ।"

"मेरे को फर्क पैंदा है । मैं नहीं चाहता कि कोई मेरे नाम की दुर्गत करके मेरे से मुखातिब हो ।"

"यार" वो झल्लाया "ये इतनी गंभीर बातचीत में तेरा नाम कहां से आ घुसा ?"

"मैंने घुसाया । कोहली नहीं कह सकते हो तो सुधीर कहो ।"

"ठीक है । सुधीर ।"

"अब आगे बढ़ो ।"

"देख । बात यूं है कि मैं अपनी मौजूदा जिन्दगी से ही नहीं, इस शहर से, इस मुल्क से ही किनारा कर जाना चाहता हूं । इस सिलसिले में शशिकांत सिंगापुर हो भी आया है और नकली नाम और नकली कागजात के जरिए खुद को वहां स्थापित कर भी चुका है । बीमे की रकम हासिल हो जाने के बाद उसे सिंगापुर पहुंचाने का पुख्ता इन्तजाम भी मैं कर चुका हूं । पहले शशिकांत सिंगापुर चला जाएगा । फिर बीमे की रकम का क्लेम मिल जाने के बाद मैं भी मधु को लेकर उसके पीछे वहां पहुंच जाऊंगा । यूं यहां की तमाम कानूनी पेचीदगियां और गैरकानूनी बखेड़े यहीं रह जाएंगे । आज की तारीख में ये मेरा आखिरी मकसद है । जिनका मैं कर्जाई हूं मैं उन्हें ढूंढ़े नहीं मिलूंगा । यूं मेरी जान भी सांसत से निकल जाएगी और अपनी बाकी की जिन्दगी चैन से गुजारने के लिए मेरे पास पचास लाख रुपया भी होगा ।"

"एक करोड़ ।" मैंने याद दिलाया ।

"पचास लाख । शशिकांत कोई सच में ही थोड़े मर जाएगा । आधा वो भी तो लेगा !"

"वो मरेगा नहीं तो बीमे की रकम कैसे मिलेगी ? जब मुर्दा नहीं होगा तो मौत कैसे स्थापित होगी ? इतनी बड़ी रकम का मामला है । मुर्दा तो बड़े चौकस तरीके से ठोक-बजाकर देखा जाएगा । यहां मर गया होने का कोई पाखंड या कोई एक्टिंग काम नहीं आने वाली ।"

"मुझे मालूम है ! ये तो बच्चा भी समझ सकता है कि मुर्दा होना जरूरी है, तू तो सौ सयानों का सयाना है, कोल्ली !..मेरा मतलब है सुधीर ।"

"मुर्दा कहां से आएगा ?"

"मेरा पहलवान कल रात फेल न हो गया होता तो मुर्दा आ ही गया था ।"

"तुम्हारा इशारा मेरी तरफ है !"

"जाहिर है । लेकिन मैं फिर कहता हूं । मेरी कोई जाती अदावत नहीं तेरे से ।"

"लेकिन..."

"ठहर । सुन ।" उसने जेब से एक तस्वीर निकाल कर मेरी गोद में डाल दी, "देख !"

मैंने तस्वीर देखी ।

"ये" मैं बोला, "मेरी तस्वीर..."

"ये" वो धीरे से बोला, "शशिकांत की तस्वीर है ।"

"ओह ! ओह !"

मैंने फिर तस्वीर पर निगाह डाली । इस बार मुझे अपनी और तस्वीर की सूरत में दो फर्क दिखाई दिए ।

तस्वीर में चित्रित व्यक्ति के ऊपरले होंठ पर शत्रुघ्न सिन्हा स्टाइल मूंछें थीं और हेयर स्टाइल जुदा था ।

"हेयरस्टाइल बदला जा सकता है ।" वो जैसे मेरे मन की बात भांपकर बोला, "मूंछें साफ की जा सकती हैं । बाकी कद-काठ, हड गोडे सब तेरे जैसे ही हैं शशिकांत के ।"

मैं सन्नाटे में आ गया ।

"तो ये बात है ।" मैं बोला, "मौत मेरी होगी और मरा हुआ शशिकांत समझा जाएगा ।"

"जाती कुछ नहीं, कोल्ली । जाती कुछ नहीं । तेरी शक्ल शशिकांत से न मिलती होती तो मैंने क्या लेना-देना था तेरे से !"

"मेरी जान इतनी सस्ती नहीं, मदान दादा ।"

"किसने कहा तेरी जान सस्ती है ! तेरी जान तो एक करोड़ रुपए की है ।"

"वो शशिकांत की जान है ।"

"एक ही बात है ।"

"नहीं है एक ही बात । तुम क्या समझते हो कि मैं यूं एकाएक गायब हो जाता तो मेरी कोई पूछ नहीं होती ?"

"कोल्ली । सुधीर । तेरे में ये भी एक खूबी हैं कि इस शहर में तेरा कोई सगेवाला नहीं ।"

"तो क्या हुआ ? यार-दोस्त तो हैं ।"

"लेकिन जिगरी कोई नहीं । मैंने पड़ताल की है । ऐसे यार-दोस्त किसी के एकाएक गायब हो जाने पर थोड़ा-बौत हैरान तो होते है, हलकान नहीं होते ।"

"मेरी सेक्रेट्री रजनी है जो मेरे पर जान छिड़कती है ।"

"गलत । वो तेरे पर नहीं, तू उस पर जान छिड़कता है ।"

"वहम है तुम्हारा । वो तो.."

"वहम है तो उसका भी जवाब है मेरे पास ।"

"क्या ?"

"ये चिट्ठी देख ।" जेब से एक लिफाफा निकालकर उसने मेरी गोद मे डाल दिया ।

मैंने देखा, लिफाफा बन्द था और उस पर रजनी का नाम और मेरी डिटेक्टिव एजेंसी, यूनिवर्सल इन्वेस्टिगेशंस का नाम और नेहरू प्लेस का पता लिखा हुआ था ।

"खोल ले ।" वो बोला, "इसकी जरूरत तभी थी जब पहलवान तुझे डिलीवर कर पाता, जब तू मेरे काबू में

होता । अब तो ये बेकार है ।"

मैंने लिफाफा खोला ।

भीतर पाच-पाच सौ के नोटों की एक गड्डी थी और एक चिट्ठी थी । चिट्ठी टाइपशुदा थी, जिसमें लिखा था..

डियर रजनी,

एकाएक एक बहुत ही महत्वपूर्ण और पेचीदा केस हाथ लग गया है । जान जोखम का काम है लेकिन फीस लाखों में है । उस केस के सिलसिले में मैं तत्काल नेपाल जा रहा हूं । वहां से आगे बर्मा, थाईलैंड और फिर सिंगापुर जाऊंगा । कम से कम एक साल सारे योरोप के धक्के खाने का सिलसिला है । साल सुरक्षित गुजरा तो एक ही केस मुझे मालामाल कर देगा । आइंदा एक साल के दौरान तुमसे संपर्क का मौका मुझे शायद ही मिले इसलिए एक स्पेशल मैसेंजर के हाथ ये चिट्ठी भेज रहा हूं । चिट्ठी के साथ पचास हजार रुपए हैं जो एक साल तक ऑफिस का किराया और तुम्हारी तनखाह के खर्चे निकालने के लिए काफी होंगे । मेरी असाइनमेंट बहुत गोपनीय है, इसलिए इस बाबत किसी से कोई विस्तृत वार्तालाप न करना ।

शुभकामनाओं सहित ।

तुम्हारा एम्प्लायर

सुधीर कोहली ।

अपने हस्ताक्षर देख कर मेरे छक्के छूट गए ।

वो सौ फीसदी मेरे हस्ताक्षर थे ।

"अपने दस्तखत देखकर हैरान हो रहा है ?" वह बोला ।

"हो तो रहा हूं ।" मैं बोला ।

"मत हो । अरे जो जाली पासपोर्ट तैयार कर सकता हो, और सौ तरह के जाली कागजात तैयार कर सकता हो, उसके लिए तेरे दस्तखतों की नकल मार लेना क्या मुश्किल काम रहा होगा ।"

मैं खामोश रहा । मैने चिट्ठी तह कर के चिट्ठी और नोट लिफाफे में रखे । उसने बड़ी सफाई से लिफाफा मेरी गिरफ्त से निकाल लिया और वापस अपनी जेब में डाल लिया ।

"दस्तखतों का नमूना कैसे हासिल किया ?" मैं बोला ।

"क्या मुश्किल काम था ?" वह बोला, "सुधीर, कोई चिट्ठी लिखकर अगर तेरे से पूछे कि तू बतौर प्राइवेट जसूस क्या फीस ले के काम करता था तो उसे जवाब में चिट्ठी लिखेगा कि नहीं ?"

"लिखूंगा ।" मैं बोला ।

"और उस जवाबी चिट्ठी पर तेरे दस्तखत होंगे कि नहीं ?"

"होंगे ।"

"बस । मिल गया तेरे दस्तखतों का नमूना ।"

"तैयारियां, लगता है, काफी अरसे से चल रही हैं ।"

"चार महीने से । सब कुछ वाह-वाह चल रहा था । एक उस पहलवान के बच्चे की नालायकी ने सब गुड़ गोबर कर दिया । तुझे काबू में न रख सका ।"

"ये इकलौती चिट्ठी मेरे गायब हो जाने की मिस्ट्री पर लगे सब सवालिया निशान मिटा देती ?"

"इकलौती किसलिए, वीर मेरे । ऐसी एक चिट्ठी लगभग हर महीने कभी सिंगापुर से तो कभी हांगकांग से तो कभी लंदन से तेरी सैक्रेट्री के पास पहुंचती जिसमें तूने उसे ये खबर की होती कि तू कामयाबी की मंजिलें तो तय करता जा रहा था लेकिन जान-जोखम बढ़ता जा रहा था । फिर एकाएक चिट्ठियां आनी बंद हो जाती, कोल्ली... "

"कोहली ।" मैं चिढकर बोला ।

"फिर इससे तेरी सेक्रेट्री क्या नतीजा निकालती ? वो यही सोचती न कि जोखम ने तेरी जान ले ली थी ? आखिरकार तेरी किस्मत तुझे दगा दे गई थी और तू परदेस में कहीं मर-खप गया था । कैसी रही ?"

मैं खामोश रहा ।

"आखिर वो तेरी सेक्रेट्री ही तो है, कोई ब्याहता बीवी तो नहीं जो तेरी लाश की बरामदी के अरमान के साथ महकमा-दर-महकमा टक्करें मारती फिरती ।"

रजनी से मेरी उम्मीदें बीवी से कहीं बढ़कर थीं, लेकिन फिर भी मेरा सिर सहमति में हिला ।

"तुम्हारा भाई" फिर मैंने पूछा, "मेरा मतलब है तुम्हारे भाई की जगह मैं, मरता कैसे ?"

"गोली खा के ।" वह बड़े इत्मीनान से बोला, "पहलवान तुझे शशिकांत की कोठी में ले जाता, तुझे वहां शशिकांत की जगह स्थापित करता और तुझे शूट कर देता ।"

"स्थापित करता क्या मतलब ?"

"तुझे जबरन तैयार कर के वो पहले सारी कोठी में तेरी उंगलियों के निशान फैलाता, फिर तुझे शशिकांत की कोई पोशाक पहनने को मजबूर करता, पोशाक की जेबों में शशिकांत के जाती इस्तेमाल की चीजे रखता, तुझे उसकी चेन पहनाता अंगूठी पहनाता, शशिकांत के नाम वाला ब्रेसलेट पहनाता और फिर तुझे यूं कत्ल कर देता जैसे वो काम कोठी में जबरन घुस आए किसी मवाली का था ।"

"पुलिस को ये बात हजम हो जाती ?"

"क्यो न होती ? मेरी तरह ही शशिकांत भी कई लोगों का कर्जाई है । राजेंद्रा प्लेस में हमारी जो नाईट क्लब वो चलाता था, वो भी सिंडीकेट के दबाव की वजह से बंद पड़ी है । पुलिस जरा-सी तफ्तीश करती तो उन्हें मालूम हो जाता कि पिछले कुछ अरसे से कत्ल कर दिए जाने की धमकियां उसे मुतवातर मिल रही थी । पुलिस यही समझती कि किसी ने अपनी धमकी पर खरा उतरकर दिखा दिया था ।"

"मेरे कत्ल के दौरान शशिकांत कहां होता ?"

"वो एयरपोर्ट की तरफ दौड़ा जा रहा होता जहां से उसने काठमांडू की दोपहरबाद की फ्लाइट पकड़नी थी । वो दो दिन नेपाल ठहरता और फिर अपने जाली पासपोर्ट के सदके सिंगापुर उड़ जाता ।"

"और तुम यहा भाई की मौत पर रो-रो के जान देने को आमादा उसकी - यानी कि मेरी - चिता की राख भी ठंडी होने से पहले इन्श्योरेंस क्लेम भर रहे होते ।"

"जाहिर है । लेकिन सब गुड़-गोबर हो गया । एक लल्लू पहलवान की लापरवाही से इतनी उम्दा स्कीम का कचरा बन गया ।"

"उसकी लापरवाही से या मेरी होशियारी से ?"

"इक्को गल ए । खेल तो चौपट हो गया । सुधीर, वैसे तू अभी भी मान जाए तो बिगड़ी बात बन सकती है ।"

"मान जाऊं ! क्या मान जाऊं ?"

"लाश की जगह लेने के लिए । मैं तेरी कोई भी फीस भरने के लिए तैयार हूं ।"

"क्या कहने ! अरे, जब मैं ही नहीं रहूंगा तो फीस मेरे किस काम आएगी ?"

"कोल्ली, तू इतना बड़ा जसूस है, कोई ऐसी तरकीब सोच न जिससे लाश भी रहे, तू भी रहे और फीस भी तेरे काम आए ।"

"कहीं इसी चक्कर में तो तुम मुझे मेटकाफ रोड नहीं ले जा रहे कि मैं ऐसी कोई तरकीब सोचूं ?"

"इसी चक्कर में ले जा रहा हूं ।"

"ये काम तुम्हारे फ्लैट में ही नहीं हो सकता था ?"

"कैसे होता ? वहां शशिकांत जो नहीं था ।"

"बुलवा लेते उसे ।"

वो खामोश रहा ।

"लगता है" मैं बोला, "अपनी खूबसूरत बीवी के मामले में तुम्हे किसी का भरोसा नहीं । अपने भाई का भी नहीं ।"

उसके चेहरे पर झुंझलाहट के भाव आए ।

"तुम्हारा पहलवान ठीक कहता था ।"

"क्या?" वो उखड़े स्वर में बोला, "क्या कैत्ता था ?"

"यही कि मदान साहब बैठा है सांप की तरह कुंडली मारकर हुस्नो-शबाब की दौलत पर ।"

"लनतरानियां छोड़ कोल्ली, मतलब की बात कर । सोच कोई तरकीब जिससे लाश भी रहे, तू भी रहे और फीस भी तेरे काम आए ।"

"ऐसी कोई तरकीब मुमकिन नहीं ।"

"कोई तो होगी । अकल लड़ा । जोर दे दिमाग पर । निकाल कोई तरकीब । मैं तेरी कोई भी फीस भरने को तैयार हूं । और.."

वो ठिठका ।

"और क्या?" मैं तनिक उत्सुक भाव से बोला ।

"पहलवान को छोड़ ।"

"क्या कहने ! पहलवान छूट गया तो मेरे पास क्या रह गया तुम्हारे खिलाफ ?"

"ओए वीर मेरे, तू मेरे खिलाफ होना क्यों चात्ता है ? अब तो हम तीनों इकट्ठे हैं ।"

"तीनों ! कौन तीनों ?"

"मैं, शशिकांत और तू ।"

"मैं, शशिकांत और मधु कहा होता तो कोई बात भी होती ।"

"मैं, शशिकांत और" वो सख्ती से बोला, "तू ।"

"अफसोस। अफसोस।"

"कोल्ली, मैंने क्या कहा था ?"

"क्या कहा था ?"

"नीयत मैली नहीं करनी। भूल गया ?"

"पहले भूल गया था। अब फिर याद आ गया है।"

"वदिया। तो समझ गया ? अब तो हम तीनों - मैं, शशिकात और तू - इकट्ठे हैं।"

"किसने कहा ?"

"क्या ?"

"कि हम तीनों इकट्ठे हैं ?"

"नहीं हैं ?"

"बिल्कुल भी नहीं हैं। जो शख्स मेरी जान लेने पर आमादा हो, वो तो मेरा घोर शत्रु हुआ।"

"यार, अब तो वो कहानी खत्म हो गई।"

"तुम्हारी तरफ से खत्म हो गई। मेरी तरफ से तो.."

"तू भी खत्म कर न, वीर मेरे। तू ऐसा कर, तू बीमे की रकम हथियाने की कोई कारआमद तरकीब सुझा और अपनी फीस खुद मुकर्रर कर ले।"

"कोई भी फीस ?"

"कोई भी वाजिब फीस।"

मैं सोचने लगा।

"मेटकाफ रोड आ गई है। तीनों मिल के सोचते है कोई तरकीब।"

मैने बेध्यानी में सहमति में सिर हिला दिया।

मर्सिडीज एक कोठी के सामने पहुंची। कोठी एक मंजिली थी, पुराने स्टाइल की थी और बहुत बड़े प्लाट के बीच मे बनी हुई थी। कोठी के सामने एक विशाल लॉन था जिस के बीच में से गुजरता ड्राइव-वे कोठी तक पहुंचता था। ड्राइव-वे के दोनों ओर ऊचे पेड़ थे और उसके सड़क की ओर वाले सिरे पर एक आयरन गेट था जो कि उस वक्त पूरा खुला हुआ था।

"फाटक खुला है।" मैं बोला।

"तो क्या हुआ ?" वो अनमने स्वर में बोला।

"क्यों ?"

"क्यों क्या ? ये तो खुला ही रहता है। कोई खराबी है इसमें। झूल के अपने आप पूरा खुल जाता है। ताला लगा हो तो ही अपनी जगह टिकता है।"

"ठीक क्यों नहीं कराता तुम्हारा भाई ?"

"क्या जरूरत है ? तूने सब घपला न कर दिया होता तो आज के बाद किसने रहना था यहां ।"

मैं खामोश हो गया ।

मदान ने कार को फाटक के भीतर डाला और कोठी के सामने पोर्टिको में ले जाकर रोका । हम दोनों कार से बाहर निकलकर कोठी के मुख्यद्वार पर पहुचे । मदान ने कॉलबैल बजाई ।

कोई प्रतिक्रिया सामने न आई ।

उसने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह डाली ।

"हम जल्दी आ गए ।" वो बोला, "कहीं अभी तक सो ही न रहा हो । आलसी बहुत है शशिकांत ।"

मै खामोश रहा ।

उसने फिर कॉलबैल बजाई और दरवाजे को धक्का दिया ।

दरवाजा निशब्द खुल गया ।

मदान तनिक सकपकाया और फिर भीतर दाखिल हुआ । मैं उसके पीछे हो लिया ।

वो हमें स्टडी की तरह सुसज्जित एक कमरे में मिला । वहां एक विशाल मेज लगी हुई थी जिसके पीछे लगी एक एग्जीक्यूटिव चेयर पर वो बैठा हुआ था । उसका सिर उसकी छाती पर झुका हुआ था और लगता था कि वो कुर्सी पर बैठा बैठा ऊंघ गया था और फिर सो गया था ।

"गड़बड़ हो गई शशि" मदान एक क्षण दरवाजे की चौखट पर ठिठका और फिर आगे मेज की ओर बढ़ता हुआ बोला, "हमारा बंदा आया तो है लेकिन स्कीम के मुताबिक लाया नहीं गया । खुद चल के आया है । उस हबीब के बच्चे ने सब गुड़ गोबर कर दिया..."

तब तक मदान मेज के पीछे उसकी कुर्सी के करीब पहुंच गया था । उसने शशिकांत के कंधे पर हाथ रखा तो वो निशब्द आगे को लुढ़क गया और औंधे मुंह सामने मेज पर जाकर पड़ा ।

मदान फटी-फटी आंखो से औंधे मुंह लुढके हुए निश्चेष्ट शरीर को देख रहा था ।

"दौरा पड़ गया ।" फिर वह आतंकित भाव से बोला, "डॉक्टर को फोन करता हूं ।

"ठहरो !" मैं एकाएक बोला ।

वह ठिठका ।

मैंने झुककर अचेत शरीर का मुआयना किया । मैंने गरदन के करीब उसकी शाहरग को छुआ । मैंने उसकी नब्ज टटोली । अंत में मैंने उसे कुर्सी पर पूर्ववत सीधा किया ।

"इसे कोई दौरा-वौरा नहीं पड़ा ।" मैं बोला, "इसे शूट किया गया है ।"

उसके चेहरे पर हाहाकारी भाव प्रकट हुए ।

"मुबारक हो ।" मैं बोला ।

"किस बात की ?" वो बौखलाया ।

"करोड़पति बनने की । वो भी ऐसे कि कोई धोखाधड़ी का खेल भी नहीं खेलना पड़ा बीमा कम्पनी से । असली बीमांकित व्यक्ति की ट्वेंटी फोर कैरेट खालिस लाश तुम्हारे सामने पड़ी है यही तो था तुम्हारा आखिरी मकसद !"

"क्या बकता है ?"

"बकता कहो या फरमाता, ये हकीकत अपनी जगह कायम है कि तुम्हारे जिस भाई का तुम्हारे हक में पचास लाख का बीमा है, वो तुम्हारे सामने मरा पड़ा है ।"

"य..ये पक्की बात है कि ये मर गया है ?"

"हां ।"

"क...कैसे ?"

"कहा न इसे शूट किया गया है । एक गोली ऐन इसके दिल के ऊपर लगी है । छाती में बने सुराख से मालूम होता है कि रिवॉल्वर 22 कैलीबर की थी । बाईस कैलिबर की रिवॉल्वर जनाना हथियार माना जाता है । गोली ऐन दिल में से ही न गुजर गई होती तो ये कभी न मरता ।"

"फिर तो ये किसी पक्के निशानेबाज का काम हुआ ?"

"नहीं । ये तो किसी निपट अनाड़ी का काम मालूम होता है ।"

"क्या कहता है ! जब गोली ऐन दिल में से..."

"यहां एक नहीं, कई गोलियां चली मालूम होती हैं । लगता है किसी ने रिवॉल्वर का रुख इसकी तरफ किया और वो तब तक घोड़ा खींचता रहा जब तक कि गोलियां खत्म न हो गई ।"

"क...कैसे....कैसे कहां ?"

"रिवॉल्वर से निकली हर गोली कहीं न कहीं टकराई है । देखो, एक गोली मेज पर रखे कलमदान के चार होल्डरों में से एक को, दाएं कोने वाले को, लगी है और वो वहां से उखड़कर परे जा के गिरा है । एक गोली पीछे दीवार पर टंगे सजावटी वाललैंप से टकराई है । एक गोली बायीं दीवार पर लगी भागते घोड़ों की तस्वीर में सबसे अगले घोड़े के ऐन माथे में लगी है । एक और गोली ने कुर्सी के पीछे दीवार के साथ लगी वाल कैबिनेट के बाएं कोने में रखे सजावटी घुड़सवार का सिर उड़ा दिया है । और एक और गोली वाल कैबिनेट के दाएं कोने में रखे एटलस के बुत के सिर पर धरती के रूप में लदी घड़ी में लगी है...ये घड़ी काम करती थी ?"

"बढ़िया । एंटीक आइटम है । ग्लोब की तरह बनी ये घड़ी पुराने जमाने की है जिसमें कि चाबी भरी जाती है । सुइयां भी चाबी से ही आगे-पीछे सरकती हैं । इसे...इसे ये घड़ी बहुत पसन्द थी । हमेशा इसका राइट टाइम चैक करके रखता था । कभी एक सैकेंड भी आगे-पीछे नहीं होती थी ये ।"

"यानी कि गोली लगने से पहले ये चल रही होगी ?"

"यकीनन ।"

"और राईट टाइम दे रही होगी ?"

"पक्की बात ।"

"इस वक्त ये आठ अट्ठाईस पर रुकी हुई है । घड़ी, जाहिर है कि गोली लगने से ही रुकी है । इस का साफ और सीधा मतलब ये है कि ये गोलीबारी आठ अट्ठाइस पर हुई थी ।"

"कोई" वो अपनी कलाई घड़ी देखता हुआ बोला, दो घंटे पहले ।"

"लाश एकदम ठण्डी है और अकड़ी हुई है । इस हालत में लाश दो घंटे में नहीं पहुंच सकती ।"

"यानी कि" वो नेत्र फैलाकर बोला, "घड़ी पिछली शाम का वक्त देती रुकी है । ये कल रात का यहां मरा पड़ा है ।"

"ऐसा ही मालूम होता है ।"

"तौबा ।"

जो गोली मैटल के होल्डर से टकराई थी, वो कहीं धंसी नहीं थी । वो होल्डर से छिटककर फर्श पर जा गिरी थी । मैंने घुटनों केबल बैठकर ऐन गोली तक झुककर उसका मुआयना किया ।

"मेरा अंदाज ठीक निकला ।" फिर मैं सीधा होकर बोला, "ये 22 कैलीबर की ही गोली है । ऐसी ही एक गोली मरनेवाले के ऐन दिल में से गुजर कर गई है जो कि इसकी बदकिस्मती है । 22 कैलीबर की गोली इसे कहीं भी और लगी होती तो ये हरगिज न मरा होता ।"

"इसे लगी गोली चलाई गई छ: गोलियों में से आखिरी होगी ।"

"क्यों ?" मैं सकपकाकर बोला ।

"वीर मेरे, अगर इसे पैल्ली ही गोली लग गई होती तो चलाने वाले ने और गोलियां काहे को चलाई होतीं !"

"दुरुस्त, लेकिन अगर इस आखिरी गोली से पहले पांच और गोलियां इस पर चल चुकी थीं तो भी ये कुर्सी पर टिका ही क्यों बैठा रहा ? पहली गोली चलते ही इसने उठकर भागने की या कहीं ओट लेने की या अपने हमलावर पर झपटने की कोशिश क्यों नहीं की ?"

"क्यों नहीं की ?" वो उलझनपूर्ण स्वर में बोला ।

"क्योंकि इसे ऐसा कुछ करने का मौका ही नहीं मिला । गोलियां यूं आनन-फानन चलीं कि पलक झपकते ही सब खेल खत्म हो गया । किसी ने ताककर इसका निशाना लगाया होता तो वो यूं चलाई गई अपनी पहली गोली का नतीजा देखने के लिए ठिठकता और निशाना चूक गया पाकर फिर दूसरी गोली चलाता । तब मरने वाले को अपने बचाव के लिए हरकत में आने का मौका मिल जाता और वो कुछ न कुछ करता । निशाना चूका न होता तो हमलावर और गोलियां न चलाता लेकिन यहां तो ये हुआ मालूम होता है कि किसी ने रिवॉल्वर चलानी शुरू की तो तभी बंद की जबकि गोलियां खत्म हो गई । या यूं कहो कि गोलियां खत्म हो जाने पर रिवॉल्वर चलनी खुद ही बंद हो गई । यूं रिवॉल्वर का रुख ही सिर्फ मकतूल की तरफ रहा होगा, उससे कोई निशाना साधकर गोलियां चलाने की कोशिश ही नहीं की गई होगी । निशाना साधकर गोलियां चलाई गई होतीं तो बावजूद मकतूल के दिल का निशाना चूक जाने से गोलियां यूं दायें-बायें इधर-उधर बिखरती न चली
गई होतीं ।"

"फिर तो ये काम किसी अनाड़ी का हुआ ?"

"या किसी औरत का जिसने कि रिवॉल्वर का रुख मरने वाले की ओर करके आंखें बंद कर ली होगी और घोड़ा खींचना शुरू कर दिया होगा ।"

"औरत !"

"बाइस कैलीबर की रिवॉल्वर वैसे भी जनाना हथियार माना जाता है । यह एक नन्हीं-सी रिवॉल्वर होती है जो कि जनाना पर्स में बड़ी सहूलियत से समा जाती है । जनाना डिपार्टमेंट में क्या दखल था तुम्हारे भाई का ?"

"बहुत गहरा । औरतों का रसिया था । एक औरत से मन नहीं भरता था इसका । नाइट क्लब में जो खूबसूरत औरत आती थी, उसे पटाने के लिए उसके पीछे पड़ जाता था ।"

"कामयाब भी होता था ?"

"हां । अमूमन । आखिर खूबसूरत नौजवान था ।"

"मेरी तरह ?"

"ऐन तेरी तरह ।"

"हूं ।"

"अभी इतना ही नहीं, क्लब की होस्टेसों और डांसरों के भी पीछे पड़ा रहता था ।"

"औरतों के मामले में बाज लोगों का हाजमा कुछ खास ही तगड़ा होता है । कई हज्म कर जाते हैं । डकार भी नहीं लेते ।"

"ये औरतों के नहीं, औरतें भी इसके पीछे पड़ीं रहती थीं ।"

"अच्छा !"

"हां । सुनकर हैरान होवोगे, आजकल ऐसी एक लड़की बतौर हाउसकीपर सारा दिन इसकी खिदमत करती है । सिर्फ इसलिए क्योंकि वो इस पर फिदा है ।"

"कौन है वो लड़की ?"

"सुजाता मेहरा नाम है । नाइट क्लब में चिट क्लर्क थी । क्लब बंद हो गई तो यहां आ गई । सारा घर संभालती है । शशि कहता था तो उसका और उसके मेहमानों का खाना तक पका देती थी ।"

"वो यहां रोज आती है?"

"फिलहाल तो आती ही है रोज ।"

"सारा दिन यहीं रहती है ?"

"हां । शशि कहे तो सारी रात भी ।"

"अगर शशि यहां न हो ?"

"तो भी । उसके पास यहीं की एक चावी पक्के तौर पर है ।"

"इस वक्त तो वो यहां नहीं है ।"

"अमूमन ग्यारह बजे तक आती है ।"

"कमाल है ! तुम्हारा भाई तो मेरे से भी बड़ा हरामी निकला । जरूर सूरतें मिलती हों तो फितरत भी मिलने लगती है ।"

"कोल्ली !" वो प्रशंसात्मक स्वर में बोला, "यानी कि तेरी भी कई गोपियां हैं !"

"हैं तो नहीं लेकिन हों, ऐसी ख्वाहिश रखता तो हूं । बहरहाल वो किस्सा फिर कभी । तुम ये बताओ कि इस लड़की सुजाता ने ही तो किसी बात पर इससे खफा होकर इसकी दुक्की नहीं पीट दी ?"

"अरे, नहीं । वो लड़की तो इस पर फिदा थी, इसके हाथों से चुग्गा चुगती थी । अठारहवीं सदी की बीवी की तरह इसकी खिदमत करती थी ।"

"सिर्फ करवा चौथ का व्रत रुखने की कसर रह जाती होगी ।" मैं व्यंग्यपूर्ण स्वर मैं बोला ।

"शायद वो भी रखती ।"

"क्या मतलब ?"

"अभी करवा चौथ का त्योहार आया जो नहीं । कुछ ही दिन तो हुए हैं अभी क्लब को ताला पड़े ।"

"हूं । बहरहाल वो नहीं तो कोई और गोपी खास ही खफा हो गई थी इससे जो इस पर गोलियों की बरसात कर बैठी ।"

"मुझे यकीन नहीं आता ।"

"किस बात का ?"

"कि किसी औरत जात की इतनी मजाल हुई हो कि इसकी जान लेने की जुर्रत कर बैठी हो । औरतें खौफ खाती थीं इससे । औरतें क्या, हर कोई खौफ खाता था इससे । लोग क्या जानते नहीं थे कि ये किसका भाई था !"

"लेकिन बाइस कैलीबर की रिवॉल्वर....."

"होगा जनाना हथियार । जनाने हथियार के मर्द के इस्तेमाल पर कोई पाबन्दी तो नहीं ।"

"हां । पाबन्दी तो नहीं है ।"

"लेकिन सवाल ये है इसका कत्ल किसने किया ? क्यों किया ? इसका तो कोई दुश्मन नहीं था । दुश्मन तो सब मेरे थे । यूं किसी ने मुझ पर गोलियां बरसाई होतीं तो ये कतई हैरानी की बात न होती ।"

"तुमने अभी खुद कहा था कि कुछ अरसे से शशिकांत को कत्ल कर दिए जाने की धमकियां मुतवातर मिल रही थीं ।"

"कहा था लेकिन झूठ कहा था ।"

"क्या ?"

"वो झूठ मेरा ही फैलाया हुआ था ताकि पुलिस तफ्तीश करे तो बात में दम दिखाई दे । वो झूठ हमारी उस स्कीम का हिस्सा था जिस पर अमल करके हमने तुझे शशिकांत बना के तेरा कत्ल करना था और बीमे की रकम क्लेम करनी थी । असल में मेरी जरायमपेशा हरकतों से शशिकांत का कुछ लेना-देना नहीं था । इसे तो लोग ठीक से जानते तक नहीं थे । दादा मैं था, गैंगस्टर मैं था, अंडरवर्ल्ड डान मैं था, शशिकांत नहीं । वार होना था तो मुझ पर होना चाहिए था न कि इस पर ।"

"तुम पर वार बाइस कैलीबर के खिलौने से थोड़े ही होता ! तुम पर तो ए के फोर्टी सैवन राइफल की या मशीनगन की गोलियां बरसाई जातीं ।"

"दुरुस्त । यही तो मैं कह रहा हूं । इस कत्ल का रिश्ता अगर मेरे कारोबार से होता तो कत्ल यूं न हुआ होता ।"

"मैं अभी भी कहता हूं कि ये कत्ल किसी औरत का काम है ।"

"सबूत क्या है ? सबूत बता क्या है ? ये कोई सबूत नहीं है कि कत्ल बाइस कैलीबर की रिवॉल्वर से हुआ है जो कि जनाना हथियार माना जाता है ।"

"लेकिन चलाई गई गोलियों का बिखरा-बिखरा पैटर्न.."

"बकवास । निशानेबाजी की सलाहियात हर किसी को हासिल नहीं होती । रिवॉल्वर कोई गुलेल नहीं होती जो चलाने के लिए हर किसी को हासिल हो । वीर मेरे, ऐसे पैटर्न में गोलियां ऐसा मर्द भी चला सकता है जिसने पहले कभी रिवॉल्वर न थामी हो ।"

मुझे मोतीबाग वाली इमारत में हामिद पर चलाई गोलियों का अपना खुद का अंदाज याद आने लगा ।

"बात तो तुम ठीक कह रहे हो ।" मैं बोला ,मेरा सिर स्वयंमेव ही सहमति में सिर हिलने लगा था ।

"कोल्ली ।" वो बोला, "मैनूं पता लगना चाहिए कि ए किस दी करतूत है ।"

"क्यों ?"

"क्यों ?" वो भड़का, "पागल है ? पूछता है क्यों ?"

"मेरा मतलब है ये मसला इतना अहमतरीन क्योंकर बन गया कि कातिल कौन है ? क्या तुम कातिल से बदला लेने के ख्वाहिश मंद हो ?"

"कातिल को उसके किए की सजा तो मिलनी ही चाहिए लेकिन ये अहमतरीन मसला किसी और वजह से है ।"

"और कौन सी वजह ?"

"असली कातिल का पता लगेगा तो ही तो मैं कत्ल के इल्जाम से बरी हो पाऊंगा ।"

"तुम पर कत्ल का इल्जाम कैसे आयद हो सकता है ?"

"क्योंकि सिर्फ मेरे पास ही कत्ल का कोई उद्देश्य है ।"

"क्या उद्देश्य है ? बीमे की रकम ?"

"हां ।"

"नॉनसैंस । यूं कोई अपने भाई का कत्ल कर देता है !"

"रकम का वजन ध्यान में रखकर बोल । उस रकम की मेरी मौजूदा जरूरत को ध्यान में रखकर बोल ।"

"वो सब ठीक है लेकिन फिर भी...."

"फिर भी ये कि ये मेरा भाई ही नहीं था ।"

मैं बुरी तरह से चौंका ।

"क्या !" हकबकाया-सा उसका मुंह देखता मैं बोला ।

"मरने वाला मेरा भाई नहीं था । मेरी इससे दूरदराज की भी कोई रिश्तेदारी नहीं थी ।"

"तो फिर... तो फिर..."

"ये एक लम्बी कहानी है ।"

"मुख्तसर करके सुनाओ । बस सिर्फ ट्रेलर दिखा दो ।"

"सुन । दिल्ली शहर में मेरी शुरुआती छोटी औकात से कोई बेखबर नहीं । मकबूल लोगों की गुजश्ता जिंदगी के बखिए उधेड़कर सनसनीखेज खबरें निकालने में माहिर अखबारनवीसों की मेहरबानी से सारा शहर जानता है कि कभी मैं पांच रुपए दिहाड़ी कमाने वाला बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन वर्कर हुआ करता था, बेलदार हुआ करता था । एक बेलदार दौलतमंद कैसे बन गया ? उसका ये कायापलट कैसे हुआ ?"

"कैसे हुआ ?"

"वही तुझे बताने जा रहा हूं कोल्ली । लेकिन जो कुछ तू अभी सुनेगा, अगर तूने उसे आगे कहीं दोहराया या उसका कोई बेजा इस्तेमाल किया तो, रब दी सौं, खुद अपने हाथों से मैं तेरी बोटी-बोटी काट के फेंक दूंगा । समझ गया ?"

मैंने बड़े सशंक भाव से सहमति में सिर हिलाया । उसका उस घड़ी का रौद्र रूप मुझे सच में ही बहुत डरा रहा था । अपना डर छुपाने के लिए मैंने अपना डनहिल का पैकेट निकाला तो उसने भी मेरी ओर हाथ बढ़ा दिया । मैंने एक सिगरेट उसे दिया और एक खुद सुलगा लिया ।

"सुन ।" अपने विशिष्ट अंदाज से सिगरेट का लंबा कश लगाकर धुएं की दोनाली छोड़ता हुआ वह बोला, "जिस ठेकेदार के पास मैं बेलदारी का काम करता था, उसका नाम मुकंदलाल सेठी था । असल में वो स्मगलर था और

ठेकेदारी उसके स्मगलिंग के धंधे की ओट थी । उसी ने मुझे एक बार कहा कि मैं ईंटें उठाने के हकीर काम में खामखाह अपनी नौजवानी बर्बाद कर रहा था । बात तू मुख्तसर में सुनना चाहता है इसलिए मैं सीधे ही तुझे बता रहा हूं कि पहले में उसका कूरियर बना फिर उसका पच्चीस फीसदी का पार्टनर । बतौर कूरियर मैं दिल्ली से चरस लेकर मुम्बई जाता था ओर सोना लेकर वापस आता था । रब्ब दी मेहर थी कि कभी पकड़ा नहीं गया । कामयाबी का ये आलम था कि मुझे अपना एक चौथाई का पार्टनर बनाने में भी मुकंदलाल सेठी को अपना ही फायदा दिखाई दे रहा था । बहरहाल आगे किस्सा यूं है कि उन दिनों ऑफिस में बिल वगैरह टाइप करने केलिए और खाता लिखने के लिए कौशल्या नाम की एक लड़की हुआ करती थी जो कि निहायत खूबसूरत थी । मैं और सेठी दोनों ही उसके दीवाने थे लेकिन वो मेरी जगह सेठी को ही भाव देती थी जबकि मैं कुंवारा था और सेठी न सिर्फ शादीशुदा था बल्कि बालबच्चेदार भी था ।"

"गरीब लड़की होगी । दौलत की दादागिरी को समझती होगी ।"

"यही बात थी । लेकिन तब गरीब तो मैं भी नहीं था ।"

"उसे मालूम हो गया होगा कि पहले तुम्हारी क्या औकात थी !"

"शायद । बहरहाल वो लड़की सेठी जैसे शादीशुदा, उम्रदराज मर्द से प्यार की पींगे बढ़ाती थी और मैं कुढ़ता था । एक दिन इसी कुढन में मैंने सेठी की बीवी को एक गुमनाम चिट्ठी लिख दी जिसमें मैंने सेठी और कौशल्या की मुहब्बत का तमाम कच्चा चिट्ठा खोल दिया । सेठी की बीवी को आग लग गई । उसने सेठी की ऐसी ऐसी-तैसी फेरी कि पट्ठा पनाह मांग गया । सेठी अपनी बीवी से खौफ खाता था क्योकि वो एक बहुत बड़े गैंगस्टर की बहन थी और उस गैंगस्टर के सदके ही वो स्मगलिंग के धंधे में पड़ा था । बीवी का हुक्म नादिर हुआ कि कौशल्या को डिसमिस करो । सेठी ने कौशल्या को नौकरी से तो निकाल दिया लेकिन उसका साथ न छोड़ा । उसने कौशल्या को कालकाजी में एक फ्लैट ले दिया जहां वो उससे चोरी-छुपे मिलने जाता रहा । मैंने वो बात भी एक और गुमनाम चिट्ठी में सेठी की बीवी को लिख दी ।"

"बड़े कमीने हो, यार ।"

"बक मत और चुपचाप सुन ।"

"सुन रहा हूं ।"

"तब सेठी की बीवी ने पहले से कई गुणा ज्यादा कोहराम मचाया । सेठी को बीवी से तलाक की और साले से कत्ल की धमकियां मिलने लगीं । सेठी ऐसा हत्थे से उखड़ा कि एक दिन उसने घबराकर आत्महत्या कर ली । ऑफिस में ही उसने अपने आपको गोली मारली ।"

"ओह !"

"नतीजतन सारा कारोबार मेरे हाथ में आ गया ।"

"ओह ! ओह !"

"तब कौशल्या उम्मीद से थी । वो सेठी के बच्चे की मां बनने वाली थी । सेठी की मौत के पांच महीने बाद उसने एक बच्चे को जन्म दिया । बावजूद इसके मैंने उससे शादी की पेशकश की जो उसने साफ ठुकरा दी ।"

"दिल से चाहती होगी वो सेठी को ।"

"ऐसा ही था कुछ ।"

"आगे ।"

"बच्चा होने के दो साल बाद वो मर गई । लेकिन मरने से पहले अपने वकील के पास एक सीलबंद लिफाफे में एक चिट्ठी लिख के छोड़ गई जो कि उसके बच्चे के बालिग हो जाने के बाद उसे सौंप दी जानी थी । ऐसा ही हुआ । वो चिट्ठी पढ़कर वो बच्चा मेरे पास पहुंच गया । उसने मुझे बताया कि वो कौशल्या का बेटा था और उसके पास इस

बात के सिक्केबंद सबूत थे कि मैंने मुकंदलाल सेठी का खून किया था । मेरे छक्के छूट गए ।"

"तुमने किया था ?"

"हां । बुनियादी तौर पर तो उस खून ने ही मुझे दौलत की ड्योढ़ी पर लाकर खड़ा किया था ।"

"वो लड़का शशिकांत था ?"

"एकदम ठीक पहचाना । वो बाकायदा मुझे ब्लैकमेल करके मेरा छोटा भाई बना । मैंने हर किसी को ये ही बताया कि पहले वो देहात में मेरी मां के पास रहता था, एकाएक मेरी मां मर गई थी तो मैने उसे अपने पास बुला लिया था ताकि वो शहर में आकर तरक्की कर सके, जिन्दगी मे कुछ बन सके । देख, ब्लैकमेल से इस छोकरे ने कितना कुछ हासिल किया मेरे से ? नाइट क्लब की सूरत में मैने इसे कारोबार मुहैया कराया । रहने को यहां मैटकाफ रोड पर ये कोठी लेकर दी ओर इसी के कहने पर इसकी आइन्दा जिंदगी की खुशहाली की गारंटी के तौर पर मैंने इसका पचास लाख रुपए का बीमा कराया जिसकी किस्त मैं भरता था ।"

"तुम्हें अपना नामिनी बनाने को तैयार हो गया ये ?"

"किसी को तो नामिनी बनाना ही था इसने । दोनों मर चुके मां-बाप की नाजायज औलाद का और कौन था इस दुनिया में ! वैसे भी वो तो यही समझता था कि इंश्योरेंस तो उसने खुद ही कलेक्ट करनी थी, अर्जी में नामिनी भरना तो महज एक औपचारिकता थी ।"

"आई सी ।"

"अब सूरत अहवाल ये है, वीर मेरे, कि ये सिर्फ कत्ल का ही नहीं, एक करोड़ रुपए के इंश्योरेंस क्लेम का भी मामला है । इस केस की तफ्तीश में कातिल की तलाश पुलिस ही नहीं करेगी, बीमा कंपनी के बड़े-बड़े जासूस भी करेंगे । अब अगर ये बात खुल गई कि आजकल मेरी माली हालत पतली थी और मरने वाला, जिसके बीमे का मैं नामिनी था, मेरा कुछ नहीं लगता था तो मेरी तो वज्ज जाएगी ।"

"तुमने कत्ल किया है ?"

"खोत्ता ! ओए ! अगर मैंने इसका कत्ल करना होता तो फिर तेरा अगवा करने के लिए इतने पापड़ बेलने की क्या जरूरत थी ? अगर मैने इसका कत्ल करना होता तो मैं यूं खामखाह अपनी जान सांसत में डाल बैठता ?"

"तुम क्या करते ?"

"मैं कत्ल कराता हबीब बकरे से और खुद कत्ल के वक्त थाने में ए सी पी के पास बैठा होता ।"

"असल में कत्ल के वक्त कहां थे तुम ?"

"कत्ल के वक्त ?"

"साढ़े आठ के आसपास । कल शाम । और तसदीक पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से हो जाएगी । फिलहाल टूटी घड़ी यही साबित कर रही है कि कत्ल कल शाम आठ अट्ठाइस पर हुआ था ।"

"तब मैं अपने फ्लैट में था ।

"और कौन था वहां ?"

"कोई नहीं ।"

"कोई नौकर-चाकर तो होगा ।"

"कोई नहीं । कभी होता भी नहीं । नौकर-चाकर न रखने पड़ें तभी तो होटल के फ्लैट में रहता हूं ।"

"तुम्हारी बीवी ?"

"वो अपनी बहन से मिलने गई थी ।"

"कब ?"

"घर से छ: बजे निकली थी, लेकिन पहले उसने करोल बाग अपने दर्जी के पास भी जाना था । ऐसा बोल के गई थी वो ।"

"यूं बीवी को अकेले जाने देते हो ?"

"हमेशा नहीं । हर जगह नहीं ।"

"बहन कौन है ?"

"सुधा नाम है उसका । सुधा माथुर ।"

"शादीशुदा है ?"

"हां । मधु से बहुत पहले से ।"

"बड़ी बहन है ?"

"हां । चार साल बड़ी ।"

"कहां रहती है ?"

"फ्लैग स्टाफ रोड पर ।"

"बाराखम्भा से फ्लैग स्टाफ रोड जाने के लिए तो यहीं से गुजरना पड़ता है ।"

"तो क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं । लौटी कब थी ?"

"साढ़े नौ बजे ।"

"इस बात की गारंटी है कि वो बहन के घर ही थी ?"

वो खामोश रहा ।

"क्या हुआ ?"

"आगे-पीछे ऐसी गारंटी होती थी । कल नहीं थी ।"

"क्या ?"

"ज्यादा पी गया था । तेरे अगवा की तरफ दिमाग लगा हुआ था न ! उसकी टेंशन में । फोन करने का ख्याल ही न आया ।"

"फोन ?"

"मधु जब बहन के घर जाती है तो मैं वहां फोन करके इस बात की तसदीक कर लेता हूं कि वो वहां पहुंच गई थी ।"

"कल ऐसा नहीं कर सके थे। क्योंकि ज्यादा पी गए थे!"

"हां।"

"मैं तुम्हारे साथ शरीक था।"

"किस काम में?" वो सकपकाकर बोला।

"ज्यादा पी जाने में। कल मैं तुम्हारा मेहमान था। कत्ल के वक्त, यानी कि कल शाम साढ़े आठ बजे, मैं तुम्हारे फ्लैट में तुम्हारे साथ बैठा दारू पी रहा था।"

उसने इनकार में सिर हिलाया।

"क्या हुआ?" मैं बोला।

"कोल्ली, इतने बड़े केस में तेरी झूठी गवाही नहीं चलने वाली। पुलिस यूं" उसने चुटकी बजाई, "पता लगा लेगी कि तू मेरा दोस्त नहीं, जोड़ीदार नहीं।"

"तो क्या हुआ! हर काम की कभी तो पहल होनी ही होती है। समझ लो कल शाम की बैठक दोस्ती की शुरुआत थी।"

"नहीं चलेगा।"

"क्यों?"

"दारू के लिये यूं किसी को घर नहीं बुलाता मैं। सबको मालूम है।"

"फिर भी बुलाने पर कोई सरकारी पाबंदी तो नहीं! कोई गजट में तो नहीं छपा था कि....."

"पिच्छा छोड़, कोल्ली।" वो तनिक चिढ़े स्वर में बोला, "कोई और बात सोच। ये नहीं चलने की।"

"लेकिन...."

"ओये वीर मेरे, इतने बड़े केस में तेरी झूठी गवाही नहीं चलने की। तेरी झूठी गवाही मुझे तो बचा नहीं सकेगी, तुझे जरूर साथ फंसा देगी। ओये, तेरे जैसे प्राइवेट जसूस को बड़े आराम से खरीदा जा सकता है। कह कि मैं झूठ कह रहा हूं।"

मैं कसमसाया, तिलमिलाया, भुनभुनाया लेकिन ये न कह सका कि वो झूठ कह रहा था।

"ऊपर से अभी और सुन।" वो बड़ी संजीदगी से बोला, "सुन और सोच। तेरी झूठी गवाही का खरीददार कौन है? क्या चीज हूं मैं? मैं एक अंडरवर्ल्ड डान हूं। दिल्ली का नामचीन दादा हूं। स्मगलर हूं। रेकेटीयर हूं। बुर्दाफरोश हूं। इन बातों से सोसायटी में खौफ तो बनता है, रुतबा नहीं बनता। मेरे जैसे आदमी का कोई हमदर्द नहीं होता सोसायटी में। एक बार फंस जाए तो हर कोई ये ही कहता है कि अच्छी हुई साले के साथ। बहुत कहर बरपाया हुआ था कमीने ने। ऐसी रिप्युट वाले आदमी का एक कत्ल में दखल बन जाता है। मुझे तो उधेड़ के रख देंगे मेरे दुश्मन। कत्ल के इल्जाम से पुलिस ने बख्श भी दिया तो बीमा कम्पनी वाले पसर जाएंगे। वो इसे डिस्प्यूट वाला केस बना देंगे और रकम की अदायगी में इतने अडंगे लगा देंगे कि सालों मुझे रकम के दर्शन नहीं होंगे। कोर्ट कचहरी के चक्कर में पड़ूंगा तो और मिट्टी खराब कराऊंगा। पल्ले से पैसा लगाकर केस लड़ना पडेगा, दीवानी का केस होगा, सालों फैसला नहीं होगा। तब तक कुछ मेरे वकील मुझे नंगा कर देंगे और कुछ वैसे ही मेरे दाने बिक जाएंगे। वीर मेरे, मौजूदा हालात से मेरी निजात का एक ही रास्ता है कि असली कातिल पकड़ा जाए। ठीक?"

"ठीक।"

"तो पकड़।"

"क्या ?" मैं हड़बड़ाया ।

"असली कातिल और क्या ?"

"उसे तो पुलिस ही पकड़ लेगी । आखिर पुलिस....."

"खौत्ते ! पुलिस कोशिश तक नहीं करेगी । वो तो ये ही जान के बाग-बाग हो जाएगी कि कत्ल के इल्जाम में मैं" उसने अपनी तेल के बड़े वाले ड्रम जैसी छाती ठोकी, "लेखराज मदान फंस रहा था । अव्वल तो उनके किए कुछ होगा नहीं, उनको शर्म आ गई, लिहाज आ गया और कुछ हो गया तो तो तब होगा जबकि मेरी वैसे ही वज्ज चुकी होगी ।"

"वो कैसे ?"

"कौशल्या की उस चिट्ठी की वजह से जिसमें इस बात का सबूत है कि मुकन्दलाल सेठी का कातिल मैं था ।"

"वो चिट्ठी अभी तक शशिकान्त रखे हुए होगा ?"

"बिल्कुल रखे हुए होगा । कलेजे से लगाकर जान से ज्यादा अजीज बनाकर रखे हुए होगा ।"

"वो चिट्ठी कोठी में ही कहीं होगी । ढूंढ लेते हैं । क्या मुश्किल काम है ! ऐसी तलाश से हमें रोकने वाला तो मरा पड़ा है ।"

"कोल्ली आज तेरा ऐसा कोई बरत-वरत तो नहीं जिसमें अक्ल इस्तेमाल करने पर वरत टूट जाता हो ।"

"क्या हुआ ?"

"अरे, चौदह साल तक ये कुत्ती दा पुत्तर मेरी छाती पर हिमालय पहाड़ की तरह जमा रहा, इतने अरसे में मैंने कोई कसार छोड़ी होगी, कोई कोशिश उठा रखी होगी उस चिट्ठी की तलाश में । चार बार सुई की तलाश जैसी महीन तलाशी कर चुका हूं मैं इस कोठी की । यहां के अलावा क्लब को और और भी हर उस मुमकिन जगह को, जहां शशिकांत का दूर-दराज का भी दखल हो, मैं खंगाल चुका हूं । लेकिन वो चिट्ठी मेरे हाथ नहीं लगी ।"

"किसी बैंक के लॉकर में होगी । किसी वकील के दफ्तर में होगी ।"

"कहीं तो होगी ही । फेंकने वाला तो वे था नहीं उसे । आखिर वो चिट्ठी ही तो थी जो मेरी नाक की नकेल बनी हुई थी । कोल्ली, मेरी सलामती इसी में है कि वो चिट्ठी नुमाया होने से पहले असल कातिल पकड़ा जाए ।"

"वो तो फौरन नुमायां हो सकती है ।"

"मुझे उम्मीद नहीं । जिस किसी के पास भी वो चिट्ठी होगी, वो कुछ अरसा तो देखेगा ही कि पुलिस की सरगर्मियों का क्या नतीजा निकलता है । अगर उसे मालूम होता है कि कातिल मैं नहीं हूं और जो कातिल है उसकी पीठ पर मेरा हाथ भी साबित नहीं होता तो फिर वो क्यो भला उस चिट्ठी को आम करेगा ।"

"हूं ।"

"कोल्ली, सारी कथा का निचोड़ यही है कि कातिल को पकड़ फौरन पकड़, फौरन से पेश्तर पकड़ ।"

"कहां मिलेगा ?"

"मजाक मत कर बकवास भी मत कर ।"

"फोकट में पकडूं ?"

"फोकट में क्यों वीर मेरे, तू कोई वालंटियर है !"

"ऐन मेरे मन की बात कही ।"

"अपनी कीमत खुद बोल ।"

"रजनी के नाम वाला जो लिफाफा तुम्हारी कोट की जेब में है, वो मुझे दो ।"

"ज्यादा है ।"

"क्या बात है, मेरी औकात अपने पहलवान हबीब बकरे जितनी भी नहीं समझते हो ?"

"वो रकम जिक्र के लिए थी, देने के लिए नहीं ।"

"यानी कि मुझे यहां लाकर जब वो मेरा खून कर देता तो खुद तुम उसका पत्ता साफ कर देते ?"

"जरूरी था । ऐसे मामलों में गवाह नहीं छोड़े जाते ।"

"मेरे बारे में भी तो ऐसा ही कुछ नहीं सोचे बैठे हो ?"

"अब नहीं । अब मुझे तेरी जरुरत है ।"

"ऐसे तुम्हारी जरूरत कैसे पूरी होगी, लिफाफा तो अभी भी कहीं दिखाई नहीं दे रहा ।"

"कम से नहीं मानेगा ?"

"वक्त खराब कर रहे हो जबकि जानते हो कि एक-एक मिनट कीमती है ।"

उसने एक आह सी भरी और जेब से लिफाफा निकाला । चिट्ठी समेत ही उसने वो लिफाफा मुझे सौंप दिया ।

सुधीर कोहली - मैंने मन ही मन खुद अपनी पीठ थपथपाई लक्की बास्टर्ड ।

मेरे और पुलिस के कारोबार में जो भारी फर्क है, वो यह कि उनका काम लोगों को सजा दिलाना है जबकि मेरा काम उन्हें सजा से बचाना होता है । उन्होंने अपनी तनख्वाह को जस्टिफाई करने के लिए बेगुनाह को भी मुजरिम मानना होता है जबकि मुझे अपनी फीस को जस्टीफाई करने के लिए मुजरिम को भी बेगुनाह साबित करके दिखाना होता है । इसीलिए मेरी फीस उनकी तनख्वाह से कहीं ज्यादा है ।

मेरी इस मोटी लेकिन वक्ती कमाई का रोब खाकर जो कोई साहब प्राइवेट डिटेक्टिव का धंधा अख्तियार करने का इरादा कर रहे हों तो उनसे मेरी दरख्वास्त है कि वे गरीब रिश्तेदार की तरह फौरन इस इरादे से किनारा कर लें । मोटी रकम मुझे कभी-कभार ही हासिल होती है । अमूमन तो मुझे अपने ऑफिस में बैठकर किसी क्लायंट के इंतजार में मक्खियां मारनी पड़ती हैं । और अगर क्लायंट आ भी जाए तो मुझे क्या हासिल होता है । पांच सौ रुपये जमा खर्चे । मेरी मौजूदा फीस । जो कि मेरे तकरीबन क्लायंट को ज्यादा लगती है जबकि इससे ज्यादा पैसे तो मैंने सुना है कि लोग-बाग करोल बाग या चांदनी चौक में गोलगप्पे बेचकर कमा लेते हैं ।

और इस रकम का ख्याल करते हुए साहबान उस जान को न भूलें जो कि आपके खादिम की थी और जाते-जाते बची था ।

"क्या सोच रहा है ?" मदान तनिक उतावले स्वर में बोला ।

"कुछ नहीं ।" मेरी तन्द्रा टूटी, "इंश्योरेंस के बारे में और कौन जानता है ? मेरा मतलब है तुम्हारे, शशिकान्त और इंश्योरेंस कम्पनी के अलावा ।"

"मेरा वकील ।" वो बोला ।

"पुनीत खेतान !"

"तू कैसे जानता है ?"

"क्या ?"

"कि पुनीत खेतान मेरा वकील है ?"

"आल इंडिया रेडियो से घोषणा हुई थी । और कौन जानता है ?"

"कोई नहीं ।"

"तुम्हारी बीवी भी नहीं ?"

"नहीं ।"

"पुनीत खेतान का पता ठिकाना ?"

"क्यों चात्ता है ?"

"बहस न करो ।"

"ऑफिस शक्ति नगर में । घर शालीमार बाग में ।"

"दोनों जगहों का पता बताओ । फोन नम्बर भी ।"

उसने बताया । मैंने नोट किया ।

"वो सामने" फिर मैंने पूछा, "वाल केबिनट की बगल में जो बंद दरवाजा है, उसके पीछे क्या है ?"

"बाथरूम ।" वो बोला, "क्यों ?"

"कुछ नहीं ।" मैंने कुर्सी पर पड़े शशिकांत की ओर इशारा किया, "घर ये ऐसे ही रहता था ?"

"क्या मतलब ?"

"ये सूट-बूट पहने तैयार बैठा है ।"

"कहीं जाने की तैयारी में होगा । या कहीं से लौटा होगा ।"

"ये अपनी स्टडी में बैठा है ।"

"तो क्या हुआ? साफ-साफ बोल क्या कहना चाहता है !"

"इसका यहां मौजूद होना साबित करता है कि हत्यारा न सिर्फ इसके लिए अपरिचित नहीं था बल्कि वो इतना जाना-पहचाना था कि हत्प्राण उसे यहां स्टडी में लेकर आया । ऐसा न होता तो उसने आगंतुक को ड्राइंगरुम में बिठाया होता या बाहर से ही टरका दिया होता ।"

"इसका क्या मतलब हुआ ?"

"इसका ये मतलब हुआ कि हत्यारा कोई अजनबी नहीं था । वो मरने वाले का खूब जाना-पहचाना था और उसे कतई उम्मीद नहीं थी कि वो यूं उस पर गोली चला सकता था ।"

"हूं ।"

"ऐसा बंदा कौन हो सकता है ? या बंदी कौन हो सकती है ?"

उसने उत्तर न दिया ।

"वो लड़की.. .सुजाता मेहरा...मकतूल की मुफ्त की हाउस कीपर, वो शाम को यहां से वापस कब जाती थी ?"

"कोई पक्का नहीं । जल्दी भी जाती थी । देर से भी जाती थी । नहीं भी जाती थी । शशि के मूड की बात थी । मैंने बताया तो था ।"

"हां, बताया था ।"

"वो कोई मुलाजिम तो नहीं थी न जो..."

"आई अडरस्टैंड । यानी कि हो सकता है कि कातिल के यहां आगमन के वक्त वो यहीं हो ।"

"कैसे हो सकता है ? कातिल इतना अहमक तो नहीं होगा कि यू अपने पीछे कत्ल का एक गवाह छोड़ जाता ।"

"उसे पता नहीं लगा होगा कि कोठी में कोई और भी था । आखिर इतनी बड़ी कोठी है ये ।"

"लेकिन अंधाधुंध गोलियां चलने की आवाज सुनकर वो लड़की क्या भीतर खामोश बैठी रही होगी ।"

"अपनी जान की खैर चाहती होगी तो खामोश ही बैठी होगी !"

"लेकिन बाद में...बाद में भला कैसे वो यूं शशि को पीछे मरा छोड़कर यहां से खिसक गई होगी ?"

"कत्ल के केस में इन्वोल्व्मेंट से हर कोई बचना चाहता है ।"

"कोल्ली, वो लड़की हर कोई नहीं थी, वो शशि की दीवानी थी । वो शशि को पीछे मरा छोड़कर यूं खिसक नहीं सकती थी । खिसक भी सकती थी तो कत्ल के" उसने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली, "चौदह -पंद्रह घंटे बाद तक वो खामोश नहीं रह सकती थी । और कुछ नहीं तो वो कम से कम पुलिस को एक गुमनाम टेलीफोन कॉल ही कर तकती थी । आज यहां तेरे कत्ल का प्रोग्राम न होता और उसकी वजह से मेरा यहां आना लाजिमी न होता तो यूं तो पता नहीं कब तक ये यहां मरा पड़ा रहता ।

"तुम कहते हो कि लड़की ग्यारह बजे के आसपास यहां आती है ?"

"हां ।"

"अगर वो ग्यारह बजे यहां आ गई तो इसका मतलब ये होगा कि कत्ल की उसे कोई खबर नहीं यानी कि कल रात कत्ल के दौरान वो वहां मौजूद नहीं थी ।"

"न आई तो भी तो ये मतलब नहीं होगा कि उसे कत्ल की खबर थी । सौ और वजह हो सकती हैं, उसके यहां न आने की ।"

"ये भी ठीक है । वो रहती कहां है ?"

"मंदिर मार्ग । वर्किंग गर्ल्ज होस्टल में ।"

"अब तुम एक काम करो ।"

"क्या ?"

"यहां से फूट जाओ ।"

"कहां फूट जाऊं ?"

"अपने घर । चुपचाप । समझ लो कि तुम यहां आए ही नहीं । घर जाकर अपनी बीवी को समझाओ कि कल

शाम से तुम घर से नहीं निकले । तुम्हारी तबीयत खराब थी । तुम्हारे पेट में, पसली में, कान में, कहीं दर्द था । या ऐसी ही कोई और अलामत सोच लो जिसकी वजह से डॉक्टर को तो नहीं बुलाना पड़ता लेकिन आराम जरूरी होता है, बल्कि मजबूरी होता है ।"

"मुझे कभी-कभी गठिया का दर्द होता है ।"

"बढ़िया । एन वही कल शाम को तुम्हें हो गया था । अभी भी है । मदान दादा, ये जरूरी है कि तफ्तीश के लिए जब तुम्हारे यहां पहुंचे तो वो तुम्हें हाय-हाय करता बिस्तर के हवाले पाए और तुम्हारी बीवी इस बात की तस्दीक करे कि वो हाय-हाय कल शाम से जारी थी । कहना मानती है वो तुम्हारा ?"

"कैसे नहीं मानेगी ? खौफ खाती है वो मेरा ।"

"बढ़िया । कहने का मतलब ये है कि अगर मेरी झूठी गवाही नहीं चल सकती तो तुम्हारी बीवी की झूठी गवाही तो चल सकती है ।"

"तुमसे बेहतर चल रुकती है लेकिन..."

"क्या लेकिन ?"

"वो शाम को घर पर नहीं थी । अगर किसी को ये बात पता हुई या ऐन कत्ल के समय उसे किसी ने कहीं और देखा हुआ हो तो ?"

"उससे बात करो । मालूम करो कि ऐसी कोई सम्भावना है या नहीं ।"

"अगर हुई तो ?"

"तो अपनी ये जिद फिर भी बरकरार रखना कि गठिया वाले दर्द की वजह से तुम घर पर थे, अलबत्ता अपने खस्ताहाल की वजह से तुम्हें ये खवर नहीं थी कि बीवी बीच में थोड़ी देर के लिए कहीं चली गई थी ।"

"मुझे बिना बताए ?"

"क्या हर्ज है ?"

"तू मरवाएगा, कोल्ली । यूं तो वो भी शक के दायरे में आ जाएगी ।"

"तो क्या बुरा होगा ? बतौर मर्डर सस्पेक्ट पुलिस की तवज्जो अगर किसी और की तरफ जाती है तो तुम्हें फायदा ही है ।"

"लेकिन मधु...."

"ये न भूलो कि कत्ल के वक्त वो घर पर नहीं थी और तुम्हें मालूम भी नहीं कि वो कहां थी ।"

"कोल्ली तू पागल है । तेरा दिमाग चल गया है । अरे, मधु तो शशि को ठीक से जाननी-पहचानती तक नहीं वो भला क्यों इसका कत्ल करेगी ?"

"ये खोजबीन का, जांच-पड़ताल का मुद्दा है ।"

"मां के सिर का मुद्दा है तेरी ।"

"मदान दादा, मेरे से गाली-गलौज की जुबान बरतोगे तो फीस बढ़ जाएगी ।"

"उसने कोई सख्त बात कहने के लिए मुंह खोला और फिर कुछ सोचकर चुप हो गया ।"

"अब हिलो यहां से सुजाता मेहरा के आने का वक्त हो रहा है ।"

"तू भी तो हिल ।"

"नहीं, मैं अभी यहीं ठहरूंगा ।"

"क्यों ?'

"एक तो मैं ये देखना चाहता हूं कि निर्धारित वक्त पर वो लड़की यहां आती है नहीं । दूसरे मैं यहां रिवॉल्वर तलाश करना चाहता हूं ।"

"क्या !"

"मैं यहां भीतर और बाहर, और कोठी के आसपास भी, बाईस कैलिबर की वो रिवॉल्वर तलाश करना चाहता हूं जिससे कि कत्ल हुआ है ।"

"वो यहीं होगी ?"

"उम्मीद तो है । अगर वाकई कत्ल किसी औरत जात ने किया है जिसने कि रिवॉल्वर का रुख मकतूल की तरफ किया और आंखें बन्द करके रिवॉल्वर उस पर खाली कर दी तो फिर इस बात की भी काफी सम्भावना है कि कत्ल के बाद वो रिवॉल्वर यहीं कहीं फैंक गयी होगी ।"

"दम तो है तेरी बात में । मैं मदद करू तेरी रिवॉल्वर की तलाश में ?"

"नहीं । जरूरत नहीं । तुम फिलहाल वही करो जो मैंने कहा है । फूटो यहां से ।"

"बाहर राहदारी में मर्सरी के टायरों के निशान हैं । उन निशानों से साफ पहचाना जाएगा कि कोई मर्सरी यहां आई थी और मर्सरी सिर्फ मेरे पास..."

"वो निशान पुलिस को नहीं मिलेंगे तुम्हारे जाते ही उन्हें मैं मिटा दूंगा ।"

उसके चेहरे पर प्रशंसा और कृतज्ञता के भाव आए ।

"पहलवान का क्या होगा ?" एकाएक वह बोला ।

"वो मोती बाग वाले मकान में ही है ।" मैं बोला "किसी भरोसे के आदमी को वहां भेजकर उसे वहां से छुड़वा लो ।"

"मैं खुद जाता हूं ।"

"खुद जाते हो तो जल्दी जाओ क्योंकि अपने फ्लैट पर तुम्हारी हाजिरी जरूरी है । तुम उसे वहां से छुड़ाकर हो सके तो कुछ दिन के लिए इस शहर से रुखसत कर दो ।"

"हो सकता है क्यों नहीं हो सकता ?"

"तो जाके हो सकने का इंतजाम करो ।"

एक आखिरी निगाह मकतूल पर डालकर वो वहां से विदा हो गया ।

हाथी दांत की मूंठ वाली बाईस कैलीवर की नन्ही-सी खूबसूरत रिवॉल्वर मुझे सफेदे के एक पेड़ की जड़ में उगी लंबी घास में पड़ी मिली । मुझे उस पर से उंगलियों के कोई निशान मिलने की कतई उम्मीद नहीं थी फिर भी मैंने उसे बड़ी सावधानी से रूमाल में लपेटकर उठाया और उसका सीरियल नम्बर देखा ।

फायरआर्म्स रजिस्ट्रेशन के आफिस मेरा पुराना पटाया हुआ एक जमूरा था जो कि स्कॉच व्हिस्की की एक बोतल या पीटर स्कॉट की दो बोतल की एवज में चुपचाप मुझे बता देता था कि किस सीरियल का कौनसा हथियार किसके नाम रजिस्टर्ड था ।

ड्राइंगरूम के फोन से हाथ में रुमाल लपेटकर मैंने उसे फोन किया और उसे वो नम्बर बता दिया। उसने मुझे एक घंटे बाद फोन करने को कहा।

फिर मैंने ड्राइव-वे पर से मर्सडीज के टायरों के निशान मिटाने का काम आरम्भ किया। ड्राइव-वे के दोनों ओर ऊंचे पेड़ उगे होने की वजह से मुझे काफी ओट हासिल थी लेकिन फाटक की ओर से कोई भीतर झांकता तो वो साफ देख सकता था कि मैं क्या कर रहा था।

लेकिन पचास हजार रूपये फीस देने वाले क्लायंट के लिए इतना रिस्क तो मैंने लेना ही था।

टायरों के निशान मिटाने की अपनी प्रक्रिया मैंने शुरू ही की थी कि एकाएक मैं ठिठका।

ड्राइव-वे के बीचों-बीच मझे एक जोड़ी टायरों के निशान और दिखाई दिए। वे निशान बाइसिकल के टायर से ज्यादा चौड़े नहीं थे और कार के टायरों की तरह ही समानांतर बने हुए थे।

मुझे साइकिल रिक्शा का ख्याल आया।

लेकिन वे निशान संकरे थे, साइकिल रिक्शा की चौड़ाई के हिसाब से एक-दूसरे के ज्यादा करीब थे।

व्हील चेयर।

अपाहिजों के काम आने वाली पहियों वाली कुर्सी।

निश्चय ही वे व्हील चेयर के निशान थे।

व्हील चेयर के ताजा बने निशान।

क्या मतलब था उनका!

किसी संभावित मतलब पर सिर धुनते हुए मैंने मर्सिडीज के टायरों के निशान मिटाने का काम आगे बढाया।

मैं ड्राइव-वे के मिडल में पहुंचा तो मुझे जमीन पर एक जुगनु-सा चमकता दिखाई दिया।

मैंने झुककर उसका मुआयना किया तो पाया कि वह एक नन्हा-सा हीरा था।

हीरा!

तुरंत मेरा ध्यान मदान की बीवी के टॉप्स की ओर गया। मैंने हीरा उठाकर जेब के हवाले किया।

टायरों के निशान मिटाने के चक्कर में मैं झुका हुआ न होता और मेरी निगाह पहले से ही जमीन पर न होती तो वो हीरा शायद ही मुझे दिखाई दे पाता।

मैंने जल्दी-जल्दी टायरों के बाकी निशान मिटाए।

तब तक ग्यारह बज चुके थे लेकिन सुजाता मेहरा के कदम वहां नहीं पड़े थे।

मैंने उसका थोड़ी देर और इन्तजार करने का फैसला किया। वक्तगुजारी के लिए मैंने सारी इमारत के हर कोने खुदरे का चक्कर लगाया।

कहीं कोई असाधारण बात मुझे दिखाई न दी।

मैं वापस स्टडी में पहुंचा।

वहां मैंने देखा कि एक चाबियों का गुच्छा मेज के दराजों के ताले में लगी एक चाबी सहारे लटक रहा था। जाहिर था कि अगर मालिक मर न गया होता तो दराजों को मजबूती से ताला लगा होता और चाबी मालिक के अधिकार में होती।

फिंगर प्रिंट्स का खास ध्यान रखते हुए मैंने बारी-बारी मेज के तीनों दराज खोले।

सबसे नीचे के दराज में मुझे एक वीडियो कैसेट दिखाई दिया।

मैं सोचने लगा।

पिछले बैडरूम में जहां कि टीवी और वीडियो था, मैंने कम से कम सौ विडियो कैसेट एक शैल्फ में बड़े करीने से सजे देखे थे।

तो फिर वो एक कैसेट मेज की दराज मे क्यों!

मैंने कैसेट को अपने अधिकार में किया और पिछले बैडरूम में पहुंचा। मैंने टीवी और वीडियो का स्विच ऑन किया, कैसट को वीडियो में लगाया, उसे थोड़ा रीवाइंड किया और ऑन का स्विच दबा दिया।

स्क्रीन पर अनिद्य सुन्दरी का अक्स उभरा।

उसके जिस्म पर कपड़े की एक धज्जी भी नहीं थी।

लड़की बहुत जवान थी और यौवन की दौलत से मालामाल थी। उसकी आंखों में एक वहशी चमक थी, चेहरे पर अजीब-सी तृप्ति के भाव थे और उसे अपनी नग्नता से कोई एतराज नहीं मालूम होता था।

फिर स्क्रीन पर उसके करीब सूट बूट से लैस एक व्यक्ति प्रकट हुआ।

मैंने उसे तुरंत पहचाना।

न पहचानने का कोई मतलब ही नहीं था आखिर वो मेरा हमशक्ल था।

वो मकतूल शशिकान्त था।

उसने नंगी लड़की को अपने आगोश में ले लिया।

मैंने वीडियो ऑफ करके कैसेट निकाल लिया। मुझे मजा तो बहुत आ रहा था फिल्म देखकर लेकिन उस पर और बरबाद करने के लिए उस घड़ी मेरे पास वक्त नहीं था।

तब तक सवा ग्यारह बज गए थे और सुजाता मेहरा का कहीं पता नहीं था। अब वहां और ठहरना बेमानी था। बेमानी और खतरनाक भी।

मैने बिजली का स्विच ऑफ किया और वापस स्टडी में पहुंचा। वहां मेज पर मेंने एक इकलौती चाबी पड़ी देखी थी। उम चाबी को वहां से उठाकर मैंने कोठी के मुख्यद्वार के ताले में ट्राई किया तो पाया कि चाबी उसी ताले की थी।

वो ताला स्प्रिंग लॉक था जो खोलना चाबी से पड़ता था लेकिन जो पल्ले के चौखट के साथ लगते ही खुद ही बंद हो जाता था। मैंने वहां से निकलकर दरवाजा बन्द किया ड्राइव-वे को पार करके बाहर का फाटक भी बंद किया और वहां से रुखसत हो गया।

Chapter 3

मैं कनाट प्लेस मेहरासंस के शोरूम में पहुंचा ।

मैंने उस सेल्समैन के बारे में दरयाफ्त किया जिसे सुबह मदान हीरे के टोप्स सोंपकर गया था । मैंने उसे मकतूल के ड्राइव-वे पर से मिला हीरा दिखाया । उसने टोप्स निकाले और उसे खाली पड़ी जगह में जोड़कर इस बात की तसदीक की कि वो वहीं से उखड़ा हुआ हीरा था ।

"अब नया हीरा तराशने की जरूरत नहीं ।" सेल्समैन बोला, "अब तो यही लग जाएगा ।"

"नया ही तराशिये ।" मैं वो हीरा बड़ी सफाई से उसकी उंगलियों से निकालता हुआ बोला ।

अपने पीछे तनिक हकबकाए सेल्समैन को छोड़कर मैं वहां से रुखसत हो गया ।

मैं मंदिर मार्ग पहुंचा ।

सुजाता मेहरा वहां गर्ल्स होस्टल के दूसरी मंजिल पर स्थित अपने कमरे में मौजूद थी ।

वो वक्त वर्किंग गर्ल्स के होस्टल में मौजूद होने नहीं होता था इसलिए होस्टल में काफी हद तक सन्नाटा छाया हुआ था ।

सुजाता मेहरा 'तेरी सुबह कह रही है तेरी रात का फसाना' मार्का लड़की निकली । उम्र में वो कोई तेईस चौबीस साल की थी, खूबसूरत थी, नौजवान थी लेकिन सूरत से ही मौहल्ले भर में मुंह मारती फिरने वाली बिल्ली की तरह चरकटी और नदीदी लग रही थी ।

पता नहीं चालू लड़कियों को भगवान इतना खूबसूरत क्यों बनाता है, या शायद खूबसूरत लड़कियां ही चालू होती हैं ।

मैंने उसे अपना परिचय दिया और परिचय की तसदीक के तौर पर अपना एक विजिटिंग कार्ड भी थमाया ।

उसने मुझे कमरे में एक कुर्सी पर बिठाया और स्वयं मेरे सामने पलंग पर बैठ गई । वह बिना दुपट्टे के शलवार कमीज पहने थी इसलिए ढका होने के बावजूद उसके उन्नत वक्ष का बहुत दिलकश नजारा मुझे हो रहा था ।

एक गिला मुझे रहा ।

दरवाजा उसने खुला छोड़ दिया था ।

युअर्स ट्रूली ये नहीं कहता कि दरवाजा बंद होता तो वो आकर मेरी गोद में ही बैठ जाती लेकिन तब ये सुखद सम्भावना कम से कम विचारणीय तो रहती ।

"कमरे में मेल गैस्ट को रिसीव करने के लिए" वो जैसे मेरे मन की बात भांपकर बोली, "दरवाजा खुला रखना जरूरी है । रूल है ये यहां का ।"

"ओह !" मैं बोला, "सिगरेट के बारे में क्या रूल है ?"

"चलेगा । एक मुझे भी दो । सुलगा के ।"

मैंने अपना एक डनहिल का पैकेट निकालकर दो सिगरेट सुलगाए और एक उसे थमा दिया । उसने बड़े तजुर्बेकार ढंग से सिगरेट के दो लम्बे कश लगाए और उसकी राख करीब मेज पर पड़े एक चाय के कप में झाड़ी । फिर उसने वही कप मेरी ओर सरका दिया ।

"मै सुन रही हूं ।" वो बड़ी बेबाकी से बोली ।

"क्या ?" मैं तनिक हकबकाया ।

"वही जो तुम कहने जा रहे हो ।"

"ओह! गुड । बात कैसी पसन्द करती हो ? आउटर रिंग रोड से खूब लंबा घेरा काट कर मकसद तक पहुचने वाली या शार्टकट वाली ।"

"शार्टकट वाली ।"

"गुड । आज मैटकाफ रोड नहीं गई ?"

उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा ।

"शशिकात के यहां ।" मैं आगे बढा, "शार्टकट वाली बात तो ऐसी ही होती है ।"

"नहीं गई तो तुम्हें क्या ?"

"मुझे तो कुछ नहीं लेकिन किसी और को है ?"

"किस को ?"

"पुलिस को ।"

"क्या ?"

"बात को बातरतीब आगे बढ़ने दोगी तो आसानी से सब कुछ समझ पाओगी । यकीन जानो जब मैं यहां से रुखसत होऊंगा तो समझने के लिए कुछ बाकी छोड़कर नहीं जाऊंगा ।"

"हूं ।" उसने हथेली में छुपाए रखकर ही सिगरेट का एक कश लगाया और धुआं पता नहीं किधर हजम कर लिया ।

"अब बोलो । मेटकाफ रोड शशिकान्त की कोठी पर क्यों नहीं गई जहां कि तुम हर रोज ग्यारह बजे जाती हो ?"

"नहीं गई । आगे भी कभी नहीं जाऊंगी ।"

"क्यों ?"

"वो कहानी अब खत्म ।"

"कैसे खत्म ?"

"कल शाम बहुत कमीनगी से पेश आया वो मेरे से । खामखाह मेरे से उल्टा-सीधा बोलने लगा । अकेले में कुछ कहता तो मैं सुन लेती लेकिन उसने तो अपने एक मेहमान के सामने मुझे बेइज्जत किया ।"

"मेहमान ?"

"कोई पुनीत खेतान करके था स्टाक ब्रोकर था वो उसका ।"

"स्टाक ब्रोकर या वकील ?"

"वकील भी होगा ।"

"यानी कि टू इन वन । कानूनी सलाहकार भी ओर इनवेस्टमेंट एडवाइजर भी । लीगल एंड फाइनांशल एडवाईजर !"

"वही समझ लो ।"

"वो कल शाम वहां था ?"

"हां । छ पांच पर आया था ।"

"ठहरा कब तक था ?"

"मुझे नहीं मालूम । क्योंकि मैं सात बजे तक वहां से चली आई थी ।"

"यानी कि तुम्हारे वहां से रुखसत होने तक वो वहीं था ?"

"न सिर्फ वहीं था, बल्कि अभी जल्दी रुखसत होने का उसका कोई इरादा भी नहीं लगता था ।"

"ऐसा कैसे सोचा ?"

"किसी बात पर झगड़ रहे थे दोनों । मेरे वहां से चले जाने तक वो झगड़ा किसी अंजाम तक पहुंचता जो नहीं लग रहा था ।"

"किस बात पर झगड़ रहे थे ?"

"मुकम्मल बात मुझे नहीं मालूम । मैं कोई उसके साथ थोड़े ही बैठी थी ।"

"वो कहां बैठे थे ?"

"शशि की स्टडी में ।"

"और तुम कहां थीं ?"

"पिछवाड़े के बैडरूम में ।"

"वहां तक स्टडी की आवाजें पहुचती थीं ?"

"तभी जब कोई बहुत ऊंचा बोले ।"

"झगड़ा पुनीत खेतान के आते ही शुरू हो गया था ?"

"नहीं । झगड़े का माहौल उसके आने के कोई पन्द्रह-बीस मिनट बाद बना था । बीच में एक-दो बार ठण्डा भी पड़ा था ।"

"वो किसलिए ?"

"मेरे से भी जो झगड़ना था उसने ।"

"आदतन झगड़ालू आदमी था शशिकांत ?"

"था क्या मतलब ? अब कौनसा उसे हैजा हो गया है ?"

उसके सिर्फ 'था' और 'है' में मीन-मेख निकालने लगने से ये मतलब नहीं लगाया जा सकता था कि उसे शशिकांत के कत्ल की खबर नहीं थी । मैं उसे जानना नहीं था । वो जितनी दिखती थी, उससे कहीं ज्यादा चालाक और पहुंची हुई हो सकती थी ।"

"आदतन झगड़ालू आदमी है" मैंने संशोधन किया, "शशिकान्त ?"

"पता नहीं क्या बला है ।" वो तिक्त भाव से बोली, "मैं तो समझ ही नहीं सकी उसका मिजाज ।"

"तुम जो बाकायदा उसकी हाउसकीपर बनी बैठी थी, किस खुशी में कर दी उसकी इतनी खिदमत ? क्यों हो

गई इतनी मेहरबान उस पर ?"

"इसी खामख्याली में कर दी खिदमत कि उसे मेरी कद्र होगी वो मुझ पर मेहरबान होगा ।"

"सफा-सफा हिन्दोस्तानी में इसे मर्द को अपने पर आशिक करवाने की कोशिश कहते हैं ।"

उसने घूरकर मुझे देखा ।

"औरत जात की" मैं निर्विकार भाव से बोला, "कुछ खास उम्मीदें जब किसी मर्द मे पूरी नहीं होती तो वो चिड़कर उस पर ये लांछन लगाने लगती है कि वो बेमुरब्बत है, बद्‌जुबान है, खुदगर्ज है, नाशुक्रा है वगैरह ..."

वो कुछ क्षण पूर्ववत् मुझे घूरती रही और फिर एकाएक हंसी ।

"यानी कि मैंने ठीक कहा ?" मैं बोला ।

"हां ।"

"ठीक कहने का कोई इनाम ?"

उसने सिगरेट का आखिरी कश लगाया और बचे हुए टुकड़े को आगे को झुककर उस चाय के प्याले में डाला जो उसने पहले ही मेरी तरफ सरका दिया हुआ था । यूं मुझे उसके उन्नत दूधिया वक्ष की घाटी में बहुत दूर तक झांकने का मौका मिला । अब पता नहीं वो बेध्यानी में ज्यादा नीचे झुक गई थी या वो नजारा मुझे कराकर उसने मुझे इनाम दिया था ।

"देखो" वो मुझे समझाती हुई बोली, "मैं उसकी नाइट क्लब में चिट क्लर्क की नौकरी करती थी । दो हजार तनख्वाह थी । और भी सुविधाएं थीं । नाइट क्लब जैसी जगह की मुलाजमत होने की वजह से ऊपरी कमाई के भी बड़े चांस थे । कुल मिलाकर बढिया, मौज-बहार वाली नौकरी थी । लेकिन पुलिस की मेहरबानी से नाइट क्लब पर ताला पड़ गया । खड़े पैर क्लब के सारे मुलाजिम बेरोजगार हो गए । दिल्ली शहर में आनन-फानन नई, बढ़िया नौकरी ढूंढ लेना कोई मजाक तो है नहीं । ऐसे माहौल में मैंने क्लब के मालिक को शीशे में उतारने की कोशिश की तो क्या गलत किया ?"

"क्लब खुलने पर नौकरी की बहाली हो जाती सिर्फ इसलिए ऐसा किया था या और कोई भी मकसद था ?"

"शुरू में कोई और मकसद नहीं था लेकिन जब माहौल ऐसा बन गया कि मैं एक तरह से उसकी कोठी पर ही रहने लगी तो और भी मकसद सूझने लगे ।"

"जैसे शादी ?"

"या एक्सपेंसिव मिस्ट्रेस ।"

"तुम्हें उसकी रखैल बनना भी मंजूर था ?"

"मामूली रखैल नहीं । कीमती रखैल । एक्सपेंसिव मिस्ट्रेस ।"

"लेकिन मंजूर था ।"

"मिस्टर, मेल ट्रेन मिस हो जाए तो पैसेंजर से सफर करने मे कोई हर्ज होता है ?"

"कोई हर्ज नहीं होता । पैसेंजर के बाद मालगाड़ी भी होती है फिर बस, घोड़ा-तांगा, बैलगाड़ी..."

"शटअप !" वो भुनभुनाई ।

" ओके ।"

"मैं इतना नीचे नहीं गिरने वाली ।"

"एक बार डाउनवर्ड स्लाइड शुरू हो जाए तो क्या पता लगता है कोई कितना नीचे गिरेगा ! लेकिन वो किस्सा फिर कभी । बहरहाल वो पटा नहीं तुम्हारे से ?"

"यही समझ लो । अजीब कन्फ्यूजन का माहौल रहा पूरा एक महीना । कभी लगता था पट रहा है तो कभी लगता था परों पर पानी पड़ने देने को तैयार नहीं । मैंने तो उसका मिजाज भांपने के लिए उसे जलाने की भी कोशिश की ।"

"अच्छा ! वो कैसे ?"

"अपने एक ब्वाय फ्रेंड के चर्चे करके ।"

"था कोई ऐसा । ब्वाय फ्रेंड ?"

"था । है ।"

"कौन ?"

"डिसूजा नाम है उसका । पॉप सिंगर है । क्लब में गाता-बजाता था ।"

"आई सी ।"

"एक-दो बार मैं शशिकांत के सामने डिसूजा के साथ डेट पर गई । मैंने खास ऐसा इंतजाम किया कि डिसूजा मुझे पिक करने के लिए ऐसे वक्त पर मेटकाफ रोड शशिकांत की कोठी पर आए जबकि वो घर हो ।"

"कोई नतीजा निकला ?"

"वो भुनभुनाया तो सही लेकिन हसद की उस आग में न जला जिसमें जलता मैं उसे देखना चाहती थी ।"

"फिर ?"

"कल भी डिसूजा मुझे लेने कोठी पर आने वाला था । उसके सामने ही जबकि उसका वकील पुनीत खेतान भी बैठा था, मेरे लिए डिसूजा का फोन आया जो कि मैंने स्टडी में शशिकांत के सिरहाने खड़े होकर सुना । मेरे फोन रखते ही वो मेरे पर फट पड़ा । अपने मेहमान के सामने जलील करके रख दिया कमीने ने मुझे । गुस्से में पता नहीं क्या-क्या भोंकता रहा । भड़क खेतान से रहा था और गले मेरे पड़ गया । कहने लगा अगर उस डिसूजा के बच्चे ने मेरी कोठी में कदम रखा तो साले को शूट कर दूंगा । फिर मुझे भी गुस्सा चढ़ गया । मैंने भी कह दिया कि वो कौन होता था मुझे किसी से मिलने से रोकने वाला ! जवाब में उसने इतनी गन्दी जुबान बोली कि कान पक गए मेरे ।"

"क्या बोला ?"

"बोला उसकी बला से मैं चाहे सारे शहर के डिसूजाओं के बिस्तर गर्म करूं लेकिन उसकी कोठी से बाहर ।"

"ओह ।"

"उसको अपने पर आशिक करवाने के अपने मिशन को निगाह में रखते हुए शायद मैं फिर भी जब्त कर लेती लेकिन वो उसका मेहमान, वो हरामजादा खेतान का बच्चा, मुझे बेइज्जत होता देखकर यूं मजे ले रहा था और हंस रहा था कि जी चाहता था कि उसका मुंह नोच लूं ।"

"उसका ? शशिकान्त का नहीं !"

"उसको तो उस वक्त गोली से उड़ा देने का जी चाह रहा था मेरा ।"

"इस काम के लिए तो कोई फायरआर्म, कोई हथियार दरकार होता । था तुम्हारे पास ?"

"नहीं था। जो कि अच्छा ही हुआ। नहीं तो जैसी उसने मेरी बेइज्जती की थी मैं जरूर उसे शूट कर देती।"

"शूट कर देने की जगह क्या किया ?"

"मैने उसकी चाबी उसके मुंह पर मारी और घर चली आई।"

"सात बजे ?"

"हां।"

"'तब पुनीत खेतान अभी वहीं था ?"

"हां। बोला तो ?"

"और डिसूजा ?"

"क्या डिसूजा ?"

"वो तुम्हें लेने जो आने वाला था ?"

"वो बात तो मैं भूल ही गई थी। वो तो मुझे तब याद आया जब कि अंगारों पर लोटती मैं यहां पहुंच गई।"

"वो गया तो होगा वहां ? आखिर उसे थोड़े ही पता था कि तुम वहां से हमेशा के लिए रुखसत ले चुकी हो।"

"वह तो है।"

"तुमने ये जानने की कोशिश नहीं की कि वो वहां गया था या नहीं ?"

"नहीं।"

"कमाल है।"

"वो....वो क्या है कि मैंने सोचा था कि मुझे वहां न पाकर वो यहां आएगा ?"

"आया ?"

"आया तो नहीं।"

"कल नहीं तो आज तो मालूम करती कि वो गया था या नहीं ?"

"मैं ...मैं अभी करती हूं।"

"कैसे ?"

"उसे फोन करके। नीचे ग्राउण्ड फ्लोर पर पब्लिक फोन है।"

मैं कुछ क्षण खामोश रहा, फिर मैंने सहमति में सिर हिला दिया।

वह पलंग से उठी और कमरे से बाहर निकल गई।

मैं दबे पांव दरवाजे के पास पहुंचा। मैंने बाहर गलियारे में झांका। वह सीढियों की ओर बढ रही थी। कुछ क्षण बाद जब वह सीढियां उतरती मेरी आखों से ओझल हो गई तो मैं चौखट पर से हटा। मैने घूमकर कमरे में चारों ओर निगाह डाली।

एक कोने में एक वार्डरोब थी। उसके करीब जाकर मैंने उसका हैंडल ट्राई किया तो मैंने उसे खुली पाया। मैने

भीतर निगाह दौडाई ।

भीतर एक खूंटी पर एक जनाना साइज की बरसाती टंगी हुई थी । उन दिनों बरसात का मौसम नहीं था ।

मैंने जेब से रूमाल में लिपटी रिवॉल्वर निकाली और रूमाल समेत उसे बरसाती की एक भीतरी जेब में डाल दिया ।

हजरात, खाकसार की उस हरकत को गलत न समझें । मेरा इरादा लड़की को फंसाने का कतई नहीं था, मैं तो महज वक्ती तौर पर उम फसादी रिवॉल्वर को किसी सुरक्षित जगह पर ट्रांसफर करना चाहता था और उस वक्त सामने मौजूद सुरक्षित जगह के इस्तेमाल का लोभ मैं संवरण नहीं कर पाया था ।

मैंने वार्डरोब को पूर्ववत बन्द किया और वापस कुर्सी पर आकर बैठ गया । मैंने एक नया सिगरेट सुलगा लिया और सुजाता के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा ।

कुछ क्षण बाद वह वापस लौटी ।

"बात नहीं हुई ।" वो पलंग पर ढेर होती हुई बोली, "पता नहीं नम्बर खराब है या वो घर पर नहीं है घंटी बजती है पर कोई उठाता नहीं ।"

"कोई बात नहीं ।" मैं बोला, "रहता कहां है वो ?"

"पंडारा रोड ।"

"पता और फोन नम्बर एक कागज पर लिख दो । कभी मौका लगा तो मैं उससे संपर्क करूंगा ।"

उसने ऐसा ही किया ।

"अकेले रहता है ?" कागज तह करके जेब के हवाले करते हुए मैंने पूछा ।

"हां ।"

"फिर तो घर ही नहीं होगा । तुम एक बात बताओ ।"

"पूछो ।"

"ये डिसूजा, तुम्हारा ब्वाय फ्रेंड तुम्हारे से इतना फिट है कि तुम्हारे भड़काने से वो किसी का खून कर दे ?"

"ऐसा कोई करता है !"

"मरता हो तो करता है । मरता है तुम्हारे पर ?"

"मरता तो बहुत है ।"

"फिर तो वो खून ...."

"ये खून वाली बात कहां से आ गई ?"

"तुम्हें नागवार लगती है तो फिलहाल जहां से आई है, वहीं वापस भेज देते हैं खून वाली बात और शशिकान्त और पुनीत खेतान के झगड़े पर आते हैं । किस बात पर झगड़ रहे थे वो ? ठहरो, ठहरो" उसे प्रतिवाद को तत्पर पाकर मैं जल्दी से बोला, "ये न कहना कि तुम उनके साथ नहीं बैठी थी या जहां तुम थीं वहां तक उनकी आवाज नहीं पहुचती थी । तुमने खुद कहा था कि ऊंचा बोलने पर आवाजें पीछे बैडरूम में तुम तक पहुंचती थी । अब झगड़ा खुसर-पुसर में तो होता नहीं । झगड़े का रिश्ता तुनकमिजाजी से, गुस्से से होता है । ऐसे माहौल में जब आदमी भड़कता है उसे पता भी नहीं लगता कि वो कब उंचा ऊंचा बोलने लगता है । कुछ तो न चाहते हुए भी तुमने सुना होगा ?"

"मेरी तवज्जो नहीं थी उधर ।"

"नहीं थी तो हो गई होगी । झगड़े का मुद्दा चाहे न समझ पाई होवो लेकिन फिर भी कुछ तो जरूर सुना होगा ।"

वो सोचने लगी ।

"मैं आशापूर्ण निगाहों से उसकी सूरत देखता रहा । सोच में उसकी भवें तन गई, होंठों की कोरें नीचे को झुक गई और चेहरा यू खिंच गया कि वो उस घड़ी मुझे जरा भी खूबसूरत न लगी । अच्छी-भली खूबसूरत लड़की सोचने की कोशिश में पता नहीं क्या लगने लगी । जिस किसी ने भी ये कहा था कि खूबसूरती और अक्ल में छत्तीस का आंकड़ा होता था, जरूर उसने किसी खूबसूरत औरत को वैसे ही सोच में जकड़ा देख लिया था जैसे मैं उस घड़ी सुजाता मेहरा को देख रहा था ।

फिर उसके चेहरे से क्षणिक विकृति के लक्षण गायब होने लगे ।

मैं आशान्वित हो उठा । सोच का कोई सुखद नतीजा निकलता दिखाई दे रहा था ।

"उनमे झगड़े का मुद्दा वो बोली, कोई कागजात थे ।"

"कागजात !" मैं सकपकाया ।

"हां । किन्हीं कागजात को लेकर शशिकान्त पुनीत खेतान पर कोई इल्जाम लगा रहा था जिसकी खेतान पहले सफाई देने की कोशिश करता रहा था और फिर वो भी भड़क उठा था ।"

"क्या कागजात रहे होंगे वो ?"

"मुझे क्या पता ?"

"सोचो ।"

"जितना सोच सकती थी सोच लिया । अब और सोचने से भी कोई नतीजा नहीं निकलने वाला ।"

तब उसकी जगह मैं साचने लगा ।

क्या झगड़े का मुद्दा वो कागजात शशिकान्त की मां कौशल्या की वो चिट्ठी हो सकती थे जिसमे इस बात का सबूत निहित था कि लेखराज मदान मुकंदलाल सेठी का कातिल था । उस चिट्ठी ने कहीं तो होना ही था । क्या वो खेतान के कब्जे में रही हो सकती थी । कहीं इसीलिए तो चिट्ठी मदान के हाथ नहीं आ रही थी क्योंकि वो खेतान के पास रखकर चिराग तले अंधेरा वाली कहावत को चरितार्थ कर रही थी ।

लेकिन उस चिट्ठी को ले के झगड़ने वाली क्या बात थी ?

मुझे कोई बात ना सूझी ।

"कल शाम की कोई और बात ?" प्रत्यक्षत: मैं बोला ।

"और क्या बात ?" वह बोली ।

"शशिकांत की कोठी पर तुम्हारी मौजूदगी के दौरान कोई और आया था ?"

"पुनीत खेतान के अलावा कोई नहीं ।"

"कोई और जिक्र के काबिल बात ?"

उसने इनकार में सिर हिलाया ।

"सोच के जवाब दो ।"

उसने कुछ क्षण सोच की पहले जैसी ही भयानक मुद्रा बनाई और फिर दोबारा इनकार में सिर हिलाया ।

"नैवर माइंड । अब नहीं तो फिर सही । कई बार किसी के कहने पर दिमाग पर जबरन जोर देने पर कोई बात नहीं याद आती जबकि वाद में किसी वक्त वो सहज स्वाभाविक ढंग से ही याद आ जाती है । यूं कोई बात बाद में याद आ जाए तो गांठ बांध लेना और वक्त आने पर मुझे बताना न भूलना ।"

उसने सहमति में सिर हिलाया ।

"गुड ।" मैं बोला, "अब तुम सुनो खून वाली बात और पुलिस वाली बात ।"

"सुनाओ ।"

"शशिकांत का खून हो गया है ।"

"क्या !"

"वो मेटकाफ रोड पर अपनी स्टडी में मरा पड़ा है । किसी ने बाइस कैलीबर की रिवॉल्वर से गोलियां बरसाकर उसकी दुक्की पीट दी है । हालात ये बताते हैं कि कत्ल शाम साढ़े आठ के करीब हुआ था और गोलियां चलाई जाने का पैटर्न ये साबित करता है कि गोलियां किसी औरत ने चलाई थीं, उसने आंख बंद कर ली थीं और रिवॉल्वर का रुख मकतूल की तरफ करके घोड़ा खींचना शुरू कर दिया था ।"

"पै....पैटर्न क्या ?"

मैने उसे बताया कि गौलियां कैसे-कैसे चली थीं और कहां कहां टकराई थीं ।

"वो...वो औरत", वो हकलाई, "मैं थोड़े ही हो सकती हूं !"

"क्यों नहीं हो सकती ?"

"मैं....मैं तो सात बजे ही वहां से चली आई थी । वो...वो वकील वो पुनीत खेतान...वो मेरा गवाह है ।"

"कहीं से चले आकर वहां वापिस भी लौटा जा सकता है ।"

"मैंने ऐसा नहीं किया । और फिर मेरे पास रिवॉल्वर का क्या काम ?"

"वो घटनास्थल पर मौजूद रही हो सकती है ।"

"मुझे रिवॉल्वर चलाना नहीं आता ।"

"वो क्या मुश्किल काम है । रिवॉल्वर का रुख टारगेट की तरफ करना होता है और घोड़ा दबा देना होता है ।"

"ल...लेकिन निशाना लगाना तो मुश्किल काम होता होगा ।"

"जब बहुत सी गोलियां चलाई जाएं तो कोई तो निशाने पर लग ही जाती है ।"

"ब..बहुत-सी गोलियां !"

मैंने बड़े उदासीन भाव से हामी में गर्दन हिलाई ।

"देखो" वह तनिक दिलेरी से बोली, "तुम खामखाह मुझे डरा रहे हो । मेरा उसके कत्ल से कुछ लेना-देना नहीं ।"

"तुमने अभी कहा था कि तुमने उसके मुंह पर चाबी मारी और घर चली आई ।"

"हां ।"

"कैसे ?"

"ऑटो से ।"

"सीधे ?"

"नहीं ! पहले मैं तालकटोरा गार्डन गई थी ।"

"वो किसलिए ?"

"जो कुछ पीछे मेटकाफ रोड पर हुआ था उसकी वजह से मन बहुत अशांत था । मूड सुधारने की नीयत से तालकटोरा टहलने गई थी । फिर वहां से पैदल चलकर यहां लौटी थी ।"

"कितने बजे ?"

"नौ तो बज ही गए थे ।"

"इस लिहाज से साढ़े आठ बजे तुम तालकटोरा गार्डन में टहल रही थीं ?"

"हां ।"

"साबित कर सकती हो ?"

"कैसे साबित कर सकती हूं ? कोई वाकिफकार तो मुझे वहां मिला नहीं था ।"

"पुलिस ये दावा कर सकती है कि तुम अकेले या अपने फ्रेंड के साथ वापस मैटकाफ रोड गई थीं और खून करने के बाद सीधे यहां आई थीं ।"

"प...पुलिस !"

"हर हाल में तुम्हारे तक पहुंचेगी ।"

"मैं क्या करूं ?"

"ये मैं बताऊं ?"

"तुम्हीं बताओ । आखिर डिटेक्टिव हो । मुझे निकालो इस सांसत से । कुछ मदद करो मेरी ।"

"कुछ क्या पूरी मदद करता हूं ।" मैं उसकी आंखों मे झांकते हुए बोला ।

"शुक्रिया ।"

"दरवाजा बन्द करो ।" मैंने आगे झुककर उसकी जांघ पर हाथ रखा ।

"पागल हुए हो !" उसने तत्काल मेरा हाथ परे झटक दिया, "मुझे होस्टल से निकलवाओगे ।"

"तो फिर किसी जगह चलो जहां ऐसा खतरा न हो ।"

"कहां ?" वो संदिग्ध स्वर में बोली ।

"जहां मैं ले चलूं ।"

"पहले मेरी जान तो सांसत से छुड़वाओ ।"

"वो तो समझ लो छूट गई ।"

"कैसे ?"

"तुम्हें नहीं पता, अभी भी नहीं पता, कि शशिकांत का कत्ल हो गया है। तुम आज भी ऐसे ही वहां जाओ जैसे रोज जाती हो। जाके दरवाजा खोलो, लाश बरामद करो और शोर मचाना शुरू कर दो। यूं यही लगेगा कि तुम कल शाम के वाद पहली बार वहां लौटी हो।"

"चाबी !"

"तुम्हें उम्मीद थी कि वो घर होगा।"

"दरवाजा खुला होगा ?"

"रात को इतनी तकरार के बाद सुबह फिर वहां पहुंच जाने की मैं क्या सफाई दूंगी ?"

"कहना कि तुम्हें अहसास हुआ था कि गलती तुम्हारी थी। इसलिए आज तुमने अपनी गलती की तलाफी के तौर पर वहां जाना और भी जरूरी समझा था।"

उसने संदिग्ध भाव से मेरी ओर देखा।

"चाहने वालों में" मैं आश्वासनपूर्ण स्वर में बोला, "ऐसी तकरार होती ही रहती हैं। आज रूठे कल मान गए।"

"यानी कि मैं उसे अपना चाहने वाला कबूल करूं ?"

"ऐसा तो वैसे भी समझा ही जाएगा। आखिर तुम उसके घर में रहती थीं और ये बात कहीं छुपने वाली है।"

वह कुछ क्षण सोचती रही, फिर उसने सहमति में सिर हिलाया।

"तो फिर चलो।" मैं उठता हुआ बोला, "मैंने उधर ही जाना है, तुम्हें मैटकाफ रोड उतारता जाऊंगा।"

"मैं कपड़े तो बदल लूं।"

"बदल लो।" मैं सहज भाव से बोला।

"तुम्हारे सामने बदल लूं ?"

"क्या हर्ज है ?"

"पागल हुए हो।"

"मैं नीचे जाके ऑटो तलाश करता हूं। जल्दी आना।"

उसने सहमति में सिर हिलाया।

नीचे पहुंचकर मैंने खुद डिसूजा का टेलीफोन नम्बर ट्राई किया लेकिन नतीजा सुजाता वाला ही निकला। कोई जवाब न मिला।

फिर मैंने एक निगाह अपनी कलाई घड़ी पर डाली और फायर आर्म्स रजिस्ट्रेशन के आफिस में फोन किया।

मालूम हुआ कि वाईस कैलीबर की हाथी दांत की मूठ वाली जो रिवाल्वर मैंने शशिकांत की कोठी के कम्पाउंड से बरामद की थी, वो कृष्ण बिहारी माथुर नाम के किसी सज्जन के नाम रजिस्टर्ड थी जो कि फ्लैग स्टाफ रोड पर एक नम्बर कोठी में रहता था।

माथुर ! फ्लैग स्टाफ रोड।

पहले मेरा इरादा शक्तिनगर पुनीत खेतान के ऑफिस में जाने का था लेकिन अब मैंने फ्लैग स्टाफ रोड जाने का

निश्चय किया ।

वहां पहुंचने के लिए भी मैटकाफ रोड रास्ते में आती थी इसलिए कोई समस्या नहीं थी ।

मैंने डायरेक्ट्री में मदान के पेंटहाउस अपार्टमेंट का नम्बर देखा और उस पर फोन किया ।

फोन खुद मदान ने उठाया ।

"कोल्ली ।" मेरी आवाज सुनते ही वह व्यग्र भाव से बोला, "ओए, अभी तक पुलिस नहीं बोल्ली ।"

"बोल पड़ेगी ।" मैं बोला, "बस एक घंटा और लगेगा ।"

"मैं सस्पेंस से मरा जा रहा हूं ।"

"मत मरो । तुम भी मर गए तो इंश्योरेंस क्लेम की दुक्की पिट जाएगी ।"

"दुर फिटे मूं ।"

"कहानी तैयार है तुम्हारी ।"

"पूरी तरह से ।"

"बीवी फिट हो गई ।"

"हां । सब समझा दिया है उसे ।"

"बढ़िया ।"

"फोन कैसे किया ?"

"तुम्हारी बीवी की जो बहन है....सुधा माथुर जो फ्लैग स्टाफ रोड पर रहता है फ्लैग स्टाफ रोड पर कहां रहती है ?"

"एक नम्बर कोठी में ।"

"हस्बैंड का क्या नाम है ?"

"कृष्णबिहारी माथुर । क्यों ?"

"मैं उससे मिलना चाहता हूं ।"

"क्यों ?"

"है कोई वजह ।"

"तू उसके पास भी नहीं फटक पाएगा ।"

"क्यों ?"

"वो पुराने जमाने का टिपीकल रईस आदमी है जो ऐरे गैरे लोगों को अपने पास न फटकने देने में अपनी शान समझता है । करोड़पति है । कई कारोबार कई मिल हैं उसकी । बादशाह की तरह रहता है फ्लैग स्टाफ रोड पर । आम, मामूली लोगों से आदम बू आती है उसे । कीड़े-मकोड़े समझता है उन्हें । तू उससे मिलने की कोशिश करेगा तो कोई तुझे उसकी कोठी का फाटक भी नहीं लांघने देगा ।"

"इस पंजाबी पुत्तर ने फ्लैग स्टाफ रोड की किसी कोठी से बड़े-बड़े किले फतह किये हुए हैं ।"

"वहां दाल नहीं गलेगी वीर मेरे। यकीन कर मेरा।"

"कभी वहां तुम्हारी अपनी दाल कच्ची रह गई मालूम होती है।"

जवाब में उसके मुंह से बड़ी भद्दी गाली निकली और फिर वह बोला, "भूतनी दा रईस होगा तो अपने घर का होएगा।"

"तुम्हारे से रिश्तेदारी नहीं मानता ?"

"मैं नहीं मानता।"

"उसी ने पास नहीं फटकने दिया होगा अंडरवर्ल्ड डान को ! गैंगस्टर शिरोमणि को ! रैकेटियर-इन-चीफ को।"

"बक मत।"

"क्लायंट का हुक्म सिर माथे पर।"

"तू क्यों मिलना चाहता है उससे ?"

"तुमने अभी उसे पुराने जमाने का टिपीकल रईस कहा। है ही वो पुराने जमाने का रईस या उसकी फितरत पुराने जमाने के रईसों जैसी है ?"

"दोनों।"

"क्या मतलब ?"

"अगर तेरा जवाब उसकी उम्र की बाबत है तो वो साठ साल का है।"

"तोबा। तुम्हारे से भी पांच साल बड़ा !"

"कोल्ली, दसवीं बार पूछ रहा हूं। तू क्यों मिलना चाहता है उससे ?"

उत्तर देने के स्थान पर मैंने लाइन काट दी।

मामला गहराता जा रहा था।

जिस रिवॉल्वर से हत्या हुई थी, वो हत्प्राण के कथित भाई की बीवी की बहन के पति के नाम रजिस्टर्ड थी।

मैंने डायरैक्ट्री में कृष्णबिहारी माथुर की एंट्री निकाली। उसके नाम के आगे दो दर्जन टेलीफोन अंकित थे जिनमें से कम से कम चारफ्लैग स्टाफ रोड के पते वाले थे।

मैंने एक नंबर पर फोन किया।

तुरंत उत्तर मिला।

"हल्लो।" एक मर्दाना आवाज मुझे सुनाई दी।

"मैं" मैं बोला, "मिस्टर कृष्यबिहारी माथुर से बात करना चाहता हूं।"

"आप कौन साहब ?"

"मेरा नाम सुधीर कोहली है।"

"किस बारे में बात करना चाहते हैं ?"

"मामला पर्सनल है।"

"मुझे बताइए। मैं उनका प्राइवेट सैक्रेट्री हूं।"

"और गोपनीय भी, प्राइवेट सैक्रेट्री साहब।"

"फिर भी मुझे बताइए।"

"और अर्जेंट भी।"

"आप खामखाह वक्त जाया कर रहे हैं। साफ बोलिए आप कौन सी प्राइवेट, पर्सनल और अर्जेंट बात करना चाहते हैं वर्ना मैं फोन बंद करता हूं।"

"आपको बताए बिना बात नहीं होगी ?"

"मुझे बताने के वाद भी होने की कोई गारंटी नहीं।"

"वो मामला इतना नाजुक है कि खुद माथुर साहब ही पसंद नहीं करेंगे कि....."

"आप बेकार बातों में वक्त जाया कर रहे हैं। मैं फोन बद करता हूं।"

"सुनिए। सुनिए। प्लीज।"

"बोलिये। जल्दी।"

"मैं माथुर साहब से एक रिवॉल्वर के बारे में बात करना चाहता हूं।"

"रिवॉल्वर।"

"बाइस केलीबर की। हाथी दांत की मूठ वाली। सीरियल नम्बर डी-24136 है। माथुर साहब के नाम रजिस्टर्ड है।"

"क्या बात करना चाहते हैं है आप उस रिवॉल्वर के बारे में।"

"मै उन्हें ये बताना चाहता हूं कि वो रिवॉल्वर इस वक्त कहां है।"

"कहां है क्या मतलब ? उनकी रिवॉल्वर उनके पास नहीं है ?"

"नहीं है।"

"आपको कैसे मालूम ?"

"मालूम है। कैसे मालूम है, ये मैं उन्हीं को बताऊंगा। अब आप बेशक फोन बंद कर दीजिए।"

कुछ क्षण खामोशी रही।

"अपना नाम फिर से बताइए।" फिर पूछा गया।

"कोहली। सुधीर कोहली।"

"आपकी लाइन आफ बिजनेस क्या है, मिस्टर कोहली ?"

"मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूं।"

"आधा घंटे बाद फोन कीजिए, मिस्टर कोहली।"

"लेकिन......"

मैं खामोश हो गया। तब तक लाइन कट चुकी थी।

मैंने सीढ़ियों की ओर निगाह दौड़ाई, सुजाता को नमूदार होती न पाकर वक्तगुजारी के लिए मैंने अपने ऑफिस फोन किया।

"यूनिवर्सल इन्वेस्टिगेशंस। मुझे अपनी सैक्रेट्री रजनी का खनकता हुआ स्वर सुनाई दिया।

"मैं" मैं बोला, "तुम्हारा एम्प्लोयर बोल रहा हूं।"

"बोलिए !"

"बोलिए ! मैं भुनभुनाया, "हद है तुम्हारी भी।"

"क्या हुआ ?" उसने भोलेपन से पूछा।

"अरे कोई राम सलाम नहीं, कोई नमस्ते नहीं, कोई गुड मार्निंग नहीं। ईट मार दी। बोलिए। मैं तुम्हारा एम्प्लायर हूं या तुम्हारा दूध वाला हूं ?"

"आप मेरे दूध वाले होते तो फिर मैं ऐसे थोड़े ही बोलती !"

"फिर कैसे बोलती ?"

"फिर मैं कहती नमस्ते चाचाजी।"

"चाचाजी !"

"हां। आप मेरे चाचा जी बनना चाहते हैं ?"

"अरे, जहन्नुम में गया तेरा चाचा जी मूड खराब कर दिया।"

"सारी।"

"कहती है सारी।"

"आप अगर इस वक्त अपने एम्प्लोयर की फोन कॉल रिसीव करने का मेरा पोज देख पाते तो खुश हो जाते। फिर न कहते कि ईट मार दी।

"देख पाता तो क्या देखता मैं ?"

"आप देखते कि मैं सावधान की मुद्रा में खडी हूं। मेरा दायां हाथ सैल्यूट की सूरत में मेरे माथे पर है और मैं थर-थर कांप रही हूं।

"रजनी मैं जो सवेरे दफ्तर नहीं पहुंचा, तूने कोई फिक्र की इत बात की ?"

"बहुत फिक्र की।"

"फिक्र की तो क्या किया ?"

"सारे बड़े अस्पतालों की केजुअलटी पर फोन किया आस-पास के सारे थानों से पूछताछ की। अभी डायरेक्ट्री में तिहाड़ जेल का नम्बर देख रही थी कि आपका फोन आ गया।"

"लानत ! लानत !"

"अब आप कहां से बोल रहे हैं ? इन्ही जगहों में से किसी में से या कहीं और से ?"

"कहीं और से ।"

"शुक्र है भगवान का । जान मे जान आ गई ।"

"कम से कम ये तो पूछना था कहीं और से कहां से ।"

"होंगे आप किसी नई बहन जी के पहलू में । हफ्ता दस दिन तो अब दफ्तर क्या आ पाएंगे आप !"

"अहमक ! जानती नहीं कि मैं मरता-मरता बचा हूं ।"

"अच्छा !"

"हां । वो रात को ...."

"जरूर कोई विषकन्या पल्ले पड़ गई होगी इस बार ।"

"तौबा ! तेरे से तो बात करना भी गुनाह है । एक नंबर की कम्बख्त औरत है तू ।"

"करेक्शन । एक नंबर की नहीं हूं । औरत नहीं हूं ।"

"लेकिन कम्बख्त है ।"

"बन गई हूं कुछ-कुछ आपकी सोहबत में ।"

"अब ये बात अभी कितनी बार कहेगी ?"

"जितनी बार आप मुझे ये एक नम्बर की कम्बख्त औरत वाला फिकरा कहेंगे ।"

"ठीक है, मर ।"

"खड़े खड़े ? सावधान और सैल्यूट की मुद्रा में थर थर कांपते हुए ?"

"जैसे मुझे यकीन आ गया है कि तू ऐसे खड़ी है ।"

"आके तसदीक कर लीजिये ।"

"आना जैसे आसान है ।"

"जो बहन जी आने से रोके हुए हैं, वो इजाजत दे तो कोई दिव्यदृष्टि पैदा कीजिये अपने आपमें ।"

"क्या मुश्किल काम है ?" मैं व्यंगपूर्ण स्वर में बोला ।

"आपके लिये । आखिर इतने बड़े जासूस हैं आप ।"

तभी मुझे सीढियां उतरती सुजाता दिखाई दी ।

"ठीक है ।" मैं बोला, मैं आके खवर लेता हूं तेरी ।" मैंने फोन हुक पर टांग दिया ।

***

मैं फ्लैग स्टाफ रोड पहुंचा ।

कृष्णबिहारी माथुर की कोठी पर एक निगाह पड़ते ही मुझे कबूल करना पड़ा कि मदान ने उसके बारे में गलत नहीं कहा था । वो भव्य, विशाल कोठी जिसके सामने मैं उस घड़ी खड़ा था, यकीनन किसी बादशाह के आवास के ही काबिल हो सकती थी ।

गरीब आदमी के लिए पैसा भगवान है लेकिन दौलतमंद के लिए पैसे का रोल बड़ा सीमित होता है । दौलतमंद की जिदगी में दौलत की एक ऐसी स्टेज आ जाती है, जबकि बतौर दौलत वो यूजलेस शै बन जाती है, तब उसका कोई इस्तेमाल मुमकिन होता है तो यही कि उससे और दौलत कमाई जा सकती है । दौलतमंद को जरूर इस बात का अफसोस रहता होगा कि खुदा ने उसका दस मुंह और बीस पेट क्यों न दिए, वो चांदी घोल के क्यों नहीं पी सकता, सोने का निवाला क्यो नहीं खा सकता, हीरे जवाहरात क्यों नहीं चबा सकता ? शायद यही वजह है कि दौलतमंद आदमी अपनी दौलत का सबसे व्यापक और भौंडा प्रदर्शन इमारत बनाने और औलाद की शादी करने पर करता है ।

वल्गर डिस्पले ऑफ वेल्थ का एक नमूना माथुर की कोठी की सूरत में उस वक्त मेरे सामने मौजूद था । कोठी दोमंजिला थी और एक कोई पांच हजार गज के प्लाट के बीचों-बीच ताजमहल की तरह खड़ी थी । आयरन गेट से कोठी तक पहुचते ड्राइव-वे के दायें-बायें ऊचे-ऊचे पेड़ थे और मखमली घास था, खूबसूरत फूल थे, फव्वारे थे और संगमरमर की प्रस्तर प्रतिमाएं थीं । दिल्ली शहर में उस ढंग से उतनी जगह में बनी दूसरी इमारत जरूर राष्ट्रपति भवन ही होगा ।

आयरन गेट पर खड़े सशस्त्र गोरखे को मैंने अपना परिचय दिया ।

जैसा कि हुक्म हुआ था, आधे घंटे बाद मैं वहां फोन करके आया था और मेरी माथुर से मुलाकात की दरख्वास्त कबूल हो चुकी थी ।

चौकीदार ने मुझे भीतर दाखिल हो लेने दिया, एक वर्दीधारी नौकर को वहां तलब किया और मुझे उसके हवाले कर दिया । नौकर मुझे एक रेलवे प्लेटफार्म जितने बड़े ड्राइंगरूम में ले गया ।

"आप यहां बैठिए ।" वह बड़े अदब से बाला, "मैं भीतर खबर करता हूं ।"

मैने सहमति में सिर हिलाया लेकिन मैने बैठने का उपक्रम नहीं किया ।

नौकर वहां से विदा हो गया ।

मै सोचने लगा ।

हालात बड़े उम्मीद अफजाह थे । ये बड़ा सुखद संयोग था कि मर्डर वैपन का मालिक एक रईस आदमी निकला था । युअर्स ट्रूली को कोई अतिरिक्त चार पैसे हासिल होने की उम्मीद किसी रईस आदमी से ही हो सकती थी । कड़के से क्या हासिल होता !

मुझे सिगरेट की तलब लग रही थी लेकिन वहां कहीं ऐश-ट्रे न दिखाई दे रही होने की वजह से मुझे अपने पर जब्त करना पड़ रहा था इतनी शानदार जगह पर सिगरेट की राख बिखराने की जुर्रत आपके खादिम से नहीं हो रही थी ।

कुछ क्षण जब वही पहले वाला नौकर ट्रे पर कोल्ड ड्रिंक का एक गिलास रख वपिस लौटा ।

उसने ट्रे मुझे पेश की ।

मैंने गिलास उठा लिया ओर बोला, "ऐश ट्रे ।"

उसने एक सोफे के सामने पड़ी शीशे की मेज की तरफ इशारा किया ।

वहां कांसे का बना एक हाथी पड़ा था । हाथी का हौदा ऐश ट्रे की तरह इस्तेमाल होने के लिए बना था ।

तौबा । मैंने जिसे सजावटी मुजस्मा समझा था, वो ऐश ट्रे निकली थी ।

"मैंने नायर साहब को खबर कर दी है ।" नौकर बोला, "आगे वही आपसे बात करेंगे ।"

"नायर साहब कौन हैं ?" मैंने पूछा ।

"साहब के प्राइवेट सैक्रेट्री हैं ।"

"ओह ।"

नौकर फिर वहां से रुखसत हो गया ।

कोल्ड ड्रिंक का गिलास मैंने हाथीनुमा ऐश ट्रे वाली मेज पर रखा और उसके सामने एक सोफे पर ढेर हो गया । मैने अपना डनहिल का पैकेट निकालकर एक सिगरेट सुलगा लिया ।

सोफा किसी तजुर्बेकार कॉलगर्ल की आगोश जैसा आरामदेय था । मुझे डर लग रहा था कि उस पर बैठा-बैठा कहीं मैं ऊंघने न लगूं ।

तभी वहां का भीतर की ओर एक दरवाजा खुला और भीतर एक सुन्दर युवती ने कदम रखा ।

मैं हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ ।

मेरे पर निगाह पड़ते ही लड़की थमककर खड़ी हो गई । उसके चेहरे पर एकाएक हैरानी और बदहवासी के भाव प्रकट हुए । कुछ क्षण वह मुझे मुंह बाए देखती रही ।

मैंने देखा कि वह मर्दो जैसी खुले गले की लंबी धारियों वाली कमीज और डेनिम की जींस और जैकेट पहने थी । जींस इतनी टाईट थी कि ऐसा लगता था जैसे टखनों से कमर तक जिस्म पर डेनिम की रंगत का स्प्रे पेंट हुआ था । उसकी कमीज के तीन बटन खुले थे जिसकी वजह से उसके गले की मरमरी रंगत का मुझे बड़ा दिलकश नजारा हो रहा था । कमीज बड़ी-बड़ी जेबों वाली थी और वक्ष के उभार जेबों में भरे लगते थे ।

काबू में आ जाए - मन ही मन घुटनों तक लार टपकाते हुए मैंने सोचा - तो सबसे पहले जेब ही खाली करूं साली की ।

फिर उसके चेहरे के भाव बदले । मुझे लगा जैसे उसने चैन की गहरी सांस ली हो ।

मैंने देखा कि उसके बाल कटे हुए थे और मेकअप के नाम पर उसके होंठों पर बहुत सलीके से चढ़ी हुई सिर्फ लाल लिपस्टिक दिखाई दे रही थी ।

"हल्लो देयर ।" वह मुस्कराकर बोली ।

"हल्लो युअरसेल्फ ।" मैं बड़े अदब से बोला ।

गेंद की तरह फुदकती हुई वो मेरी तरफ बढ़ी । मैने उसकी उम्र का अंदाज बीस के आसपास का लगाया ।

वह मेरे विल्कुल सामने आ खड़ी हुई तो एकाएक मेरे जेहन में बिजली सी कौंधी !

वो वही लड़की थी जिसे मैंने शशिकांत की मेज की दराज से बरामद वीडियो कैसेट में देखा था । उस वक्त क्योंकि वो पूरी ढकी हुई थी इसलिए मुझे उसको पहचानने में वक्त लगा था । आखिर नंगी औरत में सूरत से कहीं बेहतर देखने लायक चीजें होती हैं ।

"जरूर कोई ममी के वाकिफ हो ।" वह बोली, "क्योंकि मैं तो तुम्हें जानती नहीं ।"

"ममी !" मेरे मुंह से निकला ।

"मेरे डैडी की बीवी । ममी ही हुई न मेरी ? मिसेज माथुर । मिसेज सुधा माथुर ।" उसके स्वर में व्यंग्य का स्पष्ट पुट था ।

"आप माथुर साहब की बेटी हैं ?"

"हां । पिंकी कहते हैं मुझे ।"

मदान ने सुधा माधुर को अपनी बीवी से सिर्फ चार साल बड़ी बताया था । इस लिहाज से वो पिंकी, वो स्वनामधन्य बालिका, सुधा माथुर की बेटी तो नहीं हो सकती थी ।

"सौतेली मां की बेटी हैं आप ।" मैं बोला ।

"बेटी तो सगी मां की ही होती है ।"

"मेरा मतलब है ये....ये सुधा जी माथुर साहब की दूसरी बीवी हैं ?"

"हां । तुम सुधा से ही मिलने आए होगे लेकिन वो तो इस वक्त घर होती नहीं ।"

"वजह ।"

"इंटीरियर डेकोरेटर जो है । अपने एक्सटीरियर की डेकोरेशन की नुमायश करने के लिए इंटीरियर डेकोरेशन का सजावटी धंधा पकड़ा हुआ है पट्ठी ने ।"

"इतने रईस आदमी की बीवी ये धंधा ...."

"पैसा कमाने के लिए नहीं करती । शौक की खातिर करती है । पास्टाइम के लिए करती है और ..."

"और क्या ?"

"घर से अकेली निकलने का बहाना हासिल करने के लिए करती है ।"

"आई सी ।"

"इस वक्त कनाट प्लेस में होगी । अपने ऑफिस में । आई मीन होगी तो होगी, वैसे नहीं भी होगी ।"

"मैं उनसे मिलने नहीं आया ।"

"सच !"

"हां ।"

"वैल, दैट्स गुड न्यूज । मुझे तो गुस्सा ही आने लगा था ।"

"किस बात पर ?"

"इसी बात पर । जो भी खूबसूरत सजीला नौजवान इस घर में कदम रखता है, वो ममी से ही मिलने आया होता है । उसका क्लायंट बनके । अपना इटीरियर डैकोरेट कराने के लिये ।"

"ये खूबसूरत सजीला नौजवान आपने मुझे कहा ?"

"तुम्हें 'ही' कहा । और कौन है यहां ?"

"फिर तो तारीफ का शुक्रिया ।"

"सिर्फ थोबड़ा ही खूबसूरत है या हरामी भी हो ?"

"वो तो मैं एक नंबर का हूं।"

"और कमीने ?"

"फुल।"

"खास दिल्ली वाली किस्म के ?"

"हां।"

"और फंदेबाज ? मतलबी ? हरजाई ?"

"एक्सपोर्ट क्वालिटी का।"

"फिर तो तुम्हारी मेरी निभ जाएगी हफ्ता दस दिन। क्योंकि मैं खुद ऐसी ही हूं।"

"कैसी ?"

"हरजाई। कमीनी। फ्लर्ट।"

"और फ्रैंक। साफगो।"

"वो भी। नाम क्या है तुम्हारा ?"

"सुधीर।"

"कुम्भ राशि हो न ?"

"हां।"

"कुम्भ राशि से मेरी खास पटती है। इसलिए तुम्हारे साथ हो सकता है हफ्ता-दस दिन की जगह महीना दो महीना चल जाए।"

"जहेनसीब।"

मैं समझ नहीं पा रहा था कि वो जो कुछ कह रही थी, दिल से कह रही थी या महज अपनी हाजिरजवाबी को धार दे रही थी।

"आज मौसम बढ़िया है।" वो बोली, "चलो कहीं ड्राइव पर चलें।"

"मेरे पास कार नहीं है।" मैं खेदपूर्ण स्वर में बोला।

"नो प्राब्लम। मेरे पास है। कई हैं।"

"लेकिन।"

"खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे हरामी दो।"

"इस वक्त मेरा तुम्हारे डैडी से मिलना जरूरी है।"

"मत मिलो।"

"निहायत जरूरी है।"

"सोच लो। ये मौका दोबारा हाथ नहीं आएगा।"

"आएगा। जल्द आएगा।"

"क्या ?"

"मौका। दोबारा तुम्हारे से मुलाकात का।"

"मिस्टर सोच लो। नाओ ऑर नैवर।"

"शाम को कहां पाई जाती हो ?"

"शाम किसने देखी है।"

" कहां पाई जाती हो ?"

"मेरी शामें ऐसे अहमक के लिए नहीं हैं जिसको मेरे से ज्यादा जरूरी मेरे बाप से मिलना लगता हो।" उसने जोर से पांव पटके और रोषपूर्ण स्वर में बोली, "गुड बाई।"

"ठहरो, ठहरो।"

"इरादा बदल रहे हो ?" वो ठिठककर बोली।

"वो तो मुमकिन नहीं लेकिन एक बात का जवाब दो।"

"किस बात का ?"

"अभी जब तुम्हारी पहली निगाह मेरे ऊपर पड़ी थी तो तुम चौंक क्यों गई थी, बदहवास क्यों हो गई थीं ?"

"मैं तो नहीं चौंकी थी। मैं तो नहीं हुई थी बदहवास ..."

"क्या इसलिए क्योंकि मुझे शशि समझ बैठी थीं ?"

"शशि ?"

"सिर्फ हेयर स्टाइल और मूंछों का फर्क है।"

"तुम क्या कह रहे हो मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"तुम किसी शशि को नहीं जानती ?"

"नहीं जानती।"

"यूं आनन-फानन बिना सोचे-समझे जवाब मत दो। कम से कम ये तो पूछ लो कि मैं किस शशि की बात कर रहा हूं। और नहीं तो उसका पूरा नाम तो पूछ लो।"

"पूछ लिया। बोलो, क्या है पूरा नाम ? कौन है वो ?"

"पूरा नाम शशिकांत। घर मैटकाफ रोड पर। राजेन्द्र प्लेस में नाइट क्लब। कुछ याद आया ?"

"नहीं।"

"फिर तो अभी जो अपनी खूबियां बयान करके हटी हो, उसमें एक खूबी और जोड़ लो।"

"क्या ?"

"बड़ी ढीठ हो।"

"शटअप ।"

"और भुलक्कड़ भी । मादरजात अल्फ नंगी होकर जिस मर्द को एंटरटेन कर रही थी, उसे चंद दिन भी याद न रख सकीं ।"

"क्या ।"

"मैंने सिर्फ दो मिनट फिल्म देखी थी तो तुम्हारे सांचे में ढले नंगे जिस्म को देख मुझे गश आने लगा था, पूरी फिल्म देखता तो मेरी हालत अस्पताल जाने वाली हो जाती । या शायद शमशान पहुंचने वाली ।"

"फिल्म ? कैसी फिल्म ?"

"वीडियो फिल्म, मेरे पास है । शाम को मिलना । दिखाऊंगा ।"

"क ...कहां ?"

"जहां तुम कहो ।"

"फोन करना ।"

"कहां ?"

"2511265 पर । ये मेरा प्राइवेट नंबर है । इसे मैं ही उठाती हूं । मैं नहीं उठाऊंगी तो कोई और भी नहीं उठाएगा ।"

"गुड ।"

वो लम्बे डग भरती वहां से विदा हो गई ।

मैं वापस सोफे पर बैठ गया ।

मैं अभी बैठा ही था कि वहां एक सूट-बूटधारी साउथ इंडियन ने कदम रखा । उम्र में वो कोई पचास साल का था और इतना काला था कि चमड़ी की और बालों की रंगत में फर्क मुश्किल से ही मालूम होता था । उसकी आंखें तीखी थीं और चेहरे पर बुद्धिमत्ता की छाप थी ।

"हल्लो ।" वह बोला "आई एम नायर । मैं मिस्टर माथुर का प्राइवेट सैक्रेट्री हूं ।"

"मैं सुधीर कोहली ।" मैं उठता हुआ बोला ।

"आई नो । वेलकम, मिस्टर कोहली । मिस्टर माथुर शूटिंग रेंज पर हैं...."

"शूटिंग रेंज पर हैं !" मैं सकपकाया, "लेकिन मुझे तो यहां मिलने आने को कहा गया था ।"

"मिस्टर कोहली ।" वो मुस्कराया, "शूटिंग रेंज यहीं है । मिस्टर माथुर को जिस चीज की जरूरत होती है, वो उनके लिये यहीं मुहैया की जाती है । वो चीज के पास नहीं जाते । चीज उनके पास आती है ।"

"कमाल है !"

"शूटिंग रेंज यहीं कोठी के पिछवाड़े में है । आप उनके पास जाना चाहते हैं तो तो अभी चल सकते हैं वर्ना अभी और इन्तजार कीजिए ।"

"मैं और इन्तजार नहीं करना चाहता ।"

"तो फिर तशरीफ लाइए ।"

मैं उसके साथ चलता हुआ कोठी के पिछवाड़े में पहुंचा । वहां एक बहुत बड़ा उद्यान था जिसके बीच में स्वीमिंग पूल था और जिसके आगे शूटिंग रेंज था ।

पिछवाड़े में पहुंचते ही शूटिंग की आवाज आने लगी थी । स्वीमिंग पूल से पार हो जाने के बाद मुझे एक उम्रदराज आदमी दिखाई दिया जो कि रायफल से दूर टंगे टारगेट पर गोलियों से निशाना साध रहा था । मैंने देखा कि वो आदमी खड़ा होकर रायफल चलाने की जगह बैठकर ऐसा कर रहा था और जिस कुर्सी पर वो बैठा था वो एक व्हील चेयर थी ।

"मिस्टर माथुर अपाहिज हैं ।" नायर धीरे से बोला, "दो साल पहले लकवे के शिकार हो गए थे । दोनों टांगे बेकार हो गई हैं । बस, कमर से ऊपर के ही अंग चलते हैं ।"

"ओह ! फिर तो कहीं आते-जाते तो क्या होंगे !"

"बहुत कम आते-जाते हैं । बहुत ही कम । तभी जब कहीं जाना इंतहाई जरूरी हो ।"

"कोई इलाज वगैरह...."

"कोई इलाज नहीं । इंग्लेंड अमरीका तक के डॉक्टर इन्हें लाइलाज घोपित कर चुके हैं ।"

"दैट्स टू बैड ।"

हम पीछे से उनकी ओर बढे ।

मेरे देखते-देखते माथुर ने रायफल से जितनी भी गोलियां चलाई वो तमाम की तमाम टार्गेट से कहीं-न-कहीं टकराई । निशाना खूब था उसका ।

हम करीब पहुंचे तो उसने रायफल रख दी ।

मैंने देखा कि अपाहिज होते हुए भी साठ साल की उम्र के लिहाज से उसकी तंदरुस्ती बुरी नहीं थी । उसके चेहरे पर चमक थी और बाल उस उम्र में भी आधे से ज्यादा काले थे ।

उसकी सूरत से यूं लगता था जैसे जिंदगी की हर देखने लायक चीज कई-कई बार देख चुका था और पहली बार देखने पर भी किसी चीज का उस पर कोई खास रौब गालिब नहीं हुआ था ।

इसे कहते हैं खालिस बड़ा आदमी- मैंने मन ही मन सोचा ।

"सर" नायर ने आगे बढ़कर उसे बताया, "मिस्टर कोहली हैज अराइवड ।"

उसने पैनी निगाहों से मेरी तरफ देखा ।

मैंने हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया ।

मेरे अभिवादन पर उसने कोई खास गौर फरमाया हो, ऐसा न लगा । उसने अपने सैक्रेट्री को इशारा किया जो कि फौरन लम्बे डग भरता वहां से रुखसत हो गया ।

"सो" नायर बहुत दूर निकल गया तो वह मेरे से मुखातिब हुआ, "यु आर ए प्राइवेट डिटेक्टिव ।"

"आई हैव दि ऑनर, सर ।" मैं बड़े अदब से बोला ।

"यहां खड़े ही रहना पड़ेगा तुम्हें ।"

उसकी व्हील चेयर के करीब एक छोटी-सी टेबल पड़ी थी जिस पर कारतूस के कुछ डिब्बे और दो रिवॉल्वरें रखी हुई थीं । वो चाहता तो मुझे उस टेबल पर बैठने को कह सकता था लेकिन वो भला क्यों चाहता! उसे मेरी असुविधा से क्या लेना-देना था !

"आई डांट माइंड सर ।" प्रत्यक्षत: मैं बोला ।

"या भीतर चलें ?"

"मेरे लिए तो एक ही बात है । आप जैसा मुनासिब समझें ।"

"आज मौसम बढ़िया है । आउटडोर के काबिल ।"

"यहीं ठीक है सर ।"

"यू श्यॉर यू डोंट माइंड कीप स्टैंडिंग ।"

"नॉट एट आल, सर ।"

"सो नाइस आफ यू ।" वो एक क्षण ठिठका और फिर बोला ।

"तुम्हारा फोन आने और तुम्हारे यहां पहुंचने के बीच के वक्फे में हमने तुम्हारे बारे में तफ्तीश कराई है ।"

"कुछ अच्छा तो सुनने को नहीं मिला होगा सर !"

"अच्छा ही सुनने को मिला है । काफी फेमस प्राइवेट डिटेक्टिव बताये जाते हो । नो ?"

"अंधों में काना राजा जैसी कुछ पूछ है तो सही, सर, मेरी दिल्ली शहर में ।"

"रिवॉल्वर की क्या बात है ?"

"पहले आप ये बताइए कि सीरियल नंबर डी- 241436 वाली, हाथी दांत की मूठ बाली, बाइस केलीवर की रिवॉल्वर क्या वाकई आपकी मिलकियत है ?"

"है तो सही ।"

"आपके पास है ?"

"तुम्हें मालूम तो नहीं है । हमें पहले नहीं मालूम था लेकिन अब मालूम है । तुम्हारी पहली फोन कॉल के बाद हमने रिवॉल्वर को उसकी जगह पर चैक किया था । वो अपनी जगह पर मौजूद नहीं थी ।"

"सर वो मर्डर वैपन है ।"

"क्या ?"

"उससे कत्ल हुआ है ।"

"किसका ?"

"वो...तो मुझे नहीं मालूम ।"

"ये कैसे मालूम है कि कत्ल हुआ है ?"

"मुझे बताया गया है ?"

"किसने बताया है ? साफ-साफ बोलो । पहेलियां न बुझाओ ।"

"सर, बतौर प्राइवेट डिटेक्टिव मेरी खिदमात हासिल करने का ख्वाहिशमंद एक आदमी मेरे पास आया था उसी ने मुझे सब कुछ बताया है और उसी के अधिकार में इस वक्त वो रिवॉल्वर है ।"

"नाम क्या है उसका ?"

"नाम बताना मेरे पेशे के उसूलों के खिलाफ है ।"

"वो हमारी रिवॉल्वर, जिसे वो शख्स मर्डर वैपन बताता है, उसके अधिकार में है ?"

"जी हां ।"

"वो चाहता क्या है?"

"वो मुझे बिचोलिया बनाकर उस रिवॉल्वर के बदले में आप से चार पैसे खड़े करना चाहता है ।"

"चार पैसे किस रकम को कहता है ?"

"पचास हजार रुपयों को ।"

"और तुम" उसके स्वर में तिरस्कार का पुट आ गया, "हमें ये राय देने आए हो कि ये रकम दम उसे सौंप दें !"

"सर, मैं आपको ये राय देने आया हूं कि आप उसे कानी कौड़ी न दें !"

वो सकपकाया । वो कुछ क्षण अपलक मुझे देखता रहा और फिर बदले स्वर में बोला - "अच्छा !"

"जी हां ।"

"मिस्टर, अभी तुम कह रहे थे कि उस शख्स का नाम बताना तुम्हारे पेशे के उसूलों के खिलाफ है अब उसके हितों के खिलाफ हमें राय देते वक्त कोई उसूल नहीं टूट रहा तुम्हारे पेशे का ?"

मैं हड़बड़ाया । मैं उसे क्या बताता कि वो बात तो तब लागू होती जबकि ऐसे किसी क्लायंट का अस्तित्व होता ।

"वो सिर्फ प्रस्ताव है, सर" मैं बोला, "मेरा क्लायंट वो अभी बन नहीं गया है । और फिर मुझे उसकी बात की हकीकत को परखने का पूरा अख्तियार है । यू अंडरस्टेंड माई पॉइंट, सर ?"

उसने हिचकिचाते हुए सहमति में सिर हिलाया ।

"तो" एक क्षण बाद वह बोला, "तुम समझते हो कि हमें उस शख्स को खातिर में नहीं लाना चाहिए !"

"जी हां ।" मैं जोशभरे स्वर में बोला, "सर, वो क्या है कि जाती तौर पर मैं ब्लेकमेलिंग के सख्त खिलाफ हूं । ब्लेकमेलर की मांग तो, सर, जूते की तरह होती है जो एक बार फटना शुरू हो जाए तो फटता ही चला जाता है । ब्लेकमेलर अपने शिकार के साथ एक बार जोंक बनकर चिपट जाता है तो मुकम्मल खून निचोड़कर ही मानता है ।"

"लेकिन जब रकम के बदले में रिवॉल्वर हमें वापस मिल जायेगी तो ..."

"ब्लैकमेलर रिवॉल्वर की तस्वीरें रख सकता है, उसके बैलेस्टिक मार्क्स का रिकार्ड रख सकता है, दस्तावेज के तौर पर अदला-बदली की केस हिस्ट्री वनाकर अपने पास महफूज रख सकता है, वो सारे सिलसिले का कोई गवाह खड़ा कर सकता है ।"

"ओह !"

"और फिर मुझे पूरा यकीन है कि आप जैसे उच्चकोटि के श्रीमंत का या उनके परिवार के किसी सदस्य का कत्ल जैसे जघन्य अपराध से कोई रिश्ता तो हो ही नहीं सकता । सच पूछिए तो मेरा ये यकीन ही मुझे आप तक लाया है, न कि आपके और ब्लैकमेलर के बीच बिचौलिया वनने का इरादा ।"

"दैट्स वैरी नाइस ऑफ यू । वैरी नाइस ऑफ यू इनडीड । तुम तो बड़े कैरेक्टर वाले नौजवान मालूम होते हो

।"

"आपकी जर्रानवाजी है, सर, जो आपने मुझे ऐसा समझा ।"

"तुम तो हमारे बहुत काम आ सकते हो । वी मे नीड युअर प्रोफेशनल सर्विसिज ।"

"आई विल बी ओनली टू ग्लैड टु बी ऑफ एनी सर्विस टु यू सर ।"

"लेकिन सवाल ये है कि उस रिवॉल्वर की बरामदगी के सिलसिले में हमारे लिए काम करना क्या तुम्हें मंजूर होगा ?"

"जी !"

"भई, हमारा इंटरेस्ट तुम्हारे उस ब्लैकमेलर क्लायंट के इंटरेस्ट से ऐन उलट जो है ।"

"ऐसा तब होगा सर जबकि रिवॉल्वर वाकई मर्डर वैपन, कत्ल का हथियार साबित हो । और फिर मैंने अभी कहा है कि वो मेरा क्लायंट अभी बन नहीं गया है ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ? हमारा मतलब है वो रिवॉल्वर कैसे कत्ल का हथियार साबित हो सकती है ? या नहीं साबित हो सकती है ?"

"सर, इजाजत दें तो इस वाबत मैं आपसे एकाध सवाल करूं ?"

"करो ।".

"वो रिवॉल्वर यहां कहां रखी जाती थी ?"

"मेरी स्टडी में । कोठी के ग्राउण्ड फ्लोर पर । उसी के एक कोने में मेरी गन की केबिनेट है जिसमें कई राइफलें, पिस्तौलें और रिवॉल्वरे हैं । उस कैबिनेट के एक दराज में ये रिवॉल्वर पड़ी होती थी ।"

"दराज को ताला ? "

"कभी जरूरी नहीं समझा गया ।"

"यहां के नौकर चाकर...."

"खानदानी हैं । वफादार हैं । स्वामिभक्त हैं ।"

"आजकल चांदी का जूता मार के किसी का ईमान खराब कर देना क्या मुश्किल है !"

"यहां यूं ईमान खो देने वाला नौकर कोई नहीं हमारी गारंटी ।"

"आई सी तब तो आपके फैमिली मेम्बर्स की ही उस रिवॉल्वर तक पहुंच थी ।"

"दो नानमेम्बर्स की भी पहुंच थी उस तक ।"

"वो कौन हुए ?"

"एक हमारा प्राइवेट सेक्रेट्री नायर जिससे तुम अभी मिले हो और दूसरा हमारा वकील । दोनों भरोसे के आदमी हैं । नायर तो, जब से मैं अपाहिज हुआ हूं हमारा हाथ पांव, दिमाग सब कुछ है ।"

"यहीं रहते हैं नायर साहब ?"

"रहता अशोक विहार में है लेकिन जरूरत पड़ने पर यहां भी रुक जाता है ।"

"अशोक विहार में कहां ?"

उसने एक पता बताया जो कि मैंने नोट कर लिया।

"और वकील साहब ?"

"वो शालीमार बाग रहता है। लेकिन वो नायर की तरह रोज यहां नहीं होता। नायर तो नौ से छः बजे तक लाजमी तौर पर यहां होता है वकील तभी आता है जब या तो बुलाया जाए या फिर उसका शूटिंग की प्रैक्टिस का दिल कर आए।"

"वो भी आपकी तरह शूटिंग का शौक रखते हैं ?"

"हां पक्का निशानेबाज है वो। क्रैक शॉट। सारी दिल्ली में नाम है।"

"क्या नाम है उनका ?"

"पुनीत खेतान।"

"जी !"

"तुम्हारे जैसा ही खूबसूरत और होनहार नौजवान है। कारोबारी मशवरे के लिए तो हमारे पास फौज है वकीलों की लेकिन खेतान मेरा पर्सनल लीगल एडवाइजर है। फैमिली मेम्बर जैसा दर्जा है उसका यहां !"

खुशकिस्मत है पट्ठा ! - मैं मन ही मन भुनभुनाया - हर जगह फिट है।

"आपकी फैमिली में कौन-कौन है," प्रत्यक्षतः मैं बोला।

"मेरे अलावा मेरी बीवी सुधा है, नौजवान बेटी पिंकी है और उससे कोई दस साल बड़ा नौजवान बेटा मनोज है।" वह एक क्षण ठिठका और फिर बोला "मिस्टर कोहली, जब तुम्हें हमने कांफिडेंस में लिया है और तुम हमारे लिए काम भी करने वाले हो तो एक बात हम तुमसे छुपाकर नहीं रखना चाहते।"

"कौन-सी बात ?"

"पिंकी की बात। लेकिन वादा करो कि इस बाबत तुम कहीं मुंह नहीं फाड़ोगे ?"

"मैं वादा करता हूं।"

"गुड। हमारे साथ वफादारी दिखा कर घाटे में नहीं रहोगे, मिस्टर कोहली। हमारा काम करो, वो रिवॉल्वर हमें वापस दिलाओ, बतौर फीस हम तुम्हारी कल्पना से बाहरी रकम तुम्हें देंगे।"

"कि.... कितनी !"

"तुम्हारा वो ब्लैकमेलर क्लायंट उस रिवॉल्वर के बदले में हमसे पचास हजार रुपए हासिल करना चाहता है। कोहली उसे पचास हजार रुपए देने की जगह हम तुम्हें एक लाख रुपया देना पसंद करेंगे।"

मेरा दिल जोर से धड़का। मेरा जी चाहा कि मैं वार्तालाप को वहीं विराम लगाकर आंधी की तरह मंदिर मार्ग पहुंचूं और तूफान की तरह रिवॉल्वर लेकर वापस लौटूं।"

बड़ी मुश्किल से आपके खादिम ने अपने लालच पर जब्त किया।

"सर" मैं बोला, "अगर वो रिवॉल्वर मर्डर वेपन निकला तो उसकी जगह पुलिस की कस्टडी होगी।"

"उस सूरत में तुम्हारा काम ये साबित करना होगा", वह बोला, "कि हमारा या हमारी फैमिली का किसी मर्डर से कोई लेना-देना नहीं।"

"आपको पूरा एतबार है इस बात ?"

वो खामोश हो गया ।

"आप पिंकी की वावत कुछ कहने जा रहे थे ।"

"हां ।" वो तनिक चिंतित भाव से बोला, "सच पूछो तो वो हमारे एतबार को डगमगा रही है ।"

"जी !"

"बहुत उच्छर्न्खल लड़की है । मां-बाप के हाथों से निकली हुई । जितनी उसकी उम्र है, उससे दस गुणा ज्यादा गुल खिला चुकी है । शुरू से ही प्राब्लम चाइल्ड रही है वो । दस साल की थी जबकि उसकी मां मर गई थी । तब हम अपनी आज की हालत में नहीं थे और अपने कारोबार में बहुत मसरूफ रहते थे । पिंकी के लिए वक्त निकालते थे अपने बिजी विजनेस शेड्यूल में से लेकिन शायद वो काफी नहीं होता था । गवर्नेस थी उसके लिए लेकिन वो उसके काबू में नहीं आती थी । छ साल यूं ही कटे । फिर उसने बचपन की बेहूदा और काबिले एतराज हरकतें छोड़कर नौजवानी वाली बेहूदा और काबिले एतराज हरकतें शुरू कर दीं । कहते शर्म आती है लेकिन मौजूदा हालात में बताना जरूरी हो गया है कि जब वो दसवीं जमात में थी तो प्रेगनेंट हो गई थी । बड़ी मुश्किल से हालात को काबू में किया । स्कूल छुड़ा दिया । घर पर ही उसकी पढाई-लिखाई का इंतजाम किया तो अपने से तीन गुणा उम्र के टीचर पर ही डोरे डालने लगी । लेडी टीचर रखी तो उसे पीटकर भगा दिया । उस विकट स्थिति का हल शुभचिंतकों ने ये सुझाया कि हम फिर से शादी कर लें । तब छब्बीस साल का मनोज था और शादी शर्म की बात थी लेकिन औलाद की खातिर शादी की । बीवी तकदीर से समझदार और फर्माबरदार मिल गई । उसने हमारी प्रॉब्लम को अपनी प्रॉब्लम माना और बड़े यत्न से पिंकी को काबू करना शुरू किया ।"

"वो कामयाब हुई ?"

"किसी हद तक । अगले दो साल बहुत ही चैन से गुजरे । हमें लगा कि पिंकी पर कोई नामुराद साया था जो टल गया था लेकिन तकदीर की मार कि फिर हमें फालिज मार गया । हमारी उस दुश्वारी की घड़ी में बीवी की तवज्जो हमारी तरफ हुई तो बेटी फिर हाथों से निकल गई । इस बार और भी बड़ा गुल खिलाया । ड्रग एडिक्ट बन गई । गनीमत समझो कि जल्द पता लग गया । दो महीने सैनिटोरियम में रखा । सुधर कर घर आई तो मरी मां और अपाहिज बाप का सदका देकर वादा लिया कि फिर वो नशे का नाम नहीं लगी । बदले में उसने शर्त लगाई कि उसकी आजादी में खलल न डाला जाए, उसकी जरूरतों पर अंकुश न लगाया जाए, उस पर जासूसी न कराई जाए और उसका मुकम्मल एतबार किया जाए । मजबूरन उसकी वे शर्त मानीं । तब तक उन्नीस से ऊपर की हो चुकी थी वो । उस उम्र में लड़की को बेड़ियां पहनाकर तो नहीं रखा जा सकता था न ?"

"जी हां बजा फरमाया आपने ।"

"बीवी राय देती थी कि शादी कर दें लेकिन वो अपनी बला दूजे के सिर मढ़ने जैसा काम होता । फिलहाल हमने ये ही उचित समझा कि हम भगवान से उसे सुबुद्धि देने की प्रार्थना करें और कुछ अरसा सिलसिला यूं ही चलता रहने दें ।"

"ठीक से चला सिलसिला ?"

उसने अवसादपूर्ण ढंग से इनकार में गर्दन हिलाई और फिर बोला, "चार महीने पहले अपनी दस सहेलियों के साथ हफ्ते के लिए मुंबई गई । सहेलियां आंठवें दिन लौट आई, पिंकी न लौटी । सहेलियों से पूछताछ की बिना पर मुंबई पड़ताल करवाई तो वो वहां थी ही नहीं । पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई । कुछ पता न चला । बीस दिन बाद किसी ने बताया कि उसने पिंकी को नेपाल में देखा था । फौरन मनोज को नेपाल जाने के लिए तैयार किया । लेकिन उसके रवाना होने से पहले ही वो घर लौट आई । पूरे एक महीने बाद । पूछने पर कुछ बताने को तैयार नहीं । पूछताछ को अपनी आजादी में खलल का दर्जा देने लगी । हमारे ऊपर इल्जाम लगाने लगी कि हम अपने वादे से फिर रहे थे । साथ ही यकीन दिलाने लगी कि उसने सैर करने के अलावा कोई बेजा हरकत नहीं की थी । बता कर सैर क्यों नहीं की ? क्योंकि उसे अंदेशा था कि हम यूं अकेले सैर की इजाजत न देते । बहरहाल पिंकी घर लौट आई थी और हमारे पास खामोश रह जाने के अलावा कोई चारा नहीं था ।"

"था सब कुछ ठीक-ठाक ?"

"कहां था ठीक-ठाक ! अभी पिछले ही महीने बीवी ने अंदेशा जाहिर किया कि वो शायद फिर नशा करने लगी थी। फिर ड्रग एडिक्ट बन गई थी !"

"ओह !"

"अब वो बड़ी हो गई थी तो चालाक भी हो गई थी। ऐसी बातें छुपाकर रखने की कला जान गई थी। पूछे जाने पर साफ मुकर गई। रो-रोकर चिल्ला-चिल्लाकर आसमान सिर पर उठा लिया। हमें ही खामोश हो जाना पड़ा।"

"अब आप लोग क्या कर रहे हैं ?"

"फिलहाल तो उसे वॉच ही कर रहे हैं।"

"आई सी।"

"मिस्टर कोहली, तुम्हें पिंकी की केस हिस्ट्री से वाकिफ कराने का मकसद ये था कि उस रिवॉल्वर को लेकर अगर इस हाउसहोल्ड में कोई बन्दा कोई गुल खिला सकने मे सक्षम था तो वो पिंकी थी।"

"अगर आप उससे रिवॉल्वर की बाबत सीधे सवाल करें तो ?"

"तो वो साफ मुकर जाएगी। रिवॉल्वर की कभी सूरत भी देखी होने से इंकार कर देगी। हम क्या जानते नहीं उसके कम्बख्त मिजाज को ! ऊपर से सालों-साल झूठ बोलते रहने की वजह से झूठ बोलने का इतना तजुर्बा जो हो गया है उसे।"

"उसकी आजादी बरकरार है ?"

"फिलहाल तो बरकरार है फिलहाल तो जब, जिसके साथ चाहती है आती-जाती है।"

"घर में किसी से भीगती है ?"

"क्या मतलब ?"

"सर, डज शी कनफाइड इन एनीबोडी ?"

"ओह। दैट ! देखो, हमारे से तो उसकी भरपूर कोशिश होती है कि वो न्यारी-न्यारी ही रहे। भाई से भी कुछ यूं ही पेश आती है। सुधा से कुछ खुलती है लेकिन उसका हमें कोई खास फायदा नहीं होता।"

"क्यों ?"

"तीन चौथाई बातें तो सुधा हमसे छुपा लेती है। हमारी नाजुक तंदरुस्ती की खातिर।"

"फिर भी ये शक मिसेज माथुर ने आप पर जाहिर किया कि पिंकी शायद फिर नशा करने लगी थी ?"

"हां। ये गम्भीर मसला जो था। ये भी वो छुपाती तो उसे बीवी और मां दोनों के रोल में फेल माना जाता।"

"हूं। आपके ख्याल से पिंकी कत्ल कर सकती है ?"

"वो प्रॉब्लम चाइल्ड है। बोला न। शी इज नॉट ए नॉर्मल किड। वो कुछ भी कर सकती है।"

"आपकी निगाह में कोई कैंडीडेट है जिसके कत्ल का वो इरादा कर सकती हो। अपने इरादे पर चाहे वो अमल न कर पाई हो लेकिन जिसकी वजह से उसने आपकी रिवॉल्वर चुराई हो ?"

वह कुछ क्षण सोचता रहा, फिर उसने पहले हौले हौले और फिर जोर-जोर से इनकार में सिर हिलाया।

आपके खादिम को उसका इनकार सरासर फर्जी लगा ।

"एक बात आप समझते हैं न, सर ?" मैं बोला, "अगर वो कत्ल की गुनहगार निकली तो उसके गुनाह पर पर्दा डालना मेरे बूते से बाहर की बात होगा ।"

"इतनी मोटी फीस लेकर भी ।"

"जी हां ।" मैं दृढ स्वर में बोला, "कत्ल के केस में पुलिस हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठी रहती । वो मुजरिम को पकड़ने के लिए जमीन आसमान के कुलाबे मिला देती है । उनके सामने मेरे जैसा एक अदना प्राइवेट डिटेक्टिव...."

"नैवर माइंड । आई अंडरस्टैंड युअर लिमिटेशंस । तुम वही करो जो कर सकते हो ।"

"क्या ?"

"असलियत का पता लगाओ । मालूम करो कि पिंकी ने ऐसा-वैसा तो कुछ नहीं कर डाला ! मालूम करो और पुलिस से पहले, किसी से भी पहले, मालूम करो ।"

"उससे आपको क्या फायदा होगा ?"

"बहुत फायदा होगा । फोरवार्नड इज फोरआर्म्ड । यू नो ?"

"'यस सर ।"

"फिर जहां पर्दा डालना होगा वो हम डालेंगे । जो बात तुम्हारे बूते से बाहर है, वो जरूरी नहीं कि हमारे बूते से भी बाहर हो ।"

मैने हैरानी से उसकी तरफ देखा । उस घड़ी वो क्षीण-सा फालिज का मारा वृद्ध मुझे किसी फौलादी इन्सान से कम न लगा ।

उसी घड़ी मुझे लगा कि पैसे के लालच में मैं कुछ ज्यादा ही पंगा लिए जा रहा था । मेरा एक क्लायंट था जिसके लिए मैंने कातिल का पता लगाना था और उसे हर हाल में गिरफ्तार करवाना था । अब मैं दूसरा क्लायंट पकड़ रहा था जो कातिल की खवर इसलिए चाहता था ता कि अगर वो उसके परिवार का कोई सदस्य निकले तो वो उसके गुनाह पर पर्दा डाल सके । मैं दोनों क्लायंटो को कैसे राजी कर सकता था । ये तो चित्त भी मेरी पट भी मेरी जैसी बात होती ।"

लेकिन वो पंगा लेना जरूरी भी तो था - मैंने खुद अपने आपको समझाया - मदान के लिए कातिल का पता लगाने की खातिर पूछताछ के लिए मेरा वहां पहुंचना और वहां से सहयोग हासिल करना जरूरी था । बाकी जो कुछ हो रहा था, इत्तफाकिया हो रहा था ।

"पिंकी कल शाम को कहां थी ?" प्रत्यक्षत: मैंने पूछा ।

"क्या पता कहां थी" वो तिक्त स्वर में बोला, "शाम को घर में थोड़े ही टिकती है ।"

"कोई अंदाजा ?"

"तुम्हारा सवाल शाम के किसी खास वक्त की बाबत है ?"

"कह लीजिए कि साढ़े आठ बजे के करीब !"

"उस वक्त का तो हमें कतई कुछ नहीं पता कि वो कहां थी ।"

"आपके साहबजादे "

"उसका भी पता नहीं ।"

"वैसे अमूमन वो कहां पाए जाते हैं ?"

"भई, दिन भर तो वो मेरी कम्पनी के आसफ अली रोड पर स्थित कॉर्पोरेट आफिस में पाया जाता है। एग्जीक्युटीव डायरेक्टर है वो। शाम को तफरीह के लिए कहां कहां जाता है, मुझे नहीं मालूम।"

"आपकी पत्नी ?"

"सुधा यहीं थी कल शाम को।"

"और आप ?"

उसने घूरकर मेरी तरफ देखा।

मैंने उसके घूरने की परवाह न की

"हमने कहां जाना है, भई ! हम तो यहीं होते हैं।"

"पक्की बात ?"

"इसमें कच्ची-पक्की वाली कौन-सी बात हो गई ?"

"देखिए, क्लायंट और प्राइवेट डिटेक्टिव का रिश्ता मरीज और डॉक्टर जैसा होता हैं। जैसे मरीज का डॉक्टर से कुछ छुपाना मरीज के लिए अहितकर साबित हो सकता है वैसे ही आपका मेरे से कुछ छुपाना अहितकर साबित हो सकता है। आपके लिए। आपके परिवार के किसी सदस्य के लिए। मौजूदा केस के लिए।"

"भई, कहा न, हम यहीं थे कल शाम।"

"आपकी बीवी आपके पास थी ?"

"सुधा यहीं थी लेकिन अपने कमरे में थी। उसे अपने ऑफिस का कुछ काम था जो कि वो अपने कमरे में बैठी कर रही थी।"

"उसका और आपका कमरा एक ही नहीं हैं ? जैसे पति-पत्नी का होता हैं।"

"नहीं। हमारे कमरे अगल-बगल में हैं।"

मैं तत्काल फैसला न कर पाया कि शशिकांत की कोठी के ड्राइव-वे में पाए गए व्हील चेयर के निशानों की बाबत मैं उससे दो टूक सवाल करूं या न करूं। फिर मैंने फिलहाल खामोश ही रहना जरुरी समझा।

"कल शाम आप यहां से बाहर कहीं गए थे ?" अपना पहले वाला सवाल ही मैंने दूसरे तरीके से पूछा।

"नहीं।"

"अब आखिरी सवाल। आप शशिकांत को जानते हैं ?"

"कौन शशिकांत ?"

"कोई भी। आप इस नाम के किसी शख्स से वाकिफ हैं ?"

"नहीं।"

"शशिकांत ऑर नो शशिकांत, आप मैटकाफ रोड की दस नंबर कोठी के किसी बाशिंदे से वाकिफ हैं ?"

"नहीं।"

"नावाकफियत में भी आप कभी उस कोठी में गए हैं ?"

"वॉट नॉनसेंस !" वो झल्लाया, "अरे जब हम वहां किसी को जानते ही नहीं तो वहां क्या हम झक मारने जाएंगे ?"

"आप वहां कभी नहीं गए ?" मैंने जिद की।

"नैवर।"

"सर, डू आई हैव युअर सालम वर्ड फार इट ?"

"यस, यू डू।"

"थैंक्यू, सर। अब एक आखिरी बात।"

"वो भी बोलो।"

"प्राइवेट डिटेक्टिव को क्लायंट से कोई ट्रेडिशनल रिटेनर मिलना होता है।"

"अभी मिलता है। कोठी में जाकर नायर से दस हजार का चैक ले लो।"

"थैंक्यू, सर। मैं आपको फिर रिपोर्ट करूंगा, बशर्ते कि....."

मैं जानबूझ कर खामोश हो गया।

"क्या बशर्ते कि ?" वो बोला।

"आप तक पहुंचने में या आपसे फोन पर बात करने में मुझे पहले जैसी ही पाबंदियों और दुश्वारियों का सामना न करना पड़े।"

"ओह ! तुम फिक्र न करो। तुम्हारी बाबत सबको खबर कर दी जाएगी।"

"थैंक्यू, सर। गुड डे, सर।"

माथुर की कोठी से निकलकर फ्लैग स्टाफ रोड पर किसी सवारी की तलाश में मैं पैदल चला जा रहा था कि मुझे एक हॉर्न की आवाज सुनाई दी। मैंने सर उठाया तो सड़क पर सिर्फ एक लाल मारुती कार दिखाई दी।

तभी हॉर्न फिर बजा।

मैं कार के करीब पहुंचा। कार पर चारो तरफ कुल जहान के स्टिकर लगे हुए थे। उसकी ड्राइविंग सीट पर पिंकी बैठी थी और बड़े तजुर्बेकार अंदाज से सिगरेट फूंक रही थी। मेरे से निगाह मिलते ही उसने सिगरेट फेंक दिया और बोली- "आओ, कार में बैठो।"

मैं कार का घेरा काटकर परली तरफ पहुंचा और उसके साथ कार में सवार हो गया।

"तब से यहीं हो ?" मैं हैरानी से बोला।

"हां।" वो चिंतित भाव से बोली, "तुम्हारे इंतजार में बैठी हूं।"

"क्यों ?"

"फिक्र जो लगा दी तुमने ? वो फिल्म का क्या किस्सा है ?"

"बताऊंगा। जरुर बताऊंगा। लेकिन पहले तुम कबूल करो कि तुम शशिकांत से वाकिफ हो। न सिर्फ वाकिफ हो, खूब अच्छी तरह से वाकिफ हो। इतनी अच्छी तरह से वाकिफ हो कि इंटिमेसी कि तमाम हदें पार कर चुकी हो

।"

उत्तर देने के स्थान पर उसने गाड़ी चला दी ।

"क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं ।" वो बोली, "कोठी से थोड़ा दूर चलते हैं । यहां कोई नौकर-चाकर देख लेगा ।"

बड़ी दक्षता से कार चलाती हुई वह उसे राजपुर रोड पर ले आई । वहां उसने कार को किनारे लगाकर एक पेड़ की छांव में रोक दिया ।

"अब बोलो क्या कहते हो ?" वह बोली, "नहीं, पहले ये बताओ कि तुम चीज क्या हो ?"

मैंने बताया ।

"ओह ! प्राइवेट डिटेक्टिव ! जरुर डैडी ने मेरी वजह से ही बुलाया होगा तुम्हें !"

मैंने इन्कार में सिर हिलाया ।

"और काहे को जरुरत होगी उन्हें किसी प्राइवेट डिटेक्टिव की !"

"कोई इंडस्ट्रियल मामला है । मोटी रकम के घोटाले का ।"

"झूठ बोल रहे हो ।"

"छोड़ो । शशिकांत की बात करो ।"

"क्या बात करूं ?"

"कबूल करो कि उसे खूब जानती हो ।"

"ओके । किया कबूल ।"

"उससे फिट हो ।"

"ये कैसे कहा ?"

"उस फिल्म की वजह से कहा ।"

"है भी कोई ऐसी फिल्म ?"

"है ।"

"है तो मुझे दिखाओ ।"

"दिखा दूंगा । लेकिन और बातों में मुझे उलझाकर शशिकांत की बात ना टालो । वो बात फिल्म से ज्यादा अहम है । बोलो, फिट हो उससे ?"

"फिट से क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"उसके हाथ से चुग्गा चुगती हो ?"

"चुग्गा चुगती हूं ! क्या जुबान है ये, भई ! मेरी समझ से तो बाहर है एकदम ।"

"फुल फंसी हुई हो उससे ?" मैंने सरल जुबान बोली ।

"फुल नहीं।" वो बड़ी सादगी से बोली, "उतनी ही जितनी कि किसी से भी फंस सकती हूं। तुम्हारे से भी।"

"जहेनसीब।"

"वो क्या होता है ? पहले कोठी में भी ऐसा कुछ कहा था तुमने।"

"मेरा मतलब है कि मेरी खुशकिस्मती। माई गुड फारचून।"

"ओह, दैट।"

"तुम्हे मालूम है कि वो मर चुका है।"

"क....क्या ?"

"उसका कत्ल हो चुका है। एक्टिंग न करो। झूठ न बोलो। मुझे नादान बनकर ना दिखाओ।"

"लेकिन..."

"सुनो। कोठी में एकाएक मुझे देखकर तुम बदहवास इसलिए हो गई थी क्योंकि तुम सच में ही मुझे शशिकांत समझ बैठी थी। और तुम्हारी बदहवासी की असली वजह ये थी कि जिस आदमी की बाबत तुम जानती थी कि वो मर चुका था, वो एकाएक तुम्हारे सामने जिन्दा कैसे आन खड़ा हुआ था। तुम्हारी जान में जान तभी आई थी जबकि तुम्हें ये अहसास हुआ था कि मैं शशिकांत नहीं था। अब बोलो कि मैं गलत कह रहा हूं।"

"तुम वाकई जासूस हो। किसी के अंतर्मन में गहरा झांक लेने वाले मनोवैज्ञानिक भी।"

"अब बोलो कैसे है तुम्हें शशिकांत के कत्ल की खबर ?"

"सच बता दूं ?"

"हां।"

"तुम पर ऐतबार करके ?"

"हां।"

"मुझे मरवा तो नहीं दोगे ?"

"हरगिज नहीं।"

"मैंने उसे अपनी आंखों से मरा हुआ देखा था।"

"मेरा भी यही ख्याल था।"

"तुम्हारी सूरत पर पहली बार निगाह पड़ते ही वाकई मेरे छक्के छूट गए थे।"

"अब वो किस्सा खत्म करो। तो कल शाम तुम शशिकांत की कोठी पर गई थी ?"

"हां।"

"किस वक्त ?"

"साढ़े आठ के करीब। दो-चार मिनट आगे या पीछे।"

"क्या देखा वहां ?"

"बताया तो ।"

"तफसील से बताओ ।"

"इसी कार पर मैं वहां पहुंची थी । कार को बाहर सड़क पर ही खडी करके मैं पैदल अन्दर गई थी ।"

"बाहर का फाटक खुला था ?"

"हां । और कोठी का प्रवेशद्वार भी खुला था । कोठी में सन्नाटा था । मैंने उसे आवाज लगाई थी । कोई जवाब नहीं मिला था तो मैं ड्राइंगरूम पार करके उसकी स्टडी में पहुंची थी । वहां वह अपनी टेबल के पीछे कुर्सी पर मरा पड़ा था । उसकी छाती में गोली का सुराख साफ दिखाई दे रहा था ।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? मेरे तो छक्के छूट गए थे । मैं तो फौरन यूं वहां से भागी थी जैसे भूत देख लिया हो ।"

"तुम्हें कैसे मालूम है कि वो तब मरा पड़ा था ? तुमने उसकी कोई नब्ज-वब्ज टटोली थी ?"

"मैं तो उसके पास भी नहीं फटकी थी लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वो मरा पड़ा था । अब तुम कुछ भी कहो लेकिन मुझे मौत की सूंघ लग रही थी उस जगह से ?"

"स्टडी में और क्या देखा था तुमने ?"

"कुछ भी नहीं । सिवाए इसके कि वहां ट्यूब जल रही थी लेकिन दीवार पर लगा सजावटी वॉल लैंप टूटा हुआ था और....और शायद मेज पर रखा कलमदान उलटा पड़ा था ।"

"बाहर कंपाउंड में रोशनी थी ?"

"नहीं ।"

"भीतर ?"

"भीतर ड्राइंगरूम में तो अंधेरा-सा ही था । शायद एक कोने में एक टेबल पर रखा एक टेबल लैंप जल रहा था वहां । दरअसल स्टडी की तरफ मेरी तवज्जो गई ही इसलिए थी कि क्योंकि वहां के खुले दरवाजे में से ट्यूब लाइट की रोशनी बाहर निकल रही थी ।"

"आई सी । अब एक बड़ा अहम् सवाल । गई क्यों थी तुम वहां ?"

"ये मैं नहीं बता सकती ।"

"ये क्या बात हुई ! ये कोई बात हुई ! ये तो यूं हुआ की पहले बांधा, फिर ताना, फिर खींचा और फिर खींच के छोड़ दिया कि जाओ बेटा लटके रहो ।"

"ये क्या जुबान बोलते हो तुम ?"

"बोलो, क्यों गई थी वहां ?"

"वजह मैं अपनी जुबान से नहीं बता सकती ।"

"वजह का अगर अंदाजा मैं लगाऊं तो उसकी बाबत कुछ हां या न तो कर दोगी या वो भी नहीं ?"

"क...क्या कहते हो ?"

"तुम ड्रग एडिक्ट हो । तुम ड्रग के चक्कर में उसके पास गई थी ।"

वो गैस निकले गुब्बारे की तरह पिचक गई।

"बोलो हां या न ?"

"ह..ह..हां।"

"दैट्स लाइक ए गुड गर्ल।"

"किसी से कहना नहीं। खास तौर से डैडी से।"

"नशेड़ियों का एतबार बड़ा बेएतबारा होता है। जब नशे की तलब लगती है तो दीवाने हो जाते हैं। नशे का इंतजाम न हो तो उसे हासिल करने के लिए खून तक करने पर उतारू हो जाते हैं। तुम्हीं ने तो नहीं कर डाला उसका खून ?"

"नहीं।"

"पहले ही मरा पड़ा था ?"

"हां। बोला तो।"

"अक्सर जाती रहती थीं तुम वहां ?"

"पहली बार गई थी।"

"पहले कभी ऐसी जरूरत पेश नहीं आई ?"

"नहीं।"

"क्यों ?"

"पहले उसकी राजेंद्रा प्लेस वाली क्लब जो चलती थी। वहीं मेरा काम बन जाता था। क्लब पर ताला पड़ गया था तो फोन करने भर से काम चल जाता था।"

"कल फोन पर काम नहीं बना ?"

"फोन लगा ही नहीं। तभी तो मैं वहां गई।"

"तुम उसकी नाईट क्लब में भी आती जाती थी, इस लिहाज से तो तुम्हारी वाकफियत पुरानी हुई।"

वो खामोश रही।

"इतनी पुरानी हुई कि विडियो कैमरे की शहादत में तुम उसके सामने अलफ नंगी पेश हो सकती थी।"

"मुझे अभी भी यकीन नहीं कि ऐसी कोई फिल्म है।"

"यानी कि तुम्हारा इनकार फिल्म के अस्तित्व की बाबत है, अपनी करतूत की बाबत नहीं।"

"उसकी बाबत भी है।"

"वो मर गया है। जहां कत्ल से मौत होती है, वहां पुलिस पहुंचती है। जहां पुलिस पहुंचती है, वहां की भरपूर तलाशी होती है। यूं तुम्हारी कोई ब्लू फिल्म मकतूल के यहां से बरामद होने पर कितनी जय-जयकार हो सकती है तुम्हारी दिल्ली शहर में, कभी सोचा !"

"वो...वो फिल्म" वो कंपित स्वर में बोली- "नहीं बरामद होनी चाहिए।"

"यानी मानती हो कि ऐसी फिल्म है ?"

"नहीं । लेकिन अगर है तो नहीं बरामद होनी चाहिए ।"

"नेक ख्वाहिशात से ही नेक काम नहीं होते, मैडम ।"

"तुम कुछ करो न ?"

"मैं करूं ?"

"आखिर डिटेक्टिव हो ।"

"वालंटियर नहीं ।"

"डैडी के लिए भी तो काम कर रहे हो ?"

"फीस ले के ।"

"मैं भी फीस दे दूंगी ।"

"क्या ?"

"जो तुम चाहो ।"

"जो मैं चाहूं ?"

"हां ।"

"मुकर न जाना ।"

"नहीं मुकरुगी ।"

"डाउन पेमेंट अभी करो ।"

"कैसे ?"

"शीशा चढाओ ।"

उसने कार का अपनी ओर का और मैंने अपनी ओर का शीशा चढ़ाया । शीशे उस प्रकार के थे जिनमें से बाहर से भीतर नहीं झांका जा सकता था ।

"मेरी तरफ देखो ।" मैं बोला ।

उसने घूमकर मेरी तरफ देखा ।

मैंने अपनी बांहे उसकी गर्दन के गिर्द डाल दी और उसे अपनी तरफ खींचा ।

"अरे, अरे !" उसने तत्काल मुझे परे धकेला, "चलती सड़क है ।"

"लेकिन चल कोई नहीं रहा ।" मैं बोला, "सुनसान पड़ी है सड़क ।"

"अरे, आते-जाते का पता लगता है !"

"तो क्या हुआ ?"

"तो क्या हुआ ! सामने से सब दिखाई देता है ।"

"उसका भी इंतजाम हो सकता है ।"

"क्या ?"

"विंड स्क्रीन पर पानी का जैट छोडो और वाईपर चला दो ।"

चेहरे पर असमंजस के भाव लिए उसने ऐसा किया ।

"बस, बस ।"

उसने पानी और वाईपर दोनों बंद किए ।

अब सामने का शीशा धुंधला गया था ।

"वाकई टॉप के हरामी हो ।" वो प्रशंसात्मक स्वर में बोली ।

"तारीफ का शुक्रिया ।" मैं बोला । मैंने फिर उसे अपनी बांहों में दबोच लिया और उसके होठों पर अपने होठ रख दिए । मेरे तजुर्बेकार हाथ उसके जिस्म की गोलाइयों पर दस्तक देने लगे । उसने कोई ऐतराज क्या, काफी हद तक सहयोग दिया ।

सुधीर कोहली - मैंने मन-ही-मन अपनी पीठ थपथपाई - दी लक्की बास्टर्ड ।

मेरा फ्यूज उड़ने को हो गया तो मैंने उसे अपने से अलग किया ।

"मारुती कार" मैं हांफता हुआ बोला, "इन कामों के हिसाब से नहीं बनी ।"

"मैं वापस जाके कोई बड़ी गाड़ी ले आती हूं ।" वो स्वप्निल स्वर में बोली ।

"गाड़ी फिर गाड़ी है ।"

"तो ?"

"किसी ऐसी जगह चलते है जहां टीवी हो और विडियो हो ताकि तुम्हें ऐतबार दिलाया जा सके कि जैसी फिल्म का मैं जिक्र कर रहा था, वैसी का अस्तित्व है ।"

"ऐसी जगह कहां ?"

"मेरा फ्लैट । ग्रेटर कैलाश में ।"

"वो तो बहुत दूर है । वहां तो मैं इस वक्त नहीं जा सकती ।"

"क्यों ?"

"मैंने कहीं और जाना है । तुम्हारे कोठी से बाहर निकलने के इंतजार में पहले ही बहुत देर हो चुकी है ।"

"कहीं फिक्स के इंतजाम में जाना हैं ?"

उसने उत्तर न दिया ।

"तो फिर कैसे बात बने ?" मैं बोला ।

"फिल्म कहां है ?" उसने पूछा ।

"मेरे पास ।" मैंने कोट की जेब से निकालकर उसे कैसेट दिखाई ।

"फिर क्या बात है !" वो हर्षित स्वर में बोली, "फिर तो फिल्म मुझे दो । मुझे जब फुर्सत लगेगी, मैं घर पर ही इसे देख लूंगी ।"

"और मैं ?"

"तुम क्या ?"

"मैं कब देखूंगा ?"

"तुम तो देख ही चुके होंगे । तभी तो तुम्हें मालूम है कि इसमें क्या हैं ।"

"सिर्फ दो मिनट । इससे ज्यादा ड्यूरेशन का तो ट्रेलर ही होता है ।"

"तुम देखना क्यों चाहते हो इसे ? ट्रेलर से फिल्म का अंदाजा तो हो ही जाता है ।"

"देखो । मैंने जान जोखिम में डालकर ये फिल्म मौकाएवारदात से निकाली है । पुलिस को खबर लग जाए तो सीधे तिहाड़ में बोरिया बिस्तर हो । इस लिहाज से मुझे कम से कम ये देखने का मौका मिलना चाहिए कि तुम किन कारनामों में माहिर हो ।"

"वो मैं तुम्हें लाइव दिखा दूंगी ।"

"जहेनसीब । लेकिन फिल्म देखना फिर भी मेरे लिए जरुरी है । इसमें ऐसा कुछ और भी हो सकता है जो कि शशिकांत के कत्ल के राज पर रोशनी डाल सकता हो ।"

"तो फिर क्या किया जाए ?"

"जिस काम से जा रही हो, उससे फ्री होकर मेरे फ्लैट पर आ जाना ।"

"मुझे तो उस काम में ही रात पड़ जायेगी ।"

"क्या हर्ज है ! मैं भी अंधेरा होने से पहले घर नहीं पहुंच पाने वाला । तुम ऐसा करो । आठ बजे का टाइम फिक्स कर लो ।"

"ठीक है ।" वो बोली, "आठ बजे ।"

"अब तुम जाओगी कहां ?"

"मॉडल टाउन ।"

"बढ़िया । मुझे शक्तिनगर उतार देना ।"

"उतार दूंगी । अब जरा उतरकर शीशा साफ करो ।"

"शीशा !"

"धुंधलाना ही जानते हो ? साफ करना नहीं जानते । मैं विंडस्क्रीन की बात कर रही हूं । बाहर कुछ दिखाई देगा तो चलाउंगी न !"

"ओह ! ओह !"

उसने मुझे एक डस्टर थमा दिया । मैंने बाहर निकलकर विंडस्क्रीन साफ की और वापस कार में सवार हो गया ।

तत्काल उसने कार सड़क पर दौड़ा दी ।

"अब जरा" मैं बोला, "कल शाम की बात की ओर जरा तवज्जो दो। शशिकांत की कोठी में, पक्की बात है कि, कोई नहीं था ?"

"था तो कम से कम मुझे दिखाई नहीं दिया था।" वो बोली, "मैं सारी कोठी तो घूमी नहीं थी। मैं तो बस स्टडी और ड्राइंग रूम में गई थी।"

"स्टडी के साथ अटैच्ड बाथरूम में भी नहीं झांका था ?"

"नहीं।"

"जैसे तुम कहती हो कि तुम्हें वहां मौत की सूंघ लग गई थी, वैसे तुम्हें वहां किसी की मौजूदगी की सूंघ नहीं लगी थी ?"

"नहीं लगी थी। तभी तो कहती हूं कि शायद वहां कोई था ही नहीं।"

"या बाहर ?"

"बाहर कहां ?"

"कहीं भी। ड्राइव वे पर। कम्पाउंड में। बाहर सड़क पर। कहीं कोई नहीं दिखाई दिया तुम्हें ?"

वो खामोश रही।

"मैं ये बात जानने के लिए पूछ रहा हूं कि क्या तुम्हारे वहां गए होने का राज खुल सकता है ? क्या किसी ने तुम्हें कोठी में या उसके आसपास देखा हो सकता है ?"

वह कुछ क्षण खामोश रही और फिर बहुत दबे स्वर में बोली, "सुधीर"

"बोलो।" मैं आशापूर्ण स्वर में बोला।

"जब मैं बाहर आकर अपनी कार में बैठी थी और उसे यू टर्न देकर बापस लौटने लगी थी तो उसी वक्त मुझे सामने से आती एक टैक्सी दिखाई दी थी। सुधीर, उस टैक्सी में सुधा सवार थी।"

"सुधा ! तुम्हारी सौतेली मां !"

"हां।"

"तुमने साफ पहचाना था उसे ?"

"हां। वो ही पिछली सीट पर बैठी थी और जैसे टैक्सी की रफ्तार घटने लगी थी, उससे लगता था कि वो वहीं आ रही थी।"

"अगर तुमने उसे देखा था तो उसने भी तुम्हें देखा होगा ?"

"शायद न देखा हो। मेरी कार की हैडलाईट्स हाई बीम पर थीं जिससे कि सामने से आने वाले की आंखें चौंधियां जाती हैं और उसे ठीक से कुछ दिखाई नहीं देता।"

"ऐसी ही हालत तुम्हारी नहीं थी ?"

"नहीं। टैक्सी की हैडलाइट्स हाई बीम पर नहीं थी।"

"यानी कि हो सकता है कि उसने तुम्हें न देखा हो, देखा हो तो पहचाना न हो।"

"हां।"

"वो शशिकान्त की कोठी पर ही गई थी ?"

"मैं ये देखने के लिए वहां नहीं रुकी थी लेकिन और कहां गई होगी वो ?"

"हूं । तुम्हारी बनती कैसी है अपनी सौतेली मां से ?"

"क्या बननी है सौतेली मां से ?" वो वितृष्णापूर्ण स्वर में बोली, "वो भी नौजवान सौतेली मां !"

"अब जो रिश्ता कायम हो गया है, वो तो हो ही गया है ।"

"रिश्ते दिल से बनते हैं । खून से बनते हैं ।"

"ठीक कहा । पेश कैसे आती है तुम्हारी सौतेली मां तुम्हारे से ?"

"मां-मां मत करो" वो चिड़कर के बोली, "सुधा बोलो ।"

"पेश कैसे आती है सुधा तुम्हारे से ?"

"पुचपुच तो बहुत करती है । सच में ही मेरी मां बनके दिखाने की कोशिश करती है लेकिन मैं जानती हूं कि सब दिखावा है ।"

"दिखावा किसलिए ?"

"डैडी को खुश करने के लिए । उन्हें आदर्श और नेकबख्त बीवी बनके दिखाने के लिए ।"

"आई सी । उसके कैरेक्टर के बारे में कोई राय जाहिर करो ।"

"मैं क्या राय जाहिर करूं, तुम खुद सोचो । साठ साल उम्र के, पति का फर्ज निभा सकने में नाकाम मर्द की हसीन, नौजवान, बीवी, जोकि उसकी व्हील चेयर के हत्थे से बंधी भी नहीं रहती, संन्यास धारण कर लेने की इच्छुक तो होगी नहीं ।"

"उसकी नवाजिशों का हकदार, तलबगार, कोई कैंडीडेट है तुम्हारी निगाह में ?"

"मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहती ।"

"यानी कि है ।"

"कहा न, मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहती ।"

नाम न लेना चाहने का एक मतलब ये भी हो सकता था कि नाम लेने लायक कोई नाम उसके जेहन में था ही नहीं । उस लड़की पर मेरा ऐतबार कतई नहीं बैठ रहा था । कल शाम हत्या के वक्त के आसपास मैटकाफ रोड पर सुधा माथुर की मौजूदगी की बात भी उसकी गढी हुई हो सकती थी । उसकी एक-एक बात साफ जाहिर करती थी कि वो अपनी सौतेली मां को सख्त नापसंद करती थी । वो उसकी कल्पना एक चरित्रहीन, दौलत की दीवानी औरत के तौर पर करती थी, उससे खुंदक खाती थी और उसे किसी जहमत मे फंसाकर कोई निहायत भ्रष्ट किस्म का आत्मिक संतोष प्राप्त करना चाहती थी ।

सुधा से रात हो जाने तक मैंने उस बाबत खामोश रहना ही उचित समझा ।

Chapter 4

पुनीत खेतान से बहुत कठिनाई से मेरी मुलाकात हो पाई। शक्तिनगर में स्थित अपने ऑफिस से वो आनन-फानन कहीं कूच की तैयारी कर रहा था कि मैं वहां पहुंचा था।

मैंने उसे अपना कार्ड दिया।

"मदान साहब ने फोन पर तुम्हारा जिक्र किया।" वो कार्ड पर एक सरसरी निगाह डालकर उसे मेज पर एक ओर रखता हुआ बोला।

"मदान साहब से बात हो गई आपकी ?" मैं बोला।

"अभी हुई है। मैंने फौरन मैटकाफ रोड पहुंचना है, इसलिए तुम अगर फिर कभी....."

"यानी कि कत्ल की खबर आपको हो चुकी है।"

उसने सकपकाकर मेरी तरफ देखा।

"आप पुलिस के बुलावे पर मैटकाफ रोड जा रहे हैं या अपने क्लायंट की हिमायत के लिए उसके बुलावे पर ?"

"क्लायंट के आई मीन मदान साहब के बुलावे पर।"

"कत्ल की बाबत कुछ मालूम तो अभी होगा नहीं आपको !"

"अभी नहीं मालूम। फोन पर मदान साहब ने इतना ही कहा था कि शशिकांत का कत्ल हो गया था और मैं फौरन मैटकाफ रोड पहुंचूं।"

"फिर तो आप बैठ जाइए। कत्ल के बारे में कुछ जानकर जाएंगे तो आप और आपका क्लायंट - जो कि मेरा भी क्लायंट है - दोनों फायदे में रहेंगे।"

"मदान साहब तुम्हारे भी क्लायंट हैं ?"

"हां। उन्होंने मुझे शशिकांत के कातिल का पता लगाने का कार्यभार सौंपा है।"

"आई सी। यहां क्यों आए ?"

"इसी काम से। अपनी इन्वेस्टिगेशन के सन्दर्भ में आपसे चंद सवाल करने।"

"मेरा कत्ल से क्या लेना देना है ?"

"कत्ल से न सही, उस शख्स से तो लेना-देना था जिसका कि कत्ल हुआ है।"

"ही वाज ओनली ए क्लायंट। लाइक एनी अदर क्लायंट।"

"अग्रीड। लेकिन इत्तेफाक से अपने कत्ल से थोड़ी देर पहले वो आपकी सोहवत में था।"

"तुम क्या चाहते हो ?"

"पहले तो यही चाहता हूं कि बैठ जाइए और मुझे भी बैठने को कहिये।"

"ठीक है।" वह अपनी एग्जीक्यूटिव चेयर पर ढेर हो गया और बोला, "प्लीज सिट डाउन लेकिन ज्यादा वक्त न लगाना वर्ना साहब खफा हो जायेंगे।"

"जब आप ये बतायेंगें कि आप मेरी वजह से लेट हुए थे खफा नहीं होंगें।"

"ओके । ओके । एज यू विश ।"

"थैंक्यु ।" मैं बोला और मैंने ऑफिस में चारों ओर निगाह डाली । वो बहुत ही शानदार ऑफिस था । उसका वो निजी कक्ष ही नहीं बाकी का सारा ऑफिस, जहां कि सात-आठ मुलाजिम काम कर रहे थे, भी उतना ही शानदार और सुसज्जित था ।

और उससे भी ज्यादा शानदार और सुसज्जित वो खुद था । आयु में वो पैंतीस और चालीस के बीच में कहीं था । फैशन पर उसकी हद से ज्यादा आस्था मालूम होती थी । वो निहायत शानदार सूट पहने था, उसके बाल आधुनिकतम स्टाइल से कटे हुए थे और बड़े करीने से सिर पर सजे हुए थे । आईब्रोज औरतों की तरह बनी हुई थीं और चेहरे की थ्रेडिंग हुई थी । अपनी दायीं कलाई में वो भैंस के गले में बांधने वाली सांकल जितना मोटा आईडेंटीटी ब्रेसलेट पहने था । अपने बायें हाथ की एक उंगली में वो नीलम की अंगूठी पहने था और कलाई पर कम-से-कम पचास हजार रुपए कीमत की राडो की घड़ी बांधे था । कहने का तात्पर्य ये था कि वो सिर्फ रईस ही नहीं, रईसमिजाज भी था ।

"कुछ पियोगे ?" वो बोला ।

"सिगरेट ।" मैंने जेब से अपना डनहिल का पैकेट निकाला, "बस । और कुछ फिर कभी । यूं टाइम बचेगा ।"

मैंने एक सिगरेट उसे दिया और एक खुद लिया । उसने जेब से सोने का सिगरेट लाइटर निकालकर दोनों सिगरेट सुलगाए ।

"शूट ।" फिर वो बोला ।

प्रत्युत्तर में सबसे पहले मैंने संक्षेप में उसके सामने वारदात का और मौकाएवारदात का खाका खींचा ।

"हूं ।" वो बोला ।

"कल आप वहां किस सिलसिले में गए थे ?" मैंने पूछा ।

"भई, क्लायंट ने बुलाया था सो गया था । और सिलसिला क्या होना था ?"

"किस सिलसिले में बुलाया था ?"

"यही बिजनेस डिस्कशंस ।"

"कितने बजे पहुंचे थे आप ?"

"छ: पांच पर । छ: बजे की अप्वाइंटमेंट थी । पांच मिनट लेट हो गया था ।"

"तब मूड कैसा था आपके मेजबान का ?"

"अच्छा नहीं था । खराब था । खराब मूड से मेरे पहुंचते ही नवाज किया था उसने मुझे ।"

वो तनिक हंसा ।

"कैसे ?" मैंने पूछा ।

"इसी बात पर गले पड़ने को कोशिश करने लगा कि मैं पांच मिनट लेट क्यों आया था ! पहले तो मैंने बात को ये कहकर टालने की कोशिश की कि उसकी घड़ी गलत होगी लेकिन वो बोला कि पीछे वाल केबिनट पर पड़ी एटलस के सूरत वाली उसकी घड़ी गलत हो ही नहीं सकती थी । पांच मिनट की देरी के लिए दस बार सॉरी कहलवा कर पट्ठे ने जान छोड़ी ।"

"आई सी । किसी और बात को भी लेकर आप दोनों में तकरार हुई थी ?"

उसने घूर के मुझे देखा ।

"किन्हीं कागजात के मामले को लेकर ?" अपलक उसकी निगाह से निगाह मिलाए मैं बोला ।

"तुम्हें कैसे मालूम ?" वो बोला, फिर तत्काल उसने जोड़ा, "ओहो, तो उस लड़की से तुम्हारी बात हो चुकी है । उसी ने बताया होगा ।"

"किसने ?"

"उसकी सेल्फ अपोइंटेड हाउसकीपर सुजाता मेहरा ने ।"

"उसी ने बताया था ।"

"बेचारी से बहुत बुरी तरह पेश आया था शशिकांत । मेरे सामने ही मिट्टी झाड़ के रख दी उसकी । इतनी सी बात पर काटने को दौड़ रहा था उसे कि उसका ब्वाय फ्रेंड उसे डेट पर ले जाने के लिए वहां क्यों आ रहा था । इतना जलील नहीं करना चाहिये किसी को । और वो भी किसी के सामने । मैं वहां मौजूद न होता तो लड़की शायद उसकी बकबक झेल भी लेती । मेरे सामने नहीं बर्दाश्त हुई उसे अपनी जिल्लत । कोठी की चाबी मुंह पर मार के गई वो वहां से ।"

"शशिकान्त पर इस बात का क्या असर हुआ ?"

"कुछ भी नहीं ।"

"वो कितने बजे गई थी ?"

"पूरे सात बजे ।"

"उसका ब्वाय फ्रेंड डिसूजा जो वहां आने वाला था और उस फसाद की जड़ था, वहां आया था ?"

"हां । सवा सात बजे आया था वो वहां । शशिकांत उस पर भी फट पड़ा था कि उसने उसके घर में घुसने की जुर्रत कैसे की थी जबकि घर में वो घुसा ही नहीं था । वो तो बेचारा दरवाजे पर ही खड़ा सुजाता के बारे में पूछ रहा था । शशिकांत गर्जने लगा कि वो कंपाउंड में भी क्यों दाखिल हुआ ! बोला, दफा हो जा वरना गोली मार दूंगा । बेचारे की शक्ल देखने वाली थी तब । तब मैंने ही उसे कहा था कि सुजाता को एकाएक वहां से चले जाना पड़ा था और वो जरूर उसके इन्तजार में बाहर सड़क पर या करीब के बस स्टैंड पर ही कहीं होगी । वो फौरन वहां से चला गया था ।"

"आई सी । बहरहाल बात किन्हीं कागजात के मसले को लेकर आपकी और मरने वाले की तकरार की हो रही थी ।"

"वो मसला कुछ भी नहीं था । वो पहले से ही बेहद उखड़े हुए मूड में न होता तो सवाल ही नहीं था तकरार का ।"

"थे क्या वो कागजात ?"

"उसकी राजेंद्रा प्लेस में जो नाइट क्लब है और जो आजकल बंद है, उसके खुलने के आसार दिखाई दे रहे हैं । इस मुद्दे पर अपने क्लायंट की तरफ से मैं कई बार लेफ्टीनेंट गवर्नर और पुलिस कमिश्नर से मिला हूं । उम्मीद थी कि क्लब को कुछ दिनों में फिर से खोलने की इजाजत मिल जाने वाली थी । दोबारा क्लब खुलने से पहले शशिकान्त उसकी रेनोवेशन कराना चाहता था और इस काम के लिए एक इंटीरियर डेकोरेटर की खिदमात हासिल की गई थीं ।"

"किसकी ?"

"इंटीरियर डेकोरेटर की । आंतरिक साज-सज्जा विशेषज्ञ की ।"

"आई मीन कौन से इंटीरियर डेकोरेटर की ?"

"वो क्या है कि मेरे एक और क्लायंट हैं, उनकी मिसेज शहर की फेमस इंटीरियर डेकोरेटर है । वो ही.."

"सुधा माथुर !"

उसने हैरानी से मेरी और देखा ।

"से यस ऑर नो ।" मैं तनिक शुष्क स्वर में बोला, ड्रामेटिक इफेक्ट्स लेटर । यू आर इन ए हरी । रिमेम्बर !"

"हां । वही ।" वो तनिक हकबकाया सा बोला, "मिसेज सुधा माथुर ही नाइट क्लब की रेनोवेशन का प्लान तैयार कर रही थीं ।"

"आगे ।"

"प्लान के स्कैच वगैरह और प्रोपोजल के सारे कागजात कल शशिकांत को दिखाए जाने का मेरा वादा था लेकिन किन्हीं वजहात से कागजात वक्त पर तैयार नहीं ही हो सके थे । एकाध दिन की अतिरिक्त देरी का मसला था, लेकिन वो देरी को यूं उछाल रहा था जैसे अगले रोज प्रलय आ जाने वाली थी । बात नाजायज थी, गैरजरूरी थी इसलिए मैं भी ताव खा गया था । नतीजतन पहले बात तकरार तक पहुंची और फिर तकरार झगड़े तक । उस घड़ी इतना अनरीजनेबल हो उठा शशिकांत कहने लगा कि कैलेंडर की तारीख बदलने से पहले अगर वो कागजात उस तक न पहुंचे, जो कि नामुमकिन था, तो प्रोपोजल को कैंसल समझा जाए ।"

"यानी कि वो अगले रोज तक भी इत्तंजार करने को तैयार नहीं था ।"

"नहीं था । बाद में तो माहौल कुछ शांत भी हो गया था और मैंने उसे नए सिरे से समझाया था कि आज ही होने वाला काम वो नहीं था और उससे दरख्वास्त की था कि कम-से-कम चौबीस घंटे की तो मोहलत दे लेकिन उसने तो ऐसी जिद पकड़ ली थी कि वो टस-से-मस न हुआ । आखिरकार अपना सा मुंह ले के मैं वहां से लौट आया ।"

"कितने बजे रुखसत हुए थे आप मकतूल की कोठी से ?"

"आठ बजने वाले थे । दसेक मिनट रहे होंगे बाकी ।"

"यानी कि सात पचास पर ।"

"हां ।"

"वहां से कहां गए आप ?"

"डिफेंस कालोनी ।"

"वहां कहां ?"

"वहां अब्बा नाम का एक डिस्कोथेक है जहां कि मैं तफरीह के लिये अक्सर जाता हूं ।"

"आई सी । मैटकाफ रोड से रवाना हुए तो सीधे वहीं पहुंचे आप ?"

"न..नहीं । सीधा तो नहीं पहुंचा था । रुका तो था मैं रास्ते में एक जगह ।"

"कहां ?"

"दिल्ली गेट । पैट्रोल पम्प पर ।"

"पेट्रोल पम्प पर । पेट्रोल पम्प तो आजकल सात बजे बंद हो जाते हैं ?"

"हां । लेकिन ये सिलसिला अभी नया-नया ही शुरू हुआ है न इसलिए मुझे अक्सर भूल जाता है । ऊपर से पम्प के ऑफिस में रोशनी थी । मैंने सोचा पम्प वाले कोई कनस्तरों में पेट्रोल रखकर बैठे रहते होंगे और ब्लैक में

बेचते होंगे इसी चक्कर में मैंने गाड़ी वहां ले जा खडी की थी ।"

"पैट्रोल बहुत कम था आपकी गाड़ी में ?"

"नहीं, कम तो नहीं था । था गुजारे लायक । दरअसल पम्प पर जाने की एक और भी वजह थी ।"

"और क्या वजह थी ?"

"मैं एक फोन कॉल करना चाहता था । उस पम्प से क्योंकि मैं रेगुलर पैट्रोल डलवाता हूं इसलिए वहां लोग मुझे पहचानते हैं ।"

"हूं । फोन किसे करना चाहते थे आप ?"

"सुधा माथुर को । वो क्या है शशिकांत से जो गरमा-गरमी हुई थी, वो मुझे परेशान कर रही थी । वो भले ही बहुत अनरीजनेबल हो उठा था, लेकिन मुझे भी ये नहीं भूलना चाहिए था कि कस्टमर इज आलवेज राइट । तब मुझे लगा था कि प्रोपोजन कैंसल न हो, इसके लिए मुझे कोई जुगाड़ करना चाहिए था आखिर उसने
आधी रात तक का तो वक्त दिया ही था । आन दि रोड मुझे ये ख्याल आया था कि उस पेचीदा मसले पर मुझे सुधा माथुर से बात करनी चाहिए थी ।"

"जो कि आपने की ? पम्प से टेलीफोन करके ?"

"हां । मुझे उम्मीद थी कि जैसा शशिकांत मेरे से भड़का था, वैसा शायद वो सुधा से न भड़कता । सुधा उससे बात करती तो शायद वो अपनी रात बारह बजे तक की डैड लाइन में कोई ढील दे देता या उसे खारिज ही कर देता ।"

"आई सी ।"

"मैंने सुधा से इस बाबत बात की तो उसने बताया कि वो उस प्रोपोजल के कागजात को आफिस से घर ले आई थी और घर पर भी वो उसी प्रोजेक्ट पर काम कर रही थी, लेकिन कागजात मुकम्मल होने में अभी बहुत काम बाकी था । तब मैंने उससे प्रार्थना की थी कि वो आधे-अधूरे कागजात ही जा के शशिकांत को दिखा आए । मैंने कहा कि शशिकांत को कौन-सा पता लगने वाला था कि कागजात आधे-अधूरे थे !"

"उसने कबूल किया यूं अधूरे कागजात को ले के यूं शशिकांत की कोठी पर जाना ?"

"हां, किया । थोड़ी टालमटोल की लेकिन किया ।"

"वो गई वहां ?"

"जब हामी भरी थी तो गई ही होगी ।"

"आपने दरयाफ्त नहीं किया ?"

"मौका नहीं लगा । वो क्या है कि रात को मैं एक-डेढ़ बजे घर पहुंचता हूं इसलिए सुबह देर से सो के उठता हूं । यहां ऑफिस में मैं दोपहर के बाद ही पहुंच पाता हूं । आज आते ही काम-काज में मसरूफ हो गया । फिर जब सुधा को फोन करने की फुर्सत लगी तो मदान का फोन आ गया और फिर ..."

"अब कीजिए ।"

"क्या ?"

"सुधा को फोन ।"

उसने फोन अपनी तरफ घसीटा और एक नम्बर डायल किया ।

"बिजी मिल रहा है ।" कुछ क्षण बाद वह बोला ।

"जाने दीजिए ।"

उसने फोन वापस क्रेडल पर रख दिया ।

"सुधा से आपकी कितने बजे बात हुई थी ?" मैंने सवाल किया ।

"भई, अब घड़ी तो देखी नहीं थी मैंने ।"

"अंदाजन बताइए ।"

"अंदाजन !" वो सोचने लगा, "देखो, मैटकाफ रोड से दिल्ली गेट का कोई दस-बारह मिनट का रास्ता है । सात पचास पर मैं शशिकांत की कोठी से निकला था । इस लिहाज से आठ पांच और आठ दस के बीच मेरी बात हुई होगी सुधा से ।"

"पेट्रोल पम्प से आप सीधे डिफेंस कॉलोनी गए ?"

"हां ।"

"अब्बा में कब पहुंचे ?"

"साढ़े आठ बजे ।"

"यानी कि जिस वक्त मैटकाफ रोड पर शशिकांत का कत्ल हो रहा था, एन उस वक्त आप अब्बा में दाखिल हो रहे थे ।"

"कत्ल साढ़े आठ बजे हुआ था ?"

"आठ अट्ठाइस पर । हालात का इशारा तो इसी तरफ है । बाकी आप वहां मौकाएवारदात पर जा ही रहे हैं ।"

"ओह, यस ।" वो तत्काल उठ खड़ा हुआ, "तो मैं चलूं ?"

"जरुर । मैं आपसे फिर मिलूंगा ।"

"एनी टाइम । यू आर मोस्ट वेलकम ।"

"थैंक । थैंक्यू सर ।"

***

कनाट प्लेस में सुधा माथुर का ऑफिस सुपर बाजार के ऐन सामने की एक इमारत के ग्राउंड फ्लोर पर था। ऑफिस क्या था इंटीरियर डेकोरेशन के आधुनिक कारोबार की दस्तावेज था। राजीव भैया के ले जाए देश भले ही इक्कीसवीं सदी में नहीं पहुंचा था, वो ऑफिस यकीनन पहुंच भी चुका था।

बाहरी ऑफिस मे दो सुंदरियां और एक सुन्दरलाल बैठा था। सुंदरलाल को नजरअंदाज करके एक सुंदरी को मैंने अपना विजिटिंग कार्ड थमाया और सुधा माथुर से मिलने की इच्छा व्यक्त की।

उसके जरिये मेरा कार्ड भीतर ऑफिस में पहुंच गया।

और दो मिनट बाद कार्ड के पीछे-पीछे मैं भी भीतरी ऑफिस में पहुंचा दिया गया।

भीतरी ऑफिस पहले से भी ज्यादा शानदार था जहां कि सुधा माथुर बैठी थी। मैंने उसका अभिवादन किया और उसके इशारे पर उसके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया।

मैंने आंख भरकर उसकी तरफ देखा।

अपनी बहन मधु से चार साल बड़ी होने के बावजूद खूबसूरती और आकर्षण में वो उससे किसी कदर भी कम न थी। उल्टे कैरियर वुमैन होने की वजह से उसके चेहरे पर एक बहुत सजती-सी गंभीरता थी और खानदानी रईस की बीवी होने की वजह से हाव-भाव में एक सजती-सी शाइस्तगी थी।

"मिस्टर कोहली।" वो बड़े सरल स्वर में बोली - "आपकी शक्ल किसी से बहुत मिलती है। बहुत ही ज्यादा मिलती है।"

और आपकी आवाज ! मैं मन-ही-मन बोला। दो मांजाई बहनों की सूरतें मिलती हो, ऐसा मैंने आम देखा था लेकिन दो बहनों की आवाज मिलती हो, ऐसा मेरे सामने पहली बार हो रहा था।

सुधा की आवाज ऐन मधु जैसी थी अलबत्ता अन्दाजेबयां में फर्क था। सुधा का लहजा कुछ-कुछ अंग्रेजियत लिए हुए था और वह धाराप्रवाह बोलती थी जबकि मधु के लहजे से लगता था जैसे उसे अंग्रेजी आती ही नहीं थी और वो फिकरों के टुकड़े कर-करके बोलती थी।

" ...हद से ज्यादा मिलती है।" वो कह रही थी, "ऐन एक ही सूरत वाले दो आदमी... ।"

"कभी होते थे दिल्ली शहर में।" मैं मुस्करा कर बोला, "अब एक ही है। मैं अकेला। युअर्स ट्रूली। दि ओनली वन।"

"क्या मतलब ?"

मैंने मतलब समझाया। उसे शशिकांत के कत्ल की खबर सुनाई।

वह हकबकाई - सी मेरा मुंह देखने लगी।

"हालात ऐसे पैदा हो गए हैं, मैडम" मैं बोला - "कि शशिकांत के कत्ल में आपकी फैमिली के किसी मेम्बर का दखल निकल सकता है।"

"क्या ?"

"ऐसा कोई दखल है या नहीं, इसी बात की तसदीक के लिए आपके हसबेंड ने मुझे रिटेन किया है।"

"मेरे हस...माथुर साहब ने ?"

"जी हां लेकिन बरायमेहरबानी ये बात अपने तक ही रखियेगा। वो ही ऐसा चाहते हैं।"

"कब ? कब रिटेन किया ?"

"कुछ ही घंटे पहले । जबकि मैं फ्लैग स्टाफ रोड पर उनसे मिलने आपकी कोठी पर गया था ।"

"उ... उन्होंने... कबूल किया आपसे मिलना ?"

"बिल्कुल किया मुलाकात के सबूत के तौर पर ये देखिए रिटेनर का चैक ।"

मैंने उसे दस हजार की अग्रिम धनराशि का चैक दिखाया ।

"कमाल है ।" वो बोली ।

"आप कल शाम मकतूल की कोठी पर गई थीं ?"

"किसने कहा ?" वो तत्काल बोली ।

"आप गई थीं ?"

"नहीं ।"

"लेकिन आपने तो फोन पर पुनीत खेतान से वादा किया था कि आप प्रोपोजल के कागजात, जो कि मुकम्मल भी नहीं थे, लेकर मैटकाफ रोड शशिकांत की कोठी पर जाएंगी ।"

"आप खेतान से मिल भी आए ।"

"जी हां । तभी तो मुझे इस बात की खबर है ।"

"म... मैंने फोन पर हामी जरूर भर दी थी लेकिन असल में जा नहीं सकी थी ।"

"वजह ?"

"माथुर साहब की तबीयत ठीक नहीं थी । उनके पास मेरी हाजिरी जरूरी थी ।"

"ऐसा आपने फोन पर ही कहा होता खेतान को !"

"तब मेरा ख्याल था कि मैं जा सकूंगी लेकिन बाद में हालात कुछ ऐसे वन गए थे कि... कि... बस, नहीं ही गयी मैं ।"

"यही जवाब आप पुलिस को भी देंगीं ?"

"प... पुलिस !"

"जोकि देर सवेर पहुंचेगी ही आपके पास ।"

"वो किसलिए ?"

"जिसलिए मैं आपके पास पहुंचा हूं । अब जब मेरे सामने आपका वे जवाब नहीं चल पा रहा तो उनके सामने कैसे चलेगा ? मैं तो आपकी तरफ हूं । पुलिस तो नहीं होगी आपकी तरफ ।"

"आप तो मुझे डरा रहे है ।"

"मेरे सामने डर लीजिए, सुधा जी । निडर हो के डर लीजिए । मेरे सामने डरेंगी तो अपने डर से निजात पाने का कोई जरिया सोचने की तरफ आपकी तवज्जो जाएगी ।"

"कहना क्या चाहते हैं आप ? मैं झूठ बोल रही हूं ?"

"हां ।"

"आपके हां कहने से हां हो गई ?"

"सिर्फ मेरे कहने से नहीं हो गई लेकिन उस चश्मदीद गवाह के कहने से हो जायेगी जिसने कल शाम आपको एक टैक्सी पर मेटकाफ रोड पहुंचते देखा था ।"

उसके चेहरे की रंगत बदली ।

"मुझे लगता है" मैं सहज स्वर में बोला "कि शशिकांत के कत्ल की बात सुनकर आपने ये फैसला किया है कि आपका उससे कोई वास्ता स्थापित हो । अगर वो जिन्दा होता तो शायद आप ये झूठ बोलना जरूरी न समझती ।"

"मेरा उसके कत्ल से कुछ लेना-देना नहीं ।"

"अगर ऐसा है तो आप झूठ क्यों बोल रही हैं ?"

"उसी वजह से जो आपने अभी बयान की ।"

"हकीकतन आप वहां गई थीं ?"

"मिस्टर कोहली, जब आप हमारी फैमिली के लिए काम कर रहे हैं तो क्या मैं ये उम्मीद रखूं कि मेरे से हासिल जानकारी का आप कोई बेजा इस्तेमाल नहीं करेंगें ? आप उसे हमारे ही खिलाफ इस्तेमाल करने की कोई कोशिश नहीं करेंगे ?"

"बशर्ते कि वो जानकारी इतनी विस्फोटक न हो कि आप ये कहें कि आपने ही ने उसका कत्ल किया है ।"

"मैंने उसकी सूरत भी नहीं देखी ।"

"गई तो थी न आप वहां ?"

"मैटकाफ रोड पर किसने देखा था मुझे ?"

मैं केवल मुस्कराया ।

"छुपाना बेकार है, मिस्टर कोहली ।" वो तनिक अप्रसन्न स्वर में बोली, "क्योंकि जब एक जना दूसरे को देखता है तो दूसरा जना भी पहले को देखता है ।"

"यानी कि आपने भी पिंकी को वहां देखा था ?"

"हां । उसकी हैडलाइट्स मेरी आंखों को चोंधिया रही थी लेकिन फिर भी मैंने उसे साफ पहचाना था उसकी बड़ी पहचान तो उसकी लाल मारुति ही है जिस पर उसने सौ तरह के स्टिकर लगाए हुए हैं ।"

"ये बात नहीं सूझी थी उसे । वो अपनी हैडलाइट्स की हाई बीम को ही अपना खास प्राटेक्शन समझ रही थी ।"

वो खामोश रही ।

"यानी कि आप कबूल करती हैं कि आप वहां गयी थीं ?"

उसने सहमति में सिर हिलाया ।

"टैक्सी पर किसलिए ?"

"अपनी प्रोटेक्शन के लिए ।"

"जी !"

"रात के वक्त मैं आदमी के घर जाना नहीं चाहती थी । पुनीत खेतान की अपील पर मैं वहां जा रही थी । उस आदमी की शहर में जो रिप्युट है, उससे मैं नावाकिफ नहीं । इसलिए मैं अपने वाकिफकार टैक्सी ड्राइवर के साथ वहां गई थी । मैंनें उसे रास्ते में ही समझा दिया था कि अगर में पांच मिनट में कोठी से न निकलूं तो वो मुझे बुलाने के लिए निःसंकोच भीतर आ जाए ।"

"उसने ऐसा किया ?"

"नौबत ही न आई । मैं ही भीतर न गई ।"

"अच्छा !"

"हां । पहले तो मैं कंपाउंड में ही दाखिल नहीं हो रही थी । पहले तो मैंने बाहर सड़क से ही आयरन गेट के पहलू में लगी कॉलबैल बजाई थी । उसका कोई नतीजा सामने नहीं आया था तो बहुत डरती झिझकती मैं भीतर दाखिल हुई थी । भीतर कोठी के प्रवेशद्वार पर भी घंटी थी । मैंने वो भी बजाई थी और दरवाजे को खुला पाकर उसे नाम लेकर भी पुकारा था लेकिन नतीजा वही सिफर निकला था ।"

"आपने कोठी के भीतर कदम नहीं रखा था ?"

"बिल्कुल भी नहीं । भीतर तो अंधेरा था । मुझे तो उस तनहा और अंधेरी जगह में दाखिल होने के ख्याल से ही दहशत हो रही थी ।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? एकाध मिनट और मैंने भीतर से किसी जवाब का इन्तजार किया और फिर वापस लौट आई ।"

"कागजात का क्या हुआ ?"

"वो मैं वापस ले आई । वहां किसके सुपुर्द करके आती मैं उन्हें ? ऐसे ही फेंक आती वहां ?"

"वो तो मुनासिब न होता ।"

"एग्जेक्टली ।"

"जैसे पिंकी ने आपको वहां देखा था, वैसे ही क्या आपको भी वहां कोई जानी पहचानी सूरत दिखाई दी थी ?"

उसने इन्कार में सिर हिलाया ।

"फिर से तो झूठ नहीं बोल रहीं ?"

उसने फिर इन्कार में सिर हिलाया ।

"कुल कितनी देर आप वहां थीं ?"

"चार-पांच मिनट । एक-दो मिनट बाहर आयरन गेट पर और एक-दो मिनट भीतर कोठी के प्रवेशद्वार पर ।"

"पहुंची कब भी आप वहां ?"

"साढ़े-आठ के बाद ही किसी वक्त पहुंची थी ।"

"आपका वो वाकिफकार टैक्सी ड्राइवर इस बात की तसदीक करेगा कि आप कोठी के भीतर दाखिल नहीं हुई थीं ?"

वो हिचकिचाई ।

मैं अपलक उसकी ओर देखता रहा ।

"वो" फिर वह बोली - "वो...बात ये है कि मैं टैक्सी से शशिकांत की कोठी से थोड़ा परे उतरी थी ।"

"क्यों ?" मैं बोला ।

"मुझे उस की कोठी की कोई वाकफियत नहीं थी । सच पूछो तो मुझे उस इलाके की ही कोई वाकफियत नहीं थी । उसकी बाबत किसी से दरयाफ्त करने की नीयत से मैं टैक्सी से उतरी थी । तब मैंने पाया था कि जहां मैं खड़ी थी, दस नंबर कोठी उससे अगली ही थी । तब जरा से फासले के लिए मैंने टैक्सी में दोबारा बैठना जरूरी न समझा ।"

"आप वो जरा सा फासला पैदल तय करके आयरन गेट के सामने पहुंची ?"

"हां ।"

"ड्राइवर टैक्सी आपके पीछे वहां तक लेकर नहीं आया ?"

"नहीं ।"

"उसने तब भी टैक्सी आयरन गेट तक पहुंचाने की कोशिश न की जबकि आप भीतर गई थीं ?"

"न ।"

"कमाल है ! जबकि उसे कोठी के भीतर चले आने की आपकी हिदायत थी ।"

"फौरन नहीं । पांच मिनट बाद ।"

"जाहिर है । फौरन का मतलब तो ये होता कि वो आपके साथ ही भीतर जाता ।"

वो खामोश रही ।

"बहरहाल" मैं बोला, "वो टैक्सी ड्राइवर इस बात की तसदीक नहीं कर सकता कि आप कोठी के मुख्य द्वार से ही वपिस लौट आई थीं या भीतर भी दाखिल हुई थीं ?"

"न...नहीं । नहीं कर सकता ।"

"दैट्स टू बैड ।"

"वाई ?"

"आप बड़ी आसानी से भीतर स्टडी में जाकर उसे शूट कर सकती थीं और फिर कह सकती थीं कि आपने तो कोठी में कदम ही नहीं रखा था । जैसा कि आप कह रही हैं ।"

"मैं क्या झूठ कह रही हूं ?" वो तमककर बोली ।

"आप ही को मालूम हो ।"

वो कुछ क्षण अपलक मुझे देखती रही और फिर बोली, "पिंकी भी तो वहां थी । वो क्या कहती है इस बाबत ?"

"वो कहती है कि जब वो भीतर दाखिल हुई थी तो उसने शशिकांत को अपनी स्टडी में मरा पड़ा पाया था ।"

"तो फिर ? तो फिर मैं उसकी कातिल कैसे हो सकती हूं ?"

"नहीं हो सकतीं । बशर्ते कि वो भी आप ही की तरह ..."

"क्या मेरी तरह ?"

"झूठ न बोल रही हो ।"

"वो क्यों झूठ बोलेगी ? उसे तो शशिकांत या जिन्दा मिला था या मुर्दा मिला था । अगर उसे मुर्दा मिला था तो वो कातिल कैसे हो सकती है । अगर उसे वो जिंदा मिला तो वो भला क्यों झूठ बोलकर जिंदा शख्स को मुर्दा बताएगी ?"

"कोई वजह तो दिखाई नहीं देती । मुर्दे को जिन्दा बताती तो कुछ बात भी थी ।"

"मिस्टर कोहली !" वो मुझे घूरते हुए बोली, "आई डोंट अंडरस्टैंड यू । लगता है आप मुझे खामखाह तपाने की कोशिश कर रहे हैं ।"

"आई एम सो सॉरी । मैं लाइन ही बदल लेता हूं । पहले मिली तो हुई ही होंगी आप उससे ! वर्ना आपको ये न मालूम होता कि मैं उसका हमशक्ल हूं ।"

"सिर्फ एक बार ।" वो बोली, "खेतान ही उसे यहां मेरे ऑफिस में लाया था । क्लब की रेनोवेशन का प्रोजेक्ट डिसकस करने के लिए ।"

"सिर्फ एक मुलाकात के सदके आपने ये जान लिया कि शहर में उसकी रिप्युट खराब थी ।"

"सिर्फ मुलाकात से नहीं जाना । कई सुनी-सुनाई बातों से जाना उसके नाइट क्लब के प्रोफेशन से जाना, इस बात से जाना कि वहां सरकारी ताला बंदी हुई हुई थी और ....."

वो एकाएक खामोश हो गई ।

"और" मैं अपलक उसे देखता हुआ बोला "उससे अपनी रिश्तेदारी की वजह से जाना ।"

"रिश्तेदारी !" उसके मुंह से निकला ।

"करीबी । आपकी सगी बहन का छोटा देवर जो था वो ! दिल्ली के टॉप के अंडरवर्ल्ड बॉस का सगा भाई जो था वो !"

वो फिर तनिक बदहवास हुई ।

"मेरी बहन की मर्जी पर मेरा क्या जोर ?" फिर वो सख्ती से बोली, "वो किससे शादी करती है, मैं...."

"मैं आप पर कोई ब्लेम नहीं लगा रहा मैं सिर्फ ये कहने की कोशिश कर रहा हूं कि आप शशिकांत से महज इसलिए ही वाकिफ नहीं थीं क्योंकि वो आपका ताजा-ताजा क्लायंट बना था । आप ज्यादा वाकिफ इसलिए थीं क्योंकि वो आपका रिश्तेदार था ?"

"सरासर गलत । मुझे अपनी बहन के पति से उसकी इतनी करीबी रिश्तेदारी की कोई खबर नहीं थी । ऐसी किसी रिश्तेदारी की मुझे खबर होती तो क्या मैं आज तक उससे सिर्फ एक बार मिली होती ! और वो भी एक क्लायंट के तौर पर ।"

"सही फरमाया आपने । तो फिर इसका मतलब ये हुआ कि किसी और जरिए से, किसी और वजह से आप उसके काबिलेएतराज कैरेक्टर से वाकिफ हैं ।"

वो खामोश रही ।

"मैडम, ये न भूलिए कि मैं आपके पति के लिए काम कर रहा हूं । आप मेरे सवाल का माकूल जवाब नहीं देंगी तो यही सवाल मैं आपसे माथुर साहब के सामने पूछूंगा । मुझे यकीन है कि तब आप खामोश नहीं रह पाएंगी ।"

"तब खामोश रहने की जरूरत ही कहां रह जाएगी ! वो धीरे से बोली, जो बात माथुर साहब को भी मालूम है, उस बाबत मेरा खामोश रहना बेमानी होगा ।"

"सो देयर यू आर ।"

"मैं बताती हूं ।"

"खाकसार सुन रहा है ।"

"ये... ये शख्स... शशिकांत कई दिनों से हमारे यहां फोन कर रहा था कि वो माथुर साहब से बात करना चाहता था । माथुर साहब तो यूं ऐरे-गैरे लोगों से बात करते नहीं । उनका सैक्रेट्री नायर ऐसी काल्स रिसीव करता है । वो पूछता था कि शशिकांत क्या क्या बात करना चाहता था तो शशिकांत कुछ बताता नहीं था । कहता था बात ऐसी नहीं थी जो कि हर किसी के कानों में डाली जा सकती । कई कालों के बाद नायर ने माथुर साहब से बात की तो माथुर साहब ने बात करने से साफ इन्कार कर दिया । नायर ने माथुर साहब का फैसला आगे शशिकान्त को ट्रांसफर कर दिया लेकिन वो था कि फिर भी बाज न आया । फोन करता ही रहा, करता ही रहा । फिर एक रोज उससे मैंने बात की ।"

"कब ?"

"तीन दिन पहले । मिस्टर कोहली, जो बात वो नायर को नहीं बताना चाहता था, वो उसने मुझे बताई ।"

"क्या बात ?" मैं उत्सुक भाव से बोला ।

"बोला कि वह उस घर का दामाद था ।"

"क्या ?"

"बोला कि नेपाल में पिंकी ने उससे शादी की थी ।"

"य... ये बात सच थी ?"

"पिंकी के अलावा हमारे पास तसदीक का क्या जरिया था, मिस्टर कोहली ! उसी से सवाल किया गया । वो साफ मुकर गई ।"

"मुकर गई ! यानी कि आपके ख्याल से हो सकता है कि शशिकांत सच बोल रहा हो ।"

"मिस्टर कोहली, वो लड़की कुछ भी कर सकती है । कोई काम, कोई हरकत उसके लिए नामुमकिन नहीं । शी इज क्वाईट कैपेबल ऑफ डूइंग एनीथिंग । जस्ट एनीथिंग ।"

"ओह ! क्या बोली वो ?"

"बोली कि शादी की बात सरासर झूठ थी उसने ऐसी कोई शादी नहीं की थी । अलबत्ता काफी दबाव में उसने ये जरूर कबूल किया कि शशिकान्त से वो पुराना वाकिफ थी और वही वो शख्स था, सैर-सपाटे और तफरीह की नीयत से मुंबई में अपनी सहेलियों को डिच करके जिसके साथ वो मुम्बई से नेपाल गई थी ।"

"जहां कि वो बीस दिन रही थी. ..! हैरान न होइए । माथुर साहब ने खुद बताया था ।"

"ओह ! बहरहाल पिंकी ने चिल्ला-चिल्लाकर इस बात से इन्कार किया कि नेपाल में उसने शशिकांत से शादी की थी ।"

"शशिकांत चाहता क्या था ?"

"वो चाहता था कि माथुर साहब सार्वजनिक रूप से उसे अपना दामाद तसलीम करें और खूब धूमधाम के साथ पिंकी को उसके साथ विदा करें ।"

"माथुर साहब ऐसा करते ?"

"कभी भी न करते। मरते मर जाते, न करते। ठौर मरवा देते वो ऐसी ख्वाहिश करने वाले आदमी को। लाश का पता न लगने देते।"

"पिंकी से ये जवाबतलबी माथुर साहब की मौजूदगी में हुई थी ?"

"नहीं। इस बाबत जो बातचीत उससे की गई थी, वो सिर्फ मैंने की थी।"

"आपने बाद में तो सब कुछ बताया होगा माथुर साहब को ?"

"नहीं बताया था।"

"क्यों ?"

"वो डिस्टर्ब होते।"

"आखिरकार तो ये बात माथुर साहब की जानकारी में आनी ही थी।"

"अपने आप आती तो आ जाती। बहरहाल मैंने बताना ठीक नहीं समझा था।"

"पिंकी से कोई सीधे बात हुई हो उनकी ?"

"किसलिए ? उन्हें तो असल मसले की भनक तक नहीं थी।"

"जब पिंकी शादी से इन्कार करती थी तो शशिकांत कैसे साबित कर सकता था कि वो शादी हुई थी ?"

"कहता था उसके पास शादी का सबूत था, पक्का सबूत था।"

"क्या ?"

"उसके पास शादी की विडियो फिल्म थी जो कि वो माथुर साहब को, सिर्फ माथुर साहब को दिखाना चाहता था।"

"विडियो फिल्म !" तुरंत मेरा ध्यान अपनी जेब में मौजूद विडियो कैसेट की ओर गया। मुझे बहुत जरूरी लगने लगा कि मैं जल्द से जल्द उस फिल्म को मुकम्मल देखूं।

"मिस्टर कोहली" सुधा कह रही थी, "मुझे साफ लफ्जों में तो नहीं कहा था उसने लेकिन मुझे लगा था कि असल में वो उस कैसेट का ही माथुर साहब से कोई सौदा करना चाहता था। वो पिंकी को क्लेम करने का उतना ख्वाहिशमंद नहीं लगता था जितना कि माथुर साहब से कैसेट के बारे में बात करने का।"

"ब्लैकमेल ?"

"मुझे भी कुछ ऐसा ही अहसास हुआ था। इस बाबत न सिर्फ वो माथुर साहब से बात करना चाहता था, जल्दी से जल्दी बात करना चाहता था। और बात करने की जल्दी भी पता नहीं क्यों उसे एकाएक हो गई थी।"

वजह मुझे मालूम थी। अपनी जगह मेरी लाश छोड़कर वो हिन्दोस्तान से कूच जो कर जाने वाला था।

"शशिकांत वीडियो कैसेट के जरिये अपना क्लेम साबित करने में कामयाव हो जाता तो, आपकी क्या राय है, माथुर साहब उसकी ब्लैकमेलिंग की डिमांड के आगे झुक जाते ?"

"झुकना माथुर साहब के कैरेक्टर से मेल नहीं खाता।"

"यानी कि वो अपनी बेटी को उसके हाल पर छोड़ देते।"

"ऐसा तो वो हरगिज न करते। उन्हें पिंकी से बहुत प्यार है। दिलोजान से चाहते हैं वो पिंकी को।"

"फिर कैसे बात बनती ?"

"क्या पता कैसे बनती ? कुछ तो वो करते ही ।"

"माथुर साहब कल शाम घर पर थे ?"

"ये भी कोई पूछने की बात है ! हमेशा होते हैं ।"

"हमेशा ?"

"मेरा मतलब है अपने हैंडीकैप की वजह से रेयरली ही वो कहीं जाते हैं । बहुत कम, बहुत ही कम उनका कहीं आना-जाना होता है ।"

"यूं जाते हैं तो कैसे जाते हैं ? अपने आप ? अकेले ?"

"नहीं । साथ मैं होती हूं या मनोज होता है । दो आर्डरली होते हैं ।"

"कहीं अकेले कभी नहीं जाते ?"

"अकेले ? क्यों जाएंगें ? जरूरत क्या है ?"

"जवाब दीजिए । जाते हैं या नहीं ?"

"नहीं ?"

"चाहे तो जा सकते हैं ?"

"जब कभी गए नहीं तो... "

"चाहें तो" मैंने जिद की "जा सकते हैं ?"

"नहीं ।"

"पक्की बात ?"

"हां ।"

"आपने अभी थोड़ी देर पहले बताया था कि कल शाम माथुर साहब की तबीयत ठीक नहीं थी । ये बात आपके बोले झूठ का ही हिस्सा थी या वाकई तबीयत ठीक नहीं थी ?"

"वाकई तबीयत ठीक नहीं थी । कल वो आठ बजे से भी पहले बिस्तर के हवाले हो गए थे । मैंने खुद उन्हें सिडेटिव दिया था ताकि वो आराम की नींद सो सकें ।"

"फिर उनके पास आपकी हाजिरी तो क्या जरूरी रह गई होगी ?"

"जाहिर है ।"

"फिर तो उन्हें इस बात की खबर नहीं लगी होगी कि आप कल शाम घर से बाहर गयी थीं !"

"हां ।"

"अब, क्योंकि आप खुद घर से बाहर थीं इसलिये आपको क्या खबर लगी होगी कि वो पीछे घर पर ही थे या कहीं चले गये थे !"

"डांट टाक नानसेंस । वो सिडेटिव के असर में थे, वो..."

"आपने अपनी आंखों से उन्हें गोली खाते देखा था ? अपनी आंखों से उन्हें गोली हाथ से मुंह में हस्तांतरित करते देखा था ?"

"इतना ध्यान कौन करता है ! मैंने तो उन्हें गोली थमाई थी, पानी का गिलास थमाया था और फिर बैडरूम की फालतू बत्तियां बुझाने लगी और खिड़कियों के परदे ठीक करने लगी थी ।"

"यानी कि वो चाहते तो गोली खाए बिना गोली खा ली होने का बहाना कर सकते थे ।"

"लेकिन उन्हें जरूरत क्या थी वैसा करने की ?"

"उन्हें सिडेटिव आपने खेतान की फोन कॉल आने से पहले दिया था या बाद में ?"

"बाद में ।"

"उन्हें खेतान की फोन कॉल की खबर लगी होगी ?"

"घंटी तो जरूर सुनी होगी । आखिर बगल का ही तो कमरा है उनका ।"

"कॉल से निपटते ही आप उन्हें सिडेटिव देने पहुंच गई ?"

"हां ।"

"उन्होंने पूछा था कॉल किसकी थी ?"

"नहीं ।"

"वो आप पर शक करते हैं ?"

"हर उम्रदराज हसबैंड अपनी नौजवान बीवी पर शक करता है लेकिन अगर आप ये समझते हैं कि माथुर साहब सिडेटिव की गोली न खाकर पहले नींद का बहाना करने लगे होंगे और फिर मेरे कोठी से निकलने के बाद व्हील चेयर पर सवार होकर मेरे पीछे लग गए होंगे तो जरूर आपका दिमाग खराब है ।"

"कोठी से निकलने के वाद" मैं अपनी ही झोंक में बोलता रहा, "आपको अपने वाकिफकार ड्राइवर वाली टैक्सी तलाश करने में कितना टाइम लगा था ?"

"मेरी उम्मीद से बहुत ज्यादा । पूरे दस मिनट बल्कि उस से भी ज्यादा ।"

"फ्लैगस्टाफ रोड से मैटकाफ रोड का फासला तो कुछ खास नहीं है । पांच मिनट में टैक्सी पहुंच गई होगी वहां रात के वक्त !"

"हां ।"

"पहुंची आप साढ़े आठ के बाद वहां ।"

"मिस्टर कोहली, फार गाड सेक, कम क्लीन क्या कहना चाहते हो ?"

"यही कि माथुर साहब के पास मैटकाफ रोड जाकर लौट आने के लिए बहुतेरा वक्त था ।"

"ब्रेवो !" वो व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली, "माथुर साहब मिल्खासिंह हैं न जो वो लपककर वहां पहुंचे, वहां शशिकांत पर गोलियां बरसाई और लपककर वापस लौट आए ! फाइन डिटेक्टिव यू आर, मिस्टर कोहली ।"

मैं बहुत धृष्टता से मुस्कुराया ।

"अभी आप खुद कह रहे हैं कि मरने वाले पर जो छ: गोलियां चलाई गई थीं, उनमें से सिर्फ एक उसको लगी थी और बाकी पांच इधर-उधर छिटक गई थीं । मिस्टर कोहली, वो गोलियां अगर माथुर साहब ने चलाई होतीं तो छ:

की छः मरने वाले की छाती में धंसी पाई गई होतीं।"

"बिल्कुल ठीक फरमा रही हैं आप।"

"मेरी बात को ठीक मानते हैं फिर भी ऐसी वाहियात बात कह रहे हैं कि कत्ल माथुर साहब ने किया हो सकता है।"

"आई एम सॉरी ! आई एम टेरीबली सॉरी, मैडम। वो क्या है कि कभी कभी मुझे खुद पता नहीं लगता कि मैं क्या कर रहा हूं। आई एम सॉरी ऑल ओवर अगेन।"

उसने संदिग्ध भाव से मेरी तरफ देखा।

"तो फिर अब मैं" मैंने उठने का उपक्रम किया, "इजाजत चाहता हूं।"

"एक मिनट रुकिये।"

मैं फिर कुर्सी पर पसर गया और प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी तरफ देखने लगा।

"एक बात सच-सच बताइएगा, मिस्टर कोहली।" वो बहुत धीमे किंतु निहायत संजीदा स्वर में बोली।

"पूछिए।" मैं भी पूरी तरह संजीदगी से बोला।

"क्या वाकई माथुर साहब ने आपकी सेवाएं ये मालूम करने के लिए प्राप्त की हैं कि किसी फैमिली मैम्बर का तो कत्ल में दखल नहीं ?"

"और क्या वजह होगी ?"

"आप बताइए।"

"आप ही बताइए।"

"कहीं....कहीं उन्होंने आपको मेरे पीछे तो नहीं लगाया ?"

मैं हंसा।

"हंसिए मत। जवाब दीजिए।"

"आपको अपने पति से ऐसी उम्मीद है ?"

"है तो नहीं लेकिन क्या पता लगता है किसी के मिजाज का !"

"अगर वो ऐसा कोई कदम उठाएं तो कोई नतीजा हासिल होगा ?"

वह कुछ क्षण खामोश रही, फिर उसने इन्कार में सिर हिलाया।

"फिर क्या बात है !" मैं उठता हुआ बोला, "आप खातिर जमा रखिये मैडम, ऐसी कोई बात नहीं।"

"डू आई हैव युअर वर्ड फार इट?" वो भी उठती हुई बोली।

"यस। यू डू।"

मैंने वहां से विदा ली।

***

मैं पंडारा रोड पहुंचा ।

डिसूजा के घर को ताला लगा हुआ था ।

उसके मकान मालिक से पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि कल शाम का वहां से गया अभी तक नहीं लौटा था ।

कहां गायब हो गया था कम्बख्त !

मैंने मंदिर मार्ग सुजाता मेहरा के हॉस्टल में फोन किया ।

मालूम हुआ वो कमरे में नहीं थी ।

मैंने पुलिस हैडक्वार्टर फोन किया और इंस्पेक्टर देवेंद्र कुमार यादव के बारे में पूछा ।

मालूम हुआ कि वो एक केस की तफ्तीश के लिए मैटकाफ रोड गए हुए थे ।

इंस्पेक्टर यादव फ्लाइंग स्क्वाड के उस दस्ते से सम्बद्ध था जो केवल कत्ल के केसों की तफ्तीश के लिए भेजा जाता था ।

वो अभी भी मैटकाफ रोड पर था तो जाहिर था कि मदान भी अभी वहीं था । मुझे मदान की बीवी से मुलाकात करने का वो बहुत मुनासिब वक्त था ।

मैं तत्काल बाराखम्बा रोड रवाना हो गया ।

मदान के पैन्थाउस अपार्टमेंट के मुख्यद्वार के झरोखे में से पहले की तरह हिरणी जैसी एक जोड़ी आंखों ने मेरा मुआयना किया ।

"मदान साहब घर में नहीं हैं ।" मेरे मुंह खोल पाने से भी पहले मुझे दरवाजे के पार से मधु का स्वर सुनाई दिया !

"बहुत अच्छी खबर है ।" मैं बोला ।

"क्या ?"

"मैं उनसे मिलने नहीं आया । इसीलिए ऐसे वक्त पर आया हूं जबकि मुझे जानकारी थी कि वो घर पर नहीं होंगे ।"

"तो और किससे मिलने आए हो ?"

"सोचो । कोई सौ पचास जने तो रहते नहीं इस अपार्टमेंट में ।"

"तुम मुझसे मिलने आए हो ?"

"जवाब तो ऐसे दिया जैसे बहुत मुश्किल सवाल था ।"

"मैं तो तुमसे नहीं मिलना चाहती ।"

"अभी नहीं चाहती हो । दरवाजा खोल के भीतर आने दोगी तो चाहने लगोगी ।"

"पागल हुए हो ! बातों में सुबह थोड़ी छूट दे दी तो पसर ही गए । सपने देखने लगे ।"

"तो क्या हुआ ! सपने देखना तो इंसान के बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार है ।"

"सपने कभी सच्चे नहीं होते ।"

"इस पंजाबी पुत्तर के सपने सच्चे होते हैं । हमेशा हुए हैं । आज भी होंगे ।"

"बकवास बंद करो । उनकी मौजूदगी में आना ।"

"सुनो, सुनो ।" उसे झरोखा बंद करने को तत्पर पाकर मैं जल्दी से बोला ।

"अब क्या है ?" वो झुंझलाई ।

"तुम्हारी एक खास चीज मेरे पास है । अगर तुम चाहती हो कि वो चीज मैं मदान के सामने तुम्हें सौंपूं तो ठीक है, मैं उसकी मौजूदगी में आ जाऊंगा ।"

"ऐसी क्या चीज है ?"

मैंने जेब से हीरा निकाला और अपने दाएं हाथ की पहली उंगली और अंगूठे में थामकर उसे झरोखे के सामने किया ।

"ये क्या है ?" वो बोली ।

"वही जो दिखाई दे रहा है ।" मैं बड़े इत्मीनान से बोला ।

"मुझे क्यों दिखा रहे हो ?"

"तुम्हारी चीज तुम्हें न दिखाऊं तो किसे दिखाऊं ?"

"मेरी चीज ?"

"ये तुम्हारे टोप्स से निकला हीरा है । तुम्हें नहीं मालूम ये कहां गिरा था ! मालूम होता तो उठा लाती । लेकिन मुझे मालूम है कि ये कहां गिरा था !"

"कहां गिरा था ?"

"शशिकांत की कोठी के कम्पाउंड में ।"

"इस पर मेरा नाम लिखा है ?"

"सारी बातचीत यूं झरोखे के आरपार से ही होगी ?"

"नाम लिखा है इस पर मेरा ?"

"नाम तो नहीं लिखा लेकिन मैं कनॉट प्लेस में मेहरासंस से, जहां कि तुम्हारा पति तुम्हारे टोप्स सुबह देकर आया था, इस बात की तसदीक करके आया हूं कि ये हीरा ऐन बाकी हीरों जैसा है जोकि तुम्हारे टोप्स में जड़े हुए हैं । ज्वेलर्स अपनी कारीगरी को बखूबी पहचानते हैं । उन्होंने इस हीरे को देखते ही कह दिया था कि ये तुम्हारे ही टोप्स से निकला हुआ हीरा था ।"

"और ये तुम्हें शशिकांत की कोठी के कंपाउड में पड़ा मिला था ?"

"हां । जहां कि तुम्हारा पति भी मेरे साथ गया था । तुम अपने आपको खुशकिस्मत समझो कि हीरे पर मेरी निगाह पड़ी, उसकी नहीं ।"

"उसकी पड़ती तो क्या होता?"

"मुझे भीतर आने दो, बताता हूं ।"

"तो क्या होता ?"

"तो उसे मालूम हो जाता कि कल तुम शशिकान्त की कोठी पर गई थीं ।"

"इस पर कल की तारीख पड़ी हुई है ?"

"स्वीटहार्ट, ये जो फैंसी बातें तुम कर रही हो, ये मुझे सुनाने के लिये ठीक है, किसी गैर को सुनाओगी तो मुश्किल में पड़ जाओगी ।"

"मदान मेरी सुनेगा ।" वो बड़े कुटिल स्वर में बोली, "उसे अपने आगोश में लेकर और उसका सिर अपने सीने से लगाकर जब मैं उसे कहूंगी तुम मेरे पर लार टपका रहे हो और मुझे हासिल करुने के लिए यूं मुझ पर दबाव डाल रहे हो, कि तुमने हीरा यहीं ड्राइंगरूम से आज सुबह तब उठाया था जब तुम यहां आए थे और अब कह रहे हो कि हीरा शशिकांत की कोठी के कंपाउंड में पड़ा मिला था तो वो मेरी बात मानेगा न कि तुम्हारी ।"

"जानेमन, तुम्हारा पति एक इकलौता इंसान है लेकिन पुलिस के महकमे में मुलाजिम सैकड़ों की तादाद में हैं । किस किसको आगोश में लोगी, किस-किसका सिर अपने सीने से लगाओगी यूं अपनी बात समझाने के लिए ?"

"तुम पुलिस के पास जाओगे ?"

"मैं मैटकाफ रोड जाऊंगा और चुपचाप हीरा कंपाउंड में वहीं डाल दूंगा जहां से कि मैंने इसे उठाया था । फिर जब ये पुलिस के हाथ लग जाएगा तो बड़ी मासूमियत से मैं ये भी इशारा कर दूंगा कि इसकी मालकिन तुम हो । उसके बाद पुलिस ही तुम्हें बताएगी कि इस पर तुम्हारा नाम लिखा हुआ है या कल की तारीख पड़ी हुई है । तब तक के लिए जयहिन्द ।"

"ठहरो ।"

मैं ठिठका । मेरी उससे निगाह मिली । तब पहली बार मुझे उसकी निगाहें व्याकुल दिखाई दीं ।

"क्या चाहते हो ?" वह बोली ।

"ये भी कोई पूछने की बात है ?"

"हां । है पूछने की बात ।"

"'तो सुनो । सबसे पहले तो मैं ये ही चाहता हूं कि तुम मुझे शरबते-दीदार छान के देना बंद करो ।"

"मतलब ?"

"दरवाजा खोलो ।"

"अच्छा ।"

उसने दरवाजा खोला । मैंने भीतर कदम रखा । उसने तत्काल मेरे पीछे दरवाजा बंद कर दिया जो कि खाकसार के लिए बहुत अच्छी घटना थी ।

फिर मैंने आंख भरकर सिर से पांव तक उसे देखा ।

वो फिरोजी रंग की शिफौन की साड़ी और उसी रंग का स्लीवलेस ब्लाउज पहने थी और उस घड़ी श्रीदेवी से भी कहीं ज्यादा हसीन लग रही थी ।

"मुंह पोंछ लो । वो बोली ।

"क..क्या !" मैं हड़बड़ाकर बोला ।

"लार ठोडी तक टपक आई है ।"

"अच्छा वो ! वो तो अभी घुटनों तक टपकेगी । टखनों तक टकपेगी । छप्पन व्यंजनों से सजी थाली सामने देखकर भूखे का यही हाल होता है ।"

"भूखे हो ?" वो कुटिल स्वर में बोली ।

"हां । प्यासा भी ।"

"हीरा मुझे दो ।"

"जरूर ! आया ही लेनदेन के लिए हूं ।"

"क्या मतलब ?"

"मैं अभी समझाता हूं ।"

मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया उसने मुझे परे धकेलने की कोशिश की तो मैंने उसे और कस के दबोच लिया । फिर उसने अपना शरीर मेरे आलिंगन में ढीला छोड़ दिया और मेरे कान में फुसफुसाई, "वो आ जाएगा ।"

"नहीं आ जाएगा ।" मैं बोला, "इतनी जल्दी उसकी मैटकाफ रोड से खलासी नहीं होने वाली ।"

"पक्की बात ?"

"हां ।"

"तो फिर भीतर चलो ।"

मैंने उसे गोद में उठा लिया और उसके निर्देश पर फ्लैट के भीतर को चल दिया ।

भीतर एक ड्राइंगरूम से भी ज्यादा सजा हुआ बेडरूम था जहां विशाल डबल बैड के करीब पहुंचकर मैंने उसे उसके पैरों पर खड़ा किया और फिर उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए ।

तत्काल वांछित प्रतिक्रिया पेश हुई ! वो लता की तरह मेरे से लिपट गई । कुछ क्षण बाद मैं उसके नहीं, वो मेरे होंठ चूस रही थी । फिर अपना निचला होंठ मैंने उसके तीखे दांतों के बीच महसूस किया । फिर एकाएक मुझे यूं लगा जैसे बिच्छु ने काट खाया हो । मैंने उसे जोर से अपने से परे धकेला और अपने निचले होंठ को एक उंगली से छुआ ।

मुझे अपनी उंगली पर खून की एक मोटी बूंद दिखाई दी । मेरे धक्के से वो पलंग पर जाकर गिरी थी और खिलखिलाकर हंस रही थी ।

मैंने कहर बरपाती निगाहों से उसकी तरफ देखा ।

"घूर क्यों रहे हो ?" फिर वो बोली, "जानते नहीं जहां शहद होता है वहां डंक भी होता है ।"

"जरूर तुम्हारा पूरा नाम मधु मक्खी होगा ।"

"यही समझ लो ।"

"शहद चाटने के लिए डंक खाना जरूरी है ?"

"हां ।" वो इठलाकर बोली ।

"डंक तो मैं खा चुका ।"

"तो शहद भी चाट लो ।"

"जहेनसीब ।"

मैं बाज की तरह उस पर झपटा ।

फिर अगला आधा घंटा वहां वो द्वंद्व युद्ध हुआ जिसमें जीत हमेशा औरत की होती है ।

"बाहर जाओ ।" मेरे शरीर के नीचे दबी आखिरकार वो बोली ।

"क्या !"

"बाहर जा के बैठो । आती हूं ।"

"ओह !"

मैं बाहर ड्राइंगरूम में जा बैठा । मैंने एक सिगरेट सुलगा लिया और बड़े संतुष्टिपूर्ण ढंग से सिगरेट के कश लगाता हुआ हबीब बकरे की भविष्यवाणी को याद करने लगा जो कि बिल्कुल गलत निकली थी। मैंने न गश खाई थी, न पछाड़ खाकर उसके कदमों में गिरा था और न उसकी आगोश में पहुंचते ही इस फानी दुनिया से रुखसत हुआ था ।

सुधीर कोहली ! - मैंने खुद अपनी पीठ थपथपाई - दि लक्की बास्टर्ड !"

मेरा सिगरेट खत्म होने तक वो वहां पहुंची । उसने साड़ी बदल ली थी, बाल व्यवस्थित कर लिए थे और चेहरे पर नया मेकअप लगा लिया था ।

वह करीब आकर मेरे सामने बैठ गई ।

"लाओ ।" उसने मेरी तरफ हाथ बढ़ाया ।

मैंने बिना हुज्जत किए जेब से हीरा निकालकर उसकी हथेली पर रख दिया । उसने मुट्ठी बंद करके हाथ वापस खींचने की कोशिश की तो मैंने उसकी मुट्ठी थाम ली ।"

"अभी" मैं बोला, "तुमने मुझे ये बताना है कि हीरा मैटकाफ रोड कैसे पहुंच गया ।"

उसने सहमति से सिर हिलाया ।

मैंने उसका हाथ छोड़ दिया ।

"अब ये बताओ कि कब गई थीं तुम वहां ?" मैं बोला, "याँ ठहरो । पहले ये बताओ कि क्यों गई थीं ? वजह ज्यादा अहम है ।"

"भयानक भी बहुत ज्यादा है ।" वह धीरे से बोली ।

मैं सुन रहा हूं ।"

"वो तो मुझे दिखाई दे रहा है, लेकिन साथ ही ये भी दिखाई दे रहा है कि जो सुनोगे, उसे मेरे ही खिलाफ इस्तेमाल करने की कोशिश करोगे ।"

"हरगिज नहीं ।"

"अभी हीरे को मेरे खिलाफ इस्तेमाल करके नहीं हटे हो ?"

"पहले बात और थी । पहले अभी मैं परीचेहरा हुस्न की रहमतों से नवाजा नहीं गया था । जानेमन, ये नाचीज हरामी है, कमीना भी है लेकिन नाशुक्रा नहीं है ।"

उसके चेहरे पर आश्वासन के भाव आए ।

"एक बात सच-सच बताओ ।" मैं बोला ।

"पूछो ।"

"तुमने शशिकांत का कत्ल किया है ?"

"नहीं ।" वो निःसंकोच बोली ।

"फिर यकीन जानो कि जो कुछ भी तुम मुझे बताओगी, वो कम-से-कम मेरी जुबानी किसी तीसरे शख्स को सुनना नसीब नहीं होगा ।"

"मुझे यकीन है तुम्हारी बात पर ।"

"शुक्रिया । अब बोलो क्या है वो भयानक वजह जो कल तुम्हें शशिकांत की कोठी पर लेकर गई थी ।"

"बोलती हूं । कलेजा थाम के सुनो ।"

"थाम लिया ।"

"मैं उसका कत्ल करने की नीयत से वहां गई थी ।"

मैं कोई भी अप्रत्याशित बात सुनने के लिए तैयार था, लेकिन फिर भी बुरी से चौंका ।

"सच कह रही हो ?" मैं हकबकाया सा उसका मुंह देखता हुआ बोला ।

"हां ।" वो बेखौफ बोली । .

"ऐसी क्या अदावत थी तुम्हारी शशिकान्त से । मेरे तो सुनने में आया है कि तुम उससे ठीक से वाकिफ तक नहीं थीं ।"

"ठीक सुना है तुमने ।"

"तो फिर ये कत्ल का इरादा ...."

"मुझे इसलिए करना पड़ा क्योंकि उसकी मौत से मुझे फायदा था । उसकी मौत से मेरा धुंधलाया जा रहा भविष्य फिर से रोशन हो सकता था । सुख सुविधा और ऐशो-आराम की जो जिंदगी मुझे अपने से छिनती मालूम हो रही थी, वो फिर से महफूज हो सकती थी ।"

"ओह ! कहीं तुम्हारी भी घात शशिकांत की पचास लाख की इंश्योरेंस पर तो नहीं थी ?"

"उसी पर थी ।" मदान की माली हालत दिन-ब-दिन खराब होती जा रही थी । सब कारोबार ठप्प थे, हर चीज गिरवी थी । ऊपर से किसी भी दिन वो जेल का मेहमान बन सकता था । इन नाजुक हालात में शशिकांत की मौत हमारे लिए वरदान साबित हो सकती थी ।"

"लेकिन कत्ल ! तुम तो कत्ल का जिक्र यूं कर रही हो, जैसे कोई चींटी मसल देने जैसा काम हो !"

वो हंसी । उस हंसी के साथ उसकी आंखों में बड़े क्रूर, बड़े वहशी भाव झलके ।

उस घड़ी मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे वो कोई खून पीने वाली मकड़ी थी और मैं एक भुनगा था जो पता नहीं कैसे उसके जले में फंसकर भी सलामत बाहर निकल आया था ।

"कत्ल करती तो कैसे करती ?" मैंने पूछा ।

उसने अपने दाएं हाथ की तीन उंगलियां हथेली की तरफ मोड़कर अपनी पहली उंगली मेरी तरफ तानी और यूं एक्शन किया, जैसे गोलियां चला रही हों ।

"'हथियार था ?"

"था । खास इंतजाम किया था मैंने एक पिस्तौल का ।"

"खुद ?"

"हां ।"

"कहां से ?'

"क्या करोगे जान के ?"

"वो पिस्तौल अब कहां है ?"

"वो तो मैंने कल ही जमना में फेंक दी थी । अब उसकी क्या जरूरत रह गई थी मुझे ! मेरा काम तो किसी और ने ही कर दिया था ।"

"शशिकांत की कोठी पर तुम कितने बजे गई थी ?"

"वक्त का मुझे पता नहीं । मैं घड़ी नहीं पहनती ।"

"अंदाजा ?"

"वो भी लगाना मुहाल है । मैं पहले करोल बाग अपने टेलर के पास गई थी । पता नहीं वहां मुझे कितना टाइम लगा था । वहां से रवाना तो मैं सीधी मैटकाफ रोड के लिए हुई थी लेकिन दो बार भारी ट्रैफिक जाम में फंसी थी ।"

"तुम खुद चाहे घड़ी नहीं लगातीं । लेकिन कभी तो, कहीं तो घड़ी पर निगाह पड़ी होगी ।"

"एक जगह पड़ी थी ।" वो धीरे से बोली ।

"कहां ?'

"शशिकांत की स्टडी में । उसकी स्टडी में उसकी पीठ पीछे दीवार के साथ फिट वाल केबिनेट पर एक यूनानी बुत-सा रखा था जिसके सिर पर एक बड़े दकियानूसी स्टाइल की घड़ी लगी हुई थी । मेरी जब उस घड़ी पर निगाह पड़ी थी तो उसमें साढ़े सात बजने वाले थे । बस एकाध मिनट ही कम था ।"

"घड़ी चल रही थी ?"

"चल ही रही होगी !"

"टूटी तो नहीं पड़ी थी वो ?"

"अब किसी टूट-फूट की तरफ तो ध्यान दिया नहीं था मैंने । क्योंकि तभी तो मैंने कुर्सी पर मरे पड़े शशिकांत को देखा था । मेरी तो बस एक उचटती-सी नजर घड़ी पर पड़ी थी । तुम खास टाइम के बारे में ही सवाल न करते तो मुझे तो घड़ी का जिक्र करना तक न सूझता ।"

"शशिकांत तब कुर्सी पर मरा पड़ा था ?"

"हां ।"

"कमरे में रोशनी थी ?"

"नहीं । मैंने जाकर की थी ।"

"कैसे ?"

"कैसे क्या ? स्विचबोर्ड पर लगा एक स्विच आन किया था, रोशनी हो गई थी ।"

"क्या रोशन हुआ था। ट्यूब लाइट या वाल लैंप।"

"ट्यूब लाइट।"

"वाल लैंप तब सलामत था ?"

"मुझे क्या पता ! मुझे तो ये ही नहीं पता कि वहां कोई वाल लैंप भी था।"

"मेज पर कोई अस्तव्यस्तता नोट की हो जैसे कोई होल्डर कलमदान में अपनी जगह न हो, या टूटा पड़ा हो ?"

"मेरा ध्यान उधर नहीं गया था।"

"पीछे वाल कैबिनेट पर जैसे दाएं कोने में घड़ी वाला बुत था, वैसे दाएं कोने में एक घुड़सवार का बुत था..."

"था तो मैंने नहीं देखा था। दरअसल एक तो मैंने वहां अंधेरे में कदम रखकर खुद रोशनी की थी इसलिए मेरी आंखें चौंधियां गई थीं, दूसरे शशिकांत की हालत ने मुझे हकबका दिया था, उन हालात में मेरी निगाह तो मरे हुए शशिकांत पर से ही नहीं हट रही थी, वो घड़ी ऐन उसके पीछे न होती तो शायद मेरी उस पर भी निगाह न पड़ती।"

"मुझे लगता है अपनी उस हालत में तुम्हारे से टाइम देखने में गलती हुई। जरूर घड़ी तब साढ़े आठ के करीब का टाइम दर्शा रही थी जिसे कि तुमने साढ़े सात के करीब का टाइम समझ लिया था।"

"क्यों ?"

"क्योंकि साढ़े सात बजे तो शशिकांत जिन्दा था। इस बात का एक चश्मदीद गवाह मौजूद है। उसके घर में एक मेहमान था उस वक्त जोकि सात पचास पर उसे सही सलामत पीछे छोड़कर वहां से रुखसत हुआ था। मौकाएवारदात के हालात बताते हैं कि कत्ल आठ अट्ठाइस पर हुआ था ! एक गोली तो वक्त दर्शाती घड़ी को भी लगी थी जोकि उसी टाइम पर रुक गई थी। तुमने जरूर ये ही वक्त देखा था जिसे तुम सात अट्ठाइस का वक्त समझ बैठी थीं।"

वो सोचने लगी।

"क्या नहीं हो सकता ऐसा ?"

"हो तो सकता है।"

"जब तुम वहां पहुंची थीं तो बाहर कंपाउंड में रोशनी थी ?"

"हां।"

"ड्राइंगरूम में ?'

"वहां भी थी।"

"काफी या किसी कोने खुदरे में रखे छोटे मोटे टेबल लैंप की ?"

"काफी। ट्यूब लाइट की रोशनी थी वहां।"

"तुमने भीतर दाखिल होते वक्त बारहली - जो आयरन गेट पर है - या भीतरली - जो कोठी के प्रवेशद्वार पर है - कोई घंटी बजाई थी ?"

"नहीं।"

"क्यों ?"

"दोनों दरवाजे खुले जो थे।"

"आवाज तो लगाई होगी भीतर पहुंचने के बाद । नाम लेकर तो पुकारा होगा शशिकांत को ?"

"नहीं ।"

"वो भी नहीं ?"

"नहीं । तुम भूल रहे हो कि वहां मैं उसका हाल-चाल जानने के लिए नहीं, उसका कत्ल करने के लिए गई थी । मेरा मकसद उस तक पहुंचना था, ऐसा मैं चुपचाप कर पाती तो वो मेरे लिए फायदे की बात होती । मुझे तो वो जहां दिखाई देता, मैंने उसे शूट कर देना था ।"

"वो घर में अकेला न होता तो ?"

"वो अकेला ही होता था । मैंने मालूम किया था चुपचाप ।"

"इत्तफाक से उस वक्त उसके साथ घर में कोई मेहमान होता तो ?"

जवाब में वो बड़े कुटिल भाव से होंठ बिचकाकर हंसी ।

"ओह माई गॉड !" मेरे मुंह से निकला, "तुम उसे भी शूट कर देती ?"

इस बार हंसी के साथ-साथ मुझे एक नागिन जैसी फुंफकार भी सुनाई दी ।

आखिर ऐसे ही तो औरत को 'डैडलियर देन दी मेल' नहीं कहा गया ।

"फिर ?" प्रत्यक्षत: मैं बोला ।

"फिर क्या ? मैं फौरन वहां से वापस लौट पड़ी ।"

"वापसी में तुमने स्टडी की या ड्राइंगरूम की या कम्पाउंड की कोई बत्ती बुझाई ?"

"नहीं ।"

"वहां पहुंचते वक्त या लौटते वक्त तुम्हें सड़क पर कोई जाना-पहचाना बंदा या बंदी मिली ?"

"नहीं ।"

उसका वो जवाब सच झूठ के नपने से नापने लायक था । उसने अपनी बहन सुधा को या पिंकी माथुर को वहां आता-जाता देखा हो सकता था । पिंकी की खातिर नहीं तो अपनी बहन की खातिर तो इस बाबत वो यकीनन झूठ बोल सकती थी ।

"आज सुबह" वो कह रही थी, "जब तुम यहां पहुंचे थे तो यकीन जानो मुझे हार्ट अटैक होते-होते बचा था ।"

"तुमने समझा होगा कि मुर्दा जिंदा हो गया ।" मैं बोला ।

"हां । तब तुम मेरी सूरत देख पाते तो यही समझते कि मैंने भूत देख लिया था ।"

"सूरत कैसे देख पाता ? वो तुम्हारे उस फैंसी झरोखे में से मेजबान की सिर्फ आंखें जो दिखाई देतीं हैं आने वाले को ।"

"हां । फिर तुमने अपना परिचय दिया तो मेरी जान में जान आई । फिर मुझे ये भी सूझा कि तुम्हारी मूंछें नहीं थीं ।"

"हेयर स्टाइल में भी फर्क है ।"

"अब दिखाई दे रहा है । तब तुम्हारे हेयर स्टाइल की तरफ मेरी तवज्जो नहीं गई थी ।"

"हूं । अब जैसी छक्के छुड़ा देने वाली बात तुमने मुझे सुनाई, वैसी ही एक मेरे से भी सुनो ।"

"क्या ?"

"तुम शशिकांत का कत्ल करती तो ये गुनाहबेलज्जत वाला काम होता ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि इस बाबत जो लाइन आफ एक्शन तुमने सोची थी, वो ही तुम्हारे खाविंद ने पकड़ी हुई थी ।"

"वो भी उसका कत्ल करने पर आमादा था ?"

"हां ।"

"नहीं हो सकता ।"

"क्यों ?"

"वो अपने सगे भाई के कत्ल का ख्याल भी नहीं कर सकता था । इसीलिए तो ये नामुराद कदम मुझे उठाना पड़ रहा था ।"

"तुम्हारी सोच में दो नुक्स हैं ।"

"क्या ?"

"एक तो ये कि उसका शशिकांत का कत्ल करने का कोई इरादा ही नहीं था ....."

"लेकिन अभी तो तुमने कहा, कि वो...."

"वो कत्ल मेरा करता और जाहिर करता कि शशिकांत मर गया था । मेरे शशिकांत का हमशक्ल होने का वो ये फायदा उठाना चाहता था ।"

"ओह ! ओह !"

"मैं तो तकदीर से ही बच गया वरना ये बलि का बकरा अपने क्लायंट की अप्सरा जैसी बीवी के मरमरी जिस्म का भोग लगाये बिना ही जहन्नुमरसीद हो गया होता ।"

"अब तो भोग लग चुका" उसने बहुत नशीली आंखों से मुझे देखा - "अब तो जन्नतनशीन होवोगे न ?"

"हो भी चुका । वहीं तो विचर रहा हूं मैं इस वक्त । मेरा तो नश्वर शरीर ही इस वक्त तुम्हारे सामने मौजूद है, आत्मा तो कब की..."

"बातें मत बनाओ और बोलो दूसरा नुक्स क्या है मेरी सोच में ?"

"शशिकांत तुम्हारे पति का भाई नहीं । शशिकांत तुम्हारे पति का कुछ भी नहीं लगता ।"

उसके चेहरे पर हैरानी के बड़े सच्चे भाव आए ।

"तुम्हें किसने कहा ?" वो बोली ।

"खुद तुम्हारे पति ने ।"

"कमाल है ! क्या किस्सा है, भई ? साफ बताओ ।"

मैंने उस बाबत जो कुछ मदान से सुना था, दोहरा दिया ।

"हद हो गई ।" सारी बात सुन चुकने के बाद वो बोली, "यानी कि मैं तो बाल-बाल बची खून से अपने हाथ रंगने से ।"

"मदान भी ।" मैं बोला ।

"तुम्हें यकीन है कि खून मदान ने नहीं किया ?"

"लगता है तुम्हें यकीन नहीं है ।"

"वो मुझे पट्टी पढा रहा था कि पूछे जाने पर मैं यही कहूं कि कल शाम से वो घर पर ही था ।"

"मैंने ही उसे ऐसा करने की राय दी थी लेकिन तब मुझे ये नहीं सूझा था कि उस पट्टी को पढ़ने में तुम्हारा भी फायदा है ।"

"मेरा क्या फायदा है ? मुझे तो उल्टे सफेद झूठ बोलना पड़ेगा कि ...."

"वाह मेरी भोली बेगम !"

"क्या हुआ ?"

"अरे, तुम उसकी यूं गवाह बनीं तो वो तुम्हारा गवाह न बना ! तुम्हारे ये कहने से कि वो कल शाम से घर पर था, क्या अपने आप ही स्थापित न हो गया कि तुम भी कल शाम घर पर ही थीं ? ऐसी गवाही की जितनी उसे जरूरत है, उससे कहीं ज्यादा तुम्हें जरूरत है । कहने को पति पर अहसान किया कि उसकी खातिर कुर्बान होकर झूठ बोल रही हो, असल में अपनी पोजीशन मजबूत की । मैटकाफ रोड की अपनी कल की विजिट की बाबत जो कुछ तुमने अभी मुझे बताया है, वो अगर मदान को पता लग जाए तो उसे अपने बचाव के लिए तुम्हारी गवाही की जरूरत ही नहीं रह जाएगी ।"

"तुम्हारा मतलब है कि मैं फंस जाऊं तो वो खुश होगा ?"

"बहुत ज्यादा ।"

"वो मेरा दीवाना है ।"

"अपनी जिंदगी का भी तो दीवाना होगा । जब जिंदगी ही न रही तो ऐसी दीवानगी किस काम की ! जान है तो जहान है, मेमसाहब ।"

"तुम ठीक कह रहे हो । ..तुम.. .तुम उसे कह तो नहीं दोगे कुछ ?"

"हरगिज नहीं ।"

"शुक्रिया ।"

"जुबानी ?"

"ज्यादा खाने से बद्‌हजमी हो जाती है ।"

"चलो, मान ली तुम्हारी बात । तुम भी क्या याद करोगी कि किसी संतोषी जीव से पाला पड़ा था । अब ये बताओ कि शशिकांत की कोठी से रुखसत होने के बाद तुमने क्या किया था ?"

"मैंने पिस्तौल से पीछा छुड़ाया था ।"

"कहां ? कैसे ?"

"पहले मैं बस अड्डे वाले जमना के नए पुल पर गई थी लेकिन उस दर बहुत आवाजाही थी । जमना के पुराने

पुल का रुख किया तो पाया कि वहां तो उससे भी ज्यादा रश था । आखिर में मैं वजीराबाद के पुल पर पहुंची थी जो कि काफी हद तक सुनसान था । वहां मैंने पिस्तौल को जमना में फेंका था और वापस लौट आई थी ।"

"कहां ?"

"फ्लैगस्टाफ रोड वहां मेरी बहन सुधा माथुर रहती है । यहां से मैं यही कह कर गई थी कि मैं बहन से मिलने जा रही थी । वहां मेरी हाजिरी जरूरी थी । वहां से मैंने मालूम करना था कि मेरे पीछे मेरे पति ने वहां फोन तो नहीं किया था, जैसे कि वो अक्सर करता था । ऐसा फोन आया होने पर मैं कहती कि मैं सुधा के साथ बाजार गई थी और पूछे जाने पर वो भी यही कहती ।"

"फोन आया था ?"

"नहीं । जो कि मेरे लिये सहूलियत की बात थी । मैंने सुधा को समझा दिया था कि पूछे जाने पर वो यही कहे कि मैं शाम से वहीं थी ।"

"मदान, सुधा की बात पर एतबार करता है ?"

"अभी तक तो करता है । इसका सबूत ये है कि सुधा के यहां जाने से उसने मुझे कभी नहीं रोका । और कहीं मैं अकेले जाने की कहूं तो जरूर हुज्जत करता है और अमूमन नहीं जाने देता ।"

"लेकिन सुधा के यहां जाने के बहाने, या वहां जाकर, तुम कहीं भी जा सकती हो !"

उसने बड़ी अनमने भाव से सहमति में गर्दन हिलाई ।

"तुम्हारी बहन की आवाज तुम्हारे से मिलती है । सिर्फ अंदाजेबयां का फर्क है । खास जरूरत आन पड़ने पर वो तुम्हारे अंदाज में बोलकर मदान को यकीन दिला सकती है वो तुमसे ही बात कर रहा है । ठीक ?"

उसने आंखें तरेरकर मेरी तरफ देखा ।

"अपनी बहन के सदके मदान को धोखा देने का तुम्हारा ये सिलसिला आम चलता होगा ।"

"इसमें धोखे की कौन-सी बात है ?"

"जिस बात को छुपाने की जरूरत हो वो धोखे की ही होती है । नंबर दो सृष्टि में कोई उम्रदराज खाविंद पैदा नहीं हुआ जो अपनी नौजवान बीवी पर शक न करता हो । नंबर तीन, सृष्टि में कोई ऐसी नौजवान बीवी पैदा नहीं हुई जो अपने उम्रदराज खाविंद को धोखा न देती हो ।"

"ओह शटअप !"

"आपस की बात है, स्वीटहार्ट, कोई नुक्स नहीं निकाल रहा मैं तुम्हारे में । जहां तक मेरा सवाल है, मुझे तो हरजाई किस्म की औरतें खास पसंद आती हैं ।"

"क्यों ? दूसरी किस्म की औरतें नहीं पसंद आती ?"

"इसके अलावा कोई दूसरी किस्म भी होती है औरतों की ?"

"फिर लगे बहकने ।"

"खैर ! बात ये हो रही थी कि बहन के सदके मौज-मेले का तुम्हारा सिलसिला आम चलता होगा ।"

उसने उत्तर न दिया ।

"और तुम्हारे सदके बहन का सिलसिला ?"

"आई सैड, शटअप ।"

"वैसे कौन है वो खुशनसीब ? कौन है वो मुकद्दर का सिकंदर जिसे बहन के सदके मदान की खीर में चम्मच मारने का मौका देती हो ?"

"अभी तुम क्या करके हटे हो ?"

"मेरा मतलब है स्टेडी कौन है ? मैं तो कैजुअल लेबर हुआ न ! तुम्हारी खिदमत बजा लाने की पक्की नौकरी किसकी लगी हुई है ?"

"ऐसा कोई नहीं है ।"

"यानी कि बताना नहीं चाहतीं ?"

"अरे, कहा न, ऐसा कोई नहीं है ।"

"ओ के । वो किस्सा फिर कभी सही । अब तुम ये बताओ कि जब तुम फ्लैग-स्टाफ रोड पहुंची थी तो तुम्हारी बहन घर पर थी ?"

"नहीं । लेकिन वो मेरे सामने ही वहां पहुंच गई थी ।"

"कहां से ?"

"जहां कहीं भी वो गई थी । न मैंने उससे इस बाबत सवाल किया था और न उसने खुद बताया था । हां, इतना उसने जरूर कहा था कि एकाएक ही उसे बहुत जरूरी काम पड़ गया था, जिसकी वजह से वो थोड़ी देर के लिए करीब ही कहीं गई थी ।"

"बहन के पास कितनी देर ठहरी तुम ?"

"यही कोई पंद्रह-बीस मिनट ।"

"और कहां गई थीं ?"

"कहीं भी नहीं ? वहां से उठी तो सीधे यहां आई थी ।"

"कब पहुंची यहां ?"

"मुझे टाइम का कोई अंदाजा नहीं ।"

"मदान कहता है तुम साढ़े नौ बजे लौटी थीं ।"

"उसने घड़ी देखी होगी ।"

"पुनीत खेतान से वाकिफ हो ?"

"वो मदान का लीगल एडवाइजर है, फाइनांशल एडवाइजर भी है । टैक्स भरने के लिए आडिट-वाडिट का काम भी वही देखता है ।"

"यानी कि वाकिफ हो ।"

"हां । वो यहां आता रहता है ।"

"क्योंकि मदान उसका क्लायंट है ?"

"हां ।"

"बस इसी वजह से तुम्हारी उससे वाकफियत है ?"

"और क्या वजह होगी ?"

"तुम बताओ ।"

"और कोई वजह नहीं ।"

"यानी कि मदान से शादी के बाद ही तुम्हारी पुनीत खेतान से वाकफियत हुई ?"

"जाहिर है ।"

"फिर तो" मैं बड़े सहज स्वर में बोला, "जरूर वो लड़की तुम्हारी हमनाम और हमशक्ल होगी जो इसी पुनीत खेतान के ऑफिस में टाइपिस्ट हुआ करती थी ।"

वो सकपकाई ।

"कोई बड़ी बात नहीं ।" मैं बोला, "हो जाते हैं ऐसे इत्तफाक । आखिर मैं भी तो हूं शशिकांत का हमशक्ल । अलबत्ता हमनाम नहीं हूं ।"

"मिस्टर, ये तुम क्या...."

"अब एक लाख रुपए का सवाल । सोच के जवाब देना । हो सके तो सच्चा जवाब देना । न हो सके तो भी चलेगा । पहले की तरह ।"

"प..पहले की तरह ?"

"हां झूठ बोलने का तुम्हें पूरा अख्तियार है ।"

"मैं भला खामखाह क्यों झूठ बोलूंगी ?"

"हां । ये भी एक गहरी रिसर्च का मुद्दा है ।"

"क्या पूछना चाहते हो ?"

"लाख रुपए का सवाल ।"

"वो तो हुआ लेकिन सवाल क्या है ?"

"इंश्योरेंस की जानकारी तुम्हें कैसे है ?"

"क्या मतलब ?"

"मैं शशिकांत के पचास लाख रुपए के जीवन बीमे की बात कर रहा हूं । उस बीमे की बाबत मदान से मेरी बात हुई थी । उसने कहा था कि उस बीमे के बारे में उसके, शशिकांत के, बीमा कंपनी के और उसके वकील पुनीत खेतान के अलावा और कोई नहीं जानता था । तुम्हारे बारे में मैंने मदान से खास तौर से सवाल किया था । जवाब मिला था कि तुम्हें इंश्योरेंस की कोई वाक्फियत नहीं थी । अब वोलो कैसे है तुम्हें इंश्योरेंस की जानकारी ?"

उसने उत्तर न दिया । वो निगाहें चुराने लगी ।

"जवाब जल्दी दो" मैं चेतावनी भरे स्वर में बोला "वरना गब्बर आ जाएगा ।"

"क..कौन ?"

"तुम्हारा हसबैंड । मदान ।"

तभी कॉलबैल बजी ।

"लो !" मैं असहाय भाव से कंधे झटकाता हुआ बोला, "शैतान को याद करो, शैतान हाजिर ।"

वो उठकर दरवाजे के पास पहुंची । वहां पहले उसने दरवाजे का झरोखा खोलकर बाहर झांका और फिर दरवाजा खोल दिया । आगंतुक पुनीत खेतान था । मैं फैसला न कर सका कि फ्लैट में उसका कदम पहले पड़ा था या मधु की नंगी कमर में उसका हाथ पहले पड़ा या उसके मुंह से 'हल्लो माई लव' पहले निकला । वो यकीनन अभी उसे आलिंगनबद्ध भी करता लेकिन मधु उससे छिटककर परे हट गई और अपनी तरफ से बड़े गोपनीय ढंग से मेरी तरफ इशारा करने लगी ।

खेतान सकपकाया, उसकी निगाह मेरी तरफ उठी ।

"ओह, हल्लो !" फिर वह जबरन मुस्कुराता हुआ बोला ।

"हल्लो !" मैं उठता हुआ बोला, "बड़ी जल्दी दोबारा मुलाकात हो गई, खेतान साहब ।"

साफ जाहिर हो रहा था कि वो मधु के वहां अकेले होने की अपेक्षा कर रहा था । मदान को वो जरूर कहीं पीछे ऐसी जगह छोड़ के आया था जहां से उसके जल्दी न लौट पाने की उसे गारंटी थी मसलन - मौकाएवारदात या पुलिस स्टेशन या ऐसी ही किसी और जगह - और वो बाखूबी जानता था कि मदान की गैर हाजिरी में वहां और कोई नहीं होता था ।

"तुम यहां कैसे ?" वो बोला ।

"वैसे ही " मैं बोला "जैसे आंप ।"

"क...क्या ?"

"अपने क्लायंट से मिलने आया था । आप भी अपने क्लायंट से ही मिलने आए होंगे ?"

"क्या ! ओह, हां । हां । आई मीन, जाहिर है ।"

"जी हां ।" मैने एक नकली जम्हाई ली, "बिल्कुल जाहिर है । बहरहाल, आप बैठकर मदान साहब का इन्तजार कीजिए । बंदा चला ।"

"बैठो, मैं भी चलता हूं ।"

"नहीं, नहीं । आप तो अभी पहुंचे हैं । मैं बहुत देर का आया हुआ हूं । और फिर मेरी खातिर तो हो भी चुकी है । मैं फिर आऊंगा ।"

उसका सिर स्वयंमेव ही सहमति में हिला ।

"और मधु जी" मैं मधु की तरफ घूमकर इन्तेहाई मीठे स्वर में बोला ।, "जो लाख रुपए का सवाल अभी मैं आपसे पूछ रहा था, उसके जवाब पर बरायमेहरबानी, अब सिर न धुनिएगा । मुझे अपने सवाल का उत्तर मिल गया है ।"

और फिर मधु के कुछ बोल पाने से पहले ही मैं वहां से कूच कर गया ।

***

लॉबी से मैंने मंदिर मार्ग फोन किया ।

सुजाता मेहरा होस्टल में मौजूद थी । मालूम हुआ कि बस वो वहां पहुंची ही थी । मैंने उससे दरखास्त की कि वो वहीं रहे, मैं तुरंत मंदिर के लिये रवाना हो रहा था ।

होटल से निकलकर मैं मंदिर मार्ग के लिए एक ऑटो में सवार हो गया ।

अपनी कार मुझे सुबह से ही याद आ रही थी लेकिन उसे लाने के लिए ग्रेटर कैलाश जा पाने लायक फुरसत मुझे सुबह से ही नहीं लगी थी । दूसरी बात सुबह से कोई पेट पूजा कर पाने की भी फुर्सत नहीं लगी थी । दूसरी बात ने मुझे रास्ते में गोल मार्केट रुकने के लिए प्रेरित किया जहां से कि मैंने कुछ कबाब और टिक्के खरीदे ।

मैं मंदिर मार्ग सुजाता मेहरा के होस्टल के कमरे में पहुंचा ।

"नान वेज खाती हो ?" जाते ही मैंने पहला सवाल किया ।

"हां ।" वो तनिक हड़बड़ाकर बोली, "क्यों ?"

"लाया हूं । सुबह से कुछ खाना नसीब नहीं हुआ । तुम खाओगी न ?"

"वाह ! नेकी और पूछ-पूछ । मेरे अपने पेट में चूहे कूद रहे हैं ।"

मैंने पैकेट उस थमा दिया । उसने कहीं से एक बड़ी प्लेट बरामद की और उसमें कबाब सजा दिए । उसने प्लेट मेज पर रख दी और फिर दोपहर की तरह एन आमने-सामने वो पलंग पर, मैं कुर्सी पर-बैठ गए ।

"क्या हुआ मैटकाफ रोड पर ?" मैंने पूछा ।

"सब ठीक-ठीक हुआ ।" वो बड़े इत्मीनान से बोली, "मैंने वहां जाकर वही कुछ किया जो कुछ तुमने मुझे करने को कहा था । मैने शोर मचाया, लोग इकट्ठे हो गए, फिर एक पड़ोसी ने ही पुलिस को फोन किया । सुधीर, पुलिस ने मेरे ऊपर जरा भी शक नहीं किया ।"

"बढिया । पुलिस के अलावा और कौन था वहां ?"

"पहले मरने वाले का भाई लेखराज मदान वहां आया था, फिर चार बजे के करीब वो वकील पुनीत खेतान वहां आया था । बस और तो कोई नहीं आया था वहां ।"

"तुम कब आई वहां से ?"

"बताया तो था फोन पर ! तुम्हारा फोन आने के वक्त बस पहुंची ही थी यहां ।"

"खेतान कब तक ठहरा था वहां ?"

"तभी तक जब तक मैं ठहरी थी । हम दोनों इकट्ठे ही वहां से रुखसत हुए थे उसने तो मंडी हाउस तक मुझे अपनी गाड़ी में लिफ्ट भी दी थी । एकदम नई टयोटा कार है उसके पास । मजा आ गया ड्राइव का ।"

"वो तो आना ही था । तब मदान अभी वहीं था ?"

"न सिर्फ था, अभी काफी देर तक वहीं रहने वाला भी था ।"

"वो किसलिए ?"

"पुलिस उससे और पूछताछ करना चाहती थी । फिर पोस्टमार्टम की भी कोई बात थी ।"

यानी कि मेरा अंदाजा गलत नहीं था । मदान को फ्लैग स्टाफ रोड पर लंबा फंसा पाकर ही वो बीवी का यार लपकता-झपकता बाराखम्बा पहुंचा था ।

"कल रात की कोई और बात याद आई तुम्हें ?" मैंने पूछा ।

"हां ।" वो तत्काल बोली, "याद आई तो है एक बात ।"

"क्या ?"

"कल शाम चार बजे मुझे शशिकान्त की एक फोन कॉल सुनने का इत्तफाक हुआ था ।"

"अच्छा !"

"हां । वो उस वक्त अपनी स्टडी में था और मैं पिछले बैडरूम में थी । वहां कोठी में एक ही टेलीफोन कनेक्शन है जिसके तीन चार जगह पैरेलल फोन हैं । मैंने एक सहेली को फोन करने के लिए फोन उठाया था तो पाया था कि फोन पर पहले ही बातचीत हो रही थी । यूं बातचीत बीच में सुनने की मेरी कोई नीयत नहीं थी, मैंने तो यूं ही थोड़ी देर रिसीवर कान से लगे रखा था और यूं ....."

"आई अंडरस्टैंड । हो जाता है ऐसा । मेरे साथ भी कई बार हुआ है । क्या सुना तुमने ?"

"फोन पर शशिकांत किसी माथुर नाम के आदमी से बात कर रहा था । दोनों में किसी बात पर तकरार हो रही थी । दूसरी ओर से बोलने वाला माथुर नाम का वो आदमी बहुत भड़क रहा था । आपे से बाहर हुआ जा रहा था । शशिकांत फोन पर उसे शान्ति बरतने को कह रहा था और उसे राय दे रहा था कि फोन पर गरजने बरसने की जगह वो शाम साढ़े आठ बजे उसके घर पर आकर उससे बात करे । जवाब में उसने गरजकर कहा था कि अगर उसे उसके घर आना पड़ा तो वो उससे बात करने नहीं, उसे शूट करने आएगा ।"

"ऐन यही कहा था उसने ?"

"शब्द जुदा रहे हो सकते हैं लेकिन कहा यही था उसने ।"

"माथुर नाम ठीक से सुना था ?"

"हां । साफ सुना था ।"

"सिर्फ माथुर पूरा नाम नहीं ?"

"न ।"

"वो फोन शशिकान्त ने किया था या उसे आया था ?"

"मालूम नहीं ।"

"फोन आए तो घंटी बजती है । सारे पैरेलल टेलीफोनों पर ।"

"बैडरूम के फोन की नहीं बजती । वहां के फोन में घंटी को आन ऑफ करने का बटन है जो कि दिन में ऑफ रहता है ।"

"था कौन वो माथुर ?"

मुझे क्या पता ?"

"शशिकांत को तो पता होगा ?"

"जाहिर है । लेकिन मैं उससे पूछ थोड़े ही सकती थी ! पूछती तो उसे पता न लग जाता कि मैं कॉल बीच में सुन रही थी ! और फिर मैंने क्या लेना देना था किसी माथुर से या शशिकांत से उसके झगड़े से ?"

"ये महज इतफाक था कि कल शशिकांत के साथ झगड़े फसाद ज्यादा हो रहे थे या वो था ही ऐसा आदमी ?"

"क्या मतलब ?"

"देखो न, कल तीन-चार घंटे के वक्फे में ही पहले वो फोन पर माथुर नाम के उस आदमी से झगड़ा, फिर उसकी अपने वकील से तकरार हुई, फिर तुम्हारे से जुबानी जंग छिड़ी ।"

"अब मैं क्या कहूं ! बाज वक्त आदमी का मूड ही कुछ ऐसा होता है ।"

"तुमने ये माथुर वाले टेलीफोन वार्तालाप की बाबत पुलिस को बताया था ?"

"नहीं ।"

"क्यों ?"

"तब मुझे ध्यान ही नहीं आया था इस बात का ।"

"कत्ल साढ़े आठ बजे हुआ था ।" मैं अर्थपूर्ण स्वर में बोला - "मैंने भी बताया था और मैटकाफ रोड से भी खबर लगी होगी तुम्हें ।"

"फिर तो उसी ने किया होगा कत्ल ।" वो तनिक उत्तेजित स्वर में बोली ।

"किसने ?"

"माथुर नाम के उस शख्स ने जिसने चार बजे शशिकांत को फोन किया था..."

"या जिसे शशिकांत ने फोन किया था ।"

".....जिससे शशिकांत ने फोन पर साढ़े आठ बजे की अप्वाइंटमेंट फिक्स की थी और जो फोन पर ही उसे शूट कर देने की धमकी दे रहा था ।"

"अगर वो अपनी धमकी पर खरा उतरने का ख्वाहिशमंद होता तो बाईस कैलीबर की कोई खिलौना-सी रिवॉल्वर साथ न लिए होता ।"

"शॉर्ट नोटिस पर उसे वही रिवॉल्वर उपलब्ध होगी ।"

"एकाएक बड़ी सयानी बातें करने लगी हो !"

"क्या गलत बात कही मैंने ?"

"कोई नहीं । डिसूजा से तुम्हारी बात हुई ?"

"नहीं ।"

"पुलिस को उसकी खबर लग गई ?"

"पुलिस को ?"

"हां । आखिर वो भी तो कत्ल के इस ड्रामे का अहम किरदार है ।"

"ओह !"

"पुनीत खेतान ने उसका जिक्र पुलिस से किया था ?"

"मालूम नहीं । किया था तो मेरे सामने नहीं किया था ।"

"और तुमने ?"

"मैंने नहीं किया था। खामखाह क्यों मुंह फाड़ती मैं ? मेरे से इस बाबत कुछ पूछा जाता तो मैं कह देती।"

"अब तुम क्या करोगी ?"

"मैं क्या करूंगी क्या मतलब ?"

"भई, तुम्हारा एम्पलायर, तुम्हारा प्रास्पेक्टिव गॉडफादर तो मर गया।"

"वो !" वो लापरवाही से बोली, "उसका क्या है, कोई और मिल जाएगा।"

"ये भी ठीक है। यानी कि इस फ्रन्ट पर कोई प्रॉब्लम नहीं !

उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ इन्कार में सिर हिलाया।

उस घड़ी मुझे अपना एक बड़ा पसंदीदा चुटकला याद आया जो था तो चुटकला लेकिन उस घड़ी की हकीकत को बड़ी खूबी से चरितार्थ कर रहा था। सात-आठ साल की एक लड़की ने अपनी मां से पूछा कि खसम क्या होता था। मां ने बेटी को समझाया, कि बेटी जब तू बड़ी होगी; अच्छी लड़की बनेगी, तो तुझे एक मिल जाएगा। 'अगर मैं अच्छी लड़की न बनी', बेटी ने पूछा। तो कई मिल जायेंगे। मां का जवाब था।

वाकई दिल्ली शहर में बिगड़ी हुई, खूबसूरत, नौजवान लड़की के लिए इस फ्रन्ट पर कोई प्रॉब्लम नहीं थी।

फिर उससे फिर मिलने का वादा करके मैं वहां से रुखसत हुआ।

Chapter 5

होस्टल के पी सी ओ से मैंने फ्लैग स्टाफ रोड फोन किया और अपना नाम बताकर कृष्ण बिहारी माथुर से बात करने की इच्छा व्यक्त की। मेरे नाम ने इस बार जादुई असर दिखाया ! किसी ने मुझे टरकाने की कोशिश न की और न ही गैरजरूरी सवाल पूछे। मुझे बड़े अदब से बताया गया कि तबीयत ठीक न होने की वजह से साहब जल्दी सोने चले गए थे।

मैंने मनोज माथुर का नाम लिया।

मालूम हुआ कि छोटे मालिक घर पर नहीं थे।

आखिर में मैंने सुधा माथुर से बात करनी चाही तो मुझे एक और नंबर बता दिया गया।

मैंने वो नया नंबर डायल किया तो सुधा माथुर से मेरी बात हुई।

"सुधा जी।" अपना परिचय देने के बाद मैं बोला, "मैं दरअसल मनोज से बात करना चाहता था। आप बता सकती हैं कि वो इस वक्त कहां मिल सकता है ?"

"किसी डिस्को में होगा।" जवाब मिला, "शाम को तकरीबन ऐसी ही जगहों पर जाता है वो।"

"डिस्को तो शहर में कई हैं। सबका चक्कर लगाने में तो रात बीत जाएगी।"

"शुरूआत अब्बा से कर के देखो। उसके वहां होने के ज्यादा चांसेज हैं। अब्बा डिफेंस कालीनी में..."

"मुझे मालूम है कहां है। घर कब लौटता है वो ?"

"आधी रात के बाद। कभीर कभार तो सुबह चार बजे। यहां आके उसका इंतजार करना बेकार होगा।"

"ओह !"

"बात क्या है ? क्यों मिलना चाहते हो उससे ?"

"कोई खास वजह नहीं। यूं ही मालूमात की खातिर। तकलीफ माफ सुधा जी। गुड़ नाइट।"

मैंने एक ऑटो पकड़ा और डिफेंस कालोनी के लिए रवाना हो गया।

मैं पहुंचा पडारा रोड।

मंदिर मार्ग से रवाना मैं डिफेंस कालोनी जाने के लिए हुआ था लेकिन इण्डिया गेट के राउंड अबाउट पर पहुंचने पर ही मेरा इरादा डिसूजा के घर झांकने का बना था।

वो अपने घर पर मौजूद था।

मैंने भाड़ा चुकाकर ऑटो को विदा कर दिया।

डिसूजा कोई तीस-बत्तीस साल का विलायती पाप सिंगरों जैसे रख-रखाव वाला नौजवान था, जो एक कान में बाली पहनता था और माइकल जैक्सन की तरह अपने झबेदार बालों में से एक कुंडल अपने माथे पर लटका के रखता था। मुझे उसकी आंखों में काजल और होंठों पर लिपस्टिक की हल्की-सी परत तक दिखाई दी। अपनी दोनों नंगी बांहों पर उसने छत्तीस तरह के गोदने गुदवाए हुए थे।

मैंने उसे अपना परिचय दिया।

उसने खामोशी से मेरे से हाथ मिलाया और एक फोल्डिंग चेयर खोलकर उस पर मुझे बिठाया।

"कहां गायब रहे सारा दिन ?" मैंने बड़े आत्मीयतापूर्ण स्वर में पूछा, "सुजाता भी तुम्हारी फिक्र कर रही थी ।"

"लाकअप में बंद था ।" वो बोला, "अभी छूटा एक घंटा पहले ।"

"लाकअप में ।" मैं हैरानी से बोला, "कहां ?"

"तिलक मार्ग पुलिस स्टेशन ।"

"क्या किया था ?"

"पी के गाड़ी चलाता था । ड्रंकन ड्राइविंग । बलडी होल नाइट लाकअप में कटा । आज भी पैसा देकर छूटा । बहुत डिफीकल्टी हुआ ।"

"कितनी पी ली थी ?"

"वन बाटल । देट्स आल । ज्यास्ती नहीं ।"

"पकडे क्यों गए ?"

"ट्रैफिक पोलीस वाला पकड़ा । बोला गाड़ी ठीक नहीं चलाता । एक्सीडेंट करना मागता ।"

"ट्रैफिक पुलिस वाले तो चालान करके छोड़ देते हैं ।"

"नशे में मैं कुछ लफड़ा किया ।"

"ओह ! तुम्हें मालूम है शशिकांत का कत्ल हो गया है ?"

उसके चेहरे पर हैरानी के बड़े जेनुइन भाव आए ।

"कब !" - उसके मुंह से निकला ।

"कल रात को । कोई साढ़े आठ बजे ।"

"कौन किया ?"

"अभी पता नहीं चला । पुलिस की तफ्तीश जारी है । मेरी असाइनमेंट भी कातिल का पता लगाने की ही है ।"

"ओह !"

"पुलिस को ये खबर लगे बिना नहीं रहने वाली कि कल शाम तुम भी शशिकांत की कोठी पर गए थे । उनका बुलावा भी बस आता ही होगा तुम्हें । इसलिए बेहतर यही होगा कि अपने बयान का मेरे साथ रिहर्सल कर लो ।"

"बयान !"

"जो तुम्हें पुलिस को देना होगा ।"

"ओह !"

"तुम्हारी सुजाता से सात बजे की अपोइंटमेंट थी, लेट कैसे हो गए थे ?"

"कार की वजह से ।"

"क्या मतलब ?"

"मेरे पास मोटरसाइकल है । कल मैं एक फ्रेंड का कार उधारी मांगा । फ्रेंड शाम को कार तो दिया - प्रॉमिस था

- पर उसमें पैट्रोल कम था। पंप पर पेट्रोल डलवाने में बीस मिनट वेस्ट हुआ। क्लोजिंग का टाइम था। कुछ रश था। पैट्रोल ही लेट किया मेरे को। सात बजे उधर मैटकाफ रोड़ पहुंचने का था बट शाम सात बजे से पंदरह मिनट ज्यास्ती पर पहुंचा। मैं उधर उसकी कोठी के कम्पाउंड में क्या घुस गया, ब्लडी वास्टर्ड मेरा फुल इनसल्ट करके रख दिया। मैं ब्लडी कोठी में तो कदम भी न रखा। बोला, कम्पाउंड भी काहे एंट्री किया। बहुत इन्सल्ट हुआ मेरा। वो तो मिस्टर खेतान मेरे को बोला कि सुजाता उधर से चली गई थी और मेरे को उसे बाहर रोड पर कहीं देखने का था।"

"तुम खेतान को, पुनीत खेतान को जानते हो ?"

"यस।"

"कैसे ?"

"मैन, वो शशिकांत का लीगल एडवाइजर है। जब नाईट क्लब ओपन था तो वो उधर राजेंद्र प्लेस में आता था। सैवरल टाइम्स।"

"फिर आगे क्या हुआ ?"

"मैं उधर कोठी से बाहर निकलकर रोड पर आया। मैं रोड पर देखा, बस स्टैंड पर देखा, रोड के दोनों कॉर्नर तक देखा बट, यू सी, सुजाता उधर किधर भी मेरे को नहीं मिली। या मेरे को दिखाई नहीं दी।"

"उसे मालूम था तुम आने वाले हो। वो तो सात बजे ही कोठी से बाहर निकल आई थी। अगर वो तुम्हारी ही राह तकती वहां मौजूद थी तो उसे तो तुम आते दिखाई देने चाहिए थे ?"

"मैं भी ऐसा सोचा। मेरे को ऐसा फीलिंग है कि वो मेरे को कार पर एक्सपेक्ट नहीं करती थी। उसको मेरी मोटर बाइक मालूम। शी मस्ट बी आन दि लुक आउट फार ए मोटर बाइक। मैं उधर कार में गया। सो, कन्फ्यूजन।"

"हो सकता है। सुजाता तुम्हें मैटकाफ रोड पर न मिली तो फिर तुमने क्या किया ?"

"मेरे को ब्लडी बहुत एजिटेशन हुआ। ब्लडी खुद बुलाया मेरे को और वेट नहीं किया।"

"तुम टाइम पर जो नहीं आए थे।"

"ओनली फिफटीन मिनट्स लेट था मैं।"

"ऊपर से शशिकांत से उसका तीखा झगड़ा हो गया था। वैसा कुछ न हुआ होता तो तुम और भी लेट आते तो वो वहीं होती। झगड़े की वजह से ही गुस्से से आग-बबूला होकर वो एकाएक वहां से चली गई थी।"

"आई अंडरस्टैंड नाओ। बट ऐट दैट टाइम आई वाज वैरी अपसेट।"

"फिर जब वो मैटकाफ रोड पर न मिली तो तुमने क्या किया ?"

"मै सोचा कि उधर से वो किधर जाएगी तो अपना होस्टल में जाएगी। मैं मंदिर मार्ग पहुंचा। वो उधर पहुंची ही नहीं थी।"

"तो ?"

"मैन, आई वाज गेटिंग मैड।"

"वाई ?"

"आई वाज स्टुड अप।"

"तुमने ऐसा सोचा कि शायद वो जानबूझकर तुम्हें अवायड कर रही थी, वो तुम्हारे साथ डेट फिक्स कर बैठी थी

और फिर ऐन मौके पर तुम्हारे साथ शाम बिताने का उसका इरादा बदल गया था ?"

"एग्जेक्टली । यू सैड इट, मैन । मैं ऐग्जेक्टली ये ही सोचा । तब मेरे को लगा कि वो उधर कोठी में ही थी और उसी के बोलने पर शशि मेरे को उलटा-सीधा बोलकर उधर से भगाया और वो खेतान मेरे को बोला कि वो बाहर रोड पर कहीं होगी ।"

"फिर ?"

"फिर मैं कार में ही बैठकर व्हिस्की का बाटल खोला और दो-तीन ड्रिंक लिया । फिर मैं बैक मैटकाफ रोड गया ।"

"क्यों ?"

"मेरे को कनफर्म होना मांगता था कि सुजाता उधर थी या नहीं । मैन आई वांटिड टु क्रियेट ए सीन देयर । मैं उधर जबरदस्ती घुसना मांगता था और सुजाता को उधर देखना मांगता था ।"

"किया ऐसा तुमने ? घुसे तुम जबरन भीतर ?"

उसने इंकार में सिर हिलाया ।

"क्यों ?"

"मेरे से पहले उधर अपनी फेमस लाल मारुति पर पिंकी माथुर पहुंच गई ।"

"फेमस लाल मारुति ?"

"यस, मैन । ब्लडी जितने का कार, उससे ज्यादा का असेसरी । ऐवरीबॉडी नोज ।"

"तुम पिंकी माथुर को जानते हो ?"

"मैं पहचानता ।"

"कैसे ?"

"शशि का नाइट क्लब जब ओपन तो वो उधर रेगुलर आती । हर कोई पहचानता उसे । फेबुलस फैमिली बैकग्राउंड । रोटन हैबिट्स । बैग्ज ऑफ मनी टु स्पेंड । यु नो दि टाइप ।"

"यस ।"

"ऐवरी बॉडी इज आफ्टर सच चिक्स ।"

"आई नो । वो अपनी लाल मारुति पर वहां पहुंची । फिर ?"

"वो कार बाहर पार्क किया और कम्पाउंड में एंटर किया । फिर वो कोठी के मेन गेट पर पहुंची, डोर को ओपन किया और इनसाइड एंटर कर गया । मैं समझ गया कि सुजाता भीतर नहीं थी ।"

"वो कैसे ?"

"मैन, शशि एक छोकरी की प्रेजेंस में दूसरी छोकरी को नहीं बुलाना सकता ।"

"दूसरी छोकरी बिन-बुलाए आई हो सकती थी !"

"ऐसा होता तो वो बैल करती । आयरन गेट से नहीं तो इन साईड कोठी के मेन गेट से बैल करती । होस्ट दरवाजा खोलता, कम इन बोलता तो एंट्री लेती । पिंकी तो ऐसा कुछ नहीं किया ।"

ये महज इत्तफाक था कि पिंकी ने ऐसा कुछ नहीं किया था लेकिन जो कुछ डिसूजा ने देखा था, उसके मुताबिक उसने जो नतीजा निकाला था वो गलत नहीं था।

"फिर ?" प्रत्यक्षत: मैं बोला।

"फिर मै उधर से मूव कर गया" वो बोला, "और बैंगलो रोड पहुंचा जिधर मेरी एक और लेडी फ्रेंड होती। ब्लडी बैड लक कि वो भी नहीं मिली। फिर मैं ब्लडी व्हिस्की बाटल को ओपन किया और फुल बाटल कंज्यूम किया। बैक इधर आ रहा था तो तिलक मार्ग पर पुलिस पकड़ लिया। ड्रंकन ड्राइविंग में होल नाइट लाकअप में ब्लडी होल डे लाकअप में। पैसा दिया तो छूटा। वाट लक ! वाट लाउजी लक !"

"च.. .च।" मैंने हमदर्दी जताई।

"एंड नाओ मैन" उसने जोर से जम्हाई ली, "इफ यू डोंट माइंड।"

"ओह नो। नाट ऐट आल।आई एम थैंकफुल टू यू फॉर युअर कोआपरेशन।"

"नैवर माइंड। मेक दि सीन सम अदर टाइम। यू आर मोस्ट वेलकम।"

वो मुझे दरवाजे तक छोड़ने आया।

"मैन।" वहां एकाएक वह बोला, "युअर फेस..."

"क्या हुआ मेरे चेहरे को ?" मैं अपने मुंह पर हाथ फेरता हुआ बोला।

"हुआ कुछ नहीं। बट... यू नो...एकदम शशि का माफिक लगता है। लाइक डबल-रोल।"

"ओह !" मैं हंसा, "तो आखिरकार सूझ गया तुम्हें !"

"सूझा तो पहले भी बट...बोला अब।"

"इत्तफाक की बात है।" मैं बोला और उससे हाथ मिलाकर वहां से विदा हो गया।

***

मैं अब्बा पहुंचा ।

वो मेरी जानी-पहचानी जगह थी । उसकी आधी ग्रीक आधी हिंदोस्तानी हसीनतरीन बेली डांसर, पार्टनर सिल्विया ग्रेको से मेरी पुरानी वाकफियत थी । हजरात भूले न हों तो सिल्विया ग्रेको वही मेमसाहब हैं आप के खादिम इस पंजाबी पुत्तर ने मलिका के ताज वाले केस के दौरान जिन्हें बाकायदा चैलेंज करके उनकी मर्जी के खिलाफ उन्हें हासिल करके दिखाया था । उस केस में यूअर्स टूली ने ऐसे हालात पैदा कर दिए थे कि सिल्विया ग्रेको खुद चलकर मेरे साथ सोने आई थी । तब खाकसार ने अपने फ्लैट के बैडरूम में उसका जैसा निर्वसन बेली डांस देखा था, वैसा शायद ही कभी किसी को देखना नसीब हुआ होगा ।

अब्बा का दूसरा पार्टनर नरेंद्र कुमार भी मेरा जिगरी यार था लेकिन वो साइलेंट पार्टनर था और वहां कभी-कभार ही आता था ।

अब्बा डिफेंस कालोनी की एक दोमंजिला इमारत में स्थापित था जिसके ग्राउंड फ्लोर पर डिस्कोथेक था और पहली मंजिल पर सिल्विया का आवास था ।

अब्बा में आपके खादिम की कितनी पूछ थी, उसका ये भी सबूत था कि खुद फ्लोर मैनेजर ने आकर मुझे रिसीव किया ।

"मैडम कहां है ?" मैंने पूछा ।

"'ऊपर हैं ।" मैनेजर बोला, "मैं खबर कर देता हूं ।"

"कोई जल्दी नहीं । आराम से करना । मैं यहां ठहरूंगा थोड़ी देर ।"

"यू आर वैलकम, सर ।"

"मनोज माथुर को जानते हो ? वो फ्लैग स्टाफ रोड वाले के बी माथुर साहब का लड़का और ....."

"मैं जानता हूं सर ।"

"पहचानते भी हो ?"

"यस, रेगुलर पैट्रन है यहां का ।"

"इस वक्त है यहां ?"

"यस, सर । है ।"

"मैं नहीं पहचानता उसे । चुपचाप बताओ कहां है !"

उसने डांस फ्लोर के एक कोने के साथ लगी एक मेज की ओर इशारा किया जहां कि वो दो निहायत खूबवसूरत, नौजवान, जींसधारी हसीनाओं के साथ बैठा बतिया रहा था और ठहाके लगा रहा था ।

"सर" मैनेजर बोला, "कोई ड्रिंक..."

"अभी नहीं । बाद में । थैंक्यू सो मच फॉर नाओ ।"

वो अभिवादन करके परे हट गया ।

सीधे मनोज की टेबल पर पहुंचने की जगह मैंने रंग-बिरंगी रोशनियों से जगमगाते, धुएं और शोर से भरे हॉल में एक चक्कर लगाया ।

मुझे दो और परिचित चेहरे दिखाई दिए ।

पुनीत खेतान डांस फ्लोर से थोड़ा परे बिछी टेबल पर एक सुंदर युवती से घुट-घुटकर बातें कर रहा था । दोनों के सामने ड्रिंक्स के गिलास थे ।

हॉल के एक बिल्कुल ही अलग-थलग कोने में एक मेज पर माथुर का प्राइवेट सैक्रेट्री नायर अकेला बैठा था । वो खामोशी से व्हिस्की चुसक रहा था और सिगरेट पी रहा था । डांस फ्लोर पर विलायती बैंड की धुनों पर थिरकते नोजवान जोड़ों में उसकी कोई दिलचस्पी मालूम नहीं होती थी ।

अब्बा वास्तव में एक थ्री-इन-वन जगह थी । वो डिस्को भी था, नाइट क्लब भी था और कैबरे जायंट भी था । यही वजह थी कि वहां के पैट्रन मनोज माथुर जैसे नौजवान भी थे, नायर जैसे उम्रदराज व्यक्ति भी थे और दोनों के बीच की उम्र वाले पुनीत खेतान जैसे व्यक्ति भी थे ।

मैंने घड़ी पर निगाह डाली । पौने नौ बजे थे । मुझे मालूम था कि नौ बजे डिस्को प्रेमी युवक युवतियों से डांस फ्लोर खाली करा लिया जाता था और फिर वहां एक घंटे के लिए कैब्रे कलाकारों की परफारमेंस चलती थी जिसे सिल्विया ग्रेको खुद इंट्रोड्यूस करती थी । दस से साढ़े ग्यारह बजे तक फिर डिस्को का शोर-शराबा चलता था और फिर कैब्रे की रात की आखिरी परफारमेंस होती थी । सिल्विया ग्रेको का बैली डांस देखना हर किसी को नसीब नहीं होता था । वो केवल आमंत्रित मेहमानों के सामने आधी रात के बाद होता था, पहले होता था तो पहली मंजिल पर होता था जहां हर किसी का आना-जाना संभव नहीं था ।

फ्लोर मैनेजर फिर मेरे करीब आया ।

"मैंने आपके लिए टेबल अरेंज कर दी है ।" वो बोला ।

"मैंने सहमति में सिर हिलाया और उसके साथ हो लिया । मैं नायर की टेबल के करीब से गुजरा तो मैंने एक गुप्त इशारा उसकी ओर किया ।

"इसे भी जानते हो ?" मैं दबे स्वर में बोला ।

"इसका नाम नायर है ।" मैनेजर ने बताया, "माथुर इंडस्ट्रीज में किसी ऊंचे औहदे पर बताता है अपने आपको ।"

"मालिक का प्राइवेट सैक्रेट्री है ।"

"आप भी जानते हैं इसे ?"

"हां । रोज आता है यहां ?"

"रोज तो नहीं, अलबत्ता हफ्ते में तीन-चार बार तो आता ही है ।"

"डिस्को में फिट बैठने वाली तो इसकी उम्र नहीं । कैब्रे का शौकीन होगा ।"

"डांस का नहीं" मैनेजर बड़े रहस्यपूर्ण स्वर में बोला, "डांसरों का । उनके नंगे जिस्मों के दर्शनों का ।"

"वो क्या प्राब्लम है ?"

"डांस फ्लोर पर नहीं, सर ।"

"तो ?"

"डांसरों के ड्रैसिंग रूम्स में । पता नहीं कैसा आदमी है ! कपड़े उतारती और कपड़े पहनती औरत का नजारा करके खुश हो जाता है । नाममात्र के तो कपड़े पहनकर कैब्रे डांसर फ्लोर पर आती है । लेकिन उसे देखकर इसको मजा नहीं आता है । इसको मजा आता है ये देखकर कि वो अपनी रोजमर्रा की पोशाक उतारकर उस कास्ट्यूम वाली स्टेज तक कैसे पहुंचती है और उस कास्ट्यूम को उतारकर अपनी रोजमर्रा की पोशाक कैसे पहनती है !"

"कमाल है !"

"मेंटल मालूम होता है, सर। लड़की फ्लोर पर कैब्रे कर रही होती है तो उसकी तरफ आंख नहीं उठाता। वो अपने ड्रेसिंग रूम में चेंज के लिए जाती है तो उससे पहले जाकर वहां छुप के बैठ जाता है।"

"लड़की को पता नहीं लगता ?"

"आज तक तो लगा नहीं।"

"लेकिन वो लेडीज के ड्रेसिंग रूम में पहुंच कैसे जाता है ?"

"यहां के किसी वेटर की मेहरबानी से। सौ रुपए वेटर को देता है। पचास रुपए अटेंडेंट को। उसका काम बन जाता है।"

"और तुम्हें ये बात मालूम है।"

"हार्मलेस गेम है सर, किसी का कुछ नहीं बिगड़ता। स्टाफ चार पैसे कमा लेता है।"

"लेकिन...."

"सर, जितने पैसे वेटरों को देता है, उतने वो कैब्रे डांसर को दे तो वो वैसे ही उसके सामने नंगी खड़ी हो जाए।"

"फिर भी किसी को एतराज हो सकता है। कोई ऐसी तांक-झांक को नापसंद कर सकती है।"

"पता लगेगा तो वो नौबत आएगी न, सर !"

"कभी आ गई वो नौबत तो ?"

"तो पकड़ के इसकी खातिर कर देंगे।"

"बहुत बेइज्जती होगी बेचारे की।"

"हमें क्या ! वैसे ऐसी नौबत न ही आए तो अच्छा है।"

"आज आएगी।"

"जी !"

"ये जब ड्रेसिंग रूम में जा छुपे तो मुझे खबर करना।"

"सर !"

"डू ऐज आई से।"

"यस, सर।"

मैं एक टेबल पर पहुंचा। टेबल पर रिजर्वड की तख्ती रखी हुई थी जिसे मेरे बैठते ही मैनेजर ने वहां से उठा लिया।

"मैं बैठ गया। मैंने डनहिल का एक सिगरेट सुलगा लिया।

फिर जैसे जादू के जोर से। ड्रिंक का एक गिलास मेरी कोहनी के करीब प्रकट हुआ।

"मनोज माथुर के पास मेरा कार्ड ले जाओ।" मैंने अपना विजिटिंग कार्ड निकालकर मैनेजर को सौंपा, "उसे बोलो मैं एक मिनट के लिए उससे मिलना चाहता हूं। पूछो वो यहां आता है य मैं उसकी टेबल पर आऊं ?"

मैनेजर सहमति में सिर हिलाता चला गया।

दो मिनट बाद वो वापस लौटा ।

"आपको बुला रहा है ।" उसने बताया ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया और सिगरेट और ड्रिंक संभाले उठ खड़ा हुआ ।

तत्काल वेटर ने रिजर्वड वाली तख्ती वापस मेरी मेज पर रख दी ।

मैं मनोज माथुर की मेज पर पहुंचा ।

"हल्लो !" जींसधारी बालाओं को नजरअंदाज करके मैं उससे संबोधित हुआ, "बंदे को सुधीर कोहली कहते हैं ।"

"प्लीज सिट डाउन, मिस्टर कोहली ।" वो सुसंयत स्वर में बोला ।

"थैंक्यू ।" मैं चौथी, खाली कुर्सी पर बैठ गया ।

"वाट डु वांट, मिस्टर कोहली ?"

"मैं आज आपके पापा से मिला था । उन्होंने आपसे मेरा जिक्र किया होगा ।"

"मेरी आज डैडी से मलाकात नहीं हुई ।"

"दैट्स टू बैड । बहरहाल मेरा पेशा क्या है, ये आपने मेरे कार्ड पर पढ़ा ही होगा । आगे मैं बता देता हूं कि उन्होंने मुझे रिटेन किया है ।"

"अच्छा ! उन्हें प्राइवेट डिटेक्टिव का सेवाओं की क्या जरूरत पड़ गई ?"

"ये सवाल जरा नाजुक है ।" मैं एक उड़ती निगाह युवतियों पर डालता हुआ बोला, "मिक्सड कम्पनी में इसका जवाब देना मुनासिब नहीं होगा ।"

"नैवर माइंड । आई विल आस्क डैडी ।"

"जरूर ।"

"मेरे से क्या बात करना चाहत थे आप ?"

"मैं आपसे सिर्फ एक सवाल पूछना चाहता हूं ।"

"पूछिए ।"

"आपको शशिकांत के कत्ल की खबर है ?"

"है ।" वो नि:संकोच बोला ।

"कैसे ?"

"इसका जवाब" वो मुस्कराया और उसने अपनी सहेलियों की तरफ हाथ हिलाया, "मिक्स्ड कम्पनी में देना मुनासिब न होगा ।"

"आप शशिकांत को जानते थे ?"

"सिर्फ नाम से वाकिफ था ।"

"नाम से कैसे वाकिफ थे ?"

"वो मेरी सौतेली मां का कोई दूरदराज का रिश्तेदार होता था ।"

"कभी मुलाकात हुई आपकी उससे ?"

"न । कभी नहीं ।"

"कल शाम को भी नहीं ?"

"मिस्टर कोहली, कभी नहीं में क्या कल शाम शामिल नहीं होती ?"

"मुलाकात हुई न सही लेकिन होने तो वाली थी ! कल शाम साढ़े आठ बजे !"

"कौन कहता है ?"

"अभी तो मैं ही कहता हूं ।"

"गलत कहते हो ।"

"कल शाम चार बजे आपकी उससे फोन पर बात नहीं हुई ?"

"नहीं हुई । मैं भला क्यों फोन करूंगा उसे ?"

"उसने आपको किया हो ?"

"नो । नेवर ।"

"आपकी उससे फोन पर कोई बात नहीं हुई ? आपने उसे फोन पर ये नहीं कहा कि अगर आपको उसके घर जाना पड़ा तो आप उससे बात करने नहीं, उसे शूट करने जाएंगे ?"

"कहां बहक रहे हो, मिस्टर कोहली ! जब मैं कह रहा हूं कि..."

"आप ऐसे किसी वार्तालाप से इंकार करते है ?"

"हां । सरासर इंकार करता हूं ।"

"बहुत मुमकिन है, यही सवाल आपसे पुलिस भी पूछे ।"

"चाहे फौज पूछे । मेरा जवाब यही होगा ।"

"आपके पापा के पास एक बाइस कैलीबर की, हाथी दांत की मूठ वाली रिवॉल्वर है जिसका सीरियल नम्बर डी- 241436 है ।"

"होगी ।" वो लापरवाही से बोला, "मुझे फायरआर्म में कोई दिलचस्पी नहीं ।"

"हाल ही में आपने उस रिवॉल्वर को हैंडल किया था ?"

"शशिकांत को शूट करने के लिए ?" वो ठठाकर हंसा ।

"हां ।" मैं जिदभरे स्वर में बोला ।

"बड़े ढीठ हो, यार ! फिर वहीं पहुंच गए !"

"जवाब दीजिए ।"

"अरे, मैंने कभी डैडी के गन कलेक्शन की ओर झांका तक नहीं । मैंने आज तक अपने हाथ में कभी कोई

रिवॉल्वर पकड़कर नहीं देखी । मैं कैलीबर नहीं समझता । मैं पिस्तौल और रिवॉल्वर में फर्क नहीं समझता । मैं ये भी आज ही सुन रहा हूं कि फायरआर्म पर सीरियल नम्बर भी होते हैं ।"

"आप..."

"देखो, मेरे भाई । शाम का वक्त है । सारा दिन ऑफिस के काम में माथा फोड़ने के बाद मैं तफरीह के लिए यहां आया हूं । इसीलिए तुम भी यहां आए होगे । अब क्यों रंग में भंग डाल रहे हो सिरफिरी, बेमानी, वाहियात बात करके ? अब क्यों चाहते हो कि मुझे अफसोस होने लगे कि मैंने तुम्हारे से मिलने के लिए हामी भरी ?"

"नहीं चाहता । तकलीफ की माफी ।" मैं उठ खड़ा हुआ, "मैं इजाजत चाहता हूं ।"

"अरे बैठो । एनजाय करो । हमारे साथ ड्रिंक लो । लेकिन वो किस्सा छोड़ो ।"

"थैंक्यू । ड्रिंक्स फिर कभी । और अगर जरूरत पड़ी तो वो किस्सा भी फिर कभी ।"

"तौबा !" वो वितृष्णापूर्ण स्वर में बोला, "अभी भी फिर कभी ।"

"जनाब, ये एक काम है जो आपके डैडी ने मुझे सौंपा है । आप इससे तौबा कर सकते हैं, मैं नहीं कर सकता । मेरी रोजी-रोटी का सवाल है । बहरहाल नमस्ते ।"

मैं वहां से हट गया ।

मैं पुनीत खेतान की टेबल पर पहुंचा ।

"हल्लो !" मैं मुस्कराकर बोला ।

पुनीत खेतान ने सिर उठाकर मेरी तरफ देखा ।

"ओ, हल्लो वो बोला, "कमाल है, भई । चंद घंटों में तीन बार मुलाकात हो गई ।"

"पहली तो यूं ही हड़बड़ी भरी मुलाकात थी ।" मैं बोला, "तीसरी तो अभी होगी । जायकेदार मुलाकात तो दूसरी ही थी ।"

उसके नेत्र सिकुड़े ।

"बैठो ।" वह बोला ।

"थैंक्यू ।" मैं एक खाली कुर्सी पर बैठ गया ।

मीट माई फ्रेंड । निशा ।" वह बोला फिर वह युवती की ओर घूमा, "डार्लिंग, ये कोहली है, सुधीर कोहली । फेमस डिटेक्टिव है । प्राइवेट ।"

हम दोनों में हल्लो का आदान-प्रदान हुआ ।

"मैंने" फिर मैं बोला, "रंग में भंग तो नहीं डाला ?"

युवती के तेवरों से साफ लगा कि मैंने रंग में भंग ही डाला था लेकिन खेतान तत्काल चहककर बोला, "नहीं, नहीं । ये तो जा रही हैं ।"

युवती ने सकपकाकर उसकी तरफ देखा ।

"ठीक है न डार्लिंग !" वह बोला, "लेकिन आज जाना तुम्हें खुद पड़ेगा । ये लो" उसने पर्स निकाला और सौ-सौ के कुछ नोट जबरन उसकी मुट्ठी में ठूंसे, "टैक्सी कर लेना । और कल फोन करना ।"

युवती उठी और भुनभुनाती हुई वहां से रुखसत हो गई ।

"ड्रिंक मंगाते हैं," वो बोला।

मैंने सहमति में सिर हिलाया।

उसने एक वेटर को इशारा किया। उसने वेटर को मुट्ठी मे एक पचास का नोट खोंसा और बोला, "ये तुम्हारी एडवांस टिप। एक मिनट में ड्रिंक लाओ।"

वेटर जैसे जादू के जोर से वहां से गायब हुआ।

"वो लड़की " मैं बोला, "आपकी फ्रेंड। दिल्ली में नहीं रहती ?"

"दिल्ली में ही रहती है।" वो बोला, "क्यों ?"

"टैक्सी के किराए की वजह से पूछा जो कि आपने उसे दिया। वो तो देहरादून पहुचने के लिये काफी था।"

वो हो-हो करके हंसा।

तभी वेटर ड्रिंक सर्व कर गया हम दोनों ने चियर्स बोला। "वहां, बाराखम्बा" फिर मैं सहज स्वर में बोला, "मदान के आने तक तो रुके ही होंगे आप ?"

"नहीं। मैं पहले चला गया था।" उतने बड़ी संजीदा शक्ल बनाकर मेरी ओर देखा, "कोहली, कुछ उलटा-सीधा मत सोचना।"

"किस बाबत ?" मैं जानबूझकर अनजान बनता हुआ बोला।

"तुम्हें मालूम है। सोचना तो जो सोचना उसे दिल में रखना। मदान के आगे कुछ अनाप-शनाप न बोल देना।"

"हुक्म दे रहे हो ?"

"दरखास्त कर रहा हूं।"

"एक शर्त पर तुम्हारी दरख्वास्त कबूल हो सकती है।"

"क्या ?"

"अपनी जुबानी कबूल करो कि मदान की बीवी से तुम्हारा अफेयर है।"

"भई, मैं उसे मदान से भी पहले से जानता हूं। अब हर पुरानी जानकारी कोई अफेयर ही तो....."

"फुंदनेबाजी छोड़ो। तुम उसे उसकी पैदाइश के वक्त से जानते हो लेकिन आज की तारीख में वो तुम्हारे से फंसी हुई है। कबूल करो।"

"ठीक है। किया।"

"और ये भी कबूल करो कि शशिकांत की बीमा पॉलिसी के बारे में उसे तुम्हारे से ही मालूम हुआ था।"

"ये भी कबूल किया।"

"क्यों बताया ?"

"इत्तफाक से कभी मुंह से निकल गया था। किसी खास मकसद से नहीं बताया था।"

"तुम्हें ये बात मानूम हूं कि असल में शशिकांत मदान का कुछ नहीं लगता था"

"पहले नहीं मालूम थी। अब मालूम है।"

"अब कैसे मालूम हुआ ?"

"मधु ने बताया । तुम्हारे जाने को बाद ।"

"तुम शशिकांत के वकील भी हो फाईनान्शल एडवाइजर भी हो....."

"ऑडीटर भी हूं । स्टाक ब्रोकर भी हूं । जनरल एजेंट भी हूं । ट्रबल शूटर भी हूं । मेरी कंसल्टेंसी आल-इन-वन है । वो क्लायंट के लिए बहुत फील्ड कवर करती है ।"

"इस लिहाज से तो शशिकांत के पास अगर कोई ऐसा डोक्युमेंट होता जिसे वो बहुत हिफाजत से, बहुत महफूज रखना चाहता होता तो वो तुम्हारी ही सेवाएं इस्तेमाल करता ।"

"हां । लेकिन ऐसा कोई डोक्युमेंट उसने मेरे पास नहीं रखवाया हुआ । मदान भी बहुत बार मेरे से ये सवाल पूछता है । लेकिन वजह नहीं बताता कि क्यों पूछ रहा है । कम-से-कम तुम तो वजह बताओ ।"

"शशिकान्त के पास अपने बचपन से ही कुछ ऐसे कागजात थे ये साबित करते थे कि असल में वो किन्हीं और मां-बाप का बेटा था और यह कि लेखराज मदान से उसका दूर-दराज का भी कोई रिश्ता नहीं ।"

"ओह । लेकिन मरे पास ऐसे कोई कागजात नहीं ।"

"शायद वो सीलबंद हों । इस वजह से तुम्हें मालूम न हो कि भीतर क्या है !"

"मेरे पास शशिकांत का दिया कोई सीलबंद लिफाफा है ही नहीं । मेरे पास तो सिर्फ उसकी फाइनान्शल होल्डिंग्स हैं - जैसे सिक्योरिटीज । शेयर सर्टिफिकेट्स । ऐसी चीजें हम बाकी क्लायंट्स की भी रखते हैं ।"

"कितने का माल होगा वो ?"

"होगा कोई बीस-बाईस लाख रुपए का ।"

"अब उसका क्या होगा ?"

"अब तो मैं खुद हैरान हूं क्या होगा ? पहले तो मैं उसे मदान को ही सौंपता लेकिन अब जबकि तुम कहते हो कि वो शशिकांत का भाई था ही नहीं, तो फिर वो सब कागजात मदान को सौंपना गलत होगा ।"

"और किसे सौंपोगे ?"

"जो कोई भी उसका वारिस होगा शायद उसकी कोई वसीयत बरामद हो ।"

"कोई वारिस न निकला तो ?"

"ऐसा हो तो नहीं सकता । कोई तो हर किसी का होता ही है ।"

"शशिकांत का न हुआ तो ?"

"तो जो उसकी बाकी जमीन-जायदाद का होगा, वो ही उसकी सिक्योरिटीज का हो जाएगा ।"

"यानी कि तुम वो सब कुछ सरकार का सौंप दोगे ?"

"हां ।"

"वैसे तुम लोग चाहो तो क्लायंट्स की सिक्योरिटीज को या सर्टीफिकेटस को कैश करा सकते हो ?"

"करा तो सकते हैं । हमारे पास क्लायंट की ऑथोरिटी होती है । हर स्टाक ब्रोकर के पास अपने क्लायंट ऑथोरिटी होती है ।"

"क्यों ?"

"शेयर बाजार में एकाएक आ जाने वाली तेजी का फायदा उठाने के लिए । या मंदी से होने वाले नुकसान से बचने के लिए । शेयर मार्केट में कई बार सिर्फ कुछ घंटों के लिए या कुछ दिनों के लिए रेट एकदम शूट कर जाते हैं । या एकदम नीचे आ जाते हैं । तब शेयरों को फौरन बेचना या खरीदना होता है । ऐसा तभी हो सकता है जब क्लायंट की हमारे पास ऑथोरिटी हो । उसके हमें निर्देश होते हैं कि फलां शेयर का रेट फलां कीमत तक पहुंचे तो बेच दो या फिर कोई शेयर फलां कीमत तक गिर जाए तो खरीद लो ।"

"ये जो बीमे की रकम है, ये मिल जाएगी मदान को ?"

"देखो अगर शशिकांत का कातिल पकड़ा गया तब तो रकम न मिलने की कोई वजह नहीं होगी । तब तो ये ओपन एंड शट केस होगा । कातिल न पकड़ा गया तो बीमा कम्पनी वाले केस को लटकाएंगे । तब वो इस शक को हवा देने की कोशिश करेंगे कि शायद मदान ने कत्ल किया हो । कानून किसी को अपने ही गुनाह से फायदा उठाने की इजाजत जो नहीं देता ।"

"मदान ने कत्ल किया हो सकता है ?"

"नहीं ।" उसने बड़ी मजबूती से इन्कार में सिर हिलाया ।

"और कौन हो सकता है कातिल ?"

"ये तो तुम बताओ । आखिर जासूस हो और इसी काम के लिए तो तुम्हें इंगेज किया गया है ।"

"अभी तो ये बात अपने ही लोगो के बीच में है कि शशिकांत मदान का भाई नहीं था । लेकिन अगर ये बात जाहिर हो जाए तो फिर ये ही रकम की अदायगी में मजबूत अड़ंगा नहीं बन जाएगी ?"

"बन तो सकती है, यार ।" कई क्षण खामोश रहने के बाद वो बोला, "इतनी बड़ी रकम की अदायगी में अड़ंगा लगाने की तो हरचंद कोशिश करेंगे बीमा कम्पनी वाले । कोहली, हमारे कामन क्लायंट के हक में अच्छा वैसे ये ही होगा कि ये बात जाहिर न हो ।"

"हमारा एक कामन क्लायंट और भी है ।"

"और कौन ?"

मैंने उसे कृष्णबिहारी माथुर के बारे में बताया ।

"कमाल है !" वो मंत्रमुग्ध स्वर में बोला, "तुम तो यार बहुत ही पहुंची हुई चीज हो ।"

"माथुर साहब तुम्हारी शूटिंग की बहुत तारीफ कर रहे थे । पक्का निशानेबाज बता रहे थे वो तुम्हें । क्रैक शोट !"

"उन्हीं की मेहरबानी से बन गया । शूटिंग रेंज उनका अपना न होता तो मुझे तो शौक तक न पड़ता शूटिंग का ।" वो तनिक आगे को झुका और बड़े रहस्यपूर्ण स्वर में बोला, "एक भेद की बात बताऊं ?"

"बताओ ?"

"दस में से छ: बार तो मैं वहां जाता ही शूटिंग के लालच में हूं ।"

"अच्छा !"

"फ्री हथियार । फ्री गोलियां । जीरो हाय तौबा । किसी कमर्शियल शूटिंग रेंज में जाऊं तो मैम्बरशिप भरने के अलावा पहले तो मुझे कोई गन ही खरीदनी पड़े ।"

"आपके पास गन नहीं है ?"

"गन क्या मेरे पास तो फायरआर्म्ज़ रखने का लाइसेंस तक नहीं है ।"

"क्यों ?"

"कभी कोशिश ही नहीं की हासिल करने की । जरूरत ही नहीं महसूस हुई कभी ।"

मैंने देखा डांस फ्लोर डिस्को दीवानों से खाली कराया जाने लगा था ।

"कैब्रे शौक से देखते हो ?" मैंने पूछा ।

"कैब्रे नहीं ।" वो बड़े अर्थपूर्ण स्वर में बोला ।

"तो और क्या ?"

"यहां की मलिका । सिल्विया ग्रेको । उसे शौक से देखता हूं । यहां आता ही उसके लिये हूं । वो आज यहां से रुखसत हो जाए तो मैं दोबारा रुख न करूं अब्बा का ।"

"इतने दीवाने हो उसके ?"

"इतने से कहीं ज्यादा । मेरी दीवानगी लफ्जों में तो बयान ही नहीं की जा सकती । पहले कभी यहां आए हो ?"

"नहीं ।"

"फिर तो सिल्विया को देखा नहीं होगा ।"

तभी डांस फ्लोर पर सिल्विया प्रकट हुई । वो एक लाल रंग का लो नैक का टखनों तक आने वाला गाउन पहने थी और गाउन के अलावा कुछ नहीं पहने थी । गाउन में कूल्हे से नीचे दोनों तरफ लंबी झिरियां थीं जिस्म में जरा-सी हरकत होते ही जिनमें से उसकी लंबी सुडौल टांगें जांघों तक दिखाई देने लगती थीं और स्तन यूं मादक अंदाज में हौले-हौले हिलने लगते थे कि कद्रदानों के मुंह से हाय निकल जाती थी ।

जैसे उस घड़ी खेतान के मुंह से निकल रही थी ।

"हाय !" वो बोला "साली एक बार हमारी टेबल पर ही आ जाए ।"

"नशे में बोल रहे हो ?"

"अरे, दिल की गहराइयों से बोल रहा हूं ।"

"उसे बुला लो ।"

"नहीं आती । टेबल पर नहीं आती वो । किसी की टेबल पर भी नहीं आती वो । बड़ी हद हल्लो कहती करीब से गुजर जाती है ।"

"टेबल पर आ जाए तो खुश हो जाओगे ?"

"तुम तो यूं कह रहे हो जैसे उसे बुला सकते हो ।"

"बुला सकता हूं ।"

"बुला के दिखाओ ।" वो चैलेन्ज भरे स्वर मे बोला, "मुंह चूम लूंगा ।"

"मेरा ?"

"हां । नहीं, उसका । मेरा मतलब है तुम्हारा भी या सिर्फ उसका या दोनों का । या पहले....."

"बहक रहे हो।"

उसे ब्रेक लगी। वह कुछ क्षण आंखों-ही-आंखों में सिल्विया को हजम करता रहा और फिर बोला, "भगवान औरत को इतनी शानदार क्यों बनाता है ?"

"ताकि तुम्हारे जैसे कद्रदानों मेहरबानों को इस झूठ पर एतबार न आने लगे कि सब औरतें एक जैसी होती हैं।"

"वो तो कहा जाता है कि कमर के नीचे तमाम औरतें एक जैसी होती हैं।"

"अभी तुम सिल्विया को कमर से ऊपर-ऊपर देख रहे हो ?"

"पागल हुए हो ! मैं तो उसे नख से शिख तक देख रहा हूं।"

"सो देयर यू आर।"

"यार, वो कमर से नीचे तमाम औरतें एक जैसी होने की बात का मतलब कुछ और है जो कि इस वक्त शराब और सिल्विया दोनों के नशे में मुझे सूझ नहीं रहा।"

"अच्छा है नहीं सूझ रहा। वो गुमराह करने वाला मतलब है।"

"यानी कि तुम्हें सूझ रहा है।"

"न सिर्फ सूझ रहा है मुझे उसकी हकीकत पर भी एतबार है। उसी बात को लार्ड बायरन ने इस तरह से कहा है कि आल कैट्स आर ग्रे इन डार्क।"

"यहां डार्क कहां ! यहां तो जगमग रोशनी है।"

"तभी तो। वैसे एक बात है।"

"क्या ?"

"तुम्हारा नौ नकद और तेरह उधार वाली मिसाल पर एतबार नहीं मालूम होता।"

"क्यों ?"

"तभी तो निशा को रुखसत कर दिया। वो नौ नकद थी। सिल्विया ग्रेको तेरह उधार है।"

"पागल हुए हो ! निशा जैसी चीज रोज मिलती है। मैं रोज बटुवे में हाथ डालता हूं और एक निकल आती है। सिल्विया जैसी मिलती ही नहीं।"

"तभी तो उसके लिए लार टपका रहे हो। इससे ये जाहिर होता है कि माल का भाव सिर्फ अच्छा होने से ही नहीं वढ़ता, दुर्लभ और अनुपलब्ध होने से भी बढ़ता है।"

"मुझे सिर्फ एक बार हासिल हो जाए ये, फिर चाहे..."

"सुनो ! वो कुछ बोल रही है।"

वो डांस फ्लोर की ओर देखने लगा।

सिल्विया अपने जिस्म जैसी ही सैक्सी आवाज में अपने कैब्रे स्टार्स को इंट्रोड्यूस कर रही थी। उस वक्त बैंड खामोश था। लेकिन स्पॉट लाइट ऐन उसके ऊपर थी और हॉल की बेशुमार रोशनियां मद्धम हो चुकी थीं।

फिर एकाएक ड्रम जोर से बजा और सिल्विया झुककर अपने पैटर्न्स को अभिवादन करती और उन्हें अपने उन्नत वक्ष का नजारा कराती स्टेज से हट गई।

"हाय !" खेतान बोला ।

"असली रंगीले राजा हो ।" मैं बोला ।

उसने मेरी बात की ओर जरा भी तवज्जो नहीं दी ।

म्यूजिक बजने लगा । दो कैब्रे डांसर्स स्टेज पर थिरकने लगीं ।

मैंने वेटर को करीब बुलाया ।

"जरा" मैं बोला, "सिल्विया मैडम को सुधीर कोहली का सलाम बोलो ।"

वेटर सहमति में सिर हिलाता तत्काल वहां से हट गया ।

"बुल गया सलाम ।" खेतान व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला, "वो यूं सलाम कबूलती होती तो मैं क्या मर गया था !"

"ऐसा हो भी गया होता" मैं बोला, तो कोई बात नहीं थी । फिर जिंदा हो जाते सिल्विया को अपनी टेबल पर वैठी पाकर ।"

वो हो-हो करके हंसा ।

दो मिनट बाद बेशुमार तारीफी निगाहों का मरकज बनी सिल्विया मेरे करीब पहुंची । खेतान को कतई नजरअंदाज करके उसने मेरे गाल पर एक चिकोटी काटी और मद भरे स्वरे में बोली, "हल्लो माई हनी चाइल्ड । माई टूटी-फ्रूटी । लांग टाइम नो सी ।"

"बैठो ।" मैं बोला ।

वो मेरे साथ सटकर बैठ गई । उसका एक वक्ष मेरी बांह को धक्का देने लगा और एक जांघ मेरी जांघ के साथ सट गई ।

खेतान यूं हक्का-बक्का सा कभी मुझे और कभी सिल्विया को देखने लगा जैसे उसे एतबार न आ रहा हो कि जो वो देख रहा था वो हकीकत थी ।

"सिल्विया ।" मैं बोला, "मीट माई फ्रेंड, मिस्टर पुनीत खेतान ।"

"फैन वाला ।" वो बोली ।

"फैन वाले जैसा । ये वकील है ।"

"ओह, हल्लो देयर ।"

"हल्लो !" खेतान फंसे स्वर में बोला । उसने मेज पर दोहरा होकर सिल्विया का अभिवादन किया ।

"डार्लिंग !" सिल्विया फिर यूं मेरे से सम्बोधित जैसे खेतान वहां था ही नहीं, "आई हैव नो टाइम । वो उधर स्टेज पर ..."

"आई अंडर स्टैंड ।" मैं बोला, "एक बार हमारे साथ चियर्स बोल जाओ, फिर चली जाना ।"

"नो प्राब्लम ।"

उसकी भृकुटी के एक इशारे की देर थी कि हमें नए जाम सर्व हो गए । उसने हमारे साथ चियर्स बोला, अपने जाम को होठों से लगाया और फिर उसे मेज पर रखकर उठ खड़ी हुई ।

"एनजाय युअरसेल्फ ।" वो बोली, "डांस देखो, खाओ पियो लेकिन खिसक न जाना । इतने दिनों बाद मिले हो ।"

"नहीं खिसकूंगा ।"

"बाई टिल दैन बाई मिस्टर.... मिस्टर.... "

"खेतान ।" वो बड़े आतुर स्वर में बोला, "पुनीत खेतान ।"

एक चमचम करती मुस्कराहट में उसे निहाल करके वो वहां से विदा हो गई ।

"यार", फिर वो मेरे से बोला, "तुम तो कह रहे थे कि तुम यहां कभी नहीं आए ।"

"मेरा मतलब था कि मैं यहां नीचे कभी नहीं आया ।" मैं बोला, "मै तो सीधा ऊपर जाता हूं ।"

"ऊपर ! यानी कि तुम उसकी प्राइवेट परफारमेंस भी देख चुके हो ?"

"कई बार ।"

"कभी मुझे भी दिखाओ न !"

"दिखा देंगे ।"

"सुना है स्टार्क नेकड बैली डांस करती है ।"

"हां । अब जरा स्टेज की तरफ तवज्जो दो वहां की सुंदरियां भी उसी हालत में पहुंचने वाली हैं ।"

वो स्टेज की तरफ देखने लगा ।

पन्द्रह मिनट बाद पहली परफोरमंस खत्म हुई और सिल्विया फिर स्टेज पर प्रकट हुई । उतने में ही वो अपना गाउन बदल आई थी । अब वो पहले जैसा ही स्याह काला गाउन पहने थी । पहले की तरह दो मिनट उसने स्टेज से हॉल में अपना जादू बिखेरा और फिर नई डांसरों के लिए स्टेज छोड़कर वहां से हट गई ।

इस बार नई डांसरों के साथ दो मेल डांसर भी थे ।

मुझे मालूम था कि परफोरमेंस के समापन के बाद जब सिल्विया ने फिर स्टेज पर आना था तो उसके जिस्म पर फिर नई ड्रेस होनी थी ।

मैंने हॉल में परे उधर नजर दौड़ाई जिधर मैंने नायर को अकेले बैठे देखा था ।

वो अपनी टेबल पर मौजूद नहीं था ।

मैं कुछ क्षण सोचता रहा फिर मैंने अपना व्हिस्की का गिलास खाली किया, सिगरेट को ऐश-ट्रे में झोंका और उठ खड़ा हुआ ।

"मैं अभी आया ।" मैं बोला ।

उसने सहमति में सिर हिला दिया ।

मैं हॉल के पिछवाड़े की ओर बढा ।

उधर शनील के भारी परदे से ढका एक बंद दरवाजा था जिसके आगे एक लम्बा गलियारा था जिसके दोनों तरफ, मुझे पहले से मालूम था कि कैब्रे स्टार्स के ड्रेसिंग रूम थे । उस गलियारे के सिरे पर एक और दरवाजा था जो बाहर इमारत की पिछली गली में खुलता था ।

मैंने एक ड्रेसिंग रूम का दरवाजा ट्राई किया । वो खुल गया । मैंने भीतर निगाह डाली तो उसे खाली पाया ।

अगला दरवाजा पहले से ही तनिक खुला था और उसमें से कई लड़कियों के हंसने खिलखिलाने की आवाजें

आ रही थी । मैंने तीसरा दरवाजा ट्राई किया ।

मुझे भीतर शीशे के आगे एक स्टूल पर बैठी सिल्विया दिखाई दी । उसका काला गाउन एक ढेर की सूरत में एक कुर्सी पर पड़ा था । उस घड़ी उसके जिस्म पर एक सिल्क का ढीला-ढाला चोगा था और वह शीशे में अपना अक्स देखकर अपना मेकअप दुरुस्त कर रही थी । खुलते दरवाजे का प्रतिबिम्ब उसने शीशे में देखा । वो तत्काल मेरी ओर घूमी, उसका मुंह बोलने के लिए खुला तो मैने अपने होंठो पर उंगली रखके उसे चुप रहने का इशारा किया । वो सकपकाई-सी खामोश बैठी रही ।

मैंने अपने पीछे दरदाजा भिडकाया और दबे पांव आगे वढा । वो ड्रेसिंग रूम मेरा देखा भाला था । नायर अगर वहां कहीं हो सकता था तो दाईं ओर एक दीवार से दूसरी दीवार तक खिंचे परदे के पीछे ही हो सकता था । उस पर्दे के पीछे इस्तेमालशुदा ड्रेस और वैसा ही कबाड़ भरा रहता था । वो पर्दा तीन भागों में था । मैं बीच वाले भाग के करीब पहुंचा और मैंने एक झटके से परदा खींचा ।

वहां से कपड़ों के एक गट्ठर पर बैठा नायर नुमाया हुआ । परदा हटते ही उसकी घिग्घी बंध गई और वो फटी-फटी आंखों से मुझे देखने लगा ।

मैने उसे टाई से पकड़कर उसके पैरों पर जबरन खड़ा किया और फिर बाहर घसीटा ।

"ओ माई गॉड ।" सिल्विया घबराकर उठ खड़ी हुई और आतंकित भाव से बोली, "थीफ । पोलीस ।"

"मैं माफी चाहता हूं ।" घिघियाए स्वर में नायर बोला । "प्लीज फारगिव मी । आई बैग आफ यू । मेरा कोई गलत इरादा नहीं था ।"

"काल दि पोलीस ।" सिल्विया फिर चिल्लाई ।

"ऐसा न करना ।" नायर बोला - "प्लीज ! प्लीज मैडम मेरा कोई गलत इरादा नहीं था ।"

"यहां चोरों की तरह घुसे बैठे हो ।" मैं बोला "और गलत इरादा क्या होता है ?"

"चोरी के इरादे से नहीं ।"

"तो फिर किस इरादे से ?"

"मैं .....मैं ...."

"सुधीर ।" सिल्विया बोली, "इसको पकड़ के रखना । मैं पुलिस को फोन करके आती हूं ।"

और वो दृढ कदमों से दरवाजे की ओर बढी ।

"मिस्टर कोहली" नायर गिड़गिड़ाया, "प्लीज सेव मी । मैडम को रोको । तुम मैडम को जानते लगते हो । मैडम तुम्हारी तुम्हारी सुनेंगी । प्लीज, मिस्टर कोहली ।"

मैंने उसकी टाई छोड़ दी और सिल्विया को रोका ।

ऐब भी क्या लानती चीज थी । दिन में जो आदमी मेरे साथ बात करता शेर जैसा शाही मिजाज दिखा रहा था, वह उस घड़ी बकरी की तरह मिमिया रहा था ।

"इसे" सिल्विया रुक तो गई लेकिन कहर भरे स्वर में बोली, "अपनी करतूत की सजा जरूर मिलनी चाहिए ।"

"माफी ।" नायर ने फरियाद की, "माफी ।"

"दो शर्तों पर माफी मिल सकती है ।" मैं बोला ।

"बोलो" वो आतुर भाव से बोला, "बोलो ।"

"दोबारा कभी अब्बा में पांव न रखना ।"

"नहीं रखूंगा ।"

"और मेरे चंद सवालों का जवाब दो । जवाब झूठे या टाल-मटोल वाले हुए तो फिर रात तो हवालात में कटेगी ही, इज्जत आबरू का जनाजा यहीं से निकलता हुआ जाएगा । यहां के सारे स्टाफ ने मिलकर एक-एक हाथ भी जमाया तो दर्जनों की तादाद में हाथ पड़ेंगें । बाकी खबर थाने में पुलिस लेगी ।"

"ओह, नो ! नो !"

"न नहीं, हां करो ।"

"क्या पूछना चाहते हो ?"

मैंने सिल्विया की ओर देखा ।

"सामने का कमरा खाली है ।" वो बोली ।

"दरवाजा अंदर से बंद रखा करो ।"

"मेरे ड्रेसिंगरूम में कदम रखने की किसी की मजाल नहीं होती लेकिन अब रखा करूंगी ।"

"चलो ।" मैं नायर से बोला ।

नायर के साथ मैं निर्देशित कमरे में पहुंचा । वहां हम एक सोफे पर अगल-बगल बैठ गए, मैंने उसे सिगरेट पेश किया जो उसने कांपती उंगलियों से थामा । उसका नशा उड़ चुका था और उसके हवास अभी भी उसके काबू में नहीं थे ।

"तो शुरू करें ?" हम दोनों सिगरेट सुलगा चुके तो तो मैं बोला ।

उसने सहमति में सिर हिलाया ।

"तुम्हारा एम्पलायर कह रहा था कि जब से वो अपाहिज हुआ है, तुम उसके हाथ-पांव दिमाग सब कुछ हो ।"

"कल शाम तुम माथुर साहब को घर से बाहर कहीं लेकर गए थे ?"

"नहीं ।"

"कभी लेकर जाते हो ?"

"कई बार । दफ्तर के काम से तो हमेशा ।"

"लेकिन कल कहीं नहीं लेकर गए थे ?"

"नहीं ।"

"कोई और लेकर गया हो ?"

"और कौन ?"

"कोई फैमिली मेम्बर ? कोई मुलाजिम ?"

"मुझे उम्मीद नहीं ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वो एकाएक उठके चल देने वाले तो शख्स नहीं। कोई पहले से अप्वायंटमेंट होती तो मुझे उसकी खबर होती। आखिर सारा दिन तो मैं वहीं होता हूं।"

"वो अकेले जाते हैं कहीं ?"

"नहीं।"

"जा सकते हैं ?"

वो हिचकिचाया।

"टालमटोल नहीं चलेगी।" मैं चेतावनी भरे स्वर में बोला, "पहले ही बोला है। दोबारा न कहना पड़े।"

"जा तो सकते हैं।" वो बोला।

"कैसे ? व्हील चेयर लुढ़काते हुए ही ?"

"नहीं। स्टाइल से।"

"वो कैसे ?"

"उनके पास एक होंडा अकार्ड है जो बनी ही अपाहिज व्यक्ति के चलाने के लिए है। उसके सारे कंट्रोल - क्लच, ब्रेक, एक्सीलेटर वगैरह - हाथ से ओपरेट किये जाने वाले हैं और उसमें उनकी व्हील चेयर ऐन कार की ड्राइविंग सीट की जगह जाकर फिट हो जाती है। कार में पीछे की सीट नहीं है। वहां ऐसा इंतजाम है कि दरवाजा खोलने पर एक प्लेटफार्म-सा बाहर जमीन पर सरक आता है जिसके जरिए वो अपनी व्हील चेयर को कार के भीतर ले जा सकते हैं। तुमने देखा होगा कि उनकी व्हील चेयर भी छोटी-मोटी कार ही है। कार की तरह उसमें ब्रेक, एक्सीलेटर, क्लच, गियर वगैरह फिट हैं, और पेट्रोल से चलती है। एक कार्डलेस टेलीफोन तक फिट है उसमें।"

"आई सी। यानी कि मर्जी होने पर माथुर साहब का अकेले कहीं निकल पड़ना उनके लिए, कोई खास दिक्कत की बात नहीं।"

"खास क्या मामूली दिक्कत की भी बात नहीं।"

"सुधा का किस से अफेयर है ?"

वो चौंका।

"किसने कहा" वो बोला, "सुधा का किसी से अफेयर है ?"

"मैंने कहा। मैं सुधा की बहन मधु को जानता हूं। दोनों के खाविंद उम्रदराज व्यक्ति हैं। मुझे ऐसा एक हिंट मिला है कि अपने खाविंदों को धोखा देने के लिए वो एक-दूसरे की मदद करती हैं। इस मामले में उन दोनों की कोई मिलीभगत जरूर है। जरूर सुधा से मिलने के बहाने घर से अक्सर निकलती है। ऐसा ही कुछ सुधा भी जरूर करती होगी। बोलो क्या सिलसिला है ?"

वो खामोश रहा।

"नायर" मैं कर्कश स्वर में बोला, "कोई सिलसिला है, इतना तो मैं तुम्हारे चेहरे से ही पढ़ सकता हूं।"

"कुछ है भी तो उसकी बाबत जानकर तुम्हें क्या हासिल होगा ?"

"होगा। कुछ तो हासिल होगा।"

"यूं दूसरे की जाती जिंदगी के बखिए उधेड़ना...."

"मुझे पसंद है। तुम्हारी जाती जिंदगी के भी बखिए उधेड़े हैं अभी मैंने। नंगी औरत को कपड़े पहनते देखकर या औरत को नंगी होते देखकर निहाल हो जाते हो। जरूर अपने एम्पलायर के घर की औरतों को भी यूं ताड़ते होवोगे।"

"नैवर।"

"फिर भी माथुर साहब बहुत खुश होंगे तुम्हारे इस अनोखे शौक की बाबत सुनकर।"

"मत बताना उन्हें। प्लीज।"

"इतनी खिदमत मेरे से करा रहे हो, खुद कोई खिदमत नहीं करना चाहते हो। मैं तुम्हें पुलिस के हवाले न करूं। मैं तुम्हारी करतूत की खबर तुम्हारे एम्पलायर से न करूं। मैं इतना कुछ करूं। बदले में तुम कुछ भी न करो।"

"ये विश्वासघात होगा। मालिक के साथ नमक हरामी होगी। मिस्टर कोहली, प्लीज मुझे नमक हराम बनने पर मजबूर न करो।"

"तुम खामखाह जज्बाती हो रहे हो। इस पूछताछ में भी तुम्हारे मालिक की ही भलाई है। जाती तौर पर मैंने इन बातों से कुछ लेना देना नहीं है। तुम्हारे मालिक ने मुझे ये काम सौंपा है कि मैं मालूम करूं कि शहर में हुए एक कत्ल में उनकी फैमिली के किसी मैम्बर का तो कोई हाथ नहीं है। ये न भूलो कि तुम्हारा मालिक ही मेरे कहने पर तुम्हें ये हुक्म दे सकता है कि तुम मेरे हर सवाल का जवाब दो।"

वो सोचने लगा। उसने सिगरेट का एक गहरा कश लगाया।

"तुम" आखिरकार वह बोला, "हासिल जानकारी का कोई बेजा इस्तेमाल तो नहीं करोगे ?"

"नहीं।"

"वादा करते हो ?"

"हां। बेजा क्या, मुमकिन है कि जानकारी के कैसे भी इस्तेमाल की कोई नौबत न आए।"

"बात ऐसी है कि उसकी खबर अगर माथुर साहब को लग गई तो उनके दिल को बहुत सदमा पहुंचेगा।"

"नहीं लगेगी। बशर्ते कि बात का सीधा ताल्लुक कत्ल से न हुआ।"

"तो सुनो। सुधा का मनोज से अफेयर है।"

अब चौंकने की मेरी बारी थी।

"मां का" मैं धीरे से बोला, "अपने सौतेले बेटे से अफेयर है ?"

"ऐसे सौतेले बेटे से जो उम्र में मां से तीन साल बड़ा है।"

कितना फैशनेबल हो गया था बंदे का गुनहगार होना ! कितनी पोल थी दिल्ली शहर के बाशिंदों के कैरेक्टर के ढोल में। साहबान, कभी भी आप किसी गुनहगार बंदे के फौरी दीदार के तलबगार हों तो बरायमहरबानी महज इतना कीजिएगा कि किसी शीशे के सामने जाकर खड़े हो जाइएगा।

"चलता कैसे है वो सिलसिला ?" प्रत्यक्षत: मैंने पूछा, "मधु की मदद से ?"

"नहीं।" वो बोला।

"तो ?"

"उनके अपने बलबूते चलता है। बिना किसी की मदद से।"

"कहां ?"

"कोठी में ही ।"

"कैसे ?"

"हर दूसरे-तीसरे दिन मनोज शाम को दफ्तर से लौटकर नए सिरे से तैयार होकर तफरीहन घर से निकलता है और आधी रात के बहुत बाद वापस लौटता है । ऐसा उसने कोठी के हाउसहोल्ड में अच्छी तरह से स्थापित किया हुआ है । अपनी एक कार का साइलेंसर उसने बिगाड़ा हुआ है जिसकी वजह से कार खूब शोर करती है । वो शाम को उस कार पर खूब शोर मचाता घर से निकलता है और वैसे ही शोर मचाता घर लौटता है । असल में वो कार को कोठी से दूर कहीं छुपाकर खड़ी कर देता है और चुपचाप वापस लौट आता है । पिछवाड़े से चोरों की तरह कोठी में घुसता है और सुधा के कमरे में पहुंच जाता है । फिर चोरों की तरह ही बाहर निकलता है, गाड़ी काबू में करता है और शोर मचाता वापस लौट आता है । हर कोई यही समझता है कि वो शाम का गया तभी वापस लौटा था ।"

"तुम्हें कैसे मालूम है ?"

"खानसामे ने देखा अपनी आंखों से आधी रात को ।"

"नौकर-चाकर भी कोठी में ही रहते हैं ?"

"नहीं । उनके लिए अलग इमारत है । उस रात मिस्टर माथुर ने आधी रात को खानसामे को फोन करके उनके लिए दूध लाने को कहा था । उस रोज उन्हें कोई तकलीफ थी जिसकी वजह से आधी रात को ही उनकी नींद खुल गई थी । खानसामा दूध लेकर उनके कमरे में जा रहा था तो उसने मनोज को दबे पांव सुधा के कमरे से निकलते देख था ।"

"ओह !"

"लेकिन ये बात उसने किसी को बताई नहीं ।"

"सिवाय तुम्हारे ?" मैं उसे घूरता हुआ बोला ।

"हां ।"

"तुम्हें किसलिए ?"

"वो मेरा भांजा है ।"

"ओह !"

कुछ क्षण खामोशी रही ।

"माथुर साहब को" फिर मैंने पूछा, "अपनी बीवी पर शक है ?"

"तुम बताओ, नहीं होना चाहिए ?"

"तुम्हीं बताओ ।"

"शक तो वो तब भी करते थे जबकि अभी वो अपाहिज नहीं हुए थे । अपाहिज होने के बाद से तो वो बहुत ही शक्की हो गए थे । बात को अपने तक ही रखोगे, इस उम्मीद में बता रहा हूं कि पिछले डेढ़ साल से उन्होंने ऐसा इंतजाम किया हआ है कि सुधा के घर से बाहर गुजरे एक-एक मिनट की रिपोर्ट उन्हें मिले ।"

"तौबा ! इतनी लम्बी निगरानी !"

"हां ।"

"इतनी लम्बी निगरानी तो छुप भी नहीं सकती । सुधा को शर्तिया खबर होगी ऐसी निगरानी की ।"

"हो सकता है ।"

"हो सकता है नहीं, है । उसे कोठी से बाहर मनोज से मिलने की सुविधा होती तो वो दोनों कोठी के भीतर मिलने का यूं पेचीदा रास्ता न अख्तियार करते ।"

"यू आर राइट ।"

"मिस्टर नायर, अपनी जानकारी का तुम कोई बेजा इस्तेमाल तो नहीं करते ?"

"कौन सी जानकारी का ?"

"सुधा और मनोज की आशनाई की जानकारी का । जो नजारा यहां वेटरों को रिश्वत देकर छुप-छुपके करते हो, पीछे फ्लैग स्टाफ रोड पर उसी नजारे की धौंस से मांग तो नहीं करते हो ?"

"ओह माई गॉड नैवर ।"

"आगे करने का इरादा होगा !"

"मिस्टर कोहली" वो बहुत दयनीय स्वर में बोला, "आई एम नाट ए ब्लैकमेलर । आई एम ए सिक मैन । मेरा मनोविशेषज्ञ कहता है कि यह एक बीमारी होती है ।"

"ओह !"

"आई एम डिवोटीड टू माथुर फैमिली । मैं माथुर परिवार के किसी सदस्य के हित के खिलाफ जाने का सपने में भी ख्याल नहीं कर सकता । जो कुछ अभी मैंने तुम्हें बताया है, उसके लिए भी मुझे उम्र-भर पछतावा रहेगा । अब, फॉर गॉड सेक, मेरी जान छोड़िये ।

"अभी एक मिनट में । सिर्फ एक सवाल और ।"

"वो भी पूछो ।"

"मैं माथुर फैमिली के लिए तुम्हारी निष्ठा की कद्र करता हूं । अब ये बताओ किसी फैमिली मेम्बर की खातिर कत्ल कर सकते हो ?"

"बेहिचक । गोली की तरह । एक नहीं, अनेक ।"

"किया है ?"

"नहीं ।"

"कल रात साढ़े आठ बजे के करीब कहां थे ?"

"यहीं था । जिससे मर्जी पूछ लो ।"

"पुनीत खेतान तुम्हारे सामने यहां आया था ?"

"हां ।"

"कितने बजे ?"

"साढ़े आठ ।"

"और मनोज ?"

"वो कल यहां नहीं आया था ।"

"तुम तीनों एक दूसरे से वाकिफ हो । कभी यहां इकट्ठे नहीं बैठते ?"

"नहीं ।"

"क्यों ?"

"तीनों के मिजाज नहीं मिलते । जरूरतें नहीं मिलती । उम्र नहीं मिलती ।"

"ओह !"

"मेरी तो पूरी कोशिश होती है कि उनमें से किसी को पता तक न लगे कि मैं यहां हूं ।"

"हूं ।" फिर मैं एकाएक उठ खड़ा हुआ, "ओ के, नायर । फिर मिलेंगे ।"

"जरूर ।" वो भी उठा ।

"लेकिन अब्बा में नहीं ।" मैं चेतावनीभरे स्वर में बोला, "याद रखना ।"

"नेवर । यू हैव माई वर्ड ।"

***

आधी रात को मैं ग्रेटर कैलाश अपने घर जाकर लगा ।

पिंकी माथुर से आठ बजे की अप्वाइंटमेंट मैं भूला नहीं था लेकिन निर्धारित समय पर घर का रुख न करने की मेरे पास कई वजह थीं । मसलन: मैंने आधा जमा एक बराबर डेढ़ लाख रुपए की फीस कमानी थी और पिंकी से अप्वाइंटमेंट फिक्स होने के बाद से इस दिशा में मैंने बड़े अहम काम किए थे, निहायत कारआमद मालूमात की थीं ।

पिंकी ने फिर मेरे पास आना ही आना था, मेरी जेब में मौजूद वीडियो कसेट में उसकी जान जो अटकी हुई थी ।

कुछ मामलों में आपका खादिम बहुत संतोषी जीव है । बंदा एक दिन में दो भोग नहीं लगाता ।

अपने फ्लैट में पहुंचकर मैंने कपड़े तब्दील किए और फिर बैडरूम में जाकर विडियो फिल्म चलाई । विडियो फिल्म आधे से ज्यादा खाली निकली । बाकी में मैने पहले पिंकी की शशिकांत से शादी होते देखी और फिर पहले मैटकाफ रोड पर शशिकांत के विडियो पर देखे सीन का विस्तृत संस्करण देखा ।

अगले रोज नौ बजे मैने लेखराज मदान को उसके अपार्टमंट पर फोन किया ।

"ओए, कोल्ली," मेरी आवाज सुनते ही वो भड़ककर बोला, "कहां मर गया था ?"

"क्या हुआ ?" मैं बोला ।

"पूछता है क्या हुआ । ओए, सारी रात तेरे फोन का इन्तजार करता रहा मैं ।"

"मैं पहुंचा तो था तुम्हारे फ्लैट पर ।"

"क्या फायदा तब पहुंचने का । तब तो अभी मैं पुलिस के साथ फंसा हुआ था ।"

"अब मुझे क्या पता था ?"

"'कहता है क्या पता था ! वीर मेरे, फोन तो फिर भी करना चाहिए था । कुछ बताने के लिए नहीं तो कुछ पूछने के लिए ही सही ।"

"सॉरी । अब पूछ लेता हूं । कैसी बीती पुलिस के साथ ?"

"बढ़िया" अब उसके लहजे में तब्दीली आई, "खास कुछ नहीं पूछा उन्होंने मेरे से । मैंने यही कहा कि मैं तो घर पर था । बीमार था । लेटा पड़ा था ।"

"वो मान गए ? होटल में तुम्हारे बयान की तसदीक करने नहीं आए ?"

"अभी तो नहीं आए लेकिन तसदीक हो जाएगी । होटल से भी और बीवी से भी । मेरी गारंटी ।"

"फिर क्या बात है ?"

"तू क्या कर रहा है ?"

"बहुत कुछ कर रहा हूं ।"

"ओए, कुछ नतीजा भी निकल रहा है कि नहीं ?"

"निकलेगा ।"

"यानी कि अभी नहीं निकला ।"

"अभी वक्त ही कितना हुआ है !"

"वीर मेरे, फिर भी ।"

"सुनो, सुनो। पहले मेरी सुनो। पहले उसकी सुननी चाहिए जो फोन करता है।"

"सुनाओ।"

"लाश का पोस्टमार्टम हो गया ?"

"अभी नहीं। दस बजे होगा। तफ्तीश कर रहे यादव नाम के इंस्पेक्टर ने मुझे ग्यारह बजे पुलिस हैडक्वार्टर बुलाया है।"

"गुड ! मैं भी वहीं पहुंचूंगा। मुझे बाहर ही मिलना। मेरे पहुंचने से पहले भीतर इंस्पेक्टर यादव के ऑफिस में मत जाना।"

"क्यो ?"

"मैं उससे मिलना चाहता हूं। मिलने का मुझे बहाना चाहिए। खुद ही पहुंच जाऊंगा तो वो शक करेगा कि जरूर मुझे कत्ल की खबर है। तुम साथ ले के जाओगे तो शक तो वो फिर भी करेगा लेकिन तब ये सोचेगा कि तुमने अपने भाई के कत्ल की तफ्तीश के लिए मेरी सेवाएं प्राप्त की हैं और जो कुछ मुझे मालूम है वो तुमने लाश की बरामदी के बाद बताया है।"

"मैं उसे यही कहूं कि तू मेरे लिए काम आकर रहा है ?"

"नहीं। तुम कहना कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं और दोस्त के तौर पर ही तुम्हारे साथ आया हूं। आगे जो नतीजा वो निकालता है, निकालता रहे।"

"वो तुझे जानता है ?"

"बहुत अच्छी तरह से।"

"फिर तो जरा भांपने की कोशिश करना कि केस की बाबत उसकी क्या राय है।"

"और क्या मैं उसकी सेहत का हाल पूछने वहां जाना चाहता हूं ? यही इरादा है मेरा।"

"ठीक है। ग्यारह बजे मैं तुझे हैडक्वार्टर के बाहर मिलूंगा।"

"ठीक है।"

"एक बात और, कोल्ली।"

"फिर कोल्ली !"

"सुधीर।"

"बोलो।"

"भई, मेरी गैरहाजिरी में तेरा मेरे यहां आना मैं पसंद नहीं करता।"

"और मैं तुम्हारी हाजिरी में भी वहां आना पसंद नहीं करता। तभी तो तुम्हारे साथ चलने वहां नहीं आ रहा। तुम्हें पुलिस हैडक्वार्टर बुला रहा हूं।"

"तू तो खफा हो रहा है।"

"बिल्कुल नहीं। वैसे एक बात बताओ। ये पाबंदी, मेरा मतलब है तुम्हारी ये नापसंदगी, सिर्फ मेरे लिए है या हर किसी के लिए है ?"

"हर किसी के लिए है। औरों को ये बात मालूम है। तुझे अब बता रहा हूं।"

"घर आए-गए के बारे में बीवी से ही खबर लगती होगी ?"

"हां ।"

"वो बताए तो बताए, न बताए तो न बताए !"

"की मतलब ?"

"कुछ नहीं । नमस्ते ।"

मैंने लाइन काट दी ।

अपनी सैकेंड हैंड फिएट कार पर मैं नेहरू प्लेस में स्थित यूनिवर्सल इन्वेस्टीगेशन्स के नाम से जाने वाले अपने ऑफिस में पहुंचा ।

रजनी वहां पहले से मौजूद थी और हमेशा की तरह जगमग जगमग कर रही थी ।

उसे भीतर आने को कहता हुआ मैं अपने निजी कक्ष में पहुंचा । वो भी मेरे पीछे-पीछे ही वहां पहुंची । वो शलवार कमीज पहने थी और निहायत कमसिन लग रही थी ।

"दरवाजा भीतर से बंद करके कुंडी लगा दे ।" मैं सहज भाव से बोला ।

"वो किसलिए ?" वो बड़ी मासूमियत से बोली ।

"ताकि बिना विघ्न बाधा आकर मेरी गोद में बैठ सके ।"

"शर्म कीजिए । अभी तो दिन चढा है ।"

"जैसे शाम को कहता तो आके गोद मे बैठ ही जाती ।"

वो हंसी ।

"एक बात तो है !" मैं अपलक उसे निहारता हुआ बोला ।

"क्या ?" वो बोली ।

"बहुत खूबसूरत है तू ।"

"हां ।"

"क्या हां ?"

"बहुत खूबसूरत हूं मैं ।"

"हद है मॉडेस्टी तो छू तक नहीं गई तुझे ।"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

"अरे, यूं हामी भरते हैं ? यूं गोली की तरह दनदना देते हैं हां ।"

"तो और क्या करते हैं ?"

"अरे, शरमाकर, सकुचाकर निगाह झुकाकर, झुकी निगाहें फड़फड़ाकर कहते हैं कि ऐसी तो कोई बात नहीं ।"

"लेकिन जब बात ऐसी ही हो तो ?"

"अब कौन मुकाबला करे तेरी कतरनी का सवेरे-सवेरे । बैठ ।"

"गोद में आकर ?"

"अरे, कहीं भी मर ।"

वो मेरे सामने एक कुर्सी पर बैठ गई ।

"अब राजी है ?" मैं भुनभुनाया ।

"हां ।" वो बड़े इत्मीनान से बोली ।

"एक बात बता ?"

"पूछिए ।"

"मेरी पहुंच से बाहर रहना तू अपनी खूबी समझती है ?"

"हां ।"

"कहती है हां ।" मैं असहाय भाव से गर्दन हिलाता हुआ बोला ।

"जी हां ।"

"मूर्ख है तू । अरे, आदमी के बच्चे को इतना नहीं हड़काना चाहिए कि वो गेरुवें वस्त्र धारण करके हर की पौड़ी पर जा बैठने की सोचने लगे ।"

वो होंठ दबाकर हंसी ।

फिर मैंने अपनी जेब से मदान का दिया वो लिफाफा निकाला जिसमें पचास हजार रूपये के नोट थे और उसके नाम मेरे जाली हस्ताक्षरों वाली चिट्ठी थी । मैंने लिफाफा उसे सौंपा ।

"क्या है ?" वो तत्काल गंभीर होती हुई बोली ।

"खोल, देख ।"

उसने लिफाफा खोला और नोट और चिट्ठी निकाली । वो चिट्ठी पढने लगी । मैंने एक सिगरेट सुलगा लिया ।

चिट्ठी पढ चुकने के वाद उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा ।

"आप वाकई जा रहे हैं ?" वो बोली ।

"पागल है !" मैं बोला, "जा रहा होता तो ये चिट्ठी मैं तुझे खुद देता ! जब रूबरू मुलाकात मुमकिन हो तो चिट्ठी का क्या मतलब ?"

"तो फिर ?"

"रजनी, मेरा सवाल ये है कि अगर ये चिट्ठी तुझे डाक से मिलती या कोई तेरे पास इसे लेके आता तो

"मेरा भी यही ख्याल था । मेरे दुश्मनों का भी ।"

"जी !"

"ये चिट्ठी बोगस है । मैंने नहीं लिखी । इस पर हुए मेरे हस्ताक्षर जाली हैं ।"

"ऐसा क्यों ?" उसने बड़ी मासूमियत से पूछा ।

मैंने उसे चिट्ठी और नोटों से सम्बंधित किस्सा सुनाया ।

"हाय राम !" वो बोली, "तभी कल आप फोन पर कह रहे थे कि आप मरते-मरते बचे हैं ।"

"और तू मेरा मजाक उड़ा रही थी ।"

"अब मुझे क्या पता था कि सच में ही ......"

"खैर छोड़ । और मतलब की बात सुन । आगे से कभी तेरे पास मेरा कोई सन्देश या चिट्ठी आए तो उसकी तसदीक किए बिना उस पर अमल शुरू न कर देना समझ गई ।"

"हां ।"

"आखिर एक डिटेक्टिव की सैक्रेटरी है, छोटी-मोटी धोखाधडियों से खुद भी सावधान रहना सीख ।"

"सीखूंगी ।"

"एक बात बता ।"

"पूछिए ।"

"मैं मर जाता तो तुझे अफसोस होता ?"

तब पहली बार मैंने उसके चेहरे पर गहन अनुराग के भाव देखे लेकिन वो तत्काल ही एक छलावे की तरह लुप्त हो गए ।

"अभी तो नहीं होता" फिर वो सपाट सूरत के साथ बोली, "अलबत्ता एक साल बाद जरूर होता ।"

"क्या मतलब ?"

"चिट्ठी की तरह अगर ये नोट जाली नहीं है तो साल-भर की तनखाह तो हासिल थी ही मुझे । साल-भर क्या अफसोस होता ।"

"लानत ।" मैं भुनभुनाता हुआ उठ खड़ा हुआ, "लानत ।"

"कहीं जा रहे हैं ?"

"हां । दरिया में डूबने जा रहा हूं । चलोगी ?"

"पानी ठंडा होगा । मई में चलें तो कैसा रहे ?"

"अब थोबड़ा बंद कर । रिजक कमाने जा रहा हूं मैं । वो काम करने जा रहा हूं जिसके कि तु मुझे काबिल नहीं समझती ।"

"वैसे तो गलत घड़ी भी दिन में दो बार ठीक टाइम देती ही है ।" उसने मुझे नोट दिखाए, "सबूत ये रहा ।"

"लानत हई । मुझे गलत घड़ी कहती है । पता नहीं मेरे कौन से बुरे कर्मों का फल है तू ?"

"अच्छे कर्मों का ।"

"अच्छा, अच्छा । नोट संभाल के रखना ।"

"इन में से चार पैसे में खर्च लूं तो ?"

"जितने मर्जी खर्च ले । सब तनखाह में से काट लूंगा ।"

"सारे खर्च कर लूं तो जब तक आप मेरी तनखाह में से आखिरी किश्त काटेंगें, मैं चार बच्चे खिला रही होउंगी ।"

"मेरे ?" मैं आशापूर्ण स्वर में बोला ।

"आप के कैसे । दोनों काम कैसे हो सकते हैं । बच्चों का बाप बच्चों की मां से कहीं किश्तें वसूल करता है !"

"बहुत हाजिरजवाब हो गई है ।"

"सोहबत का असर है ।"

"अच्छा, अच्छा । मैं चला । ऑफिस में ही रहना ।"

"शाम को तो क्या लौटेंगें ?"

"शाम को !" मैं आखें निकालकर बोला, "मैं दोपहरबाद ही लौटूंगा । और तेरे ब्वाय फ्रेंड के साथ तुझे रंगे हाथों पकड़ूंगा ।"

वो जोर से हंसी ।

फिर मेरी भी हंसी निकल गई ।

***

इंस्पेक्टर देवेन्द्र कुमार यादव एक कोई पैंतीस साल का हट्टा-कट्टा नौजवान था। वो किसी थाने से सम्बद्ध नहीं था। वो पुलिस हैडक्वार्टर में वहां की नौवी मंजिल के एक कमरे में बैठता था और फ्लाइंग स्क्वाड के उस दस्ते से बतौर इन्वेस्टिगेटिंग ऑफिसर सम्बद्ध था जो केवल कत्ल के केसों की तफ्तीश के लिए भेजा जाता था। पहले मेरा उसका छत्तीस का आंकड़ा ही रहता था लेकिन, कर्टसी सुधीर कोहली, जबसे वो इंस्पेक्टर बना था मेरी थोड़ी बहुत कद्र करने लगा था।

मुझे मदान के साथ आया देखकर वो बहुत हैरान हुआ।

"कोल्ली मेरा यार है।" मदान बोला, "पुराना। खास।"

उसने हत्प्राण से मेरी शक्ल मिलती होने पर भी हैरानी जाहिर की।

"कहते हैं" मैं बोला, "इस दुनिया में कहीं-न-कहीं हर किसी का डबल है। मेरा राजधानी में ही निकल आया।"

उसने बड़ी गंभीरता से सहमति में सिर हिलाया।

खाकसार की जाती राय है कि सरकारी मुलाजमत में आदमी का ज्यों-ज्यों रुतबा बुलंद होता जाता है, वो संजीदा और ज्यादा संजीदा होता जाता है। संजीदगी उसकी कुर्सी से मैच करता एक अलंकरण बन जाता है।

"पोस्टमार्टम हो गया ?" मैंने सीधा सवाल किया।

"कत्ल की" वो मुझे घूरता हुआ बोला, "कितनी वाकफियत है तुम्हें ?"

"उतनी ही जितनी मदान सांहब को है। कल रात ही मेरी इन से बात हुई है।"

"कोई ऐसी बात" वो मदान से बोला, "जो आपने इसे बताई हो, हमें न बताई हो।"

"ऐसी कोई बात नहीं।" मदान बोला, फिर उसने भी पूछा, "पोस्टमार्टम हो गया ?"

"हां, हो गया।" यादव बोला, "लाश इर्विन की मोर्ग में है, जाके क्लेम कर सकते हैं आप। मैं आपको चिट्ठी दे दूंगा।"

मदान ने सहमति में सिर हिलाया।

"क्या पता लगा पोस्टमार्टम से ?" - मैं बोला।

"यही कि कत्ल" यादव बोला, "बाइस कैलिबर की गोली दिल में जा लगने से हुआ है। डॉक्टर ने कत्ल का वक्त परसों रात सात और नौ के बीच का मुकर्रर किया है। लाश बहुत देर में बरामद हुई। कत्ल से अगले दिन दोपहर बाद। इसीलिए डॉक्टर कत्ल का इस वक्फे से ज्यादा क्लोज वक्त निर्धारित नहीं कर सका। वैसे हमें एक और साधन से निश्चित रूप से मालूम है कि कत्ल आठ बजकर अट्ठाइस मिनट पर हुआ था।"

"मदान साहब ने किसी एंटीक टाइमपीस का जिक्र किया था। क्या वही है वो साधन ?"

"हां। वो घड़ी गोली लगने की वजह से आठ अट्ठाइस पर रुकी पाई गई थी।"

"मुझे मौका-ए-वारदात पर एक निगाह डालने की इजाजत मिल सकती है ?"

हकीकतन मौकाएवारदात पर एक 'और' निगाह डालने का आपका खादिम कतई ख्वाहिशमंद नहीं था। ऐसा मैंने महज यादव के जेहन में ये स्थापित करने के लिए कहा था कि मौका-ए -वारदात पर मैं अभी तक गया नहीं था और अब जा पाता तो उसके जेरेकरम ही जा पाता।

उसने घूरकर मुझे देखा।

"प्लीज।" मैं बोला।

"लंच आवर में यहां आ जाना । ले चलूंगा ।"

"शुक्रिया ।"

"पहले फोन करके आना ।"

"जरूर । अब अपनी तफ्तीश के बारे में कुछ बताओ ।"

"मेरी तफ्तीश के मुताबिक इस केस का बेसिक क्लू या तो पैटर्न ऑफ शूटिंग है, या फिर रिवॉल्वर का कैलीबर है । ये दोनों ही बातें इस बात की तरफ बड़ा मजबूत इशारा करती हैं कि कातिल कोई औरत थी । वो मकतूल से परिचित थी इसलिए मकतूल ने उसे स्टडी में रिसीव किया था जहां कि उसने रिवॉल्वर मकतूल की तरफ तानकर आंखें बंद करके गोलियां बरसानी शुरू कर दी थीं । मकतूल उस वक्त सकते की हालत में पहुंच गया होगा और इसी वजह से अपने बचाव के लिए कुछ नहीं कर सका होगा । जैसे अनाप शनाप गोलियां चली है, उसमें ये कातिल की खुश्किस्मती ही कही जा सकती है कि एक गोली, कोई सी एक गोली उसके दिल में जा धंसी ।"

"कातिल का कोई अंदाजा ?"

"अभी तफ्तीश जारी है । वैसे दो जनाना कैरेक्टर सामने आए हैं । एक सुजाता मेहरा जिसने कि लाश बरामद की और दूसरी सुधा माथुर नाम की एक महिला जिसकी खबर हमें पुनीत खेतान नाम के उस वकील से लगी है जो कि कत्ल से कोई पौना घंटा पहले तक मकतूल के साथ था ।"

"कत्ल का हथियार बरामद हुआ ?" मैंने खामखाह सवाल किया । कैसे बरामद होता, वो तो, कर्टसी सुधीर कोहली, मंदिर मार्ग पर सुजाता मेहरा के होस्टल के कमरे में उसकी बरसाती की जेब में पड़ा था ।

लेकिन यादव का जवाब फिर भी चौंका देने वाला निकला ।

"हथियार बरामद नहीं हुआ" वो बोला, "लेकिन हमें मालूम है कि वो हथियार कैसा था और उसका मालिक कौन है ।"

"वो कैसे ?"

"सुधा माथुर के बयान खातिर हम उसके पति कृष्ण बिहारी माथुर की फ्लैग स्टाफ रोड पर स्थित कोठी पर गए थे । वहां हमें मिस्टर माथुर का हथियारों का विशाल कलैक्शन दिखाई दिया था । हमने तमाम हथियारों की लिस्ट हासिल की थी और उन्हें फायर आर्म्स के रजिस्ट्रेशन के रिकॉर्ड से मिलाकर देखा था तो हमें मालूम था कि लिस्ट में एक बाइस कैलिबर की सीरियल नम्बर डी -211436 की रिवॉल्वर दर्ज नहीं की गई थी । मिस्टर माथुर से दोबारा सवाल किए जाने पर उन्होंने कहा था कि ऐसा गलती से हो गया था । लेकिन और हथियारों की तरह वो उस रिवॉल्वर को पेश नहीं कर सके थे । रिवॉल्वर कहां गायब हो गई थी, इसका कोई संतोषजनक जवाब भी वो नहीं दे सके थे । असलियत की तसदीक तो रिवॉल्वर की बरामदगी के बाद और उसके बैलेस्टिक एग्जामिनेशन के बाद ही होगी लेकिन फिलहाल मुझे पूरी-पूरी गारंटी है कि वही गुमशुदा रिवॉल्वर मर्डर वैपन है । और इसी वजह से मिस्टर माथुर के हाउसहोल्ड का हर मैम्बर और उनके यहां आने वाला हर रिश्तेदार और वाकिफकार सस्पैक्ट है ।"

"वो मेरे लिए बुरी खबर थी । पुलिस की तवज्जो इतनी जल्दी और इतनी गंभीरता से माथुर के हाउसहोल्ड की तरफ हो जाना वहां से हासिल होने वाली मेरी मोती फीस में विघ्न डाल सकता था ।

"बातचीत किस किससे हुई ?" मैंने पूछा ।

"सरसरी तौर पर अभी मिस्टर माथुर से, उनकी पत्नी सुधा माथुर से, पुनीत खेतान से और सुजाता मेहरा से हुई । बाकियों से अभी होगी । बारीकी से अभी इनसे भी होगी ।"

जो कि मेरे लिए चिंता की बात थी । कल सारा दिन जिन लोगों के पीछे मैं पड़ा रहा था, उनमें से कोई भी सहज स्वाभाविक ढंग से ही कोई ऐसी बात उगल सकता था जिससे पुलिस को ये मालूम हो जाता कि कत्ल की खबर आम होने से बहुत पहले ही मैं उन लोगों से कत्ल की बाबत पूछताछ करता फिर रहा था ।

फुर्ती बरतने में ही मेरा कल्याण था।

वहां से अब कुछ और हासिल होता मुझे दिखाई नहीं दे रहा था। वहां टिके रहना अब बेमानी था।

"चलें ?" मैं मदान से बोला।

तभी एकाएक मेज पर रखे फोन की घंटी बज उठी।

यादव ने अपना हाथ बढाकर रिसीवर उठाया और उसे कान से लगा लिया। वह कुछ क्षण हां हूं करता दूसरी ओर से आती आवाज सुनता रहा। हां हूं के अलावा जो एक पूरा फिकरा उसके मुंह से निकला था 'आपको कैसे मालूम' लेकिन लगता था कि तभी लाइन कट गई थी क्योंकि यादव ने बुरा-सा-मुंह बनाकर फोन वापस क्रेडल पर रख दिया।

"मेरे महकमे में ये बड़ा नुक्स है।" वो बोला, "सारा दिन गुमनाम टेलीफोन कॉल आती रहती हैं। और साले अपनी कहना चाहते हैं, दूसरे की नहीं सुनना नहीं चाहते। कुछ पूछने लगो तो लाइन काट देते हैं।"

मैंने बड़े सहानुभूतिपूर्ण ढंग से गरदन हिलाई।

"क्या कह रहे थे तुम ?" वो बोला।

"तुम्हारे से नहीं, मदान साहब से कह रहा था।" मैं फिर मदान से संबोधित हुआ, "चलें ?"

"ये तो अभी ठहरेंगें।" यादव मदान के बोलने से पहले बोल पड़ा, "इन्होंने लाश क्लेम करने के लिए चिट्ठी ले के जानी है।"

"तो फिर" मैं उठ खड़ा हुआ, "मैं चलता हूं।"

***

मैं फ्लैग स्टाफ रोड पहुंचा ।

मैंने अपनी कार बाहर सड़क पर ही खड़ी कर दी । उसे भीतर ले जाकर मैं उसकी तौहीन नहीं कराना चाहता था । भीतर खड़ी दर्जन भर चमचम करती देसी विलायती कारों के सामने जरूर मेरी खटारा फियेट शर्म से पानी-पानी हो जाती ।

मैं आयरन गेट पर पहुंचा तो सशस्त्र गोरखे ने मुझे पहचान कर दरवाजा खोला । मैं भीतर दाखिल हुआ ।

"गोरखा ! इस आदमी को पकड़ के रखना । खिसकने न पाए । भागने की कोशिश करे तो गोली मार देना ।"

मैंने अचकचाकर आवाज की दिशा में सिर उठाया तो कोठी की विशाल टेरेस पर मुझे ड्रेसिंग गाउन पहने पिंकी खड़ी दिखाई दी । उसकी मुट्ठियां भिंची हुई थीं और वो आंखों से मेरे ऊपर भाले बर्छियां बरसा रही थी ।

मैंने मुस्कुराकर उसकी तरफ हाथ हिलाया ।

उसने यूं एक उंगली से मुझे ऊपर आने का इशारा किया जैसे कोई मलिका किसी गुलाम को तलब कर रही हो ।

मैं ड्राइव वे में आगे बढा ।

मैं कोठी के करीब पहुंचा तो उसी क्षण मनोज बाहर निकला । मुझे देखते ही वो मेरे करीब आया और मेरी बांह पकड़कर मुझे मार्की के एक खंभे की ओट में ले गया ।

"मिस्टर कोहली !" फिर वो धीरे से बोला, "टैल मी फ्रैंकली । वाट इज युअर गेम ?"

"क्या मतलब ?" मैं बोला ।

"मेरी डैडी से बात हुई है । वो कहते हैं कि हमारी एक मिल में एक मोटी रकम का घोटाला हुआ है जिसकी तफ्तीश के लिए तुम्हारी सेवाएं प्राप्त की गई हैं ।"

"ठीक है ।"

"नहीं ठीक है । मैं माथुर इंडस्ट्रीज का एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हूं । ऐसा कोई घोटाला हुआ है तो उसकी खबर मेरे तक क्यों नहीं पहुंची ?"

"मैं क्या जानूं क्यों नहीं पहुंची । मैं तो कॉर्पोरेट फंक्शनिंग को कोई खास समझता नहीं ।"

"रात को अब्बा में तुम मेरे से शशिकांत के कत्ल की बाबत सवाल पूछ रहे थे । हमारी मिल के रकम के घोटाले में शशिकांत के कत्ल का क्या रिश्ता !"

मैंने उत्तर न दिया ।

"मिस्टर कोहली" उसने मेरी बांह थाम कर हिलाई, "कम क्लीन ।"

"मैं" मैं अपनी बांह छुड़ाता हुआ बोला, "एक वक्त में दो केसों की तफ्तीश नहीं कर सकता ?"

"कर सकते हो । एक क्या दस केसों की तफ्तीश कर सकते हो । लेकिन फिर भी हो सकता है कि जो केस मेरे डैडी ने तम्हें सौंपा है, वो उन दसों में से कोई भी न हो ।"

"ऐसा कौन-सा केस होगा ?"

"तुम्हें मालूम है । देखो, मेरे से ठीक से पेश आओगे तो घाटे में नहीं रहोगे, बल्कि बहुत फायदे में रहोगे ।"

"मैं समर्थ आदमी की दोस्ती में पूरा-पूरा यकीन रखता हूं ।"

"ये की न समझदारी की बात ।"

"लेकिन क्या ठीक से पेश आऊं मैं आपके साथ ?"

"मुझे वो असल वजह बताओ जो तुम्हें डैडी के पास लाई है ।"

"असल वजह ?"

"मेरी सौतेली मां । मिसेज सुधा माथुर ! यही है न असल वजह ?"

मैंने इन्कार में सिर हिलाया ।

"झूठ बोलने से कोई फायदा नहीं । यही है असल वजह । डैडी ने तुम्हें सुधा को इन्वेस्टिगेट करने के लिए रिटेन किया है ।"

"नहीं ।"

"खामखाह इन्कार न करो । खामखाह झूठ न बोलो ।"

"लेकिन........"

"सुनो । पहले पूरी बात सुनो । अपने प्राइवेट डिटेक्टिव के धंधे में किसलिए हो तुम ? चार पैसे कमाने के लिए । हो या नहीं ?"

"वो तो है ।"

"मैं तुम्हें आठ पैसे कमाने का मौका देता हूं । सुनो" उसका स्वर एकाएक इतना धीमा हो गया कि मैं बहुत कठिनाई से सुन सका, "सुधा के बारे में जो भी जानकारी हासिल करो, उसे डैडी के पास ले जाने की जगह पहले मेरे पास लाओ । मैं तुम्हें डबल फीस दूंगा । ओ के ।"

"आपने ये तो पूछा ही नहीं कि सिंगल फीस क्या है ?"

"कुछ भी हो ।"

"अपने डैडी से पूछेंगें ?"

"हरगिज भी नहीं । आई विल टेक युअर वर्ड फार इट । अपने और मेरे डैडी के बीच सैटल हुई जिस रकम का भी नाम तुम लोगे, मैं उससे दुगनी तुम्हें दूंगा ।"

"चाहे मैं झूठ बोल दूं ?"

"चाहे तुम झूठ बोल दो ।"

"मैं आपकी ऑफर पर विचार करूंगा ।"

"अभी भी विचार करोगे ?" वो आंखें निकालकर बोला ।

"सिर्फ शाम तक । शाम को आपको मेरा जवाब मिल जाएगा ।"

"कहां ?"

"जहां भी आप होंगें । मैं ढूंढ लूंगा आपको । आई एम ए डिटेक्टिव । रिमेम्बर ?"

वो कुछ क्षण अनिश्चित सा मुझे देखता रहा और फिर सहमति में गर्दन हिलाने लगा ।

उसे यूं ही गर्दन हिलाता छोड़कर मैं कोठी में दाखिल हुआ। सीढ़ियों के रास्ते मैं ऊपर पहुंचा।

वैसे ही फुम्फकारती वो मुझे सीढ़ियों के दहाने पर मिली।

"साले।" वो फुम्फकारी, "हरामजादे।"

"वो तो मैं हूं ही।" मैं तनिक सिर नवाकर मुस्कराता हुआ बोला।

"सन ऑफ बिच!"

"अंग्रेजी में भी वही।"

"यू लाउजी डबल क्रासिंग सन ऑफ बिच।"

"ओरिजिनल। वैरी फर्स्ट। इस जगत प्रसिद्ध बिच ने जितने सन पैदा किए हैं, सब मेरे बाद पैदा किए पहलोठी का सिर्फ मैं हूं।

उसका हाथ हवा में घूमा जो कि मैंने रास्ते में ही थाम लिया।

"जुबानी-जुबानी ठीक है।" मैं क्रूर स्वर में बोला, "हाथ चालकी नहीं चलेगी। समझ गई?"

मैंने उसकी कलाई तनिक मरोड़ी।

"छोड़ो।" वो पीड़ा से बिलबिलाती हुई बोली, "छोड़ो।"

मैंने कलाई छोड़ दी।

"अब बोलो क्या कहना है?" मैं बोला।

"तुम्हें नहीं पता क्या कहना है?" वो चीखी।

"धीरे। धीरे।"

"कल रात आठ बजे कहां मर गये थे?"

"मर ही गया था।" मैं बड़े दयनीय स्वर में बोला।

"क्या हुआ था?" वो गुस्सा छोड़कर सकपकाई।

"पुलिस ने पकड़ लिया था।"

"क्या?"

"बोले उग्रवादी है। बोलो, मैं उग्रवादी लगता हूं?"

"नहीं।"

"घंटा बैठाए रखा तो कहीं जाके छोड़ा।"

"मैं डेढ़ घंटा तुम्हारे फ्लैट के सामने एडियां घिसती रही।"

"छूटने के बाद आधा घंटा रास्ते में ही लग गया था न।" मैंने जल्दी से जोड़ा, "बस तुम गई ही होगी तो मैं पहुंच गया होऊंगा।"

"मैं और इन्तजार कर लेती। तब मुझे पता थोड़े ही था कि तुम..."

"वही तो । आई एम सॉरी, स्वीटहार्ट । तुम्हें तकलीफ हुई ।"

"तकलीफ तो बहुत हुई ।" वो अनमने स्वर में बोली, "कभी ऐसे किसी का इन्तजार नहीं किया मैंने । लेकिन....खैर । फिल्म कहां है ?"

"तुम्हारा कमरा कहां है ?"

उसने पीछे एक बंद दरवाजे की ओर इशारा किया ।

"वहां टीवी, वीसीआर हैं ?"

"हैं ।"

"इस वक्त अपने कमरे में जाकर फिल्म देख सकती हो ?"

"बड़े आराम से ।"

"तो ये लो कैसेट ।" मैं बोला, "जाकर फिल्म देखो । मैंने जरा तुम्हारे डैडी से मिलना है ।"

उसने बड़ी व्यग्रता से सहमति में सिर हिलाते हुए कैसेट ले लिया ।

"कहां मिलेंगे, माथुर साहब ?" मैंने पूछा ।

"नीचे नायर के पास चले जाओ । मिलवा देगा ।"

मैं वापस सीढियां उतर गया ।

उस रोज भी कृष्ण बिहारी माथुर से मेरी मुलाकात शूटिंग रेंज पर ही हुई । उस रोज भी मैंने उसे रायफल से टारगेट प्रैक्टिस करते पाया जो कि मेरे लिए अच्छा ही था । जो कुछ मैं उससे कहने वाला था उसके लिए मेरा उससे तनहाई में मिलना जरूरी था ।

मैं हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया ।

उसने गर्दन के हल्के से झटके से मेरा अभिवादन स्वीकार किया, अपनी व्हील चेयर का रुख थोड़ा मेरी तरफ किया और रायफल को व्हील चेयर के साथ टिकाकर खड़ा किया ।

"आओ, मिस्टर कोहली" वो बोला, "जरूर कोई अच्छी खबर लाए हो ।"

"अभी नहीं, सर ।" मैं अदब से बोला ।

"तो" वो तनिक रुष्ट स्वर में बोला, "फिर कैसे आए हो ?"

"कुछ कहने आया हूं, कुछ पूछने आया हूं कुछ याद दिलाने आया हूं ।"

"हम सुन रहे हैं ।"

"मैंने आपसे कल भी कहा था कि क्लायंट और प्राइवेट डिटेक्टिव का रिश्ता मरीज और डॉक्टर जैसा होता है । जैसे ...."

"हमें याद है । भूले नहीं हैं हम । तुम्हारी बात से इत्तफाक भी है हमें ।"

"फिर भी आपने मेरे से झूठ बोला ।"

"क्या बकते हो ?"

"एक नहीं, दो बातों में । परसों शाम चार बजे आपने शशिकांत से फोन पर बात की थी । लेकिन आपने मुझे नहीं बताया । परसों रात आप उसकी कोठी पर भी गए थे लेकिन आपने ये बात मेरे से छुपा कर रखी ।"

"झूठ ।"

"कौन-सी बात झूठ है, टेलीफोन कॉल वाली या शशिकांत से मिलने जाने वाली या दोनों ?"

उसने उत्तर न दिया ।

मैने जेब से कल हासिल हुआ दस हजार रुपये का चैक निकाला और उसकी कुर्सी के पहलू में पड़ी उस टेबल पर रख दिया जिस पर कारतूस के डिब्बे और रिवॉल्वर पड़ी थीं ।

"ये आपका चैक है" मैं बोला, "जो कल आपने मिस्टर नायर से बतौर रिटेनर मुझे दिलवाया था । साफगोई से परहेज रखने वाले क्लायंट की कोई खिदमत कर पाने में मैं अपने आपको नाकाबिल पाता हूं ।"

"तुम्हें फीस से मतलब होना चाहिए ।"

"दुरुस्त फरमाया आपने । अमूमन फीस से ही मतलब होता है । हराम के पैसे से भी मुझे परहेज नहीं । लेकिन हराम की फीस से मुझे परहेज है । मेरी ये हरकत मेरा धंधा बिगाड़ सकती है । जैसे कल आपने मेरे बारे में किसी से पुछवाया तो आपको अच्छा-अच्छा सुनने को मिला, वैसे ही आइन्दा दिनों में कोई आपसे मेरे बारे में सवाल करेगा तो आपका जवाब यही होगा कि निकम्मा आदमी है सुधीर कोहली । मोटी फीस भी खा गया और कोई काम भी करके न दिखा सका । सर, मेरा धंधा माउथ टू माउथ रिक्मेंडेशन से चलता है । लोग मेरा कोई इश्तिहार पढ के मेरे पास नहीं आते । एक संतुष्ट क्लायंट ही दूसरा क्लायंट भेजता है मेरे पास । आप समझ रहे हैं न मेरी बात ?"

उसने कोई उत्तर न दिया ।

"सर, मैं ऐसे क्लायंट के लिए काम करना अफोर्ड नहीं कर सकता जो खुद ही नहीं चाहता कि मैं कामयाब होऊं ।"

"ऐसी बात नहीं है ।"

"तो फिर झूठ क्यों ? छुपाव क्यों ? पर्दादारी किस लिए ? जो बातें मैने कही, उन दोनों की हकीकत के सबूत हैं मेरे पास ।"

"क्या सबूत हैं ?"

"मैं अभी पेश करता हूं । पहले कौन-सी बात का सबूत चाहते हैं आप ?"

"पहले पहली बात की बाबत ही बोलो ।"

"जो मैं कहूंगा, वो अगर सच होगा तो आप हामी भरेंगें ?"

"जरूर ।"

"परसों शाम चार बजे आपने शशिकांत को उसकी कोठी पर फोन किया था ।"

"झूठ । हम कभी किसी ऐरे-गैरे को फोन नहीं करते ।"

"तो उसने आपको किया होगा ।"

वो फिर खामोश हो गया ।

"उस वार्तालाप का एक गवाह है ।" मैं बोला, "जिसने साफ शशिकांत को माथुर नाम लेते सुना था । वो माथुर या आप हो सकते हैं या आपके साहबजादे । कल मैंने ज्यादा दबाव देकर इस बाबत आपसे इसलिए नहीं पूछा था

क्योंकि मैं पहले आपके साहबजादे से बात कर लेना चाहता था । आपके साहबजादे उस टेलीफोन कॉल से इन्कार करते हैं । चाहे तो बुलाकर खुद तसदीक कर लें ।"

"कोई जरूरत नहीं । वो माथुर हम ही थे जिनसे उस शख्स ने बात की थी । वो कई दिनों से हमसे बात करने को तड़प रहा था परसों उसकी कॉल आई थी तो हमने उस बेहूदगी को खत्म करने के लिए उससे बात करना गवारा कर लिया था ।"

"आई अंडरस्टेंड । बात क्या हुई ?"

"कुछ भी नहीं । वो घटिया आदमी फोन पर कुछ बताना ही नहीं चाहता था । वो तो बातचीत के लिए शाम साढ़े आठ बजे हमें अपनी कोठी पर आने को कह रहा था । यूं दबाव में आकर तो हम कभी किसी अमीर उमरा से मिलने नहीं गए । हम तो उसकी इस गुस्ताखी पर ही भड़क उठे थे कि वो हमें अपने यहां आने के लिए कह रहा था ।"

"नतीजतन आपने उससे कहा था कि अगर आपको उसके घर आना पड़ा तो आप उससे बात करने नहीं, उसे शूट करने आएंगें ।"

उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा ।

"वो वार्तालाप किसी तीसरे शख्स ने सुना था । मैंने पहले ही अर्ज किया है ।"

"ओह ।"

"सर, आपको पहले मालूम नहीं था लेकिन क्या अभी भी नहीं मालूम कि शशिकांत आपसे क्या चाहता था ?"

"नहीं । अभी भी नहीं मालूम ।"

"जानना चाहते हैं ?"

"हां । जरूर ।"

"वो आपके सामने आपका दामाद होने का दावा पेश करना चाहता था ।"

"क्या !"

"और इस बिना पर आपको ब्लैकमेल करना चाहता था ।"

"क्या बकते हो ?"

"उसका कहना था कि उसने नेपाल में पिंकी से शादी की थी और उस शादी के सबूत के तौर पर उसके पास शादी की वीडियो फिल्म उपलब्ध थी ।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"सर, मेरी हर जानकारी पर सवालिया निशान न लगाइए । मालूमात से ही तो मेरा कारोबार चलता है ।"

"ऐसा नहीं हो सकता । हम पिंकी से बात करेंगे । हम अभी पिंकी से बात करेंगें ।"

"अब वो बातचीत बेमानी होगी ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि आपका दामाद होने का दावा करने वाला शख्स मर चुका है ।"

"लेकिन ....लेकिन...वो वीडियो फिल्म...."

"मेरे पास है ।"

"तु... तुम्हारे पास ?"

"जी हां ।"

"तुमने देखी वो फिल्म ?"

"जी हां ।"

"क्या वाकई उस आदमी ने.... पिंकी से.... शादी..."

"शादी तो दर्ज है उस कैसेट में लेकिन सर, पिंकी की हालात से साफ जाहिर होता था कि उसे तो खबर तक न थी कि उसके साथ क्या बीत रही थी । वो किसी तीखे नशे की गिरफ्त में मालूम होती थी और यंत्रचालित मानव की तरह उससे जो कहा जा रहा था, वो कर रही थी । कहने का मतलब ये है कि वो फिल्म धोखे से तैयार की गई थी आप पर दबाव बनाने के लिए ।"

"लेकिन जब तुम कहते हो कि साफ पता लग रहा था कि वो शादी फर्जी थी तो फिर दबाव कैसे बनता ? जब पिंकी को नशा कराके, उसे बेसुध करके वो सब कुछ ....."

"वही सब कुछ होता, सर, तो कोई बात नहीं थी लेकिन उस कैसेट में और भी कुछ था ।"

"और क्या था ?"

"और वही था जो शादी के बाद होता है । सुहागरात ।"

"ओह, माई गॉड ।"

"आप पर मेन प्रेशर पॉइंट तो वही साबित होता, सर ।"

"तुमने कहा कि वो कैसेट तुम्हारे पास है ?"

"जी हां ।"

"हमें दो ।"

"आप क्या करेंगें ?"

"हम खुद तसदीक करेंगे कि उस कैसेट में वो सब कुछ है जो कि तुम कह रहे हो कि है ।"

"बेटी की उरियानी देख सकेंगें ?"

वो खामोश हो गया । उसने जोर से थूक निगली ।

"वो...... वो कैसेट" कई क्षण बाद वो फंसे स्वर में बोला, "नष्ट होना चाहिए ।"

"हो जाएगा ।" मैं बोला ।

"हमें तसल्ली होनी चाहिए कि वो नष्ट हो गया है वरना हमें उम्र भर फिक्र लगी रहेगी कि किसी दिन कहीं तुम ही... तुम ही ...."

"कहीं मैं ही ब्लैकमेलिंग पर न उतर आऊं ? यही कहने जा रहे थे न आप ?"

उसने उत्तर न दिया ।

"मेरा ऐसा इरादा होता तो मैं आइन्दा किसी दिन का इन्तजार क्यों करता ? आज के दिन में क्या खराबी है ?"

"हम शर्मिंदा हैं, बेटा लेकिन हम भी क्या करें ! हम सिर्फ कृष्ण बिहारी माथुर नहीं, एक बेटी के बाप भी हैं । औलाद कितनी ही नालायक क्यों न हो, उसकी फिक्र मां-बाप ने ही करनी होती है, उसके रास्ते के कांटे मां बाप ने ही बीनने होते हैं । अब पिंकी की मां तो है नहीं ...."

"आई अंडरस्टैंड, सर । वो कैसेट मैंने पिंकी को सौंप दिया है । इस वक्त अपने कमरे में बैठी वो उस कैसेट की फिल्म ही देख रही है । आप खुद ही कल्पना कर सकते हैं कि देख चुकने के बाद वो फिल्म की क्या गत बनाएगी ।"

"क्या गत बनाएगी ?"

"समझदार होगी तो फिल्म की राख तक का पता नहीं लगने देगी ।"

"होगी समझदार ?"

"क्यों नहीं होगी ? आखिर बेटी किस की है !"

उसने सहमति में सिर हिलाया । वो कुछ क्षण खामोश रहा और फिर बोला, "हम शर्मिंदा हैं कि हमने तुम्हारी नीयत पर, तुम्हारे कैरेक्टर पर शक किया ।"

"जाने दीजिए । मेरी नीयत बद है और कैरेक्टर खराब है ।"

"तुम मजाक कर रहे हो ।"

"यही समझ लीजिए ।"

"हम तुम्हारी फीस में कोई इजाफा......"

"फिर वो फीस नहीं, रिश्वत बन जाएगी ।"

"तुम हमारी समझ से बाहर हो ।"

"बात कुछ और हो रही थी । बात दूसरी बात की, शशिकांत से आपके मिलने जाने की, हो रही थी ।"

"दूसरी बात झूठ है ।" पलक झपकते ही वो फिर पहले वाला सर्वशक्तिमान माथुर बन गया, "हम उसके यहां कभी नहीं गए ।"

"लेकिन साढे आठ बजे की अपोइंटमेंट....."

"वाट अपोइंटमेंट ?" वो झुंझलाया, "देयर वाज नो अपोइंटमेंट, मिस्टर कोहली । वो चाहता था हम उसके यहां जाएं । हम नहीं चाहते थे कि हम उसके यहां जाएं । हम ऐसे बिलो डिग्रिटी आदमी की मेजबानी कबूल करते जिसकी हमें सूरत भी देखना गवारा नहीं था ?"

"तो आप नहीं गए थे ?"

"हमने ख्याल तक नहीं किया था जाने का ।"

"सच कह रहे हैं ?"

"वाट नानसेन्स !"

"आप एक बार झूठ बोल चुके हैं । कल आपने शशिकांत से वाकफियत होने से इन्कार किया था ।"

"क्या वाकफियत थी हमारी उस शख्स से? हमने कभी सूरत तक नहीं देखी उसकी ।"

"आपने नाम तक से नावाकफियत जाहिर की थी।"

"हां, उस मामूली-सी गलतबयानी के खतावार हम हैं।"

"लेकिन ये आप सच कह रहे हैं कि आप कल रात वहां नहीं गए थे ?"

"हां।"

"चाहे तो जा सकते थे ? अकेले ?"

वो हिचकिचाया।

"'मेरे को आपकी उस हैंडीकैपड पर्सन वाली होंडा अकॉर्ड की खबर है जिसके स्टीयरिंग के पीछे तक आपकी ये व्हील चेयर चढ़ जाती है और जिसके सारे कंट्रोल हाथों से आपरेट किए जाते हैं।"

"कैसे जाना ?" वो मुंह बाए मुझे देखता हुआ बोला।

"आई एम ए डिटेक्टिव। रिमेम्बर !"

"कैसे जाना ?"

"दैट इज बिसाइड दि पॉइंट , सर। कैसे भी जाना। जाना। पहले भी अर्ज किया है, फिर अर्ज करता हूं, सर कि मेरी हर जानकारी पर सवालिया निशान न लगाइए। बात सच नहीं है तो साफ कहिए।"

"बात सच है और तुम्हारे सवाल का जवाब भी ये है कि हम चाहते तो बिना किसी की मदद के वहां जा सकते थे।"

"आप गए थे ?"

"नहीं।"

"मेरे पास सबूत है कि आप वहां गए थे।"

"क्या सबूत है ?"

"आपकी व्हील चेयर के टायरों के निशान शशिकांत की कोठी के ड्राइव-वे में बने पाए गए हैं।"

वो खामोश हो गया।

"पुलिस ने तो" फिर वो बोला, "ऐसे निशानों का कोई जिक्र नहीं किया था।"

"पुलिस की तवज्जो नहीं गयी होगी उन निशानों की तरफ।"

"जब तुम्हारी गई थी तो उनकी तवज्जो...."

"न जाना कोई बड़ी बात नहीं। उन्हें केस की तफ्तीश की लाख रुपया फीस नहीं मिलती।"

"वो निशान कहां पाए गए थे ?"

"बताया तो था। ड्राइव-वे पर।"

"मेरा मतलब है कहां से कहां तक ?"

"पूरे ड्राइव-वे पर। बाउंड्री वाल में बने आयरन गेट से लेकर कोठी के प्रवेशद्वार तक। आगे भीतर पक्का फर्श था या कार्पेट था इसलिए वहां निशान नहीं बन पाए थे।"

"आयरन गेट बंद नहीं रहता ?"

"नहीं । उसमें कोई नुक्स है । वो झूलकर अपने आप खुल जाता है और अमूमन खुला ही रहता है । भीतर से ताला ही लगाया जाए वो अपनी जगह पर टिकता है । और ताला सुना है कि रात में ही लगाया जाता है ।"

"और तुम कहते हो कि निशान हमारी व्हील चेयर से बने थे ।"

"क्या ऐसा नहीं है ?"

"बात को समझो । वो निशान व्हील चेयर के थे, कबूल । लेकिन वो हमारी ही व्हील चेयर के थे, ये कैसे कह सकते हो ?"

"क्योंकि व्हील चेयर इस्तेमाल करने वाले इस केस से ताल्लुक रखते वाहिद शख्स आप हैं ।"

उसने अट्टहास किया ।

मैंने सकपकाकर उसकी तरफ देखा ।

"मिस्टर" वो पूर्ववत हंसता हुआ बोला, "जैसे हम टांगों से लाचार हैं, वैसे ही तुम हमें दिमाग से भी लाचार तो नहीं समझ रहे हो ?"

"मैं कुछ समझा नहीं ।"

"फर्ज करो हम वहां गए । अपनी हैंडीकैपड पर्सन वाली होंडा अकार्ड खुद चलाते हुए हम वहां गए । अब वहां आयरन गेट या बंद रहा होगा या खुला रहा होगा । बंद वो तभी रह सकता है जबकि उसे ताला लगा होगा । ओ के ?"

"यस सर ।"

"अपनी आमद की तरफ उसकी तवज्जो दिलाने के लिए हम क्या करेंगे ?"

"आप घंटी बजाएंगें ।"

"वहां आयरन गेट पर घंटी भी है ?"

"जी हां । वहां भी और भीतर भी ।"

"हमें नहीं मालूम था । हम तो कार के हार्न की बाबत सोच रहे थे । बहरहाल चाहे होर्न बजा हो, चाहे घंटी बजी हो, वो कोठी से निकलकर आयरन गेट तक जरूर आएगा ।"

"जाहिर है । फाटक खुलेगा तो आप भीतर दाखिल होंगें ।"

"वो ही आएगा । क्योंकि अखबार में भी छपा है कि वो उस वक्त घर में अकेला था ।"

"जी हां ।"

"तो फिर हमने उसे आयरन गेट पर ही गोली क्यों नहीं मार दी ?"

"सड़क पर आवाजाही होगी ।"

"पागल हुए हो ! हम क्या मैटकाफ रोड को जानते नहीं । इस मौसम में उधर अंधेरा होने के बाद वहां सड़क पर बंदा नहीं दिखाई देता ।"

मैं खामोश रहा ।

"वैसे हमारे पास आवाजाही का भी जवाब है । वहां ऐसा कोई माहौल होता तो चलने-फिरने से लाचार होने की

दुहाई देकर हम शशिकांत को कार में अपने साथ बिठाते, उसे कार में ही शूट करते और रात में किसी सुनसान जगह पर लाश को धकेल कर घर आ जाते । अब बोलो, मिस्टर डिटेक्टिव ?"

"गेट खुला होगा ।"

"उस सूरत में हम कार बाहर छोडकर अपनी कुर्सी लुढ़काते हुए अंदर तक क्यों जाते, व्हील चेयर पर लुढकते फिरने का क्या हमें शौक है? तब कार को ही कोठी के भीतर ऐन प्रवेश द्वार तक ले जाना आसान काम न होता ?"

"होता ।" मैंने कबूल किया ।

"और फिर सौ बातों की एक बात । फोन पर हम कह नहीं सकते थे कि हम अपाहिज थे, आ जा नहीं सकते थे, इसलिए मुलाकात के लिए वो आए ।"

"मुलाकात के लिए उसे यहां आने को कहा जा सकता था लेकिन कत्ल के लिए तो जाना पड़ता है न, सर !"

"बाईस कैलिबर की खिलौना रिवॉल्वर साथ ले के, कुल जहान के फायर आर्म हमारे यहां उपलब्ध हैं । शूटिंग हमारी हॉबी है और कत्ल के लिए हम चुनते हैं एक मामूली, नाकाबिलेएतबार, जनाना हथियार । और उससे भी अपने मकसद में कामयाब होने के लिए हमें छः गोलियां चलानी पड़ी तो लानत है हमारी मार्क्समैनशिप पर ।"

"मैं आपसे सहमत हूं सर, लेकिन ये हकीकत फिर भी अपनी जगह पर कायम है कि मौकाएवारदात पर व्हील चेयर के पहियों के निशान थे ।"

"वो जरूर किसी ने हमें फसाने के लिए बनाए थे ।"

"किसने ?"

"जिस किसी ने भी हमारा और शशिकांत का टेलीफोन पर हुआ वार्तालाप सुना होगा । मसलन तम्हारे उस गवाह ने जिसने तुम्हें बताया है कि हमने फोन पर कहा था कि अगर हमें शशिकांत के घर जाना पड़ा तो हम उससे बात करने नहीं, उसे शूट करने जाएंगे । तुम्हारा वो गवाह क्या कोई औरत है ?"

"है तो औरत ही ।"

"तो फिर ये जरूर उसी की करतूत है । उसी ने घटनास्थल पर व्हील चेयर के निशान बनाकर हमें फंसाने की कोशिश की है । उसी ने ये स्थापित करने की कोशिश की है कि हम सच में ही शशिकांत को गोली मार देने के लिए उसकी कोठी पर पहुंच गए थे ।"

"आई सी ।"

"हमें वैसे भी पुलिस की इस थ्योरी पर एतबार है कि ये काम किसी औरत का है जिसने कि रिवॉल्वर का रुख मरने वाले की ओर किया और आखें बंद करके उसका घोड़ा खींचना शुरू कर दिया ।"

"यूं खौफ खाकर रिवॉल्वर चलाने वाली औरत से आप उम्मीद करते हैं कि कत्ल के बाद भी घटनास्थल पर व्हील चेयर के पहियों के निशान प्लांट करने के लिए ठहरी होगी वो । वो क्या गोलियां खत्म होते ही रिवॉल्वर फेंककर भाग न खड़ी हुई होगी ?"

"अब हम क्या कहें, भई ! डिटेक्टिव तुम हो, हम तो नहीं ।"

"आप को मालूम है कि कत्ल के संभावित वक्त पर मिसेज माथुर घर पर नहीं थी ?"

वो कुछ क्षण हिचकिचाया और फिर उसने सहमति में सिर हिलाया ।

"कैसे मालूम हुआ ? पुनीत खेतान के बयान के बाद पुलिस के मिसेज माथुर से पूछताछ करने आने से ?"

"नहीं । हमें तो परसों से मालूम था । तभी मालूम था जबकि वो कोठी से गई थी ।"

"तब आप जाग रहे थे ?"

"हां ।"

"आपने मिसेज माथुर का दिया सिडेटिव नहीं खाया था ?"

"खाया था । फिर भी जाग रहे थे । हमारे दिमाग पर फिक्र का बोझ हो तो सिडेटिव हमारे पर असर नहीं करता । परसों उस आदमी की फोन कॉल ने हम बहुत डिस्टर्ब किया था । सिडेटिव खाने के बावजूद हमें नींद नहीं आई थी ।"

"या शायद आपने सिडेटिव खाया ही नहीं था ।" मैं अपलक उसे देखता हुआ बोला, "इसलिए क्योंकि मिसेज माथुर के लिए आई फोन कॉल के बाद ही वो आपको सिडेटिव देने पहुंच गई थीं ।"

उसने उत्तर न दिया । वो परे देखने लगा ।

"खैर छोड़िये ।" मैं बोला, "तो परसों रात आपने मिसेज माथुर को यहां से निकलकर चुपचाप कहीं जाते देखा था ?"

"हां ।"

"लौटते भी देखा था ?"

"हां ।"

"आपने पूछा था कि वो कहां गई थी ?"

"नहीं ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वो मेरी उम्मीद से बहुत जल्दी लौट आई थी । किसी फाश इरादे से वो घर से निकली होती तो इतनी जल्दी न लौटी होती ।"

"फौरन न सही, बाद में भी कुछ नहीं पूछा था आपने इस बाबत ? शक की बिना पर नहीं तो उत्सुकतावश ही सही ।"

"बाद में भी नहीं पूछा था ।" वो धीरे से बोला ।

"आपके कहने के ढंग से लगता है कि बाद में भी न पूछने की कोई जुदा वजह थी ।"

"हां । वजह तो जुदा ही थी ।"

"क्या ?"

"अब क्या बताऊं ?"

"मैं बताता हूं । तब तक आपको शशिकांत के कत्ल की खबर लग चुकी थी और उस बाबत जो बातें मालूम हुई थीं, उन्होंने आपको ये सोचने पर मजबूर कर दिया था कि शायद मिसेज माथुर ने ही कत्ल किया था । देखिए न, रिवॉल्वर उन्हें आसानी से उपलब्ध । ऐन कत्ल के वक्त वो मौकाएवारदात पर उपलब्ध । हालात का इशारा कातिल किसी औरत के होने की तरफ । आपने ऐसा सोचा हो तो क्या बड़ी बात थी ?"

"यही बात थी । हमने इसीलिए सुधा से कोई सवाल नहीं किया था । इसीलिए हमने उस पर ये भी जाहिर नहीं होने दिया था कि हमें मालूम था कि वह परसों शाम को चुपचाप घर से निकली थीं ।"

"मिसेज माथुर के पास कत्ल का क्या उद्देश्य रहा होगा ?"

"शायद पिंकी की खातिर उसने ऐसा किया हो ।"

"कमाल है, सर ! एक तरफ आप बीवी के कैरेक्टर पर शक करते हैं और दूसरी तरफ आप उसके कैरेक्टर को इतना ऊंचा उठा रहे हैं कि समझते हैं कि वो आपकी औलाद की खातिर, जो कि उसकी कुछ भी नहीं लगती, अपनी जान जोखिम में डालकर किसी का कत्ल कर सकती है । एक ही औरत बीवी के रोल में तो हर्राफा और सौतेली मां के रोल में सती सावित्री !"

वो खामोश रहा । एकाएक वो कुछ विचलित दिखाई देने लगा ।

"ये तो आप मानते हैं न कि जिस किसी ने भी कत्ल किया होगा, मौकाएवारदात पर व्हील चेयर के पहिये के निशान भी उसी ने बनाए होंगे ?"

"और कौन बनाएगा ?"

"एग्जेक्टली । अब आप ये बताइये कि ऐसा क्योंकर मुमकिन है कि कोई औरत बेटी को बचाने के लिए कत्ल करे और उसी कत्ल में बाप को फंसाने का सामान कर दे ?"

"हो तो नहीं सकता ऐसा ।

"कबूल करते हैं फिर भी बीवी पर कातिल होने का शक करते हैं ।"

वो खामोश रहा । उसने बेचैनी से व्हील चेयर पर पहलू बदला ।

"मुझे लगता है कि आपको तो खुशी होगी कि अगर आपकी बेटी किसी स्कैंडल का शिकार होने से बच जाए और आपकी बीवी कत्ल के इलजाम में पकड़ी जाए, बीवी का क्या है, वो तो और आ जाती है । लेकिन औलाद और वो भी पली-पलाई ......"

"ओह, शटअप ।" वो चिढकर बोला "अब इतने भी कमीने नहीं हैं हम ।"

"जरूर नहीं होंगे । दरअसल मैं इतना ही कमीना हूं । कमीने आदमी को कमीनी बात जरा जल्दी सूझती है न ।"

"मिस्टर कोहली, तुम हमारी समझ से बाहर हो ।"

"सर, आप जरा शशिकांत वाली टेलीफोन कॉल को फिर अपनी तवज्जो में लाइए । हर टेलीफोन कॉल के दो सिरे होते हैं । शशिकान्त वाले सिरे की बाबत मैंने आपको बताया । अब अपने सिरे की बाबत आप मुझे बताइए ।"

"क्या बताऊं ?"

"उस फोन कॉल के दौरान आपके करीब कौन था ?"

"कई जने थे । सुधा थी, जिसने कि फोन मुझे दिया ही था । नायर था जो कि होता ही है यहां । खेतान था । मनोज भी था शायद । हां, था ।"

"इन सबको मालूम था कि आप शशिकांत से बात कर रहे थे और इन सब ने आपको फोन पर ये कहते सुना था कि अगर आपको शशिकांत के घर जाना पड़ा तो आप उससे बात करने नहीं, उसे शूट करने जाएंगें ?"

"हां ।"

"मिसेज माथुर और मनोज शाम चार बजे घर होते हैं ?"

"मनोज नहीं होता । वो तो इत्तफाक से ही उस रोज, उस वक्त घर था । सुधा का कोई नियमित कार्यक्रम नहीं

होता। कई बार तो वो ऑफिस जाती ही नहीं। जाती है तो जल्दी लौट आती है। दरअसल इंटीरियर डेकोरेटर का कारोबार उसका कैरियर नहीं, हॉबी है। वक्त गुजारी का शगल है।"

"आई अंडरस्टैंड। और खेतान साहब उस रोज...."

मैं बोलता-बोलता रुक गया।

मेरी निगाह पुनीत खेतान पर पड़ी जो कि उधर ही चला आ रहा था।

वो करीब पहुंचा। उसने माथुर का अभिवादन किया और मेरे से हाथ मिलाया।

"बड़े बेमुरब्बत हो, यार।" वो शिकायतभरे स्वर में बोला, "कल चुपचाप ही खिसक आए।"

"सॉरी।" मैं खेदपूर्ण स्वर में बोला।

"मैं तो इंतजार करता रहा। घर चले गए थे या मैडम ने रोक लिया था ?"

"घर चला गया था।"

"केस की क्या प्रोग्रेस है ?"

"अभी तफ्तीश जारी है।"

"सर" वो माथुर से सम्बोधित हुआ, "डिटेक्टिव आपने स्मार्ट चुना है।"

माथुर ने मुस्कराते हुए सहमति में सिर हिलाया।

"मुजरिम की खैर नहीं।" खेतान बोला।

"मुजरिम की खैर तो कभी भी नहीं होती।" मैं बोला।

"मेरा मतलब है तुम्हारे सदके मुजरिम की खैर नहीं।"

"वो भी कभी नहीं होती।"

खेतान हंसा।

"आदमी दिलचस्प हो।"

"पुलिस से आपकी बात हुई ?"

"हां। तुम्हारे सामने ही तो मैं गया था मैटकाफ रोड शक्ति नगर से।"

"मेरा मतलब है उसके बाद ?"

"उसके बाद और तो कोई बात नहीं हुई।"

"आई सी।"

"सर !" वो माथुर से सम्बोधित हुआ, "यहां भी तो आए थे वो ?"

"हां।" माथुर बोला, "एक यादव करके इंस्पेक्टर आया था। बहुत कान खा के गया। पिंकी और मनोज से भी बात करना चाहता था लेकिन वो कल घर पर नहीं थे। आज फिर आने को कह कर गया था। अभी तक तो आया नहीं।"

"वक्त ही खराब करेगा अपना ।"

"उसकी ड्यूटी है । उसे बजाने दो ।"

"आज शूटिंग कैसी चली, सर ?"

"वैसी ही जैसी हमेशा चलती है । नथिंग अनयूजल ।"

"मैं ट्राई करूं जरा ?"

"हां, हां । क्यों नहीं ।"

खेतान ने मुझे आंख मारी और रायफल उठा ली ।

अगले पांच मिनट में उसने टारगेट पर दस फायर किए जिसमें से चार, एन सेंटर में लगे, पाच सेंटर से अगले दायरे में लगे और सिर्फ एक टारगेट के बिल्कुल बाहरले दायरे में लगा ।

"आप ट्राई कीजिए सर ।" फिर वह माथुर से बोला ।

"मिस्टर डिटेक्टिव को दो ।" माथुर बोला ।

"ओह, नो, सर ।" मैंने तत्काल प्रतिवाद किया, "मैंने कभी रायफल नहीं चलाई, सर ।"

"कोई बात नहीं । अब चला.लो ।"

"सर, सुना है अनाड़ी पहली वार रायफल चलाए तो रिकायल से कंधा तोड़ बैठता है ।"

दोनों ने बड़ा फरमायशी अट्टहास किया ।

"किससे सुना है ?" खेतान बोला ।

"ये तो ध्यान नहीं लेकिन बात तो सच है न ?"

"भई, बट का धक्का तो लगता है लेकिन यूं किसी का कंधा टूट गया हो, ये तो तुम्हारे से ही सुन रहे हैं ।"

मैं हंसा ।

खेतान ने रायफल माथुर को दी ।

माथुर ने भी दस फायर टारगेट पर किए ।

उसकी तीन गोलियां तो टारगेट से टकराई ही नहीं, पांच बाहरले रिंग में लगीं और दो उससे अगले रिंग में ।

"आज आपका मूड नहीं मालूम होता, सर ।" खेतान बड़े अदब से बोला ।

"ऐसा ही है कुछ ।"

"रिवॉल्वर ट्राई करें सर ?"

माथुर ने सहमति में सिर हिलाया और मेज पर से एक रिवॉल्वर उठाकर उसमें गोलियां भरने लगा । मैंने नोट किया कि वो जर्मन मोजर रिवॉल्वर थी जो कि दस फायर करती थी ।

"मैं मूविंग टारगेट चालू करता हूं । खेतान बोला और एक तरफ बढा ।

उधर एक ऊंची दीवार थी जिसके दाएं-बाएं एक-दूसरे से कोई बीस फुट के फासले पर दो केबिन थे और उनके

बीच में एक कोई चार फुट ऊंचा संकरा-सा प्लेटफार्म था । उस प्लेटफार्म पर कन्वेयर बैल्ट चलती थी जिस पर कि एक-एक फुट के फासले पर चीनी मिट्टी की बनी बत्तखें लगी हुई थीं । खेतान ने बाएं केबिन में जाकर एक स्विच आन किया तो कनवेयर बैल्ट तत्काल बाएं से दाएं चलने लगी और यूं उन पर लगी मिट्टी की बत्तखें भी भी बाएं से दाएं गुजरती दिखाई देने लगीं ।

माथुर अपनी व्हील चेयर उस मूविंग टारगेट से तीस फुट की दूरी पर ले आया ।

खेतान ने दूसरी रिवॉल्वर उठा ली, उसमें गोलियां भरी और माथुर के करीब पहुंचा ।

मैं भी उत्सुकतावश उनके पास जा खड़ा हुआ ।

"सर, पहले आप ।" खेतान खास मुसाहिबी वाले स्वर में बोला ।

माथुर ने सहमति में सिर हिलाया ।

उसने अपना रिवॉल्वर वाला हाथ मूविंग टारगेट की तरफ किया और एक के बाद एक दस फायर किए ।

केवल तीन बत्तखें उड़ीं ।

फिर वही क्रिया अपने हाथ में थमी रिवॉल्वर से खेतान ने दोहराई ।

उससे केवल दो फायर मिस हुए, आठ गोलियां बत्तखों से टकराई ।

"वंडरफुल ।" माथुर बोला ।

"थैंक्यू सर ।" खेतान सिर नवाकर बड़े अदब से बोला ।

"मैं" एकाएक मैं बोला, "इजाजत चाहूंगा ।"

"मिस्टर कोहली !" माथुर बोला, "एक बार तुम भी रिवॉल्वर चलाओ ।"

"सर..."

"फिक्र मत करो । इससे कंधा नहीं टूटता ।"

खेतान हंसा ।

"कभी रिवॉल्वर भी नहीं चलाई ?" वो बोला ।

"चलाई है । लेकिन मजबूरन ।"

"अच्छे डिटेक्टिव हो !"

"वो तो मैं हूं ही मैं । तभी तो यहां मौजूद हूं ।"

"मेरा मतलब है रिवॉल्वर चलानी तो एक डिटेक्टिव को आनी चाहिए, यार ।"

"खेतान साहब, मैं दिमाग से लड़ता हूं, हथियार से नहीं ।"

"वो ठीक है । लेकिन फिर भी आज एक बार यहां रिवॉल्वर से टारगेट प्रैक्टिस करो । माथुर साहब की ख्वाहिश है । वाट डू यु से, सर ।"

"हां । जरूर ।" माथुर बोला, "ये पकड़ो ।"

उसने जबरन अपनी भरी हुई रिवॉल्वर मुझे थमा दी ।

मैंने उन महारथियों के ही अंदाज से अपनी बांह मूविंग टारगेट की ओर तानी और और ताक ताक दस फायर किए।

"वंडरफुल !" खेतान बोला "परफेक्ट स्कोर।"

"क्या ?"

"दस फायर। दस मिस।"

"घिस रहे हो, यार।" मैं झुंझलाकर बोला, "खिल्ली उड़ा रहे हो। मैंने कहा तो है कि मुझे फायर आर्म्स का कोई तजुर्बा नहीं।"

"नहीं है तो हो जाएगा। लो, एक बार फिर ट्राई करो।"

उसने माथुर वाली रिवॉल्वर मेरे हाथ से ले ली और भरी हुई रिवॉल्वर जबरन मेरे हाथ में थमा दी।

"लेकिन ......"

"सब्र करो मैं टार्गेट बढाता हूं।"

वो लपककर फिर बाएं केबिन के करीब पहुंचा। इस बार उसने बिजली के दो तीन स्विच ऑन किए।

तत्काल पहली कनवेयर बैल्ट के पीछे लेकिन उससे कोई दो ढाई फुट की ऊंचाई पर एक और कनवेयर बैल्ट उभरी। उस पर भी बत्तख लगी थीं लेकिन उनकी रंगत काली थी।

प्लेटफार्म के नीचे से बीसेक डंडे से प्रकट हुए जिन पर कि चीनी मिट्टी के छोटे-छोटे कबूतर टंगे हुए थे। वो डंडे भी प्लेटफार्म की ओट में से किसी कनवेयर बैल्ट से ही जुड़े हुए थे जोकि जरूर ऊंचे-नीचे फिट किए गए रोलरों से गुजर रही थी जिसकी वजह से कबूतर विपरीत दिशा में चलती बत्तखों की कतारों के बीच में ऊपर नीचे फुदकते मालूम हो रहे थे।

वो वापस लौटा।

"अब तो टार्गेट तीन गुणा हो गए हैं।" वो बोला।

मैंने सहमति में सिर हिलाया और उधर रिवॉल्वर तानी। अब मेरे सामने तीन तरह के टार्गेट थे। एक, बाएं से दाएं चलती सफेद बत्तखें। दो, दाएं से बाएं चलती काली बत्तखें। और तीन, उनके बीच में नीचे ऊपर फुदकते सफेद कबूतर।

मैं फायरिंग शुरू करने ही वाला था कि ठिठक गया। मेरा रिवॉल्वर वाला हाथ नीचे झुका।

"क्या हुआ ?" खेतान बोला।

"कुछ नहीं।" मैं बोला। मैंने हाथ फिर सीधा किया और आखें मीचकर आनन-फानन सारे फायर सामने झोंक दिए। मैंने आंखें खोलीं।

नतीजा फिर वो ही निकला था। सारी गोलियां पीछे दीवार से टकराई थीं। एक भी गोली निशाने पर नहीं लगी थी। लेकिन इस बार मैं मायूस होने की जगह खुश था। इस बार मुझे अपने जीरो स्कोर का जीरो अफसोस था। मुझे ये जो सूझ गया था कि हत्यारा कौन था।

मैंने रिवॉल्वर टेबल पर रख दी और बोला, "मैं अब इजाजत चाहता हूं। मुझे एक बहुत जरूरी काम याद आ गया है। मैं फिर हाजिर होउंगा।"

मेरे बदले तेवरों को दोनों ने नोट किया।

उनका अभिवादन करके मैंने वापसी के लिए कदम बढाया ही था कि माथुर बोल पड़ा, "अपना चैक तो लेते जाओ।"

"अब इसकी जरूरत नहीं।" मैं बोला।

"क्या मतलब ?" माथुर सकपकाया।

"अब मैं पूरी फीस का चैक लेने आऊंगा।"

"कब ?"

"बहुत जल्द। शायद आज ही।"

लम्बे डग भरता हुआ मैं वहां से रुखसत हो गया।

Chapter 6

मैं मंदिर मार्ग पहुंचा ।

शुक्र था खुदा का कि सुजाता मेहरा अपने कमरे में थी । मुझे वो शीशे के आगे खड़ी बाल संवारती दिखाई दी ।

"मैं बस जा ही रही थी ।" वो बोली ।

"दिखाई दे रहा है । शुक्र है चली नहीं गई ।"

"कैसे आए ?"

"तुम्हारी बरसाती मांगने आया हूं ।"

"क्या ?"

"तुम्हारी वार्डरोब में एक बरसाती टंगी हुई है । वो शाम तक के लिए मुझे चाहिए ।"

"तुम्हें क्या पता वहां बरसाती टंगी है ?" वो हैरानी से बोली ।

"कल जब आया था तो देखी थी ।"

"तब वार्डरोब तो बंद थी ।"

"थोड़ी सी खुली थी । भीतर नजर पड़ गई थी मेरी ।"

"लेकिन....."

"अब छोड़ो भी !" मैं झुंझलाया "क्यों हुज्जत कर रही हो जरा-सी चीज पर ?"

"लेकिन बिन बारिश के मौसम में जनाना बरसाती का तुम करोगे क्या ?"

"उबाल के खाऊंगा । हद है तुम्हारी भी । कल तो पता नहीं क्या कुछ देने को तैयार थीं, आज बरसाती नहीं दे सकती । ऐसा ही है तो कीमत ले लो ।"

"तुम तो जलील कर रहे हो मुझे ।"

"क्यों होती हो ? बरसाती निकाल के मेरे मत्थे मारो और दफा करो मुझे ।"

"ठीक है ।" वो पांव पटकती वार्डरोब की ओर बढती हुई बोली, "यही करती हूं ।"

उसने वार्डरोब से बरसाती निकाली और मेरे ऊपर फेंक के मारी ।

उसे गुस्सा दिलाने के पीछे मेरा जो मकसद था वो पूरा हो गया था । वो सीधे-सीधे वहां से बरसाती निकालती तो हो सकता था उसे सौंपने से पहले उसकी जेब टटोलकर देखती जो कि उस घड़ी वांछित न होता ।

"शुक्रिया ।" बरसाती लपकता हुआ मैं बोला, "बहुत जल्दी लौटा जाऊंगा ।"

"जरूरत नहीं ।" वो भुनभुनाई, "अब उबाल के ही खाना ।"

"मैं शाम को ही....."

"अब जा भी चुको ।"

मैं पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचा ।

अरने भैंसे की तरह बिफरा हुआ और ड्रम की तरह लुढकता हुआ लेखराज मदान मुझे हैडक्वार्टर की सीढ़ियों पर मिला। मुझे देखकर वो ठिठका।

"क्या हुआ?" उसका रौद्र रूप देखकर मैं हैरानी से बोला।

"एन्ना दी मां दी!" कहर बरपाती आवाज में वो बोला।

"अरे, क्या हुआ?"

"मेरी बीवी को पकड़ के ले आए। चिट्ठी देने के बहाने उस कुत्ती दे पुत्तर इंस्पेक्टर ने मुझे यहां अटकाए रखा और होटल जा के मेरी बीवी को गिरफ्तार कर लिया।"

"क्यों?"

"कत्ल के जुर्म में।"

"क्या!"

"हां।"

"उनकी तवज्जो कैसे गई तुम्हारी बीवी की तरफ?"

"कोई गुमनाम कॉल आई बता रहा था उस इंस्पेक्टर का मातहत एक हवलदार।"

"वो वही कॉल होगी हमारे बैठे ही इंस्पेक्टर यादव के पास आई थी।"

"मुझे भी यही शक है। उस कॉल के बाद से ही उसने मुझे एक घंटा यहीं अटकाए रखा था। फिर कह दिया था मैं ऐसे ही मोर्ग चला जाऊं, चिट्ठी की जरूरत नहीं थी। वहां गया था तो पता लगा कि मोर्ग का इंचार्ज खाना खाने चला गया था। ढाई बजे आएगा। दस्सो। सवा बारह बजे माईयवा लंच करने चला गया। मैं होटल वापस गया तो पता लगा कि मधु को पुलिस पकड़कर ले गई थी। दौड़ा-दौड़ा यहां आया तो पता चला वो माईयवा इंस्पेक्टर उसे मैटकाफ रोड ले गया है।"

"वहां किसलिए?"

"उसे तोड़ने के लिए। विलायत से जो सीख के आया है इंस्पेक्टरी। मुजरिम को मौकाएवारदात पर वापस ले जाया जाए तो उसके कस बल निकल जाते हैं। दुर फिट्टे मूं।"

"तुम खामखाह भड़क रहे हो। अरे, उन्होंने वैसे ही उसे पूछताछ के लिए तलब किया होगा।"

"अब क्या पता क्या किया है! वो इंस्पेक्टर मिले तो पता लगे न?"

"अब तुम कहां भागे जा रहे थे?"

"मैटकाफ रोड ही जा रहा था। वहां जाके कहीं ये पता न लगे कि इंस्पेक्टर उसे तिहाड़ ले गया।"

"ऐसा कहीं होता है?"

"होता है। जब किस्मत ने बजाई हुई हो तो सब कुछ होता है। आजकल लेखराज मदान माईयवे के साथ तो खास तौर से सब कुछ होता है।

"अरे, घबराओ नहीं। कुछ नहीं होता। चलो मैं भी चलता हूं मैटकाफ रोड। वो इंस्पेक्टर मेरा यार है। मेरे से कुछ नहीं छुपाएगा। अभी मालूम हो जाता है क्या किस्सा है! चलो।"

आगे-पीछे गाड़ी चलाते हम मैटकाफ रोड पहुंचे।

शशिकांत की कोठी के सामने एक पुलिस की जीप खड़ी थी जिसकी ड्राइविंग सीट पर एक सिपाही बैठा था। उसने संदिग्ध भाव से हमारी तरफ देखा लेकिन जीप से बाहर न निकला।

कोठी का आयरन गेट बदस्तूर पूरा खुला था।

"तुम चलो, मैं आता हूं।" मैं मदान से बोला।

वो सहमति में सिर हिलाता भीतर दाखिल हो गया।

मैंने बरसाती की जेब में से रुमाल समेत रिवॉल्वर निकाली जो और उसे अपने कोट की जेब में हाथ समेत डाल लिया।

मैं भीतर दाखिल हुआ।

ड्राइव-वे के मध्य में पहुंचकर मैं ठिठका मैंने सामने कोठी के प्रवेशद्वार की ओर देखा। द्वार बंद था। मैंने पीछे देखा। पुलिस जीप में बैठा सिपाही मुझे वहां से दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने हाथ जेब से निकाला और अपनी दाईं ओर लहराया। रिवॉल्वर रूमाल से निकल पेड़ों के पीछे झाडियों से पार कहीं जाकर गिरी। एक हल्की-सी धप्प की आवाज हुई लेकिन उसकी कोई प्रतिक्रिया मेरे सामने न आई।

मैं संतुष्टिपूर्ण भाव से गरदन हिलाता आगे बढ़ा। रिवॉल्वर से मेरा पीछा छूट चुका था और अब उसके बरामद होने या न होने से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था।

हत्यारे को भी नहीं।

मैं कोठी के भीतर पहुंचा। वहां मदान इंस्पेक्टर यादव के सामने खड़ा था और गरज-गरज के उसे पता नहीं क्या कुछ कह रहा था। प्रत्युत्तर में यादव की शक्ल पर ऐसे भाव थे जैसे उसे कुछ सुनाई तक नहीं दे रहा था। वो बड़े इत्मीनान से एक सोफे पर बैठी जार-जार रोती मधु की उंगलियों के निशान लेते अपने फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट को देख रहा था। उसके अलावा वहां दो और वर्दीधारी पुलिसिए मौजूद थे जो एक ओर चुपचाप खड़े थे।

यादव ने मेरी तरफ निगाह उठाई।

"वक्त जाया कर रहे हो।" मैं बोला।

"क्या ?" यादव बोला, "इसे चुप कराओ तो तुम्हारी सुनूं।"

"मदान साहब।" मैं बोला, "खामोश हो जाओ। प्लीज।"

उसके कहर को ब्रेक लगी।

'हां, तो" यादव बोला, "क्या कह रहे हो तुम ?"

"मैं कह रहा था वक्त जाया कर रहे हो।" मैं बोला।

"क्या मतलब ?"

"मदान की बीवी मुजरिम नहीं है।"

"इसने कबूल किया है कि परसों रात ये यहां आई थी।"

"जरूर किया होगा। एसे जद्दोजलाल वाले इंस्पेक्टर के सामने जुबान बंद रख पाना कोई मजाक है।"

"बकवास मत करो।"

"मैं साबित कर सकता हूं कि ये हत्यारी नहीं है।"

"अच्छा !"

"मैं इसी के बयान के जरिए ये साबित कर सकता हूं कि असल में कातिल कौन है ।"

"तुम" यादव के नेत्र सिकुड़े, "जानते हो असल में कातिल कौन है ।"

"हां ।"

"ग्यारह बजे तुम मेरे पास आए थे । इस वक्त" उसने घड़ी देखी, "डेढ़ बजा है । ढाई घंटे में ऐसा कुछ हो गया है जिससे तुम कातिल को पहचान गए हो ?"

"हां ।"

"बताओ क्या जानते हो ?"

"अभी बताता हूं । पहले अपने आदमी को कहो कि मधु का पीछा छोड़े ।"

यादव ने इशारा किया । फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट तत्काल मधु के पास से हट गया ।

मैं मधु के करीब पहुंचा ।

"तुम बिल्कुल नहीं घबराओ ।" मैं आश्वासनपूर्ण स्वर में बोला, "मैं यकीनी तौर से जानता हूं कि तुम बेगुनाह हो । अभी इंस्पैक्टर साहब भी जान जाएंगें और तुम्हें हलकान करने के लिए बाकायदा तुमसे माफी मांगेंगे ।"

यादव ने आंखें तरेर कर मेरी तरफ देखा ।

"तुमने इन्हें सब कुछ बता दिया ?" यादव की निगाह की परवाह किए बिना मैंने मधु से पूछा ।

"और क्या करती !" वो रुआसे स्वर में बोली, "इनकी घुड़कियां सुन-सुनकर मेरा तो हार्टफेल हुआ जा रहा था ।"

"पुलिस वालों की जुबान ही ऐसी होती है । रिवॉल्वर के बारे में भी बताया ?"

"बताना पड़ा ।"

"अपने इरादे के बारे में भी ?"

"हां ।"

"यानी कि जो कुछ मुझे बताया था वो सब यहां इंस्पेक्टर साहब के सामने दोहरा चुकी हो ?"

"हां ।"

"तुम्हें" मैंने यादव से पूछा, "इसके बयान पर एतबार है ?"

"हां ।" वो बोला, "इसलिए एतबार है क्योंकि झूठ बोलने के काबिल मैंने इसे छोड़ा ही नहीं था ।"

तत्काल मदान के चेहरे पर कहर बरपा । वो दांत पीसकर बोला, "ठहर जा, सालया ।"

मैं लपककर उसके सामने जा खड़ा हुआ ।

"मदान साहब" मैं सख्त लहजे में बोला, "अक्ल से काम लो । यूं भड़कोगे तो पछताओगे ।"

"लेकिन...."

"शटअप ।" मैं गला फाड़कर चिल्लाया ।

वो सकपकाकर चुप हो गया ।

"यूं चिल्ला-चिल्लाकर और आपे से बाहर होकर दिखाना है तो मैं चलता हूं ।"

"मैं चुप हूं ।"

"चुप ही रहना । समझे !"

उसका केवल सिर ही सहमति में हिला । तत्काल ही वो परे देखने लगा ।

"तो फिर...."

"मैं... मैं.... मैं अपने वकील को फोन करता हूं ।"

"जरूर करो । माथुर साहब के यहां मिलेगा वो ।"

वो तत्काल कोने में रखे फोन की ओर झपटा ।

किसी पुलिसिए ने उसे रोकने का उपक्रम न किया ।

"क्या बात हो रही थी ?" मैं यादव की ओर घूमकर बोला ।

"इसके बयान की बात हो रही थी ।" यादव मधु की ओर इशारा करता हुआ बोला, "मैं कह रहा था कि मुझे इसके बयान पर एतबार है ।" वो एक क्षण ठिठका और फिर सख्ती से बोला, "सिवाय एक बात के ।"

"वो क्या बात हुई ?"

"सिवाय इस बात के कि कत्ल इसने नहीं किया । मेरा कहना ये है कि जो रिवॉल्वर इसने वजीराबाद के पुल से जमना में फैंकी है, वो ही मर्डर वैपन था ।"

"और कत्ल आठ अट्ठाईस पर हुआ था ।"

"जाहिर है । टूटी घड़ी इस बात की गवाह है । ये कहती है कि ये साढ़े सात बजे यहां आई थी जो कि नहीं हो सकता । ये जरूर यहां साढ़े आठ के आसपास आई थी जबकि इसने मकतूल पर गोलियां बरसाई थीं और रिवॉल्वर वजीराबाद के पुल पर जाकर नदी में फेंक दी थी ।"

"करीब के बस अड्डे वाले नए पुल पर जाकर क्यों नहीं ? जरा और आगे जमना बाजार वाले पुराने पुल पर जाकर क्यों नहीं ?"

"गई थी ये उन दोनों जगहों पर लेकिन क्योंकि वहां रश था इसलिए इसे वजीराबाद वाले सुनसान पुल पर जाना पड़ा था ।"

"वजीराबाद से ये फ्लैग स्टाफ रोड अपनी बहन के घर गई थी जहां कि ये पन्द्रह-बीस मिनट ठहरी थी । वहां से से चलकर साढ़े नौ बजे ये बाराखम्बा अपने होटल में पहुंच गई थी । कबूल ?"

"हां । हम तसदीक कर चुके हैं इन बातों की ।"

"बढ़िया । तो अब । तुम मुझे ये बताओ, इंस्पेक्टर साहब, कि साढ़े आठ बजे यहां कत्ल करने के वक्त से लेकर साढ़े नौ अपने घर भी पहुंच गई होने वाली ये लड़की इतने ढेर सारे कामों को एक घंटे में कैसे अंजाम दे पाई ? यहां से कत्ल करके, उसके बाद दो पुलों को आजमाकर वजीराबाद के तीसरे पुल पर पहुंचने में ही इसे घंटा लग गया होता । साढ़े नौ बजे तो ये यूं अभी वजीराबाद के पुल पर ही होती । उस वक्त तो ये वहां से मीलों दूर अपने होटल के अपार्टमेंट में पहुंची हुई थी । और अभी पन्द्रह-बीस मिनट इसने रास्ते में अपनी बहन के घर भी गुजारे थे ?"

यादव सोच में पड़ गया ।

"इसका साफ मतलब ये है" मैं बोला, "कि या तो कत्ल इसने नहीं किया, या फिर कत्ल साढे आठ बजे नहीं हुआ ।"

"कत्ल तो साढे आठ बजे ही हुआ है ।" यादव सिर हिलाता हुआ बोला, "वो घड़ी की शहादत बहुत मजबूत है ।"

"तो फिर ये बेकसूर है ।"

"जितना कुछ इसने किया, कैसे किया ?"

"वैसे ही जैसे ये कहती है कि किया ।"

"लेकिन....."

"यादव, इस बाबत बात करने से पहले मैं तुम्हारे से शूटिंग का पैट्रन डिसकस करना चाहता हूं जिसे कि तुम इस केस का बेसिक क्लू मानते हो ।"

"उस बारे में क्या कहना चाहते तो ?"

"इजाजत दो तो उसके लिए हम स्टडी में चलें । मौकाएवारदात पर तुम मेरी बात बेहतर समझ पाओगे ।"

यादव कुछ क्षण मुझे घूरता रहा, फिर उसने सहमति में सिर हिलाया ।

हम सब स्टडी में पहुंचे ।

"तुमने मर्डर वैपन के लिए यहां की तलाशी ली थी ?" मैं बोला ।

"यहां की क्या, पूरी कोठी की तलाशी ली थी ।" यादव बोला ।

"कम्पाउंड की भी ?"

यादव खामोश रहा ।

"यानी कि नहीं ली । मेरे ख्याल से तो तुम्हें कम्पाउंड क्या क्या इमारत के आसपास सड़क और गलियों को भी मर्डर वैपन के लिए खंगालना चाहिए था । कम्पाउंड की तलाशी तो जरूर ही लेनी चाहिए थी । पेड़ों से और सौ तरह के झाड़-झखाड़ से भरा इतना बड़ा कम्पाउंड है वो...."

"जा के सारे कम्पाउंड को खंगालो ।" यादव ने तत्काल दोनों सिपाहियों को आदेश दिया, "जीप में बैठे हवालदार को भी बुला लो । मैटल डिटेक्टर लेकर कम्पाउंड के चप्पे-चप्पे की तलाशी लो । चलो ।"

दोनों सिपाही तत्काल बाहर को दौड़े ।

"वो सामने" फिर यादव बोला, "उस एग्जिक्यूटिव चेयर पर लाश पड़ी पाई गई थी । यहां से बस सिर्फ लाश ही हटाई गई है । बाकी सब कुछ वैसे का वैसा ही है । उस एटलस वाली घड़ी तक को नहीं छेड़ा गया है । कलमदान का टूटा होल्डर, घुडसवार का उड़ा सिर, वो भागते घोड़ों वाली बाईं दीवार पर टंगी तस्वीर, वो टूटा हुआ वाल लैम्प, सब जस के तस हैं । हमारे बैलिस्टिक एक्सपर्ट का कहना है कि शूटिंग के वक्त कातिल यहां, इस जगह खड़ा था जहां कि इस वक्त मैं खड़ा हूं । शूटिंग का पैट्रन साफ जाहिर कर रहा है कि ये किसी औरत का काम है ।"

"महज इसलिए क्योंकि गोलियां बहुत बिखरे-बिखरे अंदाज में चली हैं ?"

"हां ।"

"यूं गोलियां कोई ऐसा शख्स भी तो चला सकता है जो कि डोप एडिक्ट हो और उस घड़ी किसी नामुराद माडर्न नशे की तरंग में हो ! ऐसा शख्स भी तो चला सकता है जो टुन्न हो । ऐसा शख्स भी तो चला सकता है जो अपाहिज हो और जिसे अपनी मूवमेंट्स पर मुकम्मल कंट्रोल न हो !"

"मेरा एतबार औरत पर है ।" यादव जिद-भरे स्वर में बोला, "बाईस कैलीबर की रिवॉल्वर पर है जो कि जनाना हथियार है ।"

"कोल्ली" दरवाजे के पास से मदान चिढे स्वर में बोला, "इसे समझा कि जनाना हथियार अगर मर्द इस्तेमाल करे तो उस पर बिजली नहीं गिर पड़ती ।"

"फोन हो गया ?" मैं उसकी तरफ घूमकर बोला ।

"हां ।" वो भन्नाया ।

"माथुर साहब के यहां ही था वो ?"

"हां ।"

"आ रहा है ?"

"हां ।"

"गुड ।" मैं फिर यादव की तरफ आकर्षित हुआ, "तुम्हारे ख्याल से चलाई गई छ: गोलियों में से कौन-सी मकतूल को लगी होगी ?"

"कोई भी लगी हो सकती है ।" यादव लापरवाही से बोला, "जब तमाम की तमाम गोलियां एक के बाद एक आनन-फानन चलाई गई थीं तो क्या पता कौन-सी गोली मकतूल को लगी !"

"हो सकता है पहली ही लगी हो ?" मैं सहज स्वर में बोला ।

"हो सकता है ।"

"और कातिल को बखूबी मालूम हो कि उस पहली ही गोली ने उसका काम भी तमाम कर दिया था !"

"ये कैसे हो सकता है ? फिर उसने बाकी गालियां क्यों चलाई ?"

"कोई तो वजह होगी । मसलन हो सकता है कि वाल लैम्प को गोली उसने इसलिए मारी हो ताकि यहां अंधेरा हो जाए और कोई उसे देख न सके ।"

यादव ने यूं अट्ठहास किया जैसे उसे मेरी अक्ल पर तरस आ रहा हो ।

"इस काम के लिए गोली चलाने की क्या जरूरत थी, मेरे भाई" वो बोला, "ये काम तो स्विच बोर्ड से पर से वाल लैम्प का स्विच ऑफ करने से भी हो सकता था ।"

मैं खामोश रहा ।

"यूं तो" यादव बोला, "बाकी गोलियां चलाई जाने की भी ऐसी वाहियात वजह सोच सकते हो तुम । कलमदान पर गोली उसने इसलिए चलाई क्योंकि उसे तालीम से नफरत थी । घुड़सवार का सिर इसलिए उड़ा दिया क्योंकि रेसकोर्स में कभी उसका घोड़ा नहीं लगता था इसलिए उसे घोड़ों से खुंदक थी ।"

"घड़ी के बारे में कुछ नहीं कहा ?"

"वो तुम कह लो, भई ।"

"मुमकिन है घड़ी को कातिल ने अपना गवाह बनाने के लिए शूट किया हो ।"

"क्या मतलब ?" यादव तीखे स्वर में बोला ।

"उसने घड़ी की सुइयां पहले आगे सरका दी हों और फिर घड़ी को गोली मारके इसलिए तोड़ दिया हो ताकि वो उस आगे सरकाए गए वक्त पर रुक जाए । हमेशा के लिए ।"

यादव ने मुझे घूरकर देखा । मैंने उसके घूरने की परवाह नहीं की ।

"तुम्हारा मतलब है" फिर वो संजीदगी से बोला, "कि जो वक्त घड़ी बता रही है, कत्ल उस वक्त नहीं हुआ ?"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता ? टूटी घड़ी आठ अट्ठाईस पर खड़ी पाई गई तो समझ लिया गया कि कत्ल उसी वक्त हुआ । तुम्हारा मैडिकल एक्सपर्ट कत्ल का वक्त सात और नौ के बीच में बताता है । ये क्यों नहीं हो सकता कि कत्ल सात बजे हुआ हो या साढ़े सात बजे हुआ हो और किसी ने अपनी प्रोटेक्शन के लिए घड़ी को आगे बढाकर उसे उस वक्त पर तोड़ दिया हो ताकि उसे अपनी हिफाजत के लिए एलिबाई हासिल हो सके ।"

"यूं तो तुम कहोगे कि कातिल ने घड़ी जानबूझकर तोड़ी ।"

"मैं जरूर कहूंगा ।"

"बाकायदा निशाना ताक कर ?"

"हां ।"

"लेकिन शूटिंग का बिखरा-बिखरा पैटर्न...."

"बिखेरा-बिखेरा कहो, यादव साहब ।"

"क्या मतलब ?"

"एक बात बताओ । पुलिस की नौकरी में सब-इन्स्पेक्टरी की ट्रेनिंग के दौरान शूटिंग भी तो सिखाई जाती होगी ?"

"हां ।"

"तुम्हें भी सिखाई गई होगी ?"

"जाहिर है ।"

"यानी रिवॉल्वर से शूटिंग का इत्तफाक आम हुआ होगा ?"

"हां । कहना क्या चाहते हो ?"

"कभी आंख बंद करके रिवॉल्वर चलाई ?"

"वो किसलिए ?"

"जवाब दो । चलाई ?"

"नहीं । मैं क्या पागल हूं ?"

"मैंने चलाई । आज ही चलाई ।"

"आंखें बंद करके रिवॉल्वर ?" वो सकपकाया ।

"हां । आंखें बंद करके दस गोलियां मैंने शूटिंग टार्गेट्स पर चलाई तो मेरी एक भी निशाने पर नहीं लगी ।"

"कहां ? कब ?"

मैंने हालात बयान किए ।

"मतलब क्या हुआ इसका ?" यादव माथे पर बल डाल कर बोला ।

"मेरा तुम्हारे से जो सवाल है वो ये है यादव साहब कि जब मैंने आखें बंद करके गोलियां चलाई तो मेरी एक भी गोली किसी टारगेट से नहीं टकराई तो फिर तुम्हारा वो कथित हत्यारा, वो आंखें मींचकर फायर करने वाली कोई औरत क्योंकर इतनी खुशकिस्मत निकली कि उसकी हर गोली, ध्यान रहे हर गोली, किसी न किसी टारगेट से जाकर टकराई ?"

तत्काल यादव के चेहरे पर सोच के भाव उभरे ।

"मैंने इस बाबत बहुत सोचा ।" मैं बोला, "मेरी सोच का यही नतीजा निकला कि निशाना लगाना मुश्किल होता है, निशाना चूकना आसान होता है । ऐसा इसलिए होता है क्योंकि निशाना लगाने के लिए उपलब्ध जगह बहुत सीमित होती है लेकिन निशाना चूकने के लिए उपलब्ध जगह बहुत ढेर सारी होती है । जिन बत्तखों, कबूतरों का का निशाना मैं लगाने की कोशिश मैं माथुर के शूटिंग रेंज पर कर रहा था, वो नन्हें-नन्हें थे लेकिन उनके पीछे दीवार पर ढेरों जगह उपलब्ध थी जहां कि कहीं भी जाकर गोली धंस सकती थी इसीलिए आखें खोलकर या बगैर खोले, मेरी चलाई हर गोली टारगेट को मिस करके पीछे दीवार में जाकर धंसी । कहने का मतलब ये है कि अगर कातिल ने, फर्ज करो मधु ने ही, आखं मींचकर रिवॉल्वर का रुख मकतूल की तरफ करके गोलियां चलाई होतीं तो क्या तमाम की तमाम गोलियां पीछे दीवार में या छत में न जा धंसी होती । इतना दक्ष निशाना, इतना परफेक्ट निशाना, वो भी एक बार नहीं, पूरे छः बार इतने छोटे-छोटे टारगेट कैसे बींध सकता है ।"

"दीवार पर टंगी घोड़ों वाली तस्वीर छोटी नहीं है ।"

"कबूल, लेकिन गोली देखो तस्वीर में कहां लगी है ? फ्रेम में नहीं । तस्वीर के किसी कोने खुदरे में नहीं । बल्कि ग्रुप में दौड़ते सबसे अगले घोड़े के ऐन माथे के बीच !"

"ओह !"

"बाकी निशानों की बानगी देखो । चार होल्डरों में से एक होल्डर । घुड़सवार का सिर । वाल लैम्प । घड़ी का फेस । मकतूल का दिल ! ये सब बेमिसाल निशानेबाजी के नमूने हैं यादव साहब । ऐसी शूटिंग कोई अनाड़ी, और वो भी आंख बंद करके, कर ही नहीं सकता । तुम कहोगे इत्तफाक । लेकिन ऐसा इत्तफाक एकाध बार होना कबूल किया जा सकता है, आधी दर्जन बार नहीं । छः में से छः बार ऐसा सच्चा निशाना लगाना इत्तफाक नहीं, करिश्मा है और ऐसा कोई करिश्मा कोई पक्का निशानेबाज, कोई क्रैक शॉट ही कर सकता है ।"

कोई कुछ न बोला ।

"गोलियों का मौजूदा पैट्रन देखकर पहले मैं भी ये ही समझा था कि वो आनन-फानन अंधाधुंध चलाई गई थीं, लेकिन अब मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि एक-एक गोली सोच-सोचकर ताक-ताक कर दागी गई थी और ये कि......"

मैं एकाएक खामोश हो गया । मैंने नोट किया कि यादव अपलक मुझे देख रहा था ।

"क्या हुआ ?" मैं हड़बड़ाया ।

"पहले कब ?" वो सख्ती से बोला ।

"क्या पहले कब ?"

"पहले कब देखा तुमने गोलियों का ये पैट्रन ? तुम तो यहां अब पहली बार मेरे सामने कदम रख रहे हो ?"

"वो..... क्या है कि....मैंने अखबार में पढ़ा था ।"

"अखबार में ऐसा कुछ नहीं छपा ।"

"तो फिर मुझे मदान ने बताया होगा । या शायद......"

"रिवॉल्वर मिल गई, साहब ।"

मैं दरवाजे की तरफ घूमा ।

रिवॉल्वर की तलाश में गए दोनों पुलिसिए वापस लौट आए थे । एक के हाथ में रुमाल में लिपटी रिवॉल्वर थी जो वो हाथ आगे करके यादव को दिखा रहा था ।

यादव ने करीब आकर रिवॉल्वर का मुआयना किया ।

"यही" कुछ क्षण बाद वो बोला, "मालूम होता है मर्डर वैपन ।"

"यानी कि" बात का रुख बदलने की गरज से मैं बोला, "तुम अब कबूल करते हो कि मधु ने जो रिवॉल्वर नदी में फेंकी थी, वो मर्डर वैपन नहीं हो सकती ।"

"तो क्या हुआ ?" वो बोला, "इरादाएकत्ल का इल्जाम इस पर अभी भी आयद होता है । इसने खुद ये इकबालिया बयान दिया है कि ये घातक हथियार से लैस होकर शशिकांत के कत्ल की गरज से यहां आई थी ।"

"यार, अगर असली कातिल पकड़ा जाए तो इसके उस बयान की क्या अहमियत रह गई ! क्यों खामख्वाह गरीबमार करते हो ? ये क्या छोटी बात है कि सिर्फ चौबीस घंटे में तुमने कत्ल के इतने पेचीदा केस को हल कर दिखाया !"

"अभी कहां हल कर दिखाया ? कातिल कहां है ?'

"उसने कहां जाना है ! उसका पकड़ा जाना तो महज वक्त की बात है ।"

"लेकिन....."

"सुनो । मौजूदा हालात में पहले ये बात कबूल करो कि मधु ने अपने बयान में जो कुछ भी कहा है, वो बिल्कुल सच कहा है ।"

"चलो, बहस के लिए किया कबूल । आगे ?"

"इसका कहना है कि जब ये यहां पहुंची तो शशिकांत मरा पड़ा था और एटलस वाली उस एंटीक घड़ी में, जोकि टूटकर अभी भी आठ अट्ठाईस पर खड़ी है, साढ़े सात बजने वाले थे । इस घड़ी की शहादत का मेरे ऊपर भी, बहुत रौब गालिब था, इसलिए मैंने यही समझा था कि मधु से टाइम देखने में गलती हुई थी । मैंने समझा था कि घड़ी में बजे साढ़े आठ के करीब थे लेकिन ये टाइम साढ़े सात के करीब का समझ बैठी थी । उस वक्त घड़ी टूटी भी नहीं थी । टूटी होती तो ये असाधारण बात इसकी तवज्जो में आई होती । घड़ी ही नहीं, उस वक्त कुछ भी टूटा फूटा नहीं था यहां । होता तो टूट-फूट वाली किसी न किसी चीज ने इसकी तवज्जो अपनी तरफ जरूर खींची होती । अब अगर इसकी बात पर एतबार किया जाए कि उस वक्त शशिकांत मरा पड़ा था तो इसका साफ मतलब है कि तब तक यहां सिर्फ एक गोली चली थी । वही एक गोली चली थी जो शशिकांत का दिल बींध गई थी । अगर ऐसा था तो ये अपने आपमें सबूत हुई कि बाकी की पांच गोलियां बाद में, एक खास मकसद से, यहां एक खास तरह की स्टेज सैट करने के लिए, बहुत सोच-समझकर और भारी सूझबूझ के साथ चलाई गई थीं । मैं तो यहां तक कहता हूं कि मधु की यहां इस स्टडी में आमद के वक्त कातिल यहीं मौजूद था ।"

सब चौंके ।

"मधु यहां एकाएक पहुंच गई थी ।" मैं आगे बढा, "तब पहुंच गई थी जबकि कातिल यहां अपनी कारगुजारी करके बस हटा ही था । इसकी आहट सुनकर ही कातिल ने यहां की ट्यूब लाइट बंद कर दी थी ताकि यहां अंधेरा

पाकर मधु यहां न आती । बाकी बत्तियां बंद करने का उसे मौका नहीं मिला था इसलिए मधु जब यहां पहुंची थी तो उसे बाहर कम्पाउंड में और ड्राइंगरूम में जगमग-जगमग मिली थी जबकि औरों को यहां अंधेरा...."

मैने एकाएक होंठ काटे ।

"आगे बढ़ो ।" यादव अपनी झोंक में बोला ।

"'लेकिन मधु यहां भी आई" मैं तत्काल आगे बढ़ा, "ये क्योंकि खुद शशिकांत के कत्ल के इरादे से यहां पहुंची थी इसलिए इसने तो उसकी तलाश में कोठी में हर जगह जाना ही था । इसके कदम जब यहां पड़े थे तो कातिल निश्चय ही सामने" मैंने अटैचड बाथरूम के दरवाजे की ओर संकेत किया, "उस दरवाजे के पीछे जा छुपा था । मधु ने ही आकर यहां की ट्यूब लाईट जलाई थी । यहां पहुंचकर उसने बाथरूम में झांकने की कोशिश की होती तो यकीनन शशिकांत के साथ-साथ यहां इसकी भी लाश मिलती । क्योंकि कातिल को यूं रंगे हाथों पकड़े जाना कबूल न होता । शशिकांत की लाश देखते ही आतंकित होकर इसके यहां से भाग खड़ा होने ने ही परसों रात इसकी जान बचा दी ।"

मैंने देखा मधु के शरीर ने जोर की झुरझुरी ली ।

हालात को नाटकीयता का पुट देने के लिए कुछ क्षण मैं मुस्कुराता हुआ खामोश खड़ा रहा ।

"अब जरा शूटिंग की तरफ दोबारा लौटकर आओ ।" मैं बोला - "इस बाबत मैं पहले एक मिसाल देना चाहता हूं । फर्ज करो कोई अपने पक्का निशानेबाज होने का, आई मीन क्रैक शॉट होने का रोब गालिब करना चाहता है लेकिन हकीकत में उसका निशाना ऐसा नहीं है । वो एक दीवार पर कहीं भी छ: गोलियां दागता है और जहां-जहां गोलियां लगी हैं वहां-वहां गोली के बेस के गिर्द गोल दायरे लगा लगा देता है और फिर उस दीवार को अपनी निशानेबाजी के कमाल के तौर पर पेश करता है । देखने वाला यही समझता है कि उसने दायरे में गोली मारी जबकि उसने गोली के गिर्द दायरा बनाया । यूं वो ये साबित करने में कामयाब हुआ कि वो क्रैक शॉट है । ओ के ?"

यादव ने सहमति में सिर हिलाया ।

"लेकिन यहां ऐन इससे उलटी नीयत का दखल है । यहां हमारा कातिल हकीकत में क्रैकशॉट है लेकिन वो ये स्थापित करना चाहता है कि गोलियां अनाड़ी ने चलाई । अब जाहिर है कि जो कुछ पहले निशानेबाज ने किया इसने उससे ऐन उलट करना है । ये निशानेबाज दीवार पर छ: दायरे खींचता है, बड़ी दक्षता से छ: के छ: दायरों को अपनी आला निशानेबाजी से बींधता लेकिन पांच के गिर्द से दायरे मिटा देता है । अब जब कोई निशानेबाजी के 'इस' नमूने को देखता है तो वो सहज ही ये सोच लेता है कि वो किसी अनाड़ी निशानेबाज का काम था और जो एक निशाना दायरे में लग गया था वो महज तुक्के से लग गया था । क्या समझे ?"

"तुम्हारा मतलब है कि यहां कातिल ने बड़े इत्मीनान से पहले इकलौती गोली से मकतूल का काम-तमाम कर दिया और फिर बाकी की पांच गोलियां उस पहले शॉट की अक्युरेसी को कवर करने के लिए इधर-उधर दाग दीं ?"

"पहले की नहीं दूसरे की ।"

"दूसरे की ।"

"जो उसने उस एटलस वाली घड़ी पर चलाया । उसको अपने लिए एलीबाई गढनी थी । इसलिए उसने पहले घड़ी की सुइयां घुमाकर उन्हें आगे किया, आठ बजकर अट्ठाइस मिनट पर पहुंचाया और फिर उसनसे परे खड़े होकर उसे गोली मारकर तोड़ दिया ताकि घड़ी उस वक्त पर रुक जाए और समझा जाए - जैसा कि समझा गया कि कत्ल उसी वक्त हुआ था ।"

"ओह !"

"वो बस ये दो गोलियां चलाकर ही यहां से रुखसत हो जाता तो, यादव साहब, तुम हालात पर शक जरूर करते । इसलिए उन गोलियों के अंजाम को कवर करने के लिए उसने रिवॉल्वर की बाकी चार गोलियां भी यहां दाग दीं । फिर वो बड़े इत्मीनान से यहां से रुखसत हो गया । अब उसने सिर्फ इतना करना था कि ये स्थापित करना था कि साढ़े आठ बजे वो मौकाए वारदात से बहुत दूर कहीं और मौजूद था ।"

"कौन था वो ?"

"ये जानना अब क्या मुश्किल रह गया, यादव साहब ! कौन है वो शख्स जो ये कहता है कि शशिकांत साढ़े सात बजे जिन्दा था ? जबकि मधु की गवाही कहती है कि वो उस वक्त मरा पड़ा था ?"

"पुनीत खेतान !"

तभी पुनीत खेतान ने वहां कदम रखा ।

"कौन याद कर रहा था मुझे ?" वो मुस्कराता हुआ बोला ।

"अभी तो हम ही याद कर रहे थे, वकील साहब ।" मैं बोला, "लेकिन आगे-आगे सारा शहर याद करेगा, बल्कि सारा मुल्क याद करेगा ।"

"क्या मतलब ?" वो हकबकाया ।

"मैं इंस्पेक्टर साहब के सामने आपकी अचूक निशानेबाजी के कसीदे पढ़ रहा था । इन्हें बता रहा था कि कितने नामी-गिरामी क्रैक-शॉट हैं आप राजधानी के ।"

"इस चर्चा की वजह ?"

"यहां आपकी शूटिंग के इतने नमूने जो मौजूद हैं ।"

"मेरी शूटिंग के ?"

"अलबत्ता एक नमूना घट गया है ।"

"कौन-सा ?"

"शशिकांत । मकतूल जिसका कि परसों शाम आपने यहां कत्ल किया ।"

"क्या बकते हो ?" वो भड़ककर बोला, मैं...मैं....."

"आप" यादव सख्ती से बोला, "बड़े मुनासिब वक्त पर आए हैं । आ ही गए हैं तो थोड़ी देर खामोश रहिये ।"

"लेकिन...."

"कहना मानिए ।"

खेतान ने मदान की तरफ देखा ।

"थोड़ी देर खामोश ही रह, खेतान ।" मदान बोला, "और सुन कोल्ली क्या कहता है ?"

"पहले क्या कह चुका है ?" खेतान सशंक स्वर में बोला ।

"वो मैं बताऊंगा आपको ।" यादव बोला, "तुम आगे बढ़ो ।"

"क्या आगे बढ़ूं ?" मैं बोला ।

"जहां तक एलीबाई स्थापित करने का सवाल है तो इसका ये मतलब तो इतने से ही हल हो जाता था कि ऐन साढ़े आठ बजे यहां से मीलों दूर ये अब्बा में था । फिर इसने दिल्ली गेट से मिसेज माथुर को फोन करने का खटराग क्यों फैलाया ?"

"क्योंकि किन्हीं कागजात को लेकर इसकी और मकतूल की भीषण तकरार हुई थी और उस तकरार का एक गवाह था ।"

"कौन ?"

"सुजाता मेहरा । उस तकरार के दौरान वो यहां मौजूद थी और उसने किन्हीं कागजात को लेकर खेतान और शशिकांत को बुरी तरह लड़ते-झगड़ते सुना था । खेतान के लिए उस पॉइंट को कवर करना जरूरी था वर्ना वो तकरार ही पुलिस की तफ्तीश का रुख इसके लिए बड़े फंसने वाले विषय की ओर मोड़ देती ।"

"क्या मतलब ?"

"मेरा अंदाजा है कि जो कागजात परसों रात तकरार का मुद्दा थे वो शशिकांत के शेयर और सिक्योरिटीज थे जिसका एक काफी बड़ा भाग खेतान ने बेच खाया हुआ है ।"

"क्या बकते हो ।" खेतान चिल्लाया, "मैं....."

"चुप रहिये, मिस्टर खेतान ।" यादव बोला ।

"लेकिन ...... ये हो क्या रहा है, ये क्या ड्रामेबाजी है ? मैं यहां अपने क्लायंट के बुलावे पर आया हूं लेकिन यहां तो...."

"आई सैड शटअप ।" यादव गला फाड़कर चिल्लाया ।

खेतान सहमकर चुप हो गया ।

"आगे बढ़ो ।" यादव मेरे से बोला, "कैसे जानते हो कि इसने मकतूल शेयर और सिक्योरिटीज बेच खाई हुई है ?"

"मैं नहीं जानता ।" मैं बोला, "ये महज मेरा अंदाजा है और इस अंदाजे की बुनियाद है शशिकांत का कत्ल और इसके बादशाही ठाठ-बाट । ऐश पर, मौज-मेले पर, दोनों हाथों से पैसा लुटाने वाला शख्स है ये । दस पैसे से होने वाले काम पर दस रूपये खर्च करना इसका पसंदीदा शगल है । खूबसूरत औरतों का रसिया है । किसी खास हसीना को हासिल करने के लिए पानी की तरह पैसा बहा सकता है । कल रात अब्बा में मैंने अपनी आंखों से इसे अंधाधुंध पैसा फूंकते देखा था । इसकी पोशाक देखो । इसका रख-रखाव देखो । सोने का ब्रेसलेट । नीलम की अंगूठी । राडो की घड़ी । एयर कंडीशंड ऑफिस । टयोटा कार । अभी मैंने इसका घर नहीं देखा । लेकिन वो भी यकीनन बाकी ऐय्याशियों से मैच करता ही होगा । इतने ठाठ-बाट को मेनटेन करने के लिए पैसा हलाल की कमाई से नहीं आता । इसकी ऐश यकीनन किसी की अमानत में खयानत का नतीजा है ।"

"हूं ।"

"ये कहता है कि बीस-बाईस लाख रूपये शशिकांत का स्टॉक अभी भी इसके अधिकार में है । इसके ऑफिस से बड़ी आसानी से चैक किया जा सकता है कि मूलरूप से इसके पास शशिकांत के कितनी रकम के शेयर वगैरह थे और उनमे से बीस-बाईस लाख के शेयर सलामत हैं भी या नहीं ।"

"यूं किया घोटाला इसे कभी तो फंसा ही देता ?"

"इसे ऐसी उम्मीद नहीं होगी । ये शेयर बाजार की समझ रखने वाला आदमी है । कई शेयर ऐसे होते हैं जिनके रेट वक्ती तौर पर एकाएक ऊंचे उठ जाते है और फिर चंद दिनों में ही नीचे गिर जाते हैं । ये शेयरों को ऊंची कीमत पर बेचकर उनके नीचे गिरने पर वापस खरीद लेता होगा और अपने क्लायंट को बिना बताए मुनाफा डकार जाता होगा ।"

"क्लायंट ही कीमत उठने पर शेयर बेचने का ख्वाहिशमंद निकल आए तो ?"

"तो उसे ये पुड़िया देता होगा कि भाव तो अभी और ऊंचा, कहीं ज्यादा ऊंचा, जाने वाला था ।"

"क्लायंट को इसकी राय न मंजूर हो तो ?"

"किसी को मंजूर होगी । अकेला शशिकांत ही तो इसका क्लायंट नहीं ।"

"यानी कि कहीं-न-कहीं तो इसका दांव चल ही जाता होगा ?"

"इंस्पेक्टर साहब ।" पुनीत खेतान चिल्लाया, "ये मुझ पर बेजा इल्जाम है । मैं ये बकवास नहीं सुन सकता । मैं....मैं..."

"क्या मैं मैं ?" यादव उसे घूरता हुआ बोला ।

"मैं अभी पुलिस कमिश्नर के पास जाता हूं ।"

"आप यहां से हिलेंगे भी नहीं ।"

"क्यों ? मैं क्या यहां गिरफ्तार हूं ?"

"जाने की कोशिश करके देखिये । मालूम पड़ जाएगा ।"

"ये धांधली है । गुंडागर्दी है । मैं एक इज्जतदार आदमी हूं ...."

"इसीलिए आपको मेरी राय है कि अपनी इज्जत बना के रखिये । जो कहा जा रहा है उस पर अमल कीजिए वरना इज्जत का जनाजा यहीं से निकलना शुरू हो जाएगा और निकलता ही चला जाएगा । समझे !"

"लेकिन मैंने किया क्या......"

"हवलदार !" यादव कड़ककर बोला, "साहब के मुंह से दुबारा आवाज निकले तो अपनी टोपी उतार के इनके मुंह में ठूंस देना । अपनी जगह से हिलने की कोशिश करें तो ये फर्श पर लम्बे लेटे नजर आने चाहिए ।"

दोनों हवलदार आगे बढे और मजबूती से खेतान के दाएं-बाएं आन खड़े हुए ।

बदहवास खेतान ने हाथ-पांव ढीले छोड़ दिए ।

संतुष्टिपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए यादव मेरी तरफ घूमा ।

"शशिकांत को" मैं बोला, "कभी पता न लगता कि उसका ब्रोकर ही उसके साथ घोटाला कर रहा था अगर उसके लिए अपना सारा स्टॉक तत्काल कैश कर लेना जरूरी न हो गया होता ।"

"ऐसा क्यों जरूरी हो गया था ?" यादव बोला ।

"वो ये मुल्क छोड़कर जा रहा था । मदान से पूछ लो ।"

यादव ने मदान की तरफ देखा । मदान ने सहमति में सिर हिलाया ।

"यानी कि" यादव बोला, "शशिकांत के स्टॉक में किये घोटाले को छुपाने के लिए इसने उसका कत्ल किया ?"

"जाहिर है । जरूर शशिकांत ने इसे ये अल्टीमेटम दिया हुआ था कि परसों रात पूरे हिसाब-किताब के साथ उसका सारा माल ये उसे सौंप दे । इसके लिए ऐसा कर पाना संभव नहीं था, इसलिए ये पहले ही कत्ल की तैयारी करके आया था । एडवांस तैयारी की चुगली ये रिवॉल्वर ही करती है जो कि इसने अपने दूसरे क्लायंट माथुर के यहां से चुराई । यहां मकतूल से इसकी तकरार होनी थी, ये तो इसे मालूम था, लेकिन ये शायद इसके लिए अप्रत्याशित था कि यहां सुजाता मेहरा की सूरत में एक गवाह भी मौजूद था । उस तकरार का कोई गवाह न होता तो इसके लिए सुधा माथुर को फोन करने की कोई जरूरत नहीं थी । तकरार का मुद्दा जो कागजात थे, वो क्लब की रेनोवेशन के कागजात नहीं थे, इसका ये भी सबूत है कि जो शख्स अगले रोज मुल्क ही छोड़कर जा रहा था, उसने क्लब की रेनोवेशन से क्या लेना-देना था ! ऐसे अधूरे या मुकम्मल कागजात देखकर उसे क्या हासिल होना था ! ऐसी बेमानी चीज के लिए मकतूल क्यों ये जिद करता कि तारीख बदलने से पहले वो कागजात उसे दिखाए जाए ।"

"मान लिया । आगे बढ़ो ।"

"बहरहाल खेतान ने अब्बा जाते वक्त रास्ते में दिल्ली गेट पेट्रोल पम्प पर रूककर सुधा माथुर को फोन किया और उससे इसरार किया कि वो कागजात अभी जाकर मकतूल को दिखा आए । सुधा ने कहा कि कागजात अभी मुकम्मल नहीं थे तो इसने कहा कि शशिकांत को फर्क पता नहीं लगने वाला था ।"

"क्यों नहीं लगने वाला था ? वो क्या अहमक था ?"

"नहीं था । ये बात भी अपने आपमें इस बात की तरफ इशारा है कि उस फोन काल की घड़ी से पहले ही शशिकांत पीछे अपनी कोठी में मरा पड़ा था । खेतान जानता था कि सुधा माथुर जब यहां पहुंचती तो उसे यहां कागजात का मुआयना करने वाला कोई नहीं मिलने वाला था ।"

"वो कागजात सुधा माथुर के पास घर पर उपलब्ध थे ?"

"हां । वो उन्हें घर पर मुकम्मल करने के लिऐ ऑफिस से घर ले आई थी । मैंने दरयाफ्त किया था ।"

"उसने ऐसा न किया होता तो ?"

"क्या न किया होता तो ?"

"वो कागजात घर न लाई होती तो क्या वो खेतान की फरमायश पूरी करने के लिए पहले फ्लैग स्टॉफ रोड से कनाट प्लेस अपने ऑफिस में जाती ?"

मैं गड़बड़ाया ।

खेतान विजेता के से भाव से मुस्कराया ।

"इसे" एकाएक मधु बोल पड़ी, "मालूम था कि सुधा वो कागजात ऑफिस से घर लेकर जा रही थी ।"

"कैसे ?" यादव बोला ।

"परसों दोपहर को सुधा हमारे अपार्टमेंट में थी । तब खेतान भी वहां था । खेतान ने मेरे सामने रेनोवेशन के बारे में सुधा से सवाल किया था तो सुधा ने कहा था कि उसका उन कागजात को घर ले जाकर मुकम्मल करने का इरादा था ।"

"सो" अब मैं विजेता के से स्वर में बोला, "देयर यू आर ।"

खेतान का चेहरा फिर बुझ गया ।

"इसने" यादव बोला, "कत्ल के लिए बाइस कैलिबर की रिवॉल्वर क्यों चुनी ?"

"क्योंकि ये मरने वाले की औरतों में बनी साख से वाकिफ था । दूसरे, इसे अपने अचूक निशाने पर पूरा एतबार था ।"

"ओह !"

"लेकिन ये इतना कमीना है कि इसने शक की सुई शशिकांत की वाकफियात के दायरे में आने वाली औरतों तक ही सीमित नहीं रखी । इसने एक और शख्स को भी शक के दायरे में लपेटने का मामान किया ।"

"किसे ?"

"कृष्ण बिहारी माथुर को । परसों शाम चार बजे मकतूल की माथुर से टेलीफोन पर बात हुई थी जिसमें मकतूल ने शाम साढ़े आठ बजे यहां माथुर से मुलाकात की पेशकश की थी । जवाब में माथुर ने कहा था कि अगर उसे यहां आना पड़ा तो वो शशिकांत से बात करने नहीं, उसे शूट करने आएगा । माथुर के मुंह से निकली ये बात खेतान ने भी सुनी थी, इस बात की तसदीक मैं कर चुका हूं । अपनी इस जानकारी को कैश करने के लिए इसने क्या किया ? परसों रात ये यहां अपने साथ एक व्हील चेयर भी लेकर आया जो कि इस बात का अतिरिक्त सबूत है कि कत्ल का

इरादा ये पहले से किए हुए था । कत्ल के बाद इसने उस व्हील चेयर के निशान बाहर आयरन गेट से कोठी तक बनाए जिससे ये लगे कि माथुर अपनी साढ़े आठ बजे की अप्वायंटमेंट पर पूरा खरा उतरा था और वो ही यहां आकर कत्ल करके गया था । इत्तफाक से निशानेबाजी में वो भी खेतान से कम नहीं ।"

"ऐसे कोई निशान" यादव हैरानी से बोला, "बाहर ड्राइव-वे में हैं ?"

"कल तक तो थे ।" मैं झोंक में बोला । साथ ही मैंने होंठ काटे ।

यादव ने कहरभरी निगाहों से मुझे देखा ।

"कोहली" वो दांत पीसता हुआ बोला, "तेरी खैर नहीं ।"

"यादव साहब" मैं मीठे स्वर में बोला, "ये वक्त बड़े मगरमच्छ की तरफ तवज्जो देने का है जो कि खेतान की सूरत में तुम्हारे सामने खड़ा है ! मेरे जैसी छोटी-मोटी मछली पर वक्त बरबाद करने का ये वक्त थोड़े ही है ! मेरे जैसी छोटी-मोटी मछली की तो आप कभी फुरसत में भी दुक्की पीट लेंगे ।"

चेहरे पर वैसे ही सख्त भाव लिए यादव ने सहमति में सिर हिलाया ।

"अब हमारे वकील साहब के तरकश के तीसरे तीर पर आइये ।" मैं बोला ।

"अभी तीसरा भी ?" यादव बोला ।

"वो गुमनाम टेलीफोन कॉल जो तुमने अपने ऑफिस में हमारे सामने सुनी थी जिसकी वजह से तुमने मधु को हिरासत में लिया था ।"

"वो भी इसने की थी ?"

"और कौन करता ? ये ही तो था चश्मदीद गवाह मधु की यहां आमद का । अपनी इस जानकारी को इसने उस गुमनाम टेलीफोन कॉल की सूरत में कैश किया ।"

"ओए, पुनीत दया पुत्तरा ।" एकाएक मदान कहर बरपाता खेतान की ओर लपका, "तेरी ते मैं भैन दी..."

खेतान सहमकर दोनों हवलदारों की ओट में हो गया ।

यादव झपटकर उसके सामने आन खड़ा हुआ ।

"काबू में रहो ।" वो सख्ती से बोला, "इसे अपनी हर करतूत की सजा मिलेगी ।"

"हद हो गई जी कमीनेपन दी ।" मदान भुनभुनाया, "कंजरीदा गोद में बैठ कर दाढ़ी मूंडता है ।"

"चुप करो ।" यादव डपटकर बोला ।

निगाहों से खेतान पर भाले बर्छिया बरसाता, दांत किटकिटाता मदान खामोश हो गया ।

"और ?" यादव मेरे से बोला ।

"और क्या ?" मैं बोला, "बस ।"

"शशिकांत माथुर से क्यों मिलना चाहता था ?"

"मुझे क्या मालूम ?"

"क्यों नहीं मालूम ? बाकी हर बात मालूम है तो ये क्यों नहीं मालूम ?"

"बस, नहीं मालूम । जरुरी थोड़े ही है कि हर बात मुझे ही मालूम हो ? तुम इस बाबत माथुर से भी तो सवाल

कर सकते हो ।"

"वो जरुर ही बताएगा मुझे कुछ ।"

"तुम्हारा भाई" यादव मदान से संबोधित हुआ, "मुल्क से कूच की तैयारी क्यों कर रहा था ?"

मदान परे देखने लगा ।

यादव ने एक गहरी सांस ली और बड़े असहाय भाव से गर्दन हिलाई । फिर वो खेतान के करीब पहुंचा ।

"तुम" वो बोला, "अपना जुर्म कबूल करते हो ?"

"कौन-सा जुर्म ?" खेतान बड़े दबंग स्वर में बोला, "कैसा जुर्म ? मैंने कोई जुर्म नहीं किया ।"

"तुमने शशिकांत का कत्ल किया है ?"

"बिलकुल झूठ । मैं उसे जीता-जागता, सही सलामत यहां छोडकर गया था । इस आदमी की" उसने खंजर की तरह एक उंगली मेरी तरफ भौंकी, "बकवास से आप मुझे खूनी साबित नहीं कर सकते । सिवाए बेहूदा थ्योरियों के और अटकलबाजियों के क्या है आपके पास मेरे खिलाफ ? कोई सबूत है ? है कोई सबूत ?"

"घड़ी पर" मैं धीरे-से बोला, "इसकी उंगलियों के निशान हो सकते हैं ।"

यादव को बात जंची । तत्काल उसने अपने फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट को तलब किया ।

एक्सपर्ट ने घड़ी को चैक किया ।

"घड़ी पर" वो बोला, "या बुत पर, कहीं भी उंगलियों के कैसे भी कोई निशान नहीं हैं ।"

"ओह ।" यादव बोला ।

"लेकिन इंस्पेक्टर साहब" मैं बोला, "ये भी तो अपने आप में भारी संदेहजनक बात है । इसके न सही, किसी के तो उंगलियों के निशान होने चाहिए बुत पर ।"

"शशिकांत के तो होने चाहिए" मदान बोला, "जो कि रोज इस घड़ी में चाबी भरता था ।"

"चाबी !" फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट बोला, "चाबी तो इस घड़ी में कोई लगी ही नहीं हुई ।"

"वो चाबी अलग से लगती है ।" मदान बोला, "एक लम्बी-सी चाबी है जिसके दोनों सिरों पर मुंह है । एक ओर का बड़ा मुंह घड़ी में चाबी भरने वाले लीवर को पकड़ता है और दूसरा एकदम छोटा मुंह वो लीवर पकड़ता है जिससे घड़ी की सुइयां आगे-पीछे सरकती हैं ।"

"कहां है चाबी ?"

"यहीं कहीं होगी ।"

दो मुंही चाबी घड़ी वाले बुत के पीछे से बरामद हुई ।

फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट ने उस पर से उंगलियों के निशान उठाए ।

चाबी पर पुनीत खेतान के बाएं हाथ के अंगूठे का स्पष्ट निशान मिला ।

यादव की बांछे खिल गई ।

पुनीत खेतान के तमाम कस बल निकल गए ।

"मैंने तुम्हारी काबलियत को कम करके आंका ।" पुनीत खेतान बोला ।

मैं उसके साथ ड्राईगरूम में बैठा था । मुस्तैद पुलिसिए ड्राईगरूम के बाहर के दरवाजे पर खड़े थे । यादव भीतर स्टडी में मदान और उसकी बीवी के साथ था । उसी ने बाकी लोगों को स्टडी से बाहर निकाला था ।

"मेरी काबलियत को" मैं बोला, "ठीक से आंकते तो क्या हो जाता ?"

"तो जो कुछ तुमने पुलिस को बताया, उसका ग्राहक मैं होता ।"

"ग्राहक ?" मेरी भंवे उठी ।

"हां ।"

"इतना बिकाऊ तो नहीं मैं !"

वो हंसा । प्रत्यक्षतः उसकी निगाह में मैं 'इतना ही बिकाऊ' था ।

"वैसे मानते हो" फिर वह संजीदगी से बोला, "कि निशाना कुछ है मेरा !"

मैंने हैरानी से उसकी तरफ देखा । कैसा आदमी था वो ! कदम फांसी के फंदे की ओर बढ़ रहे थे और वो अपनी निशानेबाजी की आइडेंटिटी का ख्वाहिशमंद था ।

"घड़ी की तरफ तवज्जो कैसे गई ?" वो बोला ।

"मधु के बयान की वजह से ।" मैं बोला, "मुझे यकीन था कि वो झूठ नहीं बोल रही थी । अब अगर मैंने उसके बयान पर एतबार करना था तो घड़ी की शहादत को झूठा और फर्जी करार देना मेरे लिए जरुरी था ।"

"हूं । और ?"

"और मेरे ज्ञानचक्षु माथुर साहब के शूटिंग रेंज पर खुले जहां कि मेरा हर निशाना खाली गया । तभी मुझे पहली बार महसूस हुआ कि ये शूटिंग किसी अनाड़ी का काम नहीं था । ये शूटिंग किसी अनाड़ी का काम हो ही नहीं सकता था ।"

"ओह ।"

"कैसी अजीब बात है कि एक अकेला, अनपढ़, नादान मदान ही था जिसने कि शूटिंग के मामले में कोई काबलियत की बात कही थी । उसने लाश और लाश के इर्द-गिर्द एक निगाह डालते ही कहा था कि वो किसी पक्के निशानेबाज का काम था ।"

"मदान ने कहा था ऐसा ?"

"हां । और दूसरी गौरतलब बात उसने ये कही थी कि किसी औरत की मजाल नहीं हो सकती थी शशिकांत पर गोलियां चलाने की । इन दोनों बातों की अहमियत को मैंने फौरन समझा होता तो परसों ही केस का तीया-पांचा एक हो जाता ।"

वो खामोश रहा ।

"अब एक बात तो बता दो ।" मैं बोला ।

"क्या ?"

"शशिकांत की मां कौशल्या के तुम्हें सौंपे कोई कागजात तुम्हारे पास हैं ?"

वो कुछ क्षण सोचता रहा और फिर बोला, "देखो, कौशल्या का वकील मेरा बाप था । मेरे बाप के पास

कौशल्या का सौंपा एक सीलबंद लिफाफा था जोकि मेरे बाप की मौत के बाद मुझे हस्तांतरित हो गया था। मुझे नहीं पता कि उस लिफाफे में क्या है लेकिन अब लगता है की उसमे जरुर वो ही कागजात हैं जिनको हासिल करने के लिए मदान मरा जा रहा है।"

"उस लिफाफे का तुम क्या करोगे ?"

"तुम बताओ क्या करू ?"

"उसे मदान को सौंप दो। उसका भला हो जाएगा।"

"बदले में मेरा क्या भला होगा ?"

"तुम क्या भला चाहते हो ?"

"उसे कहो, मुझे छुड़वाए।"

"पागल हो ! ऐसे कैसे छूट जाओगे ! खुद वकील हो, फिर भी ऐसी बाते कर रहे हो।"

"पैसे से केस को हल्का किया जा सकता है। पैसे की बिना पर मेरी खलासी दो-चार साल की सजा से ही हो सकती है। संदेह लाभ पाकर छूट भी जाऊं तो कोई बड़ी बात नहीं। और सवाल उस सीलबंद लिफाफे का नहीं, शशिकांत की विरासत का भी है। वो लिफाफा शशिकांत की विरासत से, इंश्योरेंस क्लेम से, हर क्लेम से मदान को बेदखल करा सकता है। वो मदान को जेल में मेरा नेक्स्ट डोर नेबर बना सकता है। तुम बिचौलिया बनकर इस बाबत मदान से मेरा कोई सौदा पटवा दो, लिफाफा मैं तुम्हें दे दूंगा।"

मैंने सहमति में सिर हिलाया और स्टडी के बंद दरवाजे की तरफ देखा।

तभी मदान वहां से बाहर निकला। मैं लपककर उसके करीब पहुंचा। वो मुझे एक ओर ले गया और भुनभुनाता सा बोला, "लक्ख रुपया मांग रहा है वो इंस्पेक्टर का बच्चा मधु का पीछा छोड़ने का।"

"दे रहे हो ?" मैं बोला।

"और क्या न दूं ?"

"जरुर दो। तुम्हारी हसीन बीवी को एक पल भी हवालात में काटना पड़ गया तो जिन्दगी भर वो तुम्हारी दुक्की पीटती रहेगी।"

"वही तो।"

"और अब बदले में कई लाखों की बात सुनो।"

"कौन-सी ?"

मैंने उसे खेतान की ख्वाहिश की बाबत बताया।

"ऐदी भैन दी।" सुनते ही मदान भड़का, "ब्लैकमेल करता है मुझे ! माईयंवी मेरी बिल्ली मेरे से म्याऊं !"

"भडको मत।" मैं बोला, "शांति से फैसला करो। जो तुम्हारा आखिरी मकसद था, उसको निगाह में रखकर, सोचकर फैसला करो। मैं जरा इंस्पेक्टर से बात करके आता हूं।"

यादव मुझे स्टडी में मिला। उस घड़ी उसके चेहरे पर परम तृप्ति के भाव थे।

"आधा मेरा।" मैं बोला।

"क्या ?" वो हकबकाया।

"माल । मदान से हासिल होने वाला । उसमें से पचास हजार मुझे ।"

"पागल हुए हो !"

"ये न भूलो कि ये केस मेरी वजह से ही हल हुआ है ।"

"तुम भी ये न भूलो कि तुम और खेतान एक ही हथकड़ी में बंधे हो सकते हो ।"

"कोई बात नहीं । हम दोनों की मंजिल एक नहीं हो सकती । मेरे पर कोई गंभीर चार्ज नहीं है । आराम से छूट जाऊंगा । लेकिन छूटते ही विकास मीनार पर चढ़कर दुहाई दूंगा कि तुमने मदान दादा से लाख रुपए की रिश्वत खाई है । मेरी दुहाई पुलिस हैडक्वार्टर के एक-एक कमरे में सुनाई देगी ।"

"अबे, कमीन..."

"वो तो मैं हूं ही । दो ही चीजों की कीमत है आजकल दिल्ली शहर में । जमीन की और कमीन की ।"

"तुम्हें आधा हिस्सा चाहिए या पचास हजार रूपया ।"

"क्या फर्क हुआ ?"

"अगर आधा चाहिए तो मैं अभी मदान से दो लाख मांगता हूं । पचास हजार चाहिए तो डेढ़ लाख मांगता हूं ।"

"यानी कि तुम्हें तो एक लाख चाहिए ही चाहिए ।"

"बिल्कुल !"

"फिर तो" मैं मरे स्वर में बोला, "मैं खुद ही कर लूंगा मदान से अपना हिसाब-किताब ।"

यादव बड़े कुटिल भाव से मुस्कुराया ।

हजरात, उस हैरान और हलकान कर देने वाले केस का जो असली इनाम आपके खादिम को मिला वो डेढ़ लाख रुपए की फीस नहीं थी जो मैंने अपने दो संपन्न क्लायंटों से कमाई थी, वो मेरे गरीबखाने पर शुक्रगुजार होने को आई एक हसीना की आमद थी जो यूं शुक्रगुजार होना चाहती थी जैसे कोई औरत ही किसी मर्द की हो सकती थी ।

रात को जब मैं ग्रेटर कैलाश पहुंचा तो पिंकी वहां मुझे मेरा इंतजार करती मिली ।

अपने वादे के मुताबिक मुझे 'सबकुछ' लाइव दिखाने के लिए ।

समाप्त